汉语入门

हान्४ यू३ रु४ मन्२

हिन्दी चीनी प्राइमर

हर प्रसाद राय
合拉普拉沙德雷

हिन्दी-चीनी प्राइमर

[देवनागरी लिपि में]

हरप्रसाद राय

•

गांधी स्मारक निधि
राजघाट, नई दिल्ली

प्रकाशक : मंत्री
गांधी स्मारक निधि
राजघाट, नई दिल्ली-११०००१

संस्करण : प्रथम, अगस्त १९७५
मूल्य : रु० २०.००

मुद्रक : उद्योगशाला प्रेस,
किंग्सवे, दिल्ली-११०००९

दो शब्द

विश्व की महान् प्राचीनतम भाषाओं में चीनी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत और चीन का पड़ोसी सम्बन्ध भी सदा का है। इसलिए भारत में चीनी भाषा का अध्ययन अपनी भाषा में किया जा सके यह इष्ट है। अब तक भारत में अधिकांश रूप में अंग्रेजी के माध्यम से और रोमन लिपि में चीनी भाषा का अध्ययन हुआ है। आचार्य विनोबा भावे, जो संसार की एकता में विश्वास करते हैं और 'जय जगत्' के प्रेरक हैं तथा संसार की कई भाषाओं का ज्ञान भी रखते हैं, कई बरसों से यह कहते रहे हैं कि दो भाषाओं के लोग एक-दूसरे की भाषा सीखने में तीसरी भाषा का माध्यम लें यह उचित नहीं है। उनके इस विचार को ध्यान में रखते हुए हिन्दी में यह चीनी प्राइमर तैयार की गई है।

दूसरा विचार भी, जो विनोबाजी ने ही दिया है, वह है लिपि के सम्बन्ध का। एक भाषा के लोग दूसरी भाषा को अपनी ही लिपि में सीखना प्रारम्भ करें तो आसानी होगी। एक साथ भाषा और लिपि दोनों को सीखने का भार उन पर नहीं पड़ेगा। जिन भाषाओं में सामान्य लिपि का प्रचलन है उन भाषाओं और उनके लोगों में निकटता आसान होती है। जैसे, यूरोप में रोमन लिपि में अनेक भाषाएं लिखी जाती हैं और अरबी लिपि में अरबी, तुर्की फारसी, उर्दू आदि कई भाषाएं हैं। इनकी लिपियाँ बिलकुल एक न होते हुए भी समानता के कारण एक लिपि-परिवार बनाती हैं; चित्रलिपियों के एक परिवार में चीनी, जापानी, कोरियाई तथा अन्य भाषाएँ हैं; इसी प्रकार एक लिपि-परिवार देवनागरी लिपि का है जिसमें 20-25 समृद्ध भाषाएँ हैं। वर्गीय व्यंजन, अकारादि स्वर तथा उनके लिए मात्राओं के उपयोग का विधान सबमें समान है। यह भारत की अधिकांश भाषाओं के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व की कई अन्य देशों की लिपियों पर भी लागू होता है। इस प्रकार चारों लिपि-परिवार—रोमन, अरबी, चित्रलिपि और देवनागरी—मानव-समूहों को निकटता प्रदान करते हैं।

देवनागरी में एक खूबी यह है कि ध्वनि-अनुसारी (फोनिटिक) होने के कारण, उच्चारण के अनुरूप लिख सकने की क्षमता उसमें है। इसलिए चीनी भाषा के उच्चारण को ठीक से समझने में नागरी लिपि रोमन की अपेक्षा

अधिक सुविधाजनक है। यह तो आवश्यक है ही कि जो अनेक विशिष्ट ध्वनियां भाषा-विशेष में रहेंगी उनको व्यक्त करने के लिए कुछ संकेत देवनागरी में जोड़ने पड़ेंगे और ऐसा प्रयत्न इस पुस्तक में किया गया है। इस मौलिक प्रयास से चीनी शब्दों को नागरी में समझने की सुविधा और वैज्ञानिकता की स्पष्ट प्रतीति होगी।

यह पुस्तक प्रसिद्ध चीनी भाषाविद्, भारत के इथियोपिया-स्थित वर्तमान राजदूत श्री वसंतराव परांजपे के मार्गदर्शन में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के चीनी भाषा के प्राध्यापक श्री हरप्रसाद राय ने बड़े श्रम और निष्ठा से तैयार की है। इस पुस्तक के लिए श्री परांजपे ने अपने बहुमूल्य निर्देशन के अलावा प्रशस्ति के चार शब्द भी लिख भेजने की कृपा की है इसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

महान पड़ोसी राष्ट्र—चीन और भारत—के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों और विज्ञान युग की भावी मधुर सम्भावनाओं की दृष्टि से भारतीय जनता आचार्य विनोबाजी की प्रेरणा से लिखित और प्रकाशित इस पुस्तक का हृदय से स्वागत करेगी, ऐसी आशा है।

देवेन्द्र कुमार

प्रशस्ति

'हिन्दी चीनी प्राइमर' एक सामयिक और स्वागतार्ह प्रकाशन है। हिन्दी के माध्यम से नागरी लिपि में भारतीयों को चीनी भाषा का परिचय कराने का यह शायद अपने ढंग का प्रथम प्रयास है।

भारत का पड़ोसी राष्ट्र चीन, जिसके साथ हमारा सदियों पुराना संबंध है, एक प्राचीन और महान् राष्ट्र है। चीन की संस्कृति उतनी ही पुरानी है, जितनी भारत की है और चीनी भाषा न केवल समृद्ध है, बल्कि तीन हजार वर्षों से भी अधिक से चली आयी साहित्य परम्परा से भी युक्त होने का श्रेय उसे प्राप्त है। चीन ने लाव् च्., खुङ् च्., लि पो और तू फ़ू आदि महान् विचारकों, विद्वानों और लेखकों को जन्म दिया है और 'षृ चिङ्', 'छुन् छिउ' 'छु तस्', 'शी श्याङ् ची', 'हान् षू' और 'हुङ् लौ मङ्' जैसे उत्कृष्ट ग्रंथ भी संसार को दिये हैं।

हाल के वर्षों में चीनी भाषा न केवल साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप में बल्कि राजनैतिक भाषा के रूप में भी विकसित हुई है, इसलिए प्रत्येक शिक्षित भारतीय के लिए चीन और चीनी जनता को जाननेके लिए उसे जानना अत्यावश्यक हो गया है। किसी देश तथा वहाँ के वासियों के बारे में जानकारी उनकी भाषा के माध्यम द्वारा ही जानी जा सकती है। क्योंकि जैसा हमारे पूर्वजों ने कहा है, भाषा वह ज्योति है जो संसार का अंधकार मिटाती है।

"इदमंधतमं कृतस्नं जायेत भुवनत्रयम्
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिः आसंसारं न दीप्यते।"

(तीनों लोक अंधकारमय रह जायेंगे यदि शब्द (भाषा) रूपी ज्योति संसार में न जले।)

इसलिए जब किसी भी भाषा का परिचय कराने वाली पुस्तक स्वागत-योग्य है, तब देश की भाषा हिन्दी में, नागरी लिपि में चीनी भाषा की पाठ्य पुस्तक प्रकाशित होती है तो यह विशेष उपलब्धि मानी जाएगी। देवनागरी सम्भवतः विश्व में सबसे अधिक शास्त्रीय लिपि है। क्योंकि अन्य किसी वर्ण-माला की अपेक्षा इसकी वर्णमाला अधिक शास्त्रीय है और इससे भी महत्त्व की बात यह कि स्वरों और व्यंजनों की ध्वनियों को अभिव्यक्त करने की क्षमता-

वाले सुनिश्चित संकेत इसमें हैं । इसी कारण किसी भी भाषा के, जिसमें चीनी भी शामिल है, लिप्यंतरण की आवश्यकता पड़ने पर उसके लिए सर्वाधिक आदर्श विकल्प नागरी को ही माना जा सकता है ।

इन दोनों कारणों से, मैं मानता हूं कि भारत में चीनी भाषा सीखने की इच्छा रखने वालों के लिए यह प्राइमर उपयुक्त और मूल्यवान् सिद्ध होगी।

पाठ्य पुस्तक तैयार करना, खासकर चीनी जैसी भाषा में, कठिन काम है। श्री हरप्रसाद राय ने जिस लगन और परिश्रम से यह पुस्तक लिखी है इसके लिए मैं उनकी सराहना करता हूं। श्री राय इस काम के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त हैं । आप चीनी भाषा के परिश्रमी अध्येता हैं, संस्कृत भाषा पर भी अच्छा अधिकार रखते हैं और हिन्दी आपकी मातृभाषा है। मैं श्री राय का अभिनन्दन करता हूं और आपके इस अग्रणी प्रयास की हर प्रकार से सफलता चाहता हूं।

व० वा० परांजपे
इथियोपिया में भारतीय राजदूत
अदिस अबाबा

भूमिका

हिन्दी भाषियों के लिए चीनी भाषा शिक्षा पुस्तक तैयार करने का मेरा स्वप्न आज साकार हो रहा है, यह मेरे लिए गर्व की बात है। इस भगीरथ प्रयास के लिये मुझे चुना गया और यह गौरव मुझे प्राप्त हुआ, इसका श्रेय आदरणीय श्री परांजपेजी को है। मैं बीस साल पहले कलकत्ते में रहते समय कुछ चीनियों को हिंदी सिखाया करता था। उस समय चीनी अनुवाद के साथ हिन्दी वाक्यों के पाठ तैयार किये थे। तब से मेरी ख्वाहिश थी कि हिंदी में चीनी की पाठच पुस्तक बनायी जाय। हम चंद भारतीय युवक चीनी पढ़ने हांगकांग गये थे। वहाँ के कमीशन की तरफ से श्री परांजपे हमारी देख-भाल करते थे और एक तरफ से वे हमारे अभिभावक भी थे। गत वर्ष जब पूज्य विनोबाजी की ओर से श्री परांजपेजी के पास ऐसी एक पुस्तक तैयार कराने का प्रस्ताव आया तब उन्होंने मुझे इस काम के योग्य समझा। इसलिये मैं उनका आभारी हूं। मैंने ये पाठ उन्हें दिखाये हैं। पुस्तक शीघ्रातिशीघ्र तैयार करनी थी, इसलिये उनकी सलाह थी कि किसी प्रामाणिक पुस्तक के आधार पर इस पाठ्य पुस्तक का प्रणयन हो। उनके निर्देश के अनुसार येल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गार्डनर ट्यूक्सबरी प्रणीत 'स्पीक चाइनीज़', के आधार पर इसकी रचना की गयी है और इससे काम कुछ सरल हुआ है।

पिछले छः साल से रक्षा मंत्रालय के विदेशी भाषा विद्यालय में सशस्त्र सेना के तीनों अंगों के अधिकारियों, आकाशवाणी के अधिकारियों तथा दूसरे सज्जनों को चीनी भाषा सिखाते समय मुझे यह तजुर्बा हुआ कि चीनी भाषा सिखाने के लिये रोमन लिपि सहायक सिद्ध नहीं होती, बल्कि उसकी तुलना में नागरी लिपि बहुत ही ज्यादा उपयोगी है। इसलिये मैं सभी चीनी ध्वनियों को देवनागरी में लिपिबद्ध करने लगा तथा छात्रों को पढ़ाते समय रोमन लिपि के बजाय नागरी लिपि का व्यवहार करने लगा। छात्रों ने इसका सहर्ष स्वागत किया और कुछ ही समय में मुझे यह दृढ़ प्रत्यय हुआ कि नागरी लिपि किसी भी विदेशी भाषा की शिक्षा के लिये सर्वोत्तम है।

लेकिन यह पाठ्य पुस्तक तैयार करना आसान काम नहीं था। चीनी भाषा में कुछ ऐसी ध्वनियां हैं जो भारतीय भाषाओं में नहीं मिलतीं; उनका

लिप्यन्तरण सर्वजन-ग्राह्य हो इसका ध्यान रखना जरूरी था। परांजपेजी से विचार-विमर्श करने के बाद हमने एक ध्वनि-सूची तैयार की और उसी के आधार पर पुस्तक-निर्माण की तैयारी होती रही। परांजपेजी बीच-बीच में सुझाव देते रहे और तदनुसार हम यथासंभव सुधार करते रहे।

चीनी ध्वनियों का अनुशीलन करते समय मुझे यह प्रतीत हुआ कि भाषातत्त्व की दृष्टि से चीनी भाषा के तीन प्रकार के 'च' और 'छ' हैं और तीनों के उच्चारण-स्थान भिन्न-भिन्न हैं: दन्त्य, मूर्धन्य व तालव्य। तालव्य 'च' और 'छ' केवल 'इ' व 'यू' के साथ ही आते हैं, दूसरे स्थान पर मूर्धन्य रूप का इस्तेमाल होता है, इसलिये हमने इन दोनों जगह एक ही 'च' व 'छ' रखे हैं। लेकिन दन्त्य 'च' या 'छ' का उपयोग हमारे ख्याल से भारत में मराठी आदि कुछ ही भाषाओं में होता है। उर्दू भाषा में 'ज़' दन्त्य वर्ण है जिसे नुक्ता की सहायता से व्यक्त किया जाता है। यही कारण है कि हमने यहां नुक्ते की सहायता से 'च़' (उदाहरण, चीनी रेखाक्षर, स्वरचिह्न ४ में) और 'छ' (उदाहरण यहां, स्वरचिह्न ३ में) का प्रयोग किया है। 'इ' व 'उ' के मिश्र रूप से बनी ध्वनि 'यू' के लिए भी नुक्ते का उपयोग किया गया है। इ, ई, और उ, ऊ के बीच कोई प्रभेद नहीं रखा गया है। साधारणतया 'इ' या 'उ' का ही प्रयोग किया गया है। केवल जहां नुक्ता लगाया गया है वहीं पर 'ऊ' का प्रयोग हुआ है। लिप्यंतरण के समय हिज्जे में वर्णों की किफायत का ध्यान रखते हुए संयुक्त वर्ण का प्रयोग यथासंभव किया गया है। जैसे, प्याव्, इत्वे[२], 'थ्येन्' आदि।

इस पुस्तक में हमने भाषा के चार स्वरों के लिये १,२,३ और ४ इन अंकों का प्रयोग किया है। इसके बजाय अलग वर्णों या विशेष चिह्नों के सहारे उन्हें व्यक्त किया जा सकता था। लेकिन इसके लिये और अधिक समय की और विशेष विचार-विमर्श की जरूरत है। उस दिशा में भी हमारा प्रयास जारी रहेगा और आशा है कि यदि वह अधिक उपयोगी लगा तो इसके बाद की पुस्तकों में हम उस तरीके को अपना सकेंगे।

इस पुस्तक में ट्यूक्सबरी की पुस्तक 'स्पीक चाइनीज़' का अनुसरण करते हुए हमने प्रत्येक पाठ में ज्यादा से ज्यादा उदाहरण दिये हैं, जिससे छात्रों को अधिक अभ्यास का मौका मिले और साथ-साथ व्याकरण के नियमों के बारे में भी स्पष्ट ज्ञान हो। व्याकरण के भाग पाठ के अनुसार सजाये गये हैं; नियमों को भारतीय छात्रों के अनुकूल बनाकर उनका विश्लेषण किया गया है और विश्लेषण के साथ भी उदाहरण दिये गये हैं जिससे कि विद्यार्थियों को बार-बार उदाहरण-माला देखनी न पड़े। विश्लेषण की सामग्री पेकिंग से

प्रकाशित "माडर्न चाइनीज़ रीडर" जैसी दूसरी किताबों से भी ली गयी है "इनवर्टेड आब्जेक्ट" के लिये "अपवृत्त कर्म" यह प्रतिशब्द उपरोक्त "रीडर" से ही लिया गया है। व्याकरण-भाग को पूरा स्वतंत्र रूप देने का भरसक प्रयास किया गया है जिससे विद्यार्थी केवल व्याकरण-भाग को पढ़कर भी चीनी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

"स्पीक चाइनीज" में से हमने पहले बीस पाठों का उपयोग किया है ; बाकी चार का उपयोग बाद के खंडों में कर सकेंगे। इसलिए 'दूरत्व-बोधक लि^{२}', 'परिणाम-बोधक संयुक्त-क्रियापद', 'सादृश्य व विषमता-बोधक' आदि कुछ नियमों के उदाहरण इसमें नहीं दे सके हैं।

स्वरों के प्रयोग के संबंध में यह कहना जरूरी है कि चीन की वर्तमान स्वरपद्धति का अनुसरण किया गया है। उनके परिशोधित स्वर-संग्रह 'फिन्^{१} इन^{१} छ^{२} हवे^{१}' के अनुसार "फ्रांस" के लिए "फा^{3} क्वो^{२}" स्वीकार किया गया है, "फा^{४} क्वो" (स्पीक चाईनीज) नहीं। "चुङ्^{१}क्वो^{२}," "मैं^{3} क्वो^{२}ां' आदि शब्दों में अंत्य स्वर दूसरा स्वर है, शून्य स्वर नहीं।

ऐसी पुस्तक तैयार करने के लिए जहाँ वर्षों की तैयारी चाहिए वहाँ कुछ महीने ही मुझे मिले। आदरणीय श्री परांजपे व गांधी स्मारक निधि के श्री देवेन्द्रभाई की प्रोत्साहपूर्ण अनुप्रेरणा और सलाह के कारण हीं यह संभव हुआ। निधि के दूसरे भाइयों का सहयोग सदा याद रहेगा। रक्षा मंत्रालय के विदेशी भाषा विद्यालय के चीनी भाषा द्विभाषी कक्षा के छात्र मुझे जी-जान से सहायता व उत्साह देते रहे। इसलिए मैं उन सबका आभारी हूं। मेरी धर्मपत्नी कृष्णाजी ने अपनी शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद हमेशा मुझे घरेलू समस्याओं से मुक्त रखा और इस कार्य में उत्साह बढ़ाती रहीं यह कम योगदान नहीं था।

इस पुस्तक में त्रुटियां बहुत होंगी। विद्यार्थी और गुणी अध्यापक इसे समालोचक दृष्टि से देखें तो कृपया होगी।

जयहिन्द

१५ अगस्त १९७५ हरप्रसाद राय

विषय-सूची

परिचायक प्रस्तावना

चीनी भाषा में स्वर और व्यंजन वर्ण

आधुनिक चीनी भाषा की प्रामाणिक भाषण-ध्वनियां पेकिंग-बोली की भाषण-ध्वनियों पर आधारित हैं। पेकिंग-बोली में सात स्वर वर्ण हैं :

अ, आ, इ, उ, ए, ओ, .यू

नोट : ".यू" जो फ्रान्सीसी और जर्मन भाषाओं में पाया जाता है, हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। यह "इ" और "उ" से बना मिश्र स्वर है। उच्चारण करते समय, जिह्वा उसी स्थान पर रहती है, जिस स्थान पर वह "इ" का उच्चारण करते समय रहती हैं, किन्तु ओठों का आकार वैसा होता है जैसा "उ" का उच्चारण करते समय होता है। ओठों को उतना ही गोल रखना चाहिये जितना कि "उ" का उच्चारण करते समय रखा जाता है। इसी अवस्था में "उ" का उच्चारण मुंह से निकालना चाहिये। हम इसे ".यू" द्वारा सूचित करेंगे।

पेकिंग-बोली में "य" और "व" इन दो अर्धस्वरों समेत २७ व्यंजन वर्ण हैं :

क ख ङ्

च छ

त थ न

प फ म फ़

य ऋ (र) ल व श ष स ह ळ (अळ)

च़ (त्च) छ़ (थ्छ) स्च्

चृ छृ षृ

नोट : (१) च, छ : यदि "च" और "छ" के ठीक बाद "इ" या "यू" आए या "इ" या "य़" से बने शब्दांश आएं तो "च" और "छ" हमेशा तालव्य वर्ण होते हैं। "श" के बाद भी हमेशा "इ" और "यू" ही आते हैं। दूसरे स्थान पर "च" "छ" और "ष" मूर्धन्य वर्ण होते हैं, अर्थात् "ट", "ठ", "ष" के उच्चारण की तरह जिह्वाग्र दांत के पीछे के ऊंचे कठोर तालु को स्पर्श करता है। "चृ" "छृ" और "षृ" ये मिश्र व्यंजन भी मूर्धन्य वर्ण हैं।

(२) "फ" ओष्ठ्य वर्ण है और "फ़" दन्त्योष्ठ्य।

(३) "ऋ" उच्चारण करते समय इसके साथ कोई स्वर वर्ण नहीं जोड़ना चाहिए। इसका उच्चारण कुछ फ्रान्सीसी भाषा में "j" जैसा होता है। "ऋ" के ठीक बाद स्वर वर्ण आने से उसे "र" लिखा जाएगा।

(४) "च़" (त्च्) अल्पप्राण अघोष संघर्षजन्य है। इसका उच्चारण करते समय जीभ की नोक ऊपरी दंतों के पीछे मसूढ़ों पर दबाइए और सांस झटके के साथ निकलने दीजिये। ज्यादा हवा बाहर न निकालिये।

(५) "छ़" (थ्छ़) महाप्राण अघोष संघर्षजन्य है। इस ध्वनि का उच्चारण "च़" (त्च) जैसे किया जाता है। अन्तर केवल इतना है कि "छ़" का उच्चारण करते समय सांस एक जोर के झटके के साथ छोड़ी जाती है। इसमें ज्यादा हवा बाहर निकलती है।

(६) "स्च्" अघोष संघर्षजन्य है। इसका उच्चारण करने

के लिये जीभ की नोक को झुकाकर नीचे की दंत-पंक्ति के पीछे लाया जाता है और सांस जिह्वोपरि तथा ऊपरी दंतपंक्ति के बीच के संकरे मार्ग से रगड़ खाकर बाहर निकलती है।

(७) ळ (अळ) एक प्रत्याकुंचन वर्ण है। इसका उच्चारण करते समय जीभ की नोक को ऊपर उठाकर कठोर तालु की ओर से लाया जाता है। इस प्रकार वक्र-जिह्वा से "अ" सहित 'ळ' यानी "अळ" की ध्वनि पैदा होती है। इस ध्वनि का उच्चारण करते समय, मुंह पहले तो थोड़ा खुला रखिये, फिर थोड़ा बंद कीजिये। वैदिक भाषा, आधुनिक उड़िया, मराठी, तमिल आदि भाषाओं में इस वर्ण का प्रयोग होता है। चीनी भाषा में यह केवल अन्त में प्रयुक्त होता है।

चीनी भाषा के चार स्वर

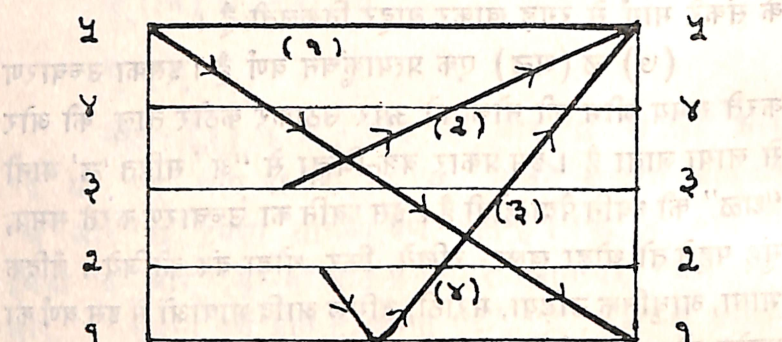
चीनी भाषा में काष्ठा के विचरण को, मुख्य रूप से उसकी ऊंचाई के चढ़ाव और उतार को, स्वर कहते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि वैदिक मंत्रों का भी तीन स्वरों के साथ उच्चारण किया जाता है; ये स्वर हैं उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

चीनी स्वर सरकते हुए चढ़ते हैं और उतरते हैं, न कि उछलते हुए। चीनी भाषा में हर शब्दांश का एक निश्चित स्वर होता है, इसलिए शब्दांश के निर्माण में स्वर का उतना ही महत्त्व है, जितना स्वरवर्ण और व्यंजनवर्ण का। स्वरों में अन्तर होने के कारण, शब्दों के अर्थ भिन्न हो जाते हैं, हालांकि हिज्जे एक ही रहते हैं।

पेकिंग बोली में चार स्वर होते हैं। काष्ठा के विचरण-विस्तार को नीचे के समान अन्तरालों में विभाजित उदग्र-रेखा पर प्रदर्शित किया जा सकता है:

—५ उच्च काष्ठा
—४ मध्य-उच्च काष्ठा
—३ मध्य काष्ठा
—२ मध्य-निम्न काष्ठा
—१ निम्न काष्ठा

नीचे के चित्र में, पेकिंग-बोली के चार-स्वरों को (१), (२), (३) और (४) द्वारा सूचित किया गया है।



हम लोग चार स्वरों को सूचित करने के लिये शब्दों के साथ १, २, ३ और ४ इन अंकों का प्रयोग करेंगे। इन्हें यदि शब्द एक स्वर-वर्ण का हो तो उस स्वर के ऊपर रखना चाहिये, या शब्दांश के मुख्य स्वर पर रखना चाहिये।

अब हम चार स्वरों का विवेचन करेंगे।

पहला स्वर (५-५) "उच्चस्तरीय" स्वर है। इसका उच्चारण ऊंचाई पर होता है, और बगैर उतार के एक ही स्तर पर रहता है, जैसे "पा¹" (आठ) "मा¹" (माता)।

दूसरा स्वर (३-५) "ऊंचा उठता" स्वर है, यह मध्य काष्ठा (३) से शुरू होकर चढ़ते हुए उच्च काष्ठा (५) तक पहुंचता है, जैसे "पा²" (जड़ से उखाड़ना), "मा²" (पटुआ, पटसन)।

तीसरा स्वर (२-१-४) "उतरता और चढ़ता" स्वर है। वह मध्य-निम्न काष्ठा (२) से उतरकर निम्न काष्ठा (१) तक आता है और फिर उठकर मध्य-उच्च काष्ठा (४) तक पहुंच जाता है, जैसे "पा³" (दस्ता) "मा³" (घोड़ा)।

चौथा स्वर (५-१) "उतरता" स्वर है। वह ऊंचाई (५) से नीचे की ओर निम्न काष्ठा (१) तक उतरता है, जैसे "पा⁴" (प्रजा-पीड़क, निष्ठुर शासक) "मा⁴" (गाली देना)।

इन चारों स्वरों को सीखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये।

१. सभी व्यक्तियों के स्वर की काष्ठा एक सी नहीं होती।

२. स्वर से काष्ठा-विचरण का बोध होता है, स्वर की ध्वनि की तीव्रता से कोई संबंध नहीं होता है।

३. चारों स्वर लम्बाई में एक दूसरे से भिन्न हैं, विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि तीसरा स्वर सबसे लम्बा है, और पहला और दूसरा स्वर चौथे स्वर से लम्बा है।

शून्य स्वर : चीनी भाषा में, जब हम शब्दों को अलग पढ़ते हैं, तो हमेशा उन्हें बल-सहित शब्दांश के रूप में पढ़ते हैं, इसलिये हर शब्द का एक स्वर होता है। बोलचाल में, जब किसी शब्द पर बल नहीं दिया जाता, तो वह अपना मूल स्वर खो बैठता है, और निर्बल और छोटा हो जाता है, यानी उसका स्वर हल्का हो जाता है। इसे शून्य स्वर कहते हैं। हम शून्य स्वर के लिये कोई चिह्न इस्तेमाल नहीं करेंगे।

पाठ-१

क : नि^{3} हाव्^{3} मा ?	आप कैसे हैं ? (नमस्ते ।)
ख : हाव्^{3} । नि^{3} हाव्^{3} मा ?	मैं अच्छी तरह हूं । आप कैसे हैं ?
क : हन्^{3} हाव्^{3}	बहुत अच्छी तरह ।
ख : नि^{3} माङ्^{2} पु^{4} माङ्^{2} ?	क्या आप व्यस्त हैं ?
क : पु^{4} माङ्^{2} । नि^{3} माङ्^{2} । मा ?	नहीं । आप ?
ख : वो^{3} हन्^{3} माङ्^{2}	मैं बहुत व्यस्त हूं ।

नये शब्द

सर्वनाम (सर्व)

वो^{3}	मैं, मुझे
नि^{3}	तुम (एक वचन)
था^{1}	वह (पु०, स्त्रीलिंग)
	उसे (पु०, स्त्रीलिंग)
वो^{3}मन्	हम (लोग), हमें
नि^{3}मन्	तुम (लोग), तुम्हें (बहुवचन)
था^{1}मन्	वे, उन्हें (बहुवचन)

विशेषण (वि)

काव्^{1}	लम्बा, ऊंचा
माङ्^{2}	व्यस्त (होना)

हाव्^{3}	अच्छा, ठीक (होना)

क्रिया विशेषण (क्रि० वि०)

हन्^{3}	बहुत, अधिक, ज्यादा
पु^{4}	मत, नहीं (निषेधार्थक)

सहायक शब्द

मा	प्रश्नार्थक सहायक शब्द

उदाहरण माला

(क) विशेषण के साथ सरल वाक्य (व्याकरण १-२ देखिये)

नमूने : सर्व	(निषेध)	वि०	
वो^{3}		माङ्^{2}	मैं व्यस्त हूं ।
वो^{3}	पु^{4}	माङ्^{2}	मैं व्यस्त नहीं हूं ।
वो^{3} काव्^{1}	वो^{3}	पु^{4} काव्^{1}	
नि^{3} माङ्^{2}	नि^{3}	पु^{4} माङ्^{2}	
था^{1} हाव्^{3}	था^{1}	पु^{4} हाव्^{3}	
वो^{3} मन् माङ्^{2}	वो^{3} मन्	पु^{4} माङ्^{2}	
नि^{3} मन् माङ्^{2}	नि^{3} मन्	पु^{4} माङ्^{2}	
था^{1} मन् माङ्^{2}	था^{1} मन्	पु^{4} माङ्^{2}	

(ख) क्रिया विशेषण के साथ (व्याकरण १-३ देखिये ।)

नमूने : सर्व	निषेध-क्रि० वि०	वि०	
था^{1}	हन्^{3}	काव्	वह बहुत लम्बा है ।
नि^{3}	पु^{4} हन्^{3}	काव्^{1}	तुम ज्यादा लम्बे नहीं हो।

वो^{3} हन्^{3} काव्^{1}	वो^{3} पु^{4} हन्^{3} काव्^{1}
नि^{3} हन्^{3} माङ्^{2}	नि^{3} पु^{4} हन्^{3} माङ्^{2}
था^{1} हन्^{3} हाव्^{3}	था^{1} पु^{4} हन्^{3} हाव्^{3}

वो[3] मन् हन्[3] माङ्[२]	वो[3] मन् पु[४] हन्[3] माङ्[२]
नि[3] मन् हन्[3] माङ्[२]	नि[3] मन् पु[४] हन्[3] माङ्[२]
था[१] मन् हन्[3] माङ्[२]	था[१] मन् पु[४] हन्[3] माङ्[२]

(ग) प्रश्न और उत्तर

१—सरल ढंग के प्रश्न (व्याकरण १-६ (१) देखिये)

नमूना :

सर्व वि० प्रश्नार्थक सहायक शब्द

नि[3] हाव[3] मा ?	आप कैसे हैं ?
१. वो[3] काव[१] मा ? नि[3] हन्[3] काव[१]	क्या मैं लम्बा हूं ? हां, तुम बहुत लम्बे हो ।
२. नि[3] माङ्[२] मा ? वो[3] पु[४] माङ्[१]	क्या तुम व्यस्त हो ? नहीं ।
३. नि[3] मन् हाव[3] मा?	क्या आप (लोग) सकुशल हैं ?
वो[3] मन् हन्[3] हाव[3]	हम (लोग) बड़े मजे में हैं ।

२—वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य (व्याकरण १-६ (२) देखिये)

नमूने :

सर्व०	**वि०**	**निषेध-वि०**	
नि[3]	माङ्[२]	पु[४] माङ्[२] ?	क्या तुम व्यस्त हो ? (तुम व्यस्त हो या नहीं?)
वो[3]		पु[४] माङ्[२]	नहीं, मैं व्यस्त नहीं हूं ।

१- था[१] मन् काव[१] पु[४] काव ?	क्या वे लम्बे हैं ?
था[१] मन् पु[४] हन्[3] काव[१]	वे अधिक लम्बे नहीं हैं ।
२- नि[3] मन् माङ्[२] पु[४] माङ[२] ?	क्या तुम (लोग) व्यस्त हो ?
वो[3] मन् हन्[3] माङ्[२]	हां, हम बहुत व्यस्त हैं ।

३- था^{1} हाव्^{3} पु^{4} हाव्^{3} ?	वह अच्छा आदमी है या नहीं ? (अथवा वह कैसा है ?)
था^{1} हन्^{3} हाव्^{3}	हां, वह बहुत अच्छा (आदमी) है। (अथवा वह बहुत मजे में है।)

३—सरल प्रश्नों के निषेधार्थक रूप (व्याकरण १-६ (३) देखिये)

नमूने :

सर्व	**निषेध-वि०**	**प्र० स० श०**
नि^{3}	पु^{4} माङ्^{2}	मा ? क्या तुम व्यस्त हो ?
वो^{3}	पु^{4} माङ्^{2}	मैं व्यस्त नहीं हूं।

१. वो^{3} पु^{4} काव्^{1} मा ?	क्या मैं लम्बा नहीं हूं ?
नि^{3} पु^{4} हन्^{3} काव्^{1}	तुम ज्यादा लम्बे नहीं हो।
२. नि^{3} पु^{4} माङ्^{2} मा ?	क्या तुम व्यस्त नहीं हो ?
वो^{3} पु^{1} माङ्^{2}	नहीं, मैं व्यस्त नहीं हूं।
३. था^{1} पु^{4} हाव्^{3} मा ?	क्या वह अच्छा (आदमी) नहीं है ?
था^{1} हन्^{3} पु^{4} हाव्^{3}	वह बहुत खराब (आदमी) है।

उच्चारण अभ्यास

१-१ का^{1} का^{1} २-१ का^{2} का^{1} ३-१ का^{3} का^{1} ४-१ का^{4} का^{1}

१-२ का^{1} का^{2} २-२ का^{2} का^{2} ३-२ का^{3} का^{2} ४-२ का^{4} का^{2}

१-३ का^{1} का^{3} २-३ का^{2} का^{3} ३-३ का^{3} का^{3} ४-३ का^{4} का^{3}

१-४ का^{1} का^{4} २-४ का^{2} का^{4} = २-३ का^{2} का^{3}

३-४ का^{3} का^{4} ४-४ का^{4} का^{4}

व्याकरण

१-१. उद्देश्य और विधेय क्या है यह हम सभी को पता है। आधुनिक चीनी भाषा में विधेय के विन्यास के अनुसार वाक्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं: (१) क्रिया-विधेय वाक्य (२) विशेषण-विधेय वाक्य, और (३) विशेष्य-विधेय (या सारभूत-विधेय) वाक्य।

जो शब्द किसी व्यापार, व्यवहार अथवा परिवर्तन का विधान करता है, उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया-विधेय वाक्य में विधेय उद्देश्य द्वारा सूचित किसी प्राणी या वस्तु के व्यापार, व्यवहार या परिवर्तन के बारे में बताता है। यह ध्यान में रखना चाहिये कि चीनी भाषा में क्रिया का रूप परिवर्तन नहीं होता है, अर्थात् क्रिया का धातु रूप नहीं होता, या उसके साथ कोई कृत् तद्धित जैसे प्रत्यय नहीं लगते। उदाहरण स्वरूप, हिन्दी के "मैं हूँ", "वह है", "वे हैं", और "तुम हो" चीनी भाषा के अनुसार "मैं होना", "वह होना", "वे होना" और "तुम होना" होगें। अर्थात् क्रिया का एक ही रूप होता है, और यह क्रिया पुरुष, वचन और काल के परिवर्तन के साथ-साथ रूपान्तरित नहीं होती, सदा एक-सी रहती है।

१-२. विशेषण: जो शब्द किसी प्राणी अथवा वस्तु का गुण या रूप प्रगट करता है, वह विशेषण कहलाता है, जैसे, माङ्[२] (व्यस्त), काव[१] (लम्बा)। विशेषण जब विधेय के रूप में प्रयुक्त होता है, तब ऐसे वाक्य को विशेषण-विधेय वाक्य कहते हैं। इस तरह के वाक्य में, हिंदी में अनुवाद करते समय वाक्य के अन्त में "होना" क्रिया प्रयुक्त होती है, जैसे, वो[३] माङ्[२] "मैं व्यस्त हूं", था[१] काव[१] "वह लम्बा है"। लेकिन चीनी भाषा के विशेषण-विधेय वाक्य में "होना" क्रिया का प्रयोग कभी नहीं होता। यह चीनी भाषा की विशिष्टता है।

१-३. क्रिया-विशेषण : हिन्दी और अंग्रेज़ी की तरह, चीनी क्रिया-विशेषण भी क्रिया, विशेषण या किसी और क्रिया-विशेषण की विशेषता बताने के लिये प्रयुक्त होता है। जैसे, "पु^{४}" निषेधार्थक क्रिया-विशेषण है, और "हन्^{3}" मात्रावाचक क्रिया-विशेषण है। उदाहरण के लिये: वो^{3} पु^{४} काव्^{१}, था^{1} हन्^{3} काव्^{१}।

हिन्दी की तरह, चीनी क्रिया-विशेषण क्रिया के पहले लगाया जाता है। (इस क्षेत्र में अंग्रेज़ी के साथ इसके प्रभेद पर ध्यान देना चाहिये।)

१-४. सर्वनाम : सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा की तरह ही होता है, और वह संज्ञा के स्थान पर भी प्रयुक्त होता है; जैसे, वो^{3}, नि^{3}, था^{१}। चीनी संज्ञा या सर्वनाम के साथ कोई विभक्ति जोड़ी नहीं जाती, यानी चीनी भाषा में शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं होता, उदाहरण के लिये "था^{१}" इस शब्द का अर्थ है "वह" (पुल्लिग), "वह" (स्त्रीलिंग), "वह" (नपुंसकलिग), अर्थात् तीनों लिंगों में इसका रूप एक ही रहेगा।

पुरुषवाचक शब्दों को बहुवचन बनाने के लिए इसके अन्त में "मन्" प्रत्यय जोड़ा जाता है; जैसे,

वो^{3} मैं, मुझे वो^{3} मन् हम (लोग), हमें।
नि^{3} तुम, तुम्हें नि^{3} मन् तुम (लोग), तुम्हें।
था^{१} वह (पु०, स्त्री०, नपुं०) उसे, उसने
था^{१} मन् वे (लोग), उन्हें।

१-५. सहायक शब्द : सहायक शब्द का किसी अन्य शब्द, वाक्यांश या वाक्य का कोई विशेष व्यापार या स्वरूप बनाने के लिये प्रयोग किया जाता है। जैसे, सहायक "मा" वाक्य के अन्त में जोड़ने से वाक्य प्रश्नार्थक बन जाता है।

१-६. प्रश्नार्थक वाक्य : चीनी भाषा में निम्नलिखित उपायों से प्रश्नार्थक वाक्य बनाये जाते हैं :

(१) सहज और साधारण तरीका है वाक्य के अन्त में प्रश्न-वाचक सहायक शब्द "मा" जोड़ना। इस प्रकार के वाक्य में "मा" के जोड़ने से शब्दों के विन्यास में कोई परिवर्तन नहीं होता, जैसे :—

विधानार्थक वाक्य—था[1] हन्[3] माङ्[2] वह अधिक व्यस्त है।
प्रश्नार्थक वाक्य—था[1] हन्[3] माङ्[2] मा? क्या वह अधिक व्यस्त है?

(२) दूसरे प्रकार के प्रश्नार्थक वाक्य का रूप वैकल्पिक होता है। उसमें एक ही वस्तु के सकारार्थक तथा निषेधार्थक, दोनों पक्ष साथ-साथ रखे जाते हैं। प्रश्न का उत्तर देते समय दोनों में से कोई भी चुना जा सकता है। उच्चारण करते समय वाक्य के सकारार्थक भाग पर जोर देना चाहिये; जैसे,

नि[3] हाव्[3] पु[4] हाव्[3]? आप ठीक हैं या नहीं?
(या क्या आप सकुशल हैं।)

नि[3] माङ्[2] पु[4] माङ्[2]? आप व्यस्त हैं या नहीं?
(या क्या आप व्यस्त हैं?)

हिन्दी में भी इस तरह के वाक्य प्रचलित हैं, ऊपर के अनुवाद देखिये।

(३) तीसरे प्रकार में निषेधार्थक वाक्य के अंत में सहायक शब्द "मा" लगता है; जैसे,

विधानार्थक वाक्य—था[1] पु[4] माङ्[2] वह व्यस्त नहीं है।
प्रश्नार्थक वाक्य—था[1] पु[4] माङ्[2] मा? क्या वह व्यस्त नहीं है?

१-७. प्रश्नोत्तर : प्रश्न का उत्तर देते समय वक्ता की इच्छानुसार सकारार्थक या निषेधार्थक दोनों रूपों में से कोई भी

चुना जा सकता है; जैसे,

प्रश्न : था^{1} काव्^{1} पु^{4} काव^{1} ? क्या वह लम्बा है ?
(वह लम्बा है या नहीं ?)

उत्तर : १-था^{1} हन्^{3} काव्^{1} । हां, वह बहुत लम्बा है ।
२-था^{1} पु^{4} काव^{1} । नहीं, वह लम्बा नहीं है ।

अगर जवाब से साफ-साफ पता चल जाए तो उत्तर देते समय पूरे वाक्य को दुहराना नहीं पड़ता; जैसे,

प्रश्न : नि^{3} माङ्^{2} मा ? क्या तुम व्यस्त हो ?

उत्तर : १-माङ्^{2} हां (या हां, मैं व्यस्त हूं)
२-पु^{4} माङ्^{2} नहीं (या नहीं, मैं व्यस्त नहीं हूं)

हिन्दी में उत्तर देते समय जहां "हां" या "नहीं" का प्रयोग होता है उस क्षेत्र में यह ध्यान में रखना चाहिये कि चीनी भाषा में "हाँ" और "नहीं" के प्रतिशब्द इन अर्थों में जवाब देते समय इस्तेमाल नहीं होते ।

१-८. "पु^{4}" : "पु^{4}" एक निषेधार्थक क्रिया-विशेषण है। वाक्य को निषेधार्थक रूप देने के लिये क्रिया या विशेषण के पहले "पु^{4}" जोड़ा जाता है; जैसे—

नि^{3} पु^{4} माङ्^{2} मा ?
वो^{3} पु^{4} माङ्^{2} ।
था^{1} पु^{4} हन्^{3} काव्^{1} ।

१-९. तीसरे स्वर का परिवर्तन : अगर तीसरे स्वर के बाद, एक और तीसरा स्वर आए, तो पहला तीसरा स्वर दूसरा स्वर हो जाता है। (लिखने में अब भी उस पर तीसरे स्वर का चिन्ह लगाया जाता है ।) जैसे, हन्^{3} हाव्^{3}=हन्^{2} हाव्^{3}, नि^{3} हाव्^{3} =नि^{2} हाव्^{3}। अगर साथ-साथ तीन तीसरे स्वर आएं तो सिर्फ अन्तिम स्वर ही तीसरे स्वर में पढ़े जाते हैं; जैसे, वो^{3} हन्^{3} हाव्^{3}=वो^{2} हन्^{2} हाव्^{3} ।

पाठ-२

क : नि^{3} याव्^{४} माय्^{3} पाव्^{४} मा ?	क्या तुम अखबार खरीदना चाहते हो ?
ख : वो^{3} पु^{२} याव्^{४} माय्^{3} पाव्^{४} ।	नहीं, मैं अखबार खरीदना नहीं चाहता ।
क : नि^{3} पु^{२} खान्^{४} पाव्^{४} मा ?	क्या तुम अखबार नहीं पढ़ते?
ख : पु^{२} खान्^{४}, वो^{3} खान्^{४} षू^{१} ।	नहीं, मैं नहीं पढ़ता । मैं किताबें पढ़ता हूं ।
क : नि^{3} माय्^{3} षू^{१} मा ?	क्या तुम किताब खरीदोगे ?
ख : पु^{४} माय्^{3} । षू^{१} थाय्^{४} क्वै^{४} ।	नहीं, मैं किताब नहीं खरीदूंगा । किताबों की कीमत बहुत ज्यादा है ।
क : नि^{3} माय्^{3} पि^{3} पु^{४} माय्^{3} ?	क्या तुम कलम खरीदोगे ?
ख : मै^{3}क्वो^{२} पि^{3} क्वै^{४} पु^{२} क्वै^{४} ?	क्या अमरीकी कलम कीमती हैं ?
क : पु^{४} तौ^{१} क्वै^{४} ।	सारे कीमती नहीं हैं ।
ख : तौ^{१} हाव्^{3} खान्^{४} मा ?	क्या सारे देखने में अच्छे हैं?
क : तौ^{१} हन्^{3} हाव्^{3} खान्^{४} ।	हाँ, सभी देखने में अच्छे हैं ?
नि^{3} याव्^{४} पु^{२} याव्^{४} ?	तुम्हें चाहिए या नहीं ?
ख : वो^{3} याव्^{४} ।	हाँ, चाहिए ।

क : नि^{3} पु^{4} माय्^{3} चुङ्^{1}क्वो^{2} पि^{3} मा? — क्या तुम चीनी कलम नहीं खरीदोगे ?

ख : पु^{4} माय्^{3} — नहीं ।

नये शब्द

संज्ञा (सं)

षू^{1}	किताब, पुस्तक
पाव्^{4}	अखबार, समाचार पत्र
पि^{3}	कलम, पेन्सिल, कोई भी लेखनी
चुङ्^{1}क्वो^{2}	चीन (देश)
मै^{3} क्वो^{2}	अमरीका (संयुक्त राष्ट्र)
इन्^{4}तु^{4}	भारत

क्रिया-विशेषण (क्रि० वि०)

थाय्^{4}	अतिरिक्त, ज्यादा, अत्यधिक
तौ^{1}	सब, सारा; उभय, दोनों

विशेषण (वि०)

हाव्^{3} खान्^{4}	देखने में सुन्दर, खूबसूरत
क्वै^{4}	कीमती

क्रिया (क्रि०)

याव्^{4}	चाहना
माय्^{3}	खरीदना
खान्^{4}	देखना, पढ़ना (अखबार आदि)

उदाहरण माला

(क) क्रि० कर्मवाक्य

नमूने : कर्ता क्रि० कर्म

नि^{3} मन् माय्^{3} पाव्^{4} मा ?	क्या तुम (लोग) समाचार पत्र खरीदोगे ?
वो^{3} मन् पु माय्^{3} पाव्^{4}	नहीं, हम नहीं खरीदेंगे।

कर्ता	**(निषेध)**	**क्रि०**	**कर्म**	**(स० शब्द)**
वो^{3}	(पु^{2})	याव्^{4}	षू^{1}	(मा)
नि^{3}	(पु^{4})	माय्^{3}	पाव्^{4}	(मा)
था^{1}	(पु^{2})	खान्^{4}	पि^{3}	(मा)

१. नि^{3} माय^{3} षू^{1} मा ? वो^{3} पु^{4} माय्^{3} षू^{1}	क्या तुम किताब खरीदोगे ? नहीं मैं नहीं खरीदूँगा।
२. नि^{3} मन् याव्^{4} पि^{3} पु^{2} याव्^{4} ?	क्या तुम (लोग) कलम चाहते हो ?
वो^{3}मन् याव्^{4} पि^{3}	हां, हम कलम चाहते हैं।
३. नि^{3} खान्^{4} पु^{2} खान्^{4} चुङ्^{1} क्वो^{2} पाव्^{4} ? वो^{3} पु^{2} खान्^{4} चुङ्^{1} क्वो^{2} पाव्^{4}। वो^{3} खान्^{4} इन^{4} तु^{4} पाव्^{4}।	तुम चीनी समाचारपत्र पढ़ते हो या नहीं? मैं चीनी समाचारपत्र नहीं पढ़ता। मैं भारतीय समाचारपत्र पढ़ता हूं।
४. था^{1} मन् याव्^{4} माय्^{3} पाव्^{4}, पु^{2} याव्^{4} माय्^{3} षू^{1}।	वे समाचारपत्र खरीदना चाहते हैं। किताब खरीदना नहीं चाहते।
५. नि^{3} मन् पु^{4}माय्^{3} इन^{4} तु^{4} पि^{3} मा ? वो^{3} मन् पु^{4} माय्^{3}	क्या तुम (लोग) भारतीय कलम नहीं खरीदोगे ? हम

इन^{४} तु^{४} पि^{3} । इन^{४} तु^{४} पि^{3} थाय्^{४} क्वै^{४} ।	भारतीय कलम नहीं खरीदेंगे । भारतीय कलम बहुत कीमती हैं ।
६. नि^{3} याव्^{४} माय^{3} पि^{3} मा ?	क्या तुम कलम खरीदना चाहते हो ?
वो^{3} याव्^{४} माय्^{3} पि^{3} ।	हाँ, मैं खरीदना चाहता हूं ।

(ख) क्रियाविशेषण "तौ^{१}" का प्रयोग

नमूने :

(१-४) वो^{१} मन् तौ^{१} माय्^{3} पाव्^{४}	हम सब लोग समचारपत्र खरीदते हैं ।
(५-८) वो^{3}मन् पु^{४} तौ^{१} माय्^{3} पाव्^{४}	हममें से सब लोग समाचारपत्र नहीं खरीदते हैं । (यानी कुछ लोग खरीदते हैं) ।
(९-१०] वो^{3} मन् तौ^{१} पु^{४} माय्^{3} पाव्^{४}	हममें से कोई भी समाचारपत्र नहीं खरीदता है ।
१. नि^{१} मन् तौ^{१} हाव्^{3} मा ?	आप कैसे हैं ?
२. वो^{3}मन् तौ^{१} हन्^{3} माङ्^{२}	हम सभी बहुत व्यस्त हैं ।
३. नि^{१}मन् तौ^{१} याव्^{४} माय्^{3} षू^{१} मा ?	क्या तुम सभी किताब खरीदना चाहते हो ?
४. इन^{४} तु^{४} पि^{3} तौ^{१} हन्^{3} क्वै^{४}	सभी भारतीय कलम बहुत कीमती हैं ।
५. था^{१}मन् पु^{४} तौ^{१} काव्^{१}	उनमें से सभी लम्बे नहीं हैं।
६. नि^{3}मन् पु^{४}तौ^{१} खान्^{४} पाव्^{४} मा ?	क्या तुममें से सभी समाचारपत्र नहीं पढ़ते ?

७. था^{1}मन् पु^{4} तौ^{1} खान्^{4} षू^{1}	उनमें से सभी किताब नहीं पढ़ते ।
८. इन^{4}तु^{4} षू^{1} पु^{4} तौ^{1} हर्^{3} क्वै^{4} मा?	क्या सभी भारतीय किताबें बहुत कीमती नहीं हैं ?
९. वो^{3}मन् तौ^{1} पु^{4} हन् लै^{4}	हम सब अधिक थके हुए नहीं हैं ।
१०. वो^{3}मन् तौ^{1} पु^{2} खान्^{4} पाव्^{4}	हममें से कोई भी समाचार पत्र नहीं पढ़ता ।

व्याकरण

२-१. क्रियापद (विधेय)-वाक्य का शब्द-क्रम : क्रियापद-वाक्य का शब्द-क्रम अंग्रेजी जैसा होता है । निम्नलिखित शब्द-क्रम इसका मूलभूत आधार माना जाता है :

कर्ता (उद्देश्य)	क्रिया-पद	कर्म	(क० क्रि० कर्म)

१. वो^{3} खान्^{4} षू^{1} — मैं किताब पढ़ता हूँ ।

२. था^{1} याव्^{4} माय^{3} पि^{3} — वह कलम खरीदना चाहता है ।

हिन्दी के क्रियापद-वाक्य के साथ इसके प्रभेद का ध्यान रखना चाहिए । हिन्दी में क्रियापद कर्म के बाद प्रयुक्त होता है ।

२-२. याव^{4} : "याव्^{4}" क्रियापद है, लेकिन यह एक सहायक क्रिया भी है । सहायक क्रिया की कुछ विशेषताएं हैं । उसका प्रयोग क्रियापद और क्रियाविशेषण के पहले किया जाता है, लेकिन दुहरा कर नहीं किया जाता और उसके बाद कोई प्रत्यय या संज्ञावाचक कर्म नहीं आता । सहायक-क्रिया मुख्य क्रियापद को कार्य सम्पादन करने में सहायता देती है या उसकी कमी पूरी करती है, जैसे,

नि^{3} याव्^{4} पि^{3} मा ? — क्या तुम कलम चाहते हो ?

(क्रिया-पद)

नि^{3} याव्^{४} माय्^{3} पि^{3} मा ? क्या तुम कलम खरीदना चाहते हो ?
(सहायक क्रिया)

यहाँ "याव्^{४}" मनोगत इच्छा या इरादा सूचित करता है ।

२-३. कर्म के साथ वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य : अगर वाक्य में कर्म हो तो वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य का शब्द-क्रम दो प्रकारका होता है :—

(१) कर्म या तो सकारार्थक क्रियापद और निषेधार्थक क्रियापद के बीच में आ सकता है । जैसे :—

नि^{3} माय्^{3} पाव्^{४} पु माय्^{3} ? क्या तुम समाचारपत्र खरीदोगे? (अथवा तुम समाचारपत्र खरीदोगे या नहीं) ?

इस तरह के वाक्य अधिक इस्तेमाल किये जाते हैं ।

(२) या क्रियापदों के बाद आ सकता है, जैसे,

नि^{3} माय्^{3} पु^{४} माय्^{3} पाव्^{४} ? क्या तुम समाचारपत्र खरीदोगे?

पाठ-३

वो^{3}मन् यो^{3} प्याव्^{3}। था मै^{2} यौ।	हमारे पास कलाई घड़ियां हैं। उसके पास नहीं हैं।
था^{1} छिङ्^{3} वो^{3} मन् कै^{3} था^{1} प्याव्^{3}। वो^{3}मन् कै^{3} था पु^{4} कै^{3} था^{1}? वो^{3} मन् पु^{4} कै^{3} था^{1}।	वह एक कलाईघड़ी देने के लिए हमसे अनुरोध कर रहा है। हम उसे घड़ी दें या नहीं? नहीं, हम नहीं देंगे।
था^{1} याव्^{4} कै^{3} वो^{3}मन् छ्येन्^{2}। वो^{3}मन् पु^{2} याव्^{4} छ्येन्^{2}, वो^{3} मन् यौ^{3} छ्येन्^{2}।	वह हमें पैसे देना चाहता है। हम पैसे नहीं चाहते (क्योंकि) हमारे पास पैसे हैं।
प्याव्^{3} हाव्^{3}। वो^{3}मन् तौ^{1} शि^{3} ह्‌वान्^{1} प्याव्^{3}। प्याव्^{3}हाव्^{3}खान्^{4}, ये^{3} पु^{4} हन्^{3} क्वै^{4}।	कलाई घड़ी अच्छी होती है। हम सब लोग कलाई घड़ी पसन्द करते हैं। कलाई घड़ी सुन्दर होती है, और ज्यादा कीमती भी नहीं होती।

नये शब्द

गणना-वाचक अंक

इ^{1}—एक
अळ^{4}—दो
सान्^{1}—तीन
स्च्—चार
ऊ^{3}—पाँच
ल्यु^{4}—छः
छि^{1}—सात
पा^{1}—आठ

च्यु^{3} —नौ

षृ^{2}—दस

षृ^{2}इ^{1}—ग्यारह

षृ^{2} अळ^{4}—बारह, आदि

अळ^{4} षृ^{2}—बीस

अळ^{4} षृ^{2} इ^{1}—इक्कीस, इत्यादि

इत्यादि

संज्ञा (सं०)

छ्येन्^{2}—धन, पैसा (पैसे)

प्याव्^{3}—कलाई घड़ी

क्रिया विशेषण (क्रि० वि०)

ये^{3}भी, और क्रिया (क्रि.)

कै^{3}—देना

यौ^{3}—के पास होना

मै^{2} यौ^{3}—के पास नहीं होना

(यौ^{3} का निषेधार्थक रूप)

शि^{3}ह्वान्^{1}—पसन्द करना या होना

छिङ्^{3}—निमंत्रित करना, कृपया, पूछना, निवेदन करना

श्ये^{4}-श्ये—धन्यवाद देना या करना, धन्यवाद

उदाहरण-माला

(क) मुख्य और गौण कर्म युक्त वाक्य

कर्ता	निषेध	क्रि०	गौण कर्म	मुख्य कर्म
वो^{3}	(पु^{4})	कै^{3}	नि^{3}	छ्येन्^{2}
वो^{3}मन्		याव्^{4} कै^{3}	नि^{3}मन्	षू^{1}
,,		,, ,,	था^{1}	चुङ्^{1} क्वो^{2} पि^{3}
,,		,, ,,	था^{1}मन्	मै^{3} क्वो^{2} पाव्
था^{1}	(पु^{4})	कै^{3}	वो^{3}	षू^{1}
था^{1}मन्		याव्^{4}कै^{3}	वो^{3}मन्	प्याव्^{3}
छिङ्^{3} नि^{3}		कै^{3}	वो^{3}	पि^{3}

नि3 मन	कै3	था1	प्याव्3
,,	,,	वो3 मन्	छ्येन्2
,,	,,	था1 मन्	षू1

१. था1 कै3 वो3 पि3 । वो3 श्ये4-श्ये था1 ।	उसने मुझे (एक) कलम दी । मैंने उसे धन्यवाद दिया ।
२. था1 मै2 यौ छ्येन्2 । वो3 याव्4 कै3 था1 छ्येन्2 ।	उसके पास पैसे नहीं हैं । मैं उसे पैसे देना चाहता हूं ।
३. नि3 मन् कै3 था1 छ्येन् पु4 कै3 ?	तुम (लोग) उसे पैसे दोगे या नहीं ?
४. था1 याव्4 मैं3 क्वो2 पि3 । वो3 कै3 था1 चुङ्1 क्वो2 पि3 ।	वह अमरीकी कलम चाहता था । मैंने उसे चीनी कलम दी (अथवा वह अमरीकी कलम चाहता है । मैं उसे चीनी कलम दूंगा) ।
५. छिङ्3 नि3 कै3 वो3 मन् पि3, ये3 कै3 वो3 मन् प्याव्3 ।	कृपया तुम हमें कलम दो और कलाई घड़ी भी दो ।
६. था1 कै3 वो3 षू1, पु4 कै3 वो3 पि3 ।	वह मुझे किताब देगा (या दे रहा है), कलम नहीं देगा (या नहीं दे रहा है)

(ख) अपवृत्त वाक्य

नमूने :

कर्म	कर्ता	क्रि०	
षू1, पाव्4	वो3 तौ1	खान्4	मैं किताब और समाचार पत्र दोनों पढ़ता हूँ ।

१. चुङ्1 क्वो2 षू1, मैं3 क्वो2 षू1, मैं चीनी और अमरीकी दोनों

वो^{3} तौ^{1} खान्^{4} ।	(भाषाओं की) किताबें पढ़ता हूं ।
२. मै^{3} क्वो^{2} पि^{3}, चुङ्^{1} क्वो^{2} पि^{3} वो^{3} तौ^{1} पु^{4} माय्^{3}	अमरीकी या चीनी कलम, मैं कोई भी नहीं खरीदूंगा ।
३. षू^{1}, पाव्^{4}, वो^{3} तौ^{1} याव्^{4} माय्^{3} । पि^{3} वो^{3} ये^{3} याव्^{4} माय्^{3} ।	मैं किताब और समाचार पत्र दोनों खरीदना चाहता हूँ । मैं कलम भी खरीदना चाहता हूँ ।
४. चुङ्^{1} क्वो^{2} पाव्^{4}, नि^{3} खान्^{4} पु^{2} खान्^{4} ?	तुम चीनी समाचारपत्र पढ़ते हो या नहीं ?
५. पि^{3}, नि^{3} मन् तौ^{1} यौ^{3} मा ?	क्या तुम सभी के पास कलम है?
६. चुङ्^{1} क्वो^{2} षू^{1}, नि^{3}मन् तौ याव्^{4} खान्^{4} मा ?	क्या तुम सभी लोग चीनी किताब पढ़ना चाहते हो ?

व्याकरण

३-१ द्विकर्मक क्रियापद-वाक्य का गौण कर्म :

जिस वाक्य में विधेय एक क्रियापद और दो कर्मों से बनता है उसे द्विकर्मक क्रियापद-वाक्य कहते हैं । चीनी भाषा में क्रियापद कर्म के पहले आता है, और गौण कर्म (जो आमतौर पर प्राणी-बोधक शब्द होता है) मुख्य कर्म (जिससे आमतौर पर किसी वस्तु का बोध होता है) के पहले आता है; जैसे,

वो^{3} कै^{3} नि^{3} षू^{1}	मैं तुम्हें किताब देता हूँ । (शाब्दिक : मैं देता हूँ तुम्हें किताब)

'वो^{3}' कर्ता है, 'कै^{3}' क्रियापद, 'नि^{3}' गौण कर्म और 'षू^{1}' मुख्य कर्म । हिन्दी और चीनी भाषा में द्विकर्मक क्रियापद विधेय-वाक्य में तुलनात्मक शब्द-क्रम इस प्रकार हैं :

हिन्दी : कर्ता (उद्देश्य)	गौण कर्म	मुख्य कर्म	क्रियापद
मैं	तुम्हें	किताब	देता हूं

चीनी : कर्ता (उद्देश्य)	क्रियापद	गौण कर्म	मुख्य कर्म
वो^{3}	कै^{3}	नि^{3}	षू^{1}
(मैं)	(देता हूँ)	(तुम्हें)	(किताब)

३-२. एकाधिक कर्म : जब किसी क्रियापद के साथ दो या ज्यादा कर्म होते हैं (मुख्य और गौण कर्म नहीं), तब उस क्रियापद को सभी कर्मों के साथ दुहराते समय विधेय के साथ 'ये^{3}' का प्रयोग किया जाता है; जैसे,

वो^{3} खान्^{4} षू^{1}, ये^{3} खान्^{4} पाव्^{4}	मैं किताब पढ़ता हूँ, समाचार-पत्र भी पढ़ता हूँ।
था^{1} याव्^{4} माय्^{3} मै^{3} क्वो^{2} पि^{3}, ये^{3} याव्^{4} माय्^{3} चुङ्^{1}क्वो^{2} पि^{3}।	वह अमरीकी कलम खरीदना चाहता है, चीनी कलम भी खरीदना चाहता है।

३-३, ये^{3} : 'ये^{3}' एक क्रिया-विशेषण है, और इसे भी विधेय के पहले रखा जाता है। अतः यह कभी नहीं कहना चाहिए—ये^{3} पाव्^{4} खान्^{4}, ये^{3} प्याव् पु^{4} शि^{3} ह्वान्^{1}, इत्यादि।

३-४. अपवृत्त कर्म : हम लोग यह पहले सीख चुके हैं कि चीनी भाषा में क्रियापद विधेय-वाक्य का सामान्य शब्दक्रम इस प्रकार है :

कर्ता (उद्देश्य)—(क्रिया-विशेषण रूपी विशेषता-सूचक) क्रिया—कर्म

लेकिन किन्हीं अवस्थाओं में कर्म कर्ता (उद्देश्य) के पहले रखा जा सकता है और इस अवस्था में वह कर्म वाक्य का विषय बन जाता है। वाक्य में कर्म पर ज़ोर देने के लिए हम कर्म को अपनी जगह से हटा कर वाक्य के शुरू में रख सकते हैं; जैसे,

षू^{1} वो^{3} खान्^{4}, ख^{3}षृ पाव्^{4} वो^{3} पु^{2} खान्^{4}।	मैं किताब पढ़ता हूं, लेकिन समाचारपत्र नहीं पढ़ता।

यदि कर्म संयुक्त कर्म हो, बहुवचन में हो अथवा श्रेणीबद्ध हो तो विधेय के (अथवा क्रियापद के) पहले क्रियापद विशेषण 'तौ'^{1} का प्रयोग करना पड़ता है; जैसे

षू^{1}, पाव्^{4}, वो^{3}, तौ^{1}, खान्^{4}	मैं किताब और अखबार दोनों पढ़ता हूँ।
षू^{1}, प्याव्^{3}, पि^{3}, वो^{3} तौ^{1} पु^{4} शि^{3} ह्वान्^{1}।	किताब, कलाई घड़ी या कलम, मुझे (इनमें से) कोई भी पसन्द नहीं है।

३-५. तौ^{1} : 'तौ^{1}' के हिन्दी अर्थ हैं 'सब' (सभी)। हिन्दी में "सब' का प्रयोग विशेषण, विशेष्य या सर्वनाम के रूप में होता है, लेकिन चीनी भाषा में 'तौ^{1}' एक सीमावाचक क्रियाविशेषण है। चीनी भाषा में क्रियाविशेषण (हिन्दी की तरह) क्रिया के पहले आता है; जैसे,

वो^{3} मन् तौ^{1} हन्^{3} हाव्^{3}	हम लोग बहुत अच्छी तरह हैं।
था^{1} मन् तौ^{1} षृ श्येन्^{1}षङ्।	वे सभी अध्यापक हैं।

जहां तक अर्थ का प्रश्न है, 'तौ^{1}' उसी वाक्य में आए हुए प्राणियों तथा वस्तुओं की ओर संकेत करता है। वाक्यरचना में उसका स्थान उद्देश्य के बाद और विधेय के पहले होता है; जैसे,

था^{1}मन् तौ^{1} पु^{4} हन्^{3} हाव्^{3}	वे सभी अधिक ठीक नहीं हैं।
मै^{3} क्वो^{2} पि^{3}, चुङ्^{1}क्वो^{2} पि^{3} वो^{3} मन् तौ^{1} याव्^{4} माय्^{3}।	हम लोग अमरीकी कलम और चीनी कलम दोनों खरीदना चाहते हैं।

अगर ऐसे वाक्य का कर्ता एक वचन में हो तो "तौ^{1}" अपवृत्त कर्म से सम्बन्ध रखता है; जैसे,

षू^{1}, पाव्^{4}, वो^{3} तौ^{1} खान्^{4}	मैं किताब और अखबार दोनों पढ़ता हूं।

अगर कर्ता बहुवचन में हो तो संदर्भ से वाक्य का अर्थ-निर्णय होगा; जैसे,

षृ^{1}, पात्र्^{4}, वो^{3} मन् तौ^{1} खान्^{4} हम किताब और समाचारपत्र दोनों पढ़ते हैं। (अथवा हम सभी किताबें और समाचारपत्र पढ़ते हैं।)

३-६. ग्यारह से निन्यानबे तक के गणनावाचक अंकों की गणना: हिन्दी की तरह चीनी भाषा में संख्या गिनने के लिए दशमिक प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इ^{1}, अळ^{4}, सान्^{1}, स्च्^{4}, ऊ^{3}, ल्यु^{4}, छि^{1}, पा^{1}, च्यु^{3} और षृ^{2} के अलावा षृ^{2} इ^{1}, षृ^{2} अळ^{4} आदि अंक भी हैं। ११ से ९९ तक के अंक निम्नलिखित तीन तरीकों से बनते हैं :

(१ ग्यारह से उन्नीस तक के अंक जोड़ से बनते हैं :

१० धन १, बराबर है ११ 'षृ^{2}इ^{1}'

१० धन २, बराबर है १२ 'षृ^{2}अळ^{4}'

१० धन ९, बराबर है १९ 'षृ^{2} च्यु^{3}'

(२)-२०, ३०, ४०, ५०, ६०, ७०, ८०, ९० गुणन द्वारा बनाए जाते हैं :

१० को २ से गुणा करने से २० हो जाता है 'अळ^{4} षृ^{2}'

१० को ३ से गुणा करने से ३० होता है—'सान्^{1} षृ^{2}'

१० को ५ से गुणा करने से ५० होता है—'ऊ^{3} षृ^{2}'

(३) दसियों के बीच के अंक पहले गुणा करके, फिर जोड़ कर बनाए जाते हैं :

दस को दो से गुणा करके और फिर दो जोड़ कर २२ बनता है (१०×२+२) 'अळ^{4}षृ^{2}-अळ^{4}'

दस को दो से गुणा करके और फिर छः जोड़ कर २६ बनता है (१०×२+६) अळ^{4}-षृ^{2}-ल्यु^{4}

३-७. मैं^{2} : 'मैं^{2}' एक विशेष क्रियापद-विशेषण है जो 'यौ^{3}' के साथ प्रयुक्त होकर उसे निषेधार्थक बनाता है। 'यौ^{3}' का निषेधार्थक रूप है 'मैं^{2} 'यौ^{3}' न कि 'पु^{4} यौ^{3}'। 'यौ^{3}' के साथ 'पु^{4}' कभी प्रयुक्त नहीं होता।

३-८. ये^{3} और पु^{4} : 'पु^{4}' की तरह 'ये^{3}' भी क्रियाविशेषण है, लेकिन जहाँ दोनों साथ-साथ होते हैं वहाँ 'ये^{3} पु^{4}' के पहले आता है। 'पु^{4}' के ठीक बाद हो क्रिया आती है। शब्द-क्रम इस तरह होगा :

कर्ता पु^{4} क्रि. क. ये^{3} पु^{4} क्रिया कर्म

वो^{3} पु^{2} खान्^{4} षू^{1}, ये^{2} पु^{2} खान्^{4} पाव्	मैं किताबें नहीं पढ़ता, और न तो अखबार। (अथवा अखबार भी नहीं पढ़ता)।

पाठ-४

रन्^{2} रन्^{2} तौ^{1} शि^{3} ह्वान्^{1} प्याव्^{3} ख^{3}षृ रन्^{2} रन्^{2} पु^{4} तौ^{1} यौ^{3} प्याव्^{3} ।	हर आदमी कलाई घड़ी पसन्द करता है, लेकिन हर आदमी के पास कलाई घड़ी नहीं है ।
यौ^{3}त रन्^{2} यौ^{3} प्याव्^{3}, यौ^{3} त रन्^{2} मै^{2} यौ^{3} ।	कुछ लोगों के पास कलाई घड़ियां हैं; कुछ लोगों के पास नहीं हैं ।
यौ^{3} त रन्^{2} शि^{3} ह्वान्^{1} ता^{4} प्याव्^{3}, यौ^{3} त रन्^{2} शि^{3} ह्वान^{1} श्याव्^{3} प्याव्^{3} ।	कुछ लोग बड़ी कलाई घड़ी पसन्द करते हैं, कुछ लोग छोटी कलाई घड़ी ।
वो^{3} यौ^{3} ल्याङ्^{3}क हाव्^{3} फङ^{2} यौ । था^{1} मन् ल्याङ्^{3}क रन्^{2} तौ^{1} यौ^{3} प्याव्^{3} ।	मेरे दो अच्छे मित्र हैं । उन दोनों के पास कलाई घड़ियाँ हैं ।
चे^{4}क फङ्^{2}यौ यौ^{3}इ^{2}क ता^{4}प्याव्^{3} ।	इस मित्र के पास एक बड़ी कलाई घड़ी है ।
था^{1} ष्वो^{1} ता^{4} प्याव्^{3} हाव्^{3} ।	वह कहता है कि बड़ी घड़ी अच्छी होती है ।
नै^{4}क फङ्^{2}यौ यौ^{3}इ^{2}क श्याव्^{3} प्याव्^{3} ।	उस मित्र के पास एक छोटी कलाई घड़ी है ।
था^{1} ष्वो^{1} श्याव्^{3} प्याव्^{3} हाव्^{3} ।	वह कहता है कि छोटी कलाई घड़ी अच्छी होती है ।
वो^{3} ष्वो^{1} ता^{4} प्याव्^{3} श्याव्^{3}प्याव्^{3}	मैं कहता हूं बड़ी घड़ी छोटी

तौ^{1} हाव्^{3} ।	घड़ी दोनों ही अच्छी होती हैं ।
नि^{3} ष्वो^{1} नै^{3}क हाव्^{3} ?	तुम किसको अच्छी कहते हो ?

नये शब्द

(गतिशील) क्रि० वि० **निश्चयवाचक सर्वनाम**

ख^{3}षृ	लेकिन	चे^{4} (च^{4})	यह (यहां)
		ने^{4} (ना^{4})	वह (वहां), दूसरा
		नै^{3}	कौन सा ?

मापक शब्द (मा०) **विशेषण (वि०)**

क	(प्राणियों अथवा वस्तुओं से संबद्ध)	ता^{4}	बड़ा
		श्याव्^{3}	छोटा
पन्^{3}	प्रति, (किताबों से संबद्ध)	त्वै^{4}	ठीक (होना) शुद्ध (होना)

संज्ञा (सं) **क्रिया (क्रि०)**

रन्^{2}	आदमी	ष्वो^{1}	कहना
फ्ङ्^{2}यौ	दोस्त, मित्र	तुङ्^{3}	समझना
च्वो^{1} च्	मेज़		
इ^{3}च्	कुर्सी		
यौ^{3}त	कुछ, कोई-कोई		
रन्^{2} रन्^{2}	हर आदमी (केवल कर्त्ता के रूप में), प्रत्येक व्यक्ति		

उदाहरण माला

(क)—निश्चयार्थक सर्वनाम-युक्त संज्ञा

नि० सर्व०-मापक	संज्ञा	नि० सर्व-मापक	संज्ञा
चे^{4} - क	रन्^{2}	चे^{4}क	च्वो^{1} च्
ने^{4} - क	फङ्^{2} यौ	ने^{4}क	इ^{3}च्
नै^{3} - क (?)	पि^{3}	नै^{3}क (?)	इ^{3}च्

१. चे^{4}क च्वो^{1}च् थाय्^{4} श्याव् । नि^{3}यौ^{3} ता च्वो^{1}च् मैं^{2} यौ^{3} ?	यह मेज़ बहुत छोटी है । तुम्हारे पास बड़ी मेज़ है या नहीं?
२. वो^{3} यौ^{3} ल्याङ्^{3}क फङ्^{2} यौ । चे^{4}क यौ^{3}छ्येन्^{2}, ने^{4}क मैं^{2} यौ छ्येन्^{2} ।	मेरे दो मित्र हैं । यह मित्र धनवान हैं, (लेकिन) वह धनवान नहीं है ।
३. ने^{4}पन्^{3}षू^{1}पु^{4}हाव्^{3}, ख्^{3}षृ चे^{4} पन्^{3} हन्^{3} हाव्^{3} ।	वह किताब अच्छी नहीं है, लेकिन यह बहुत अच्छी है ।
४. चे^{4}क रन्^{2} यौ^{3} प्याव्^{3} । ने^{4}क रन्^{2}ये^{3} यौ^{3} प्याव्^{3} । रन्^{2} रन्^{2} तौ^{1} यौ^{3} प्याव^{3} ।	इस आदमी के पास कलाई घड़ी है । उस आदमी के पास भी घड़ी है । प्रत्येक आदमी के पास घड़ी है ।
५. यौ^{3}त रन्^{2}शि^{3}ह् वान्^{1} चे^{4}क, यौ^{3}त रन्^{2}शि^{3}ह् वान ने^{4}क। नि^{3} च्वो^{1} नि^{3} शि^{3}ह् वान नै^{3} क ?	कुछ लोग इसको चाहते हैं । कुछ उसको चाहते हैं । तुम बताओ तुम कौन सा चाहते हो ।

(ख) अंक-युक्त संज्ञा

अंक	मापक	संज्ञा	अंक	मापक	संज्ञा
इ^{2}	क	रन्^{2}	च्यु^{3}	क	रन्^{2}
ल्याङ्^{3}	क	फङ्^{2} यौ	षृ^{2}	क	रन्^{2}
सान्^{1}	क	पि^{3}	षृ^{2} इ^{2}	क	रन्^{2}
स्च्^{4}	क	रन्^{2}	चि^{3}	क	रन्^{2}
ऊ^{3}	क	प्याव्^{3}	इ^{4}	पन्^{3}	षू^{1}
ल्यु^{4}	क	च्वो^{1} च्	ल्याङ्^{3}	पन्^{3}	षू^{1}
छि^{2}	क	इ^{3} च्	चि^{3}	पन्^{3} (?)	षू^{1}
पा^{2}	क	इ^{3} च्			

नमूने :

१. वो^{3} यौ^{3} इ^{2} क फ़ङ्^{2} यौ । — मेरा एक मित्र है । उसके

था[1] यौ[3] ल्याङ्[3] पन्[3] षू[1]	पास दो किताबें हैं ।
२. था[1] ष्वो[1] था[1] याव्[4] माय्[3] इ[2] क ता[4] च्वो[1] च्. । नि[3]मन् यौ[3] मै[2] यौ[3] ?	वह कहता है कि वह एक मेज़ खरीदेगा । तुम्हारे पास मेज़ है या नहीं ?
३. वो[3] यौ[3] प्याव्[3] । था[1] ये[3] यौ[3] प्याव्[3] । वो[3]मन् ल्याङ्[3]क रन्[2]तौ[1] यौ[3] प्याव् ।	मेरे पास कलाई घड़ी है । उसके पास भी है । हम दोनों के पास कलाई घड़ी है ।
४. था[1] याव्[4]कै[3] वो[3]मन् स्च्[4]क इ[3]च्., इ[2]क श्याव्[3]च्वो[1]च्. ।	वह हमें चार कुर्सियां और एक छोटी मेज़ देना चाहता है ।
५. था[1] ष्वो[1] था[1] यौ[3] स्च्[4]क प्याव्[3] । वो[3] याव्[4] छिङ्[3] था[1] कै[3] वो[3] इ[1]क ।	वह कहता है उसके पास चार कलाई घड़ियां हैं । मैं उससे एक मांगना चाहता हूँ ।
६. वो[3] याव्[4]माय्[3] इ[2]क इन्[4]तु[4] प्याव्[3], ख[3]षृ वो[3] मै[2] यौ छ्येन्[2] ।	मैं एक भारतीय कलाई घड़ी खरीदना चाहता हूं लेकिन मेरे पास पैसे नहीं हैं ।

(ग)—निश्चयवाचक सर्वनाम और अंक-युक्त संज्ञा

नि० सर्व०	अंक	मापक	संज्ञा	नि० सर्व०	अंक-मापक	संज्ञा
चे[4]	इ[2]	क	रन्[2]	चे[4]	इ[2]-पन्[3]	षू[1]
ने[4]	ल्याङ्[3]	क	फ्ङ्[2]यौ	ने[4]	ल्याङ्[3]-पन्[3]	षू[1]
नै[3]	सान्[1]	क	पि[3]	नै[3]	सान्[1] पन्[3]	षू[1]
नै[3]	स्च्[4]	क	रन्[2]	नै[3]	स्च्[4] पन्[3]	षू[1]

नैं^{3} ऊ^{3} क प्याव्^{3} नैं^{3} ऊ^{3} पन्^{3} षू^{1}

नैं^{3} ल्यु^{4} क च्वो^{1} च् नैं^{3} छि^{2} क इ^{3} च्

१. ने^{4}ल्याङ्^{3} क इन्^{4}तु^{4}रन्^{2} इ^{2}क यौ^{3}छ्येन्^{2}, इ^{2}क मैं^{2}यौ छ्येन^{2}।	उन दोनों भारतीयों में से एक धनवान है, दूसरा गरीब है। (या एक धनवान है, एक गरीब है।)
२. चे^{4}सान्^{1}पन्^{3} षू^{1} हन्^{3}हाव्^{3} ख^{3} षृ तौ^{1} थाय्^{4} क्वै^{4}।	ये तीनों किताबें बहुत अच्छी हैं, लेकिन सभी बहुत कीमती हैं।
३. चे^{4}षृ^{2}क रन्^{2}तौ^{1} याव्^{4} खान्^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} षू^{1}	ये सभी दस आदमी चीनी किताब पढ़ना चाहते हैं।
४. वो^{3}हन्^{3}शि^{3}ह् वान्^{1} ने^{4} ल्याङ्^{3} क रन्^{2}, ख^{3}षृ वो^{3} फङ्^{2}यौ पु^{4} शि^{3}ह् वान्^{1} था^{1}मन्।	मैं उन दोनों आदमियों को बहुत पसन्द करता हूं, लेकिन मेरा दोस्त उन्हें पसन्द नहीं करता।
५. चे^{4} ल्याङ्^{3}कइ^{3}च् वो^{3}पु^{4}-माय्^{3}। वो^{3} याव्^{4} माय्^{3} ने^{4} ल्याङ्^{3} क।	मैं इन दोनों कुर्सियों को नहीं खरीदूंगा। मैं उन दोनों को खरीदूंगा।

था^{1} माय्^{3} षू^{1}

था^{1} याव्^{4} माय्^{3} षू^{1}

था^{1} याव्^{4} माय्^{3} चुङ्^{1} क्वो षू^{1}

था^{1} याव्^{4} माय्^{3} ल्याङ्^{3} पन्^{3} चुङ्^{1}क्वो^{2} षू^{1}

था^{1} या^{1}व्^{4} मा^{1}य्^{3} चे^{4} ल्याङ्^{3}पन्^{3} चुङ्^{1} क्वो^{2} षू^{1}

था^{1} या^{1}व्^{4} खान्^{4} चे^{4} ल्याङ्^{3}पन्^{3} चुङ्^{1}क्वो^{2} षू^{1}

था^{1} हन्^{3} शि^{3} ह्वान्^{1} चे^{4} ल्याङ्^{3} पन्^{3} चुङ्^{1}क्वो^{2} षू^{1}

वो^{3} ये^{3} शि^{3}ह्वान्^{1} चे^{4} ल्याङ्^{3} पन्^{3} चुङ्^{1} क्वो^{2} षू^{1}

वो^{3} ये^{3} याव्^{4} माय्^{3} चे^{4} ल्याङ्^{3} पन्^{3} चुङ्^{1} क्वो^{2} षू^{1}

रन्^{2} रन्^{2} तौ^{1} शि^{3} ह्वान् चे^{4} ल्याङ्^{3} पन^{3} चुङ्^{1} क्वो^{2} षू^{1}
रन्^{2} रन्^{2} तौ^{1} याव्^{4} खान्^{4} चे^{4} ल्याङ्^{3} पन्^{3} चुङ्^{1} क्वो^{2} षू^{1}
रन्^{2} रन्^{2} ये^{3} तौ^{1} याव्^{4} माय्^{3} चे^{4} ल्याङ्^{3} पन्^{3} चुङ्^{1}क्वो^{2} षू^{1}

व्याकरण

४-१ संज्ञा : सर्वनाम की तरह (देखिए व्याकरण नोट १-४) संज्ञा को बहुवचन बनाने के लिए उसके बाद 'मन्' जोड़ा जा सकता है। लेकिन केवल पुरुषवाचक संज्ञाओं के बाद ही 'मन्' जोड़ा जा सकता है, जैसे 'वो^{3}मन्' 'नि^{3}मन्' आदि। अन्य संज्ञाओं के साथ 'मन्' नहीं लग सकता। हम 'षू^{1}मन्' (किताबें), 'पाव्^{4}मन्' (पत्रिकाएं) नहीं कह सकते।

४-२ संज्ञा कर्ता और कर्म दोनों ही रूप में प्रयुक्त हो सकती है। सर्वनाम की तरह संज्ञा के साथ भी कोई विभक्ति या प्रत्यय नहीं जोड़ा जाता। जब प्राणियों अथवा वस्तुओं की संख्या या परिमाण बताने की आवश्यकता होती है, तब संज्ञा के साथ संख्या या परिमाण-वाचक शब्द लगाया जाता है; जैसे कि हम कहते हैं,

वो^{3} यौ^{3} सान्^{1}क प्याव्^{3}	मेरे पास तीन कलाई घड़ियाँ हैं।
था^{1} याव्^{4} माय्^{3} ल्याङ्^{3} पन्^{3} षू^{1}	वह दो किताबें खरीदना चाहता है।

४-३ मापक शब्द : जिन शब्दों से प्राणियों अथवा वस्तुओं की संख्या-इकाइयों या परिमाण-इकाइयों का बोध होता है उन्हें संज्ञा-मापक शब्द कहते हैं। संज्ञा-मापक शब्द के पहले आमतौर से अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम या दोनों होते हैं, और इसके बाद संज्ञा स्वयं आती है या अनुपस्थित रहकर भी अपने को सूचित करती है (उदाहरणमाला १, २, और ३ देखिए)। हिन्दी में भी ऐसे मापक शब्दों के दृष्टान्त हैं—"एक **जोड़ा** जूता", "दो **ताव** कागज़", "पक्षियों का झुंड" इत्यादि।

मापक शब्द 'क^{4}' का प्रयोग सबसे व्यापक है, क्योंकि

इसका प्रयोग प्राणियों के सम्बन्ध में भी हो सकता है (उदाहरण के लिए 'रन्^{२}' का मापक शब्द 'क^{४}' है), और उन वस्तुओं के साथ भी हो सकता है जिनका कोई अपना विशेष मापक शब्द नहीं है। यहाँ तक कि वह किसी भी अन्य विशेष मापक शब्द के स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है, जैसे :

इ^{२}क रन्^{२}—एक आदमी। षृ^{२} अळ^{४}क पि^{3}—बारह पेन्सिलें। (हिन्दी की भोजपुरी बोली में ऐसे ही मापक शब्द हैं। "ठो (ठे)": एक ठो आदमी, चार ठो किताब (बही), पांच ठो रुपैया। कहीं कहीं "गो" भी प्रयुक्त होता है। बंगला भाषा में "टा", "टी", "खाना", "खानी" बहु-प्रचलित हैं)।

अनेक संज्ञाओं के अपने विशेष मापक शब्द निश्चित किये हुए हैं, इसलिए इनके साथ ये निर्धारित मापक शब्द जोड़ना अनिवार्य है। 'पन^{3}' एक ऐसा मापक शब्द है जो 'षू^{१}' (किताब) के साथ प्रयुक्त होता है।

नि^{3} याव्^{४} माय्^{3} चि^{3} पन्^{3} षू^{१} ?	तुम कितनी किताबें खरीदना चाहते हो ? (अथवा तुम किताब की कितनी प्रतियां खरीदना चाहते हो ?)
वो^{3} याव^{४} माय्^{3} सान्^{१} पन्^{3}।	मैं तीन (प्रतियां) खरीदना चाहता हूँ।

आधुनिक चीनी भाषा में आमतौर पर कोई भी अंक (जैसे इ^{१}) या कोई निश्चयवाचक सर्वनाम (जैसे 'चे^{४}' और 'ने^{४}') सीधे संज्ञा के साथ प्रयुक्त नहीं हो सकता। उसके और संज्ञा के बीच हमेशा एक मापक शब्द का प्रयोग होना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम 'इ^{४} षू^{१}' या 'ने^{४} इ^{3} च़्' नहीं कह सकते क्योंकि 'इ^{१}' और 'ने^{४}' के बाद एक मापक शब्द आना चाहिए। जैसे, इ^{४} पन्^{3} षू^{१} और ने^{४} क इ^{3} च़्।

४-४ निश्चयवाचक सर्वनाम चे^{4} और ने^{4} : निश्चयवाचक सर्वनाम ऐसे प्राणियों अथवा वस्तुओं को सूचित करता है जिनका संकेत पहले दिया गया हो। इन शब्दों का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए :

१. यदि किसी मापक शब्द के पहले कोई निश्चयवाचक सर्वनाम और अंक आये तो निश्चयवाचक सर्वनाम अंक के पहले रखना चाहिए। जैसे :

था^{1} याव्^{4} चे^{4} सान्^{1} क पि^{3} — वह इन तीन कलमों को चाहता है। (उदाहरण माला ३ देखिए।)

२. मापक शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम या अंक के साथ सीधे जोड़ दिया जाता है। जैसे :

चे^{4}क पि^{3}	यह कलम
ने^{4}क रन्^{2}	वह आदमी
सान्^{1} पन्^{3} षू^{1}	तीन आदमी

यदि कोई अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम न हो तो संज्ञा के पहले कोई मापकशब्द नहीं रह सकता। उदाहरण के लिए हम यह कभी नहीं कह सकते कि 'क^{4}रन्^{2} यौ^{3} छ्येन्^{2}'।

३. कुछ ऐसी संज्ञाएं भी हैं जिनके अंदर खुद ही मापक शब्द सी प्रकृति अथवा कार्य मौजूद रहता है, इसलिए उनके पहले अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम होते हुए भी मापक शब्द लगाने की जरूरत नहीं होती। जैसे 'इ^{4} न्येन्^{2}' (एक साल) (पाठ १३ देखिए) और 'चे^{4}ख^{4}' (यह पाठ)।

४-५ प्रश्नार्थक शब्द : पिछले पाठों में हम लोग तीन प्रकार

के प्रश्नार्थक वाक्य सीख चुके हैं (पाठ १)। अब हम प्रश्नवाचक सर्वनाम के प्रयोग से बने हुए वाक्यों का विवेचन करेंगे। 'नै^{3}' और 'चे^{4}' ऐसे दो सर्वनाम हैं। इनका प्रयोग करते समय दो बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

वाक्य में प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग करके प्रश्न किया जाता है। इसलिए जिस स्थान पर उत्तर अपेक्षित हो उसी स्थान पर प्रश्नवाचक सर्वनाम रखना चाहिए। जैसे :—

नि^{3} याव्^{4} नै^{3}क पि^{3}	तुम कौन सा कलम चाहते हो ?
वो^{3} याव्^{4} चे^{4}क पि^{3}	मैं इस कलम को चाहता हूँ।
नि^{6} माय्^{3} चि^{3} पन्^{3} षू^{1}?	तुम कितनी किताबें खरीदोगे ?
वो^{3}माय्^{3} सान्^{1} पन्^{3} षू^{1}।	मैं तीन किताबें खरीदूँगा।
नै^{3} पन्^{3} षू^{1} हाव्^{1} ?	कौन सी किताब अच्छी है ?
चे^{4} पन्^{3} षू^{1} हाव्^{3} ।	यह किताब अच्छी है।

ऊपर के वाक्यों में एक ही शब्द 'नै^{3}' दो भिन्न-भिन्न स्थानों पर यानी उद्देश्य और विधेय के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।

४-६ लुप्त संज्ञा : यदि संज्ञा द्वारा सूचित प्राणी अथवा वस्तु का उल्लेख संदर्भ में स्पष्ट रूप से पहले ही किया जा चुका हो तो अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम तथा मापक शब्द के बाद आने वाली संज्ञा छोड़ी जा सकती है। जैसे :

नि^{3} माय्^{3} नै^{3}क पि^{3} ?	तुम कौन सा कलम खरीदोगे?
वो^{3} माय्^{3} चे^{4}क।	मैं यह कलम खरीदूंगा।
नि^{3} याव्^{4} चि^{3}क पि^{3} ?	तुम कितने कलम चाहते हो ?
वो^{3} याव्^{4} ऊ^{3}क।	पाँच। (अथवा मैं पाँच कलम चाहता हूँ।)

४-७ विशेषण : विशेषण का विधेय के रूप में प्रयोग हम पहले ही सीख चुके हैं (पाठ १)। विशेषण किसी प्राणी या वस्तु का

रूप प्रगट करता है। अतः यह विशेष्य की विशेषता बताने के लिए भी प्रयुक्त होता है, जैसे, 'ता^{4} च्वो^{1} च्' (बड़ी मेज़), 'श्याव्^{3}इ^{3} च्' (छोटी कुर्सी), 'हाव्^{3} रन्^{2}' (अच्छा आदमी), 'हाव्^{3} फङ्^{2}यौ' (अच्छा मित्र) इत्यादि।

४-८ क्रिया विशेषण (क्रि० वि०) ख^{3} षृ : क्रिया विशेषणों का प्रयोग क्रियापद के पहले और कर्त्ता के बाद होता है अर्थात् इनका स्थान विधेय में होता है, 'हन्^{3}', थाय्^{4}, 'तौ^{1}', 'ये^{3}' आदि इन्हीं क्रिया विशेषणों में से है। लेकिन कुछ क्रिया विशेषण ऐसे होते हैं जो क्रियापद के पहले भी प्रयुक्त होते हैं और वाक्य के कर्त्ता के पहले भी। ख^{3}षृ उन्हीं क्रिया विशेषणों में से एक है। जैसे :

वो^{3} यौ^{3} छ्येन^{2}' ख^{3}षृ था^{1} मँ^{2}यौ छ्येन्^{2}

इस वाक्य को हम ऐसे भी लिख सकते हैं : 'वो^{3} यौ^{3} छ्येन्^{2}, था^{1} ख^{3}षृ मँ^{2}यौ छ्येन्^{2}

४-९ विशेषण के रूप में सर्वनाम और संज्ञा : कुछ संज्ञाएं तथा सर्वनाम जिनका प्रयोग विशेषण के समान किया जाता है, अपने कर्त्ताओं के (अर्थात् केंद्रीय शब्दों के) इतने अखण्डनीय भाग होते हैं कि वे अब स्थायी शब्दसमूह बन गए हैं। ऐसी सूरत में किसी सहायक शब्द की जरूरत नहीं होती। जैसे, 'चुङ्^{1}क्वो^{2} रन्^{2}' (चीनी आदमी, चीन का वासी) 'वो^{3} फङ्^{2}यौ (मेरा मित्र), 'था^{1}-मन् फ़ङ्^{2} यौ' (उनके मित्र)।

४-१० 'इ^{1}' का स्वर : पु^{4} की तरह अंक 'इ^{1}' का स्वर बदलता रहता है:

१-अगर वह अकेले हो, या उस बड़ी संख्या में हो जिसका हर इकाई नाम नहीं पढ़ा जाता, जैसे १९४०,०१५२१, या किसी बड़ी संख्या के अंत में हो, जैसे, अळ^{4} षृ^{2}इ^{1}, तो उसका उच्चारण पहले स्वर में होता है।

२- अगर उसके बाद पहले, दूसरे या तीसरे स्वर का कोई

शब्दांश आए या शून्य स्वर का कोई शब्दांश आए जो मूलतः पहले, दूसरे या तीसरे स्वर का हो, तो उसका उच्चारण चौथे स्वर में होता है। जैसे, इ^{4}पन्^{3}षू^{1} (एक किताब), 'इ^{4} चाङ्^{1}चृ^{3}' (एक ताव कागज़)।

३.अगर उसके बाद चौथे स्वर का कोई शब्दांश आए या शून्य स्वर का कोई शब्दांश आए जो मूलतः चौथे स्वर का हो, तो 'पु^{4}' की तरह उसका उच्चारण दूसरे स्वर में होगा। जैसे 'इ^{2}क रन्^{2}' ('क' मूलतः चौथे स्वर का है)। जब संख्या के ऊपर जोर दिया जाता है तब स्वर का यह परिवर्तन अधिक स्पष्ट होता है।

मापक शब्दयुक्त इ^{1} का अर्थ 'एक' है, न कि 'एक कोई' और इस अर्थ में इस पर पढ़ते समय ज़ोर नहीं दिया जाता। जैसे : 'वो^{3} याव्^{4} माय् इ^{4} पन्^{3} षू^{1}' (मैं एक किताब खरीदना चाहता हूँ।)

"एक" के अर्थ में 'इ^{2}क' की 'इ^{2}' छोड़ी जा सकती है और केवल 'क' से ही 'इ^{1}' (एक) का अर्थ समझा जाएगा।

४-११ 'छि^{1}' और 'पा^{1}' के स्वर : 'छि^{1}' और 'पा^{1}' भी पहले स्वर में हैं; लेकिन जब उनके बाद चौथे स्वर का कोई शब्दांश आए या शून्य स्वर का कोई शब्दांश आए जो मूलतः चौथे स्वर का हो, तो उनका उच्चारण दूसरे स्वर में होता है। जैसे : 'छि^{2}क रन्^{2}' (सात आदमी) 'ति^{4} पा^{2} ख^{3}' (आठवाँ पाठ)। अगर उनके बाद पहले, दूसरे या तीसरे स्वर का कोई शब्दांश आए तो उनका स्वर नहीं बदलता। जैसे : 'छि^{1} पन्^{3} षू^{1}' (सात किताबें), 'पा^{1} पन्^{3} षू^{1}' (आठ किताबें)। 'पु^{4}' और 'इ^{1}' की तरह 'छि^{1}' और 'पा^{1}' पर ज़ोर देने पर स्वर का परिवर्तन अधिक स्पष्ट होता है।

पाठ-५

क—निन्^{2} क्वै^{4} शिङ्^{4} ?	आपका शुभनाम(कुलनाम) ?
ख—वो^{3} शिङ्^{4} वाङ्^{2} ।	मेरा नाम वाङ् है ?
निन्^{2} क्वै^{4} शिङ्^{4} ?	आपका शुभनाम ?
क—वो^{3} शिङ्^{4} चाङ्^{1} ।	मेरा नाम चाङ् है ।
नेक^{4} रन्^{2} शिङ्^{4} ष^{2}म्मा ?	उस आदमी का नाम क्या है ?
ख—था^{1} शिङ्^{4} याङ्^{2} ।	उसका नाम याङ् है ।
क—था^{1} षृ^{4} त^{2} क्वो^{2} रन्^{2} पु^{2} षृ^{4}?	क्या वह जर्मनी निवासी है ?
ख—पु^{2} षृ^{4}, था^{1} षृ^{4} ईङ्^{1}क्वो^{2}रन्^{2}	नहीं, वह अंग्रेज है ।
क—वाङ्^{2} श्येन्^{1} षङ्, निन्^{2} ये^{3} षृ^{4} इंङ्^{1}क्वो^{2} रन्^{2} मा^{1} ?	मि० वाङ्, क्या आप भी इंग्लैंडवासी हैं ?
ख—पु^{2} षृ^{4}, वो^{3} षृ^{4} फा^{3} क्वो^{2} रन्^{2}	नहीं, मैं फ्रांस का निवासी हूँ।
क—नि^{3}मन् यौ^{3}श्याव्^{3}हाय्^{2}च्.मै^{2}यौ?	क्या आप बाल-बच्चेदार हैं ?
ख—वो^{3}मन् यो^{3}सान्^{1}क श्याव्^{3} हाय्^{2}- च्.^{2} ल्याङ्^{3}क नान्^{2} हाय्^{2}च्.इ^{1}क न्यू.^{3} हाय्^{2}च्. ।	हमारे तीन बच्चे हैं, दो लड़के हैं और एक लड़की ।
क—नि^{3}मन् श्याव्^{2}च्ये च्याव्^{4}ष^{2}म्मा?	आपकी पुत्री का नाम क्या है?
ख—था^{1} च्याव्^{4} मैं^{3} षङ्^{1}	उसका नाम मेइषङ् है ।
क—वाङ्^{2} थाय्^{4}थाय् हाव्^{3} मा^{1} ?	श्रीमती वाङ् कैसी हैं ?
ख—हन्^{3} हाव्^{3}, श्ये^{4}-श्ये	वे बड़े मजे में हैं। धन्यवाद ।
क हाय्^{2}च्.मन् तौ^{1} हाव्^{3} मा	बच्चे सारे कैसे हैं ?
ख - ती^{1} हाव्^{3}	सभी सकुशल है ।

नये शब्द

श्येन्^{1}-षङ् (सं०)	महाशय, साहबजी, अध्यापक, भद्र-पुरुष, सज्जन, श्रीमानजी, पति के लिए शिष्ट प्रयोग।
थाय्^{4}-थाय् (सं०)	महिला, साहिबा, महोदया, बीबी, श्रीमती, पत्नी के लिए शिष्ट प्रयोग।
श्याव्^{3}च्ये (सं०)	कुमारी, पुत्री या किसी भी लड़की के लिए शिष्ट प्रयोग।
(श्याव्^{3}) हाय्^{2}च् (सं०)	बच्चा
शिङ्^{4} (सं०)	कुलनाम
षै^{2} (सं०)	कौन
षम्^{2} (मा) — ष^{2}म्मा (सं०)	क्या
तुङ्^{1}शि (सं०)	वस्तु, चीज, विषय
क्वो^{2} (सं०)	देश, राज्य
नान्^{2} (सं०, वि०)	पुरुषसम्बन्धी, पुरुष (पुल्लिग)
न्यू^{3} (सं० वि०)	स्त्री, स्त्रीजातिसम्बन्धी (स्त्रीलिंग)
षृ^{4} (योजक क्रि०)	होना (है, हैं, हूँ)
च्याव्^{4} (योजक क्रि०)	नाम होना
शिङ्^{4} (योजक क्रि०)	का (कुल) नाम
वेन्^{4} (क्रि०)	पूछना
चृ^{1}ताव् (क्रि०)	जानना
क्वै^{4} शिङ्^{4}	आपका शुभ (कुल) नाम ?

उदाहरणमाला

(क)—योजक युक्त वाक्य (अथवा समीकरणात्मक वाक्य)

नमूने :—

सर्व०	**यो० क्रि०**	**सं०।सर्व०**	
था^{1}	षृ^{4}	षै^{2}	वह (वे) कौन है (हैं) ?
चे^{4} (क)	षृ^{4}	ष^{2}म्मा	यह क्या है ?
था^{1}	शिङ्^{4}	ष^{2}म्मा	उसका (कुल) नाम क्या है ?
ने^{4} (क)	च्याव्^{4}	ष^{2}म्मा	उस (चीज) का नाम क्या है? (अथवा वह क्या है)

१. निन्^{2} क्वै^{4} शिङ्^{4} ? वो^{3} शिङ्^{4} वाङ्^{2}	आपका शुभनाम ? मेरा नाम वाङ् है। (अथवा मैं वाङ् हूं।)
२. ने^{4}क रन्^{2} षृ^{4}षै^{2} ? था^{1} षृ^{4} वाङ्^{2} श्येन्^{1}षङ् ।	वह आदमी कौन है ? वह मि० वाङ् (श्री वाङ्) है।
३. नै^{3}क रन्^{2} षृ^{4} नि^{3} फङ्^{2}यौ। ने^{4}क रन्^{2} षृ^{4} वो^{3} फङ्^{2}यौ।	कौन आदमी तुम्हारा मित्र है ? वह आदमी मेरा मित्र है।
४. ने^{4}क रन्^{2} षृ^{4} ष^{2}म्मा रन्^{2} ? था^{1} षृ^{4} चाङ्^{1} श्येन्षङ् ।	वह आदमी कौन है ? वह चाङ् साहब है।
५. था^{1} शिङ्^{4} ष^{2}म्मा ? था^{1} शिङ्^{4} ली^{3}	उसका नाम क्या है ? उसका नाम ली है।
६. था^{1} षृ^{4} मै^{3} क्वो^{2} रन्^{2}। षृ^{4} मा ? षृ^{4}।	वह अमरीकी आदमी है। सच? हाँ।
७. था^{1} पु^{2} षृ^{4} फ़ा^{3}क्वो^{2} रन्^{2}मा ? था^{1} पु^{2} षृ^{4} फ़ा^{3}क्वो^{2} रन्।	क्या वह फ्रांस देश का निवासी नहीं है ? नहीं, वह फ्रांस देश का निवासी नहीं है।

(ख) निश्चयवाचक शब्दयुक्त संज्ञा, सर्वनाम के साथ

१. वो^{3} ने^{4}क फङ्^{2}यौ शिङ्^{4} ली^{3}	मेरे उस मित्र का नाम ली है।

२. था^{1} ने^{4}क^{1} प्याव्^{3} हन्^{3} हाव्^{3} खान्^{4}	उसकी वह कलाई घड़ी बहुत सुन्दर है ।
३. वो^{3} मन चे^{4}क हाय^{2}च्. हन्^{3} शि^{3}ह्वान्^{1} खान्^{4} षू^{1}	हमारा यह बच्चा किताब पढ़ना बहुत पसन्द करता है ।
४. वो^{3} पु^{4}शि^{3} ह्वान्^{1} वो^{3} चे^{4}क पि^{3}	मेरा यह कलम मुझे पसंद नहीं है ।
५. नि^{3} याव्^{4} पु^{2} याव्^{4} खान्^{4} वो^{3} चे^{4} पन्^{3} षू^{1}	तुम मेरी यह किताब देखना चाहते हो या नहीं ?
६. वो^{3}मन् चे^{4}क च्वो^{1}च्.थाय्^{4} श्याव्	हमारी यह मेज बहुत छोटी है ।
७. नि^{3}मन्^{1} चे^{4} ल्याङ्^{3}क इ^{3}च्. हन्^{3} हाव्^{3} खानु^{4} । क्वै^{4} पु^{2} क्वै^{4} ?	तुम्हारी ये दोनों कुर्सियाँ बहुत सुन्दर हैं । क्या वे कीमती हैं?

द्रुत-पाठ

च^{4} षृ^{4} ष^{2}म्मा ?
चे^{4}क षृ^{4} ष^{2}म्मा ?
चे^{4}क तुङ्^{1}शि षृ ष^{2}म्मा ?
षृ^{4} पि^{3}
चे^{4} षृ^{4} पि^{3}
चे^{4} षृ^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} पि^{3}
चे^{4}क षृ^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} पि^{3}
चे^{4}क^{1} तुङ्^{1}शि षृ^{4} चुङ्^{1} क्वो^{2} पि^{3}
चे^{4}क तुङ्^{1}शि षृ^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} पि^{3}मा ? षृ^{4}

था^{1} षृ^{4} षै^{2} ?
ने^{4}क रन्^{2} षृ^{4} षै^{2} ?
षृ^{4} चाङ्^{1} श्येन्^{1}षङ्
था^{1} षृ^{4} चाङ्^{1} श्येन्^{1}षङ्
था^{1} षृ^{4} नै^{3} क्वो^{2} रन्^{2} ?
था^{1} षृ^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} रन्^{2} ।
था^{1} पु^{2} षृ^{4} ऋ^{4}पन्^{3} रन्^{2} मा ?
चाङ्^{1} श्येन^{1}-षङ् पु^{2}षृ^{4}ऋ^{4}पन्^{3} रन्^{2}मा ?
चाङ्^{1} श्येन्^{1}षङ् षृ^{4} चुङ्^{1} क्वो^{2} रन्^{2} ।

व्याकरण

५-१ योजक क्रिया : जिस वाक्य के विधेय में मुख्य तत्त्व संज्ञा हो, उसे संज्ञा विधेय (अथवा सारभूत विधेय) वाक्य कहते हैं। ऐसा वाक्य संज्ञा, सर्वनाम या अंक से बन सकता है जो यह बताता है कि उद्देश्य जिस प्राणी या वस्तु की अपेक्षा करता है वह क्या है। इस तरह के वाक्य के प्रधान अंग हैं, 'षृ^{4}' (होना, है, हूं इत्यादि), इसे योजक (या समीकारक) क्रिया कहते हैं। योजक को एक विशेष क्रिया समझा जा सकता है। वह उद्देश्य को विधेय के साथ जोड़ने के लिए इस्तेमाल होता है। योजक क्रिया जिन संज्ञा, सर्वनाम या अंकों को जोड़ती है उनकी समानता प्रगट करती है; जैसे,

सं०।सर्व०	यो०	सं०।सर्व०	
चे^{4} (क)	षृ^{4}	पि^{3}	यह कलम है।
ने^{4} (क)	च्याव्^{4}	ष^{2}म्मा ?	उसका नाम क्या है ?
वो^{3}	शिङ्^{4}	चाङ्^{1}	मेरा (कुल) नाम चाङ् है।
ने^{4} (क) रन्^{2}	षृ	इन्^{4}तु^{4}रन्^{2}	वह आदमी भारत का है। (या भारतवासी है।)

इन वाक्यों में 'षृ^{4}' अक्सर बगैर स्वर के पढ़ा जाता है। केवल ज़ोर देते समय स्वर के साथ पढ़ा जाता है। यह ध्यान देना चाहिए कि निश्चयवाचक सर्वनाम "चे^{4}" "ने^{4}" और 'नै^{3}' "षृ^{4}" और "च्याव्^{4}" के पहले संज्ञा का कार्य करते हैं। इसलिए इनके साथ मापक शब्द की जरूरत नहीं होती, इन स्थानों में "चे^{4}" "ने^{4}" और "नै^{3}" को "च^{4}", "ना^{4}" व "ना^{3}" भी पढ़ी जा सकती है।

५-२ क्रिया का स्वरूप : यह पहले ही बताया गया है कि संज्ञा या सर्वनाम के साथ विभक्ति का योग नहीं होता। इस तरह

चीनी क्रियाओं का काल या वचन के साथ कोई परिवर्तन (यानी धातुरूप) नहीं होता। अतः एकवचन वाचक बहुवचन वाचक उभय प्रकार के शब्दों के साथ 'षृ^{4}' अपरिवर्तित रूप से ही प्रयुक्त होता है; जैसे,

वो^{3} षृ^{4}	मैं हूँ
वो^{3} मन् षृ^{4}	हम हैं।
नि^{3} षृ^{4}	तुम हो।
नि^{3}मन् षृ^{4}	आप (लोग) हैं।
था^{1} षृ^{4}	वह (पु०, स्त्री०, नपुं०)है।
था^{1}मन् षृ^{4}	वे (पु०, स्त्री०, नपुं०) है।
वो^{3} षृ^{4} श्येन्^{1}षङ्	मैं अध्यापक हूँ।
वो^{3}मन् षृ^{4} श्येन्^{1}षङ्	हम अध्यापक हैं।
नि^{3}षृ^{4} श्येन्^{1}षङ्	तुम अध्यापक हो।
था^{1} षृ^{4} श्येन्^{1}षङ्	वह अध्यापक है।

यह ख्याल में रखना चाहिए कि 'षृ^{4}' जिसे हिन्दी में 'है', 'हूँ', 'हो', या 'हैं' के रूप में अनुवाद किया जाता है चीनी भाषा में विधेय या कर्म के पहले प्रयोग किया जाता है। लेकिन हिन्दी में 'है' 'हूँ' 'हैं' इत्यादि वाक्य के अन्त में लगते हैं। "होना" अंग्रेजी "टू बी" का अर्थ है। इसके अनेक कार्यों में से एक है योजक के रूप में प्रयुक्त होना, लेकिन चीनी 'षृ^{4}' का केवल योजक के रूप में ही प्रयोग होता है। जैसे, 'वह यहाँ है' अंग्रेजी में 'ही इज हियर' होगा लेकिन चीनी भाषा में "था^{1} चाय्^{4} च^{4} ळ" होगा।

५-३ पुरुषवाचक-निश्चयवाचक शब्दयुक्त संज्ञा के साथ सर्वनाम

निश्चयवाचक शब्द संज्ञा के साथ जोड़ा जाता है, यह हम जान चुके हैं (पाठ ४, व्याकरण नोट ४-४)। इस शब्द समूह के साथ किसी और पुरुषवाचक सर्वनाम या संज्ञा का भी प्रयोग हो सकता

है। ऐसे पुरुषवाचक सर्वनाम या संज्ञा को हमेशा निश्चयवाचक सर्वनाम से पहले आना चाहिए। ऐसा पुरुषवाचक सर्वनाम या संज्ञा विशेषण का स्थान लेता है; और कर्त्ता (अर्थात् केन्द्रीय शब्द) के साथ इसका सम्बन्ध प्रायः स्वामित्वबोधक या अन्य प्रकार का सम्बन्धबोधक होता है; जैसे,

वो³ चे⁴क पी³	मेरी यह कलम
था¹मन् ने⁴ ल्याङ³क श्याव्³च्ये	उनकी वे दो कन्याएँ
श्येन्¹षङ् (त) चे⁴ ईपन्³ षू¹	अध्यापक महोदय की किताब।

५-४ क्वै⁴ शिङ्⁴ : 'क्वै⁴ शिङ्⁴' 'नि³ शिङ्⁴ ष²म्मा' का शिष्ट प्रयोग है। 'निन्² क्वै⁴ शिङ्⁴', 'श्येन्¹षङ् क्वै⁴ शिङ्⁴' दोनों एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जवाब में अपना कुल नाम बताना चाहिए। 'नि³ च्याव्⁴ ष²म्मा' या 'नि³ च्याव्⁴ ष²म्मा मिङ्²च्' बच्चों या अपने से छोटे से अथवा समान वय या पद के आदमी से जिनके साथ नियम निष्ठता का संबंध नहीं है, उनके निजी नाम पूछने के लिए प्रयुक्त होता है। इसके जवाब में पूरा नाम भी बताया जा सकता है।

५-५ निन्² : 'निन्²', 'नि³' का आदरसूचक रूप है। दोनों ही मध्यम पुरुष एकवचन हैं। जब हम किसी व्यक्ति के प्रति सम्मान या आदर प्रगट करना चाहते हैं तो 'निन्²' का प्रयोग करते हैं। साधारणतया इसके बाद बहुवचनवाचक 'मन्' का प्रयोग नहीं होता।

५-६ कुलनाम (अथवा उपनाम) : चीनी भाषा में कुलनाम के बाद ही पदवी (यानी श्री, श्रीमान्, श्रीमती, डा०, आचार्य आदि) का प्रयोग होता है; जैसे, 'याङ्² श्येन्¹षङ्' (श्री या मि. याङ्), 'वाङ्² थाय्⁴ थाय्' (श्रीमती या मिसेज वाङ्), 'चाङ्¹ श्याव्³ च्ये' (कुमारी चाङ्)। हिन्दी में भी कुछ उपाधि-शब्द

कुलनाम या नाम के बाद भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, सिंहजी, चौधरी साहब, इन्दिराजी, इत्यादि।

५-७ विभिन्न देशों के नाम : चीनी भाषा में देश का नाम उन संबद्ध देशों का पहला शब्दांश लेकर उनके सदृश शब्दांश से बनाये जाते हैं। अक्सर ये नाम एक ही शब्दांश के होते हैं। और इसलिए उनके अन्त में 'क्वो^{2}' (देश) इस शब्द का प्रयोग होता है। जैसे,

अमरीका	मै^{3} क्वो^{2}
इंग्लैंड	ईङ्^{1} क्वो^{2}
फ्रांस	फ़ा^{3} क्वो^{2}
जर्मनी (द्युत्स ल्यांड्)	त^{2}क्वो^{2}

अगर किसी देश का नाम दो शब्दांशों से बना हो तो अन्त में 'क्वो^{2}' का प्रयोग नहीं होता जैसे; 'भारत' (सिन्धु-हिन्दु-इन्तु) 'इन्^{4} तु^{4}', 'सोवियत देश' (रूस देश) 'सु^{1} ल्येन्^{2}' (यू. एस. एस. आर. का अनुवाद), 'चीन देश' (चुङ्^{1} क्वो^{2}) 'चुङ्^{1}' (मध्य, बीच) और 'क्वो^{2}' (देश) से बना हुआ है। और 'जापान' (ऋ^{4} पन्^{3}) 'ऋ^{4}' (सूर्य) और 'पन्^{3}' (मूल, जड़) से बना हुआ है।

पाठ-६

चाङ्^{1}	वाङ्^{2} श्येन्^{1}षङ्, नि^{3} यौ^{3} छयेन्^{2} मै^{2} यौ ?	वाङ् साहब, आपके पास पैसे हैं या नहीं ?
वाङ्^{2}	यौ^{3}। नि^{3} याव्^{4} त्वो^{1} षाव् ? ल्याङ्^{3} ख्वाय्^{4} छयेन्^{2} कौ^{4} पू^{2} कौ^{4} ?	हैं। आपको कितने चाहिए? दो डालर पर्याप्त हैं या नहीं ?
चाङ्^{1}	नि^{3}यौ उ^{3} ख्वाय्^{4} मै^{2} यौ^{3}? वो याव्^{4} माय्^{3} इ^{4} चाङ्^{1} ह्वाळ^{4}।	क्या आपके पास पाँच डालर हैं? मैं एक चित्र खरीदना चाहता हूँ।
वाङ्^{2}	कै^{3} नि^{3} षृ^{2} ख्वाय्^{4} छयेन्^{2}। छिङ्^{3} नि^{3} माय्^{3} ल्याङ्^{3} चाङ्^{1}, वो^{3} ये^{3} याव्^{4}इ^{4}चाङ्	मैं आपको दस डालर दे रहा हूँ। कृपया दो चित्र खरीदिये। मैं भी एक प्रति चाहता हूँ। (या मुझे भी एक प्रति चाहिए।

ली की दुकान पर चाङ् साहब

चाङ्^{1}	ली^{1} श्येन्^{1} षङ्, नि^{3}मन् माय्^{4} ह्वाळ पु^{2}माय्^{4} ?	ली साहब, क्या आप चित्र बेचते हैं ?
ली^{3}	माय्^{4}, निन्^{2} याव्^{4} ष^{2}म्मा ह्वाळ^{4} ?	हां, हम बेचते हैं। आपको कैसा चित्र चाहिए ?
चाङ्^{1}	नि^{3}मन् यौ^{3} ष^{2}म्मा ह्वाळ^{4} ?	आपके पास कौन-से चित्र हैं ?

ली^{3} चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वाळ,^{3} मै^{4}क्वो^{2} ह्वाळ^{4}, वो^{3}मन् तौ^{1} यौ^{3}, चे^{4}चाङ् हाव्^{3} पु^{4}हाव्^{3}	हमारे पास चीनी और अमरीकी चित्र दोनों हैं। यह ठीक है या नहीं ?
चाङ्^{1} त्वो^{1}षाव् छयेन्^{2} ?	इसकी कीमत क्या है ?
ली^{3} ल्यु^{4} ख्वाय्^{4} छयेन्^{2} ।	छः डालर ।
चाङ्^{1} ल्यु^{4} ख्वाय्^{4} छयेन्^{2} थाय्^{4} क्वै^{4} ।	छः डालर बहुत ज्यादा है ।
ली^{3} निन्^{2} कै^{3} त्वो^{1}-षाव् छयेन्^{2}	आप कितना देंगे ?
चाङ्^{1} वो^{3} याव्^{4} ल्याङ्^{3} चाङ्^{1} । ल्याङ्^{3} चाङ् वो^{3} कै^{3} नि^{3} च्यु^{3} ख्वाय्^{4} ।	मुझे दो चाहिए, दो के लिए मैं आपको नौ डालर दूँगा ।
ली^{3} षृ^{2}ख्वाय्^{4} छयेन्^{2} नि^{3} याव्^{4} पु^{2} याव्^{4} ।	दस डालर में आपको चाहिए तो लीजिए ।
चाङ्^{1} हाव्^{3} कै^{3} नि^{3} षृ^{2}ख्वाय् छयेन्^{2}	ठीक है, लीजिए दस डालर ।
ली^{3} चाय्^{4} च्येन्^{4}	नमस्ते
चाङ्^{1} चाय्^{4} च्येन्^{4}	नमस्ते (फिर मिलेंगे)

नये शब्द

इ^{2} कुङ्^{4} (क्रि० वि०)	कुल
च्यु^{4} (क्रि० वि०)	केवल, फौरन, अभी
पाय्^{3} (संख्या)	सौ
छयेन्^{1} (संख्या)	हजार
वान्^{4} (संख्या)	दस हजार
लिङ्^{2} (संख्या)	शून्य (नोट देखिये)
पान्^{4} (संख्या)	आधा
त्वो^{1} षाव् (संख्या)	कितना

ख्वाय्^{४} (मा०)	डालर
माव्^{२} (मा०)	डालर का एक दशांश, दस सेंट
फ़न्^{१} (मा०)	सेन्ट
चाङ्^{१} (मा०)	कागज, चित्र, मेज आदि के लिए मापक शब्द
चृ^{3} (सं०)	कागज
ह्वाळ^{४} (सं०)	चित्र, तस्वीर
इ^{४}त्याळ^{3} (मा०)	थोड़ा सा
कौ^{४} (वि०)	काफी, पर्याप्त, यथेष्ट
माय्^{४} (क्रि०)	बेचना
चाय्^{४} च्येन्^{४}	नमस्ते (अथवा फिर मिलेंगे)
हाव्^{3} पु^{४} हाव्^{3}	ठीक है या नहीं (ठीक है न ?) (इसके बारे में आप क्या कहते हैं ? ऐसा ही होगा आदि।)

उदाहरणमाला

(क)–पैसे की गिनती १ से १०० डालर तक

डालर			दस सेंट			सेंट		
अंक	मापक	संज्ञा	अंक	मापक	संज्ञा	अंक	मापक	संज्ञा
इ^{२}	ख्वाय्^{४}	छ्येन्^{२}	इ^{४}	माव^{२}	छ्येन्^{२}	इ^{४}	फन्^{१}	छ्येन्^{२}
ल्याङ्^{3}	ख्वाय्^{४}	छ्येन्^{२}	ल्याङ्^{3}	माव^{२}	छ्येन्^{२}	ल्याङ्^{3}	फन्^{१}	छ्येन्^{२}
सान्^{१}	"	"	सान्^{१}	"	"	सान्^{१}	"	"
स्च्^{४}	"	"	स्च्^{४}	"	"	स्च्^{४}	"	"
उ^{3}	"	"	उ^{3}	"	"	उ^{3}	"	"
ल्यु^{४}	"	"	ल्यु^{४}	"	"	ल्यु^{४}	"	"
छि^{१}	"	"	छि^{१}	"	"	छि^{१}	"	"

पा१	ख्वाय्४	छयेन्१	पा१	माव्२	छयेन्२	पा१	फ़न्१	छयेन्२
च्यु३	"	"	च्यु३	"	"	च्यु३	"	"
षृ२	"	"	षृ२	"	"	षृ२	"	"
चि३	"	"	चि३	"	"	चि३	"	"

डालर			दस सेंट			सेंट		
अंक	मापक	संज्ञा	अंक	मापक	संज्ञा	अंक	मापक	संज्ञा

पान्४ ख्वाय्४ .५०
इ२ ख्वाय्४ — लिङ्२ — — उ३ फन्१ — १.०५
इ२ ख्वाय्४ — इ४ माव्२ — — — — १.१०
ल्याङ्३ ख्वाय्४ — अळ४ माव्२ — — — — २.२०
सान्१ ख्वाय्४ — सान्१ माव्२ छयेन् — — — ३.३०
स्च्४ ख्वाय्४ — स्च्४ माव्२ — ल्यु४ फ़न्१ — ४.४६
उ३ ख्वाय्४ — उ३ माव्२ — छि१ फ़न्१ — ५.५७
ल्यु४ ख्वाय्४ — ल्यु४ माव्२ — पा१ फ़न्१ छयेन्२ ६.६८
छि१ ख्वाय्४ — छि१ माव्२ ... च्यु३ फ़न्१ — ७.७९
पा१ ख्वाय्४ — पा१ माव्२ — स्च्४ — — ८.८४
च्यु३ ख्वाय्४ — च्यु३ माव्२ छयेन्२ — — — ९.९०
षृ२ ख्वाय्४ — पान्४ — — — — — १०.५०
षृ२इ२ख्वाय्४ — — — — — — — ११.००
षृ२अळ४ख्वाय्४ — लीङ्२ — — उ३ फ़न्१ — १२.०५

(ख)–१०० डालर से ऊपर के अंक

दस हजार में हजारों में सैकड़ों में दहाई में इकाइयों में अंक

(—वान्४) (—छयेन्१) (—पाय्३) (षृ२)

इ१ पाय्३ लीङ्२ उ३ ख्वाय्४छयेन्२ १०५डा०
अळ४पाय्३ इ१षृ२ ख्वाय्४ २१०डा०

सान्^{1}पाय्^{3}अळ^{4}षृ^{2}पा ख्वाय्^{4}छयेन्^{2} ३२८डा७
स्च्.^{4} छयेन्^{1} — — ख्वाय्^{4}छयेन्^{2} ४०००डा०
उ^{3} छयेन्^{1} लोङ्^{2} सान्^{2}षृ^{2} ख्वाय्^{4}छयेन्^{2} ५०३०डा०
ल्यु^{4}छयेन्^{1} स्च्.^{4}पाय्^{3} लोङ्^{3}ल्यु^{4} ख्वाय्^{4}छयेन्^{2} ६४०६डा०
इ^{1}वान्^{4} — — — ख्वाय्^{4}छयेन्^{2} १००००डा०
ल्याङ्^{3}वान्^{4} छि^{1}छयेन्^{1} उ^{3}पाय्^{3} स्च्.^{4}षृ^{2} ख्वाय्छयेन्^{2} २७५४०डा०

(ग)—'चि^{3}' और 'त्वो^{1}षाव् से बने प्रश्नार्थक वाक्य

१- चे^{4}क मै^{3} क्वो^{2} पि^{3} त्वोषाव् छयेन्^{2} ?	इस अमरीकी कलम की क्या कीमत है ?
पा^{2} ख्वाय्-छि^{1} माव्^{2} उ^{3}	८ डालर ७५ सेन्ट
२- नि^{3} याव्^{4} त्वो^{1} षाव् इ^{3}च्. ?	आपको कितनी कुर्सियाँ चाहिए ?
वो^{3} च्यु^{4} याव्^{4} अळ^{4} षृ^{2}क ।	मुझे केवल बीस कुर्सियाँ चाहिए।
३- निन्^{2} कै^{3} त्वो^{1}षाव् छयेन्^{2} ?	आप कितने डालर देंगे ?
वो^{3} कै^{3} ल्यु^{4} ख्वाय्^{4} ।	मैं छः डालर दूंगा ।
४- इ^{2}कुङ्^{4} चि^{3} ख्वाय्^{4} छयेन्^{2}?	कुल कितने डालर हुए ?
इ^{2}कुङ्^{4} छि^{2} ख्वाय्^{4} पान्^{4} ।	७.५० डालर ।
५- च्वो^{1}च्. इ^{3}व्. इ^{2}कुङ्^{4} त्वो^{1}-षाव् छयेन्^{3} ?	मेज़ और कुर्सियाँ कुल मिलाकर कितने हुए ?
इ^{4} पाय्^{3} लोङ्^{2} उ^{3} ख्वाय्^{4} छयेन्^{2} ।	१०५.०० डालर ।
६- ने^{4}क ता^{4}च्वो^{1}च्. षृ^{4}चि^{3} षृ^{2} ख्वाय्^{4} ?	वह बड़ी मेज़ कितने डालर की है ?
ल्यु^{4}षृ पा^{2} ख्वाय्^{4} ।	६८ डालर की ।

७- चे^{4} पत्^{3} षू^{1} माय्^{4} चि^{3} माव्^{2} छयेन्^{2} ?	इस किताब की कीमत क्या है ?
सान्^{1} माव्^{2} उ^{3} इपन्^{3} ।	३५ सेन्ट की एक ।
८- नि^{3} याव्^{4} माय्^{3} त्वो^{1}षाव् चाङ्^{1} चृ^{3} ?	तुम कितने कागज खरीदोगे ?
वो^{3} याव्^{4} माय्^{3} उ^{3} पाय्^{3} चाङ्^{1}	मैं पाँच सौ ताव चाहता हूँ ।
९- नि^{2}मन् यौ^{3} चि^{3}क हाय्^{2}च् ?	आपके कितने बच्चे हैं ?
वो^{3}मन् च्यु^{4} यौ^{3}इ^{2}क ।	सिर्फ एक ही है ।

व्याकरण

६-१ १०० से ऊपर के अंकों की गिनती : १०० से ऊपर के अंकों में अन्त की इकाई अक्सर नहीं लिखी जाती । जैसे :

ई^{1} पाय्^{3} ई^{1} (षृ^{2})	११०
ल्याङ्^{3} छयेन्^{1} उ^{3} (पाय्)	२,५००
ल्यु^{4} वान्^{4} पा^{1} (छयेन्^{1})	६८,०००

६-२ लीङ्^{2} : अगर अंकों के बीच में एक या एकाधिक शून्य संख्या हो तो 'लीङ्^{2}' का प्रयोग किया जाता है । जैसे :

ई^{1} पाय्^{3} लीङ्^{2} उ^{3}	१०५
ई^{1} छयेन्^{1} लीङ्^{2} उ^{3}	१,००५
ई^{1} छयेन्^{1} लीङ्^{2} उ^{3} षृ^{2}	१,०५०
ई^{1} वान्^{4} लीङ्^{2} उ^{3} पाय्^{3}	१०,५००

टेलीफोन संख्या या टेलीफोन संख्या की तरह किसी और संख्या जैसे, साल का नाम, कमरे या मकान की संख्या बताना हो तो अंकों को १, २, ३, ४ आदि एकक संख्याओं की तरह पढ़ना चाहिए, इकाइयों में नहीं (दसियों, सैकड़ों, हजारों आदि में

नहीं), अगर बीच में एक से ज्यादा शून्य संख्या हो तो हर शून्य संख्या को दुहराना चाहिए । जैसे,

ई^{१} लीङ्^{२}	१०
ई^{१} लीङ्^{२} अळ^{४}	१०२
ई^{१} अळ^{४} लीङ्^{2}	१२०
पा^{१}लीङ्^{२}लीङ्^{२}ल्यु^{४}लीङ्^{२}	८०,०६०

अगर संख्या इकाइयों में पढ़ना हो और एक से अधिक शून्य एक-साथ हों तो 'लीङ्^{२}' एक बार ही प्रयुक्त होता है। उदाहरण के तौर से ऊपर के अन्त में दी गई संख्या ८०,०६० इस तरह लिखी जाएगी, पा^{१} वान्^{४} लीङ्^{२} ल्यु^{४} षृ^{२} ।

६-३ **धन की गणना** : चीनी भाषा की लिखितरूप में मुद्रा की इकाइयाँ यू्वान्^{२} (डालर), च्याव्^{3} (दस सेन्ट) और फ़न्^{१} (सेन्ट) हैं । लेकिन बोलचाल की भाषा में इन्हें क्रमशः 'ख्वाय्^{४}' 'माव्^{२}' और 'फ़न्^{१}' कहते हैं, फ़न^{१} की राशि इकाई में आती है और अन्तिम इकाई के बाद बहुधा 'छयेन्^{२}' शब्द का प्रयोग होता है; जैसे,

उ^{3} फ़न्^{१} छयेन्^{२}	५ सेन्ट (.०५ डालर)
सान्^{१} माव्^{२} छयेन्^{२}	३० सेन्ट (.३० डालर)
उ^{3} ख्वाय्^{४} छयेन्^{२}	५ डालर (५.०० डालर)

भिन्न-भिन्न अंकों को एक साथ लिखते या पढ़ते समय बड़ी इकाइयों को पहले और छोटे अंकों को बाद में प्रयोग करना चाहिए, अन्त में 'छयेन्^{२}' जोड़ना चाहिए; जैसे,

ई^{४} माव्^{२} उ^{3}फ़न् छयेन्^{२}	१५ सेन्ट (.१५ डालर)
षृ^{२} अळ^{४} ख्वाय्^{४} ल्यु^{४} माव्^{२} छयेन्^{२}	१२ डालर ६० सेन्ट (१२.६० डालर)

११ सेन्ट से ऊपर की संख्याओं को इस तरह लिखना या पढ़ना चाहिए :

इ⁴ माव्² सान्¹फ़न् छयेन्²   १३ सेन्ट (.१३ डालर)
(षृ²सान्¹ फ़न्¹ छयेन् अशुद्ध है)

इ² ख्वाय्⁴ उ³माव् छयेन्² १ डालर ५० सेन्ट (१.५० डालर)
(इ² ख्वाय्⁴ उ³ षृ² फ़न्¹ अशुद्ध है)

६-४ **धन राशि का संक्षिप्त रूप :** संदर्भ में जिन संख्याओं का बोध हो जाता है उन्हें छोड़ दिया जाता है और इस तरह धन-राशि संक्षेप में लिखी जाती है। जब अंकों को भिन्न-भिन्न रूप में लिखना हो तब इस प्रथा का प्रयोग अक्सर किया जाता है। हिन्दी में भी बोलचाल के समय हम २ रुपये ३० पैसे को "दो-तीस", "चार सौ रुपये" को केवल "चारसौ" कह लेते हैं।

चीनी भाषा में :

इ⁴ माव्² (छयेन्²), अळ² माव्² उ³ (फ़न्¹ छयेन्²), सान् ख्वाय्⁴ (छयेन्²), ल्यु⁴ ख्वाय् छि¹ माव्² उ³ (फ़न्¹ छयेन्²), ई⁴ पाय्³ख्वाय्⁴ (छयेन्²), उ³ छयेन्¹ उ³ पाय्³ ल्यु⁴ षृ² ख्वाय् (छयेन्²),

यह ध्यान में रखना चाहिए कि जब धन-राशि के अन्त में धन-राशि का मापक शब्द हो उस मापक शब्द पर ज़ोर देकर पढ़ें।

६-५ 'चि³' और 'त्वो¹षाव्' : संख्या पूछने के लिए हम 'चि³' और 'त्वो¹षाव्' का प्रयोग करते हैं। लेकिन, वे हमेशा एक-दूसरे की जगह अदल-बदल कर प्रयुक्त नहीं हो सकते।

१- 'त्वो¹ षाव्' का प्रयोग किसी भी संख्या, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, के विषय में पूछने के लिए किया जा सकता है। लेकिन 'चि³' का प्रयोग प्रायः एक से नौ तक की संख्याओं के लिए

होता हैं; जैसे,

नि^{3} यौ^{3} चि^{3} पन्^{3} षू^{1}	तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ?
व^{3} यौ^{3} ल्याङ्^{3} पन्^{3}	मेरे पास दो किताबें हैं ।
नि^{3} यौ त्वो^{1}षाव् (पन्^{3}) षू^{1}	तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ?
व^{3} यौ^{3} छि^{1} षृ^{2} पा^{1} पन्^{3}	मेरे पास अठत्तर किताबें हैं।

दोनों प्रश्नार्थक वाक्यों के जवाब से 'चि^{3}' और 'त्वो^{1}षाव्' के अर्थ स्पष्ट हैं । अगर किताबों की संख्या अनिश्चित हो तो 'त्वो^{1}षाव्' का प्रयोग करते हैं; जैसे,

चे^{4}क माय्^{4} त्वो^{1}षाव् छयेन्^{2}	इसकी कीमत कितनी है ?
ल्याङ्^{3}ख्वाय्^{4} पान्^{4}	अढ़ाई डालर ।
नि^{3} याव्^{4} त्वो^{1}षाव् पि^{3} ?	तुम कितनी पेंसिलें (अथवा कलम) चाहते हो ?
वो^{3} याव्^{4}सान्^{1}षृ^{2}क पि^{3}	मैं ३० पेंसिलें चाहता हूँ ।

२. षृ^{2}, पाय्^{3}, छयेन्^{1} जैसे इकाइयों के साथ चि^{3} का प्रयोग होता है; ज़ैसे,

नि^{3} यौ^{3} चि^{3} षृ^{2} पन्^{3} षू^{1}	तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ? (दहाइयों में)
वो^{3} यौ^{3} सान्^{1} षृ^{2} च्यु^{3}पन्^{3}	मेरे पास उनतालीस किताबें हैं ।
नि^{3} यौ^{3} षृ^{2} चि^{3} पन्^{3} षू^{1}	तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ? (दसियों में)
वो^{3} यौ^{3} षृ^{2}सान् पन्^{3} षू^{1}	मेरे पास तेरह किताबें हैं ।

पहले प्रश्न का जवाब दहाइयों में अर्थात् २० से ९९ तक की संख्या में होगा और दूसरे का ११ से १९ तक की संख्या में । और कुछ उदाहरण :

नि^{3} माय्^{3} चि^{3} पाय^{3} चाङ्^{1} चृ^{3} तुम कितने सौ कागज खरीदोगे ?

ई^{4} छ्येन्^{1} उ^{3} पाय्^{3} चाङ्^{1}	एक हजार पांच सौ।
नि^{3} याव्^{4} चि^{3} छ्येन्^{1} ख्वाय्^{4} छ्येन्^{2}	तुम कितने हजार रुपये चाहते हो ?
छि^{1} छ्येन्^{1} पा^{1} पाय्^{3}	सात हज़ार आठ सौ।

३- 'त्वो^{1}षाव्', संज्ञा के साथ सीधे जोड़ा जा सकता है। लेकिन चि^{3} के बाद एक मापक शब्द जरूर आना चाहिए; जैसे,

नि^{3} याव्^{4} त्वोषाव् षू^{1} ?	तुम कितनी किताबें चाहते हो?
नि^{3} यौ^{3} चि^{3}क पि^{3} ?	तुम्हारे पास कितनी पेन्सिलें हैं।

६-६ **कीमत पूछना :** किसी चीज की कीमत पूछते समय हिन्दी की तरह चीनी भाषा में भी क्रिया की जरूरत नहीं होती। केवल प्रश्नवाचक शब्द के बाद 'छ्येन्^{2}' (मुद्रा) जोड़कर इस तरह के प्रश्नवाचक वाक्य बना सकते हैं; जैसे,

त्वो^{1}षाव् छ्येन्^{2}	कितने पैसे ?

कभी-कभी 'षृ^{4}' (होना) या 'माय्^{4}' (बेचना) या 'याव्^{4}' जैसी क्रिया का प्रयोग भी होता है; जैसे,

पि^{3} षृ^{4} चि^{3} फ़न्^{1} छ्येन्^{2} ?	पेन्सिल कितने पैसे का है ?
पि^{3} याव्^{4} त्वो^{1}षाव् छ्येन् ?	कलम की कितनी कीमत चाहते हो ?
चे^{4}क श्याव्^{3} च्वो^{1}ज़् माय्^{4} चि^{3} ख्वाय् छ्येन्^{2}	छोटी मेज कितने पैसे में बिकेगी? (अथवा कितने में बेचोगे ?)

६-७ 'अळ^{4}' और 'ल्याङ्^{3}' : चीनी भाषा में अंक 'अळ^{4}' और 'ल्याङ्^{3}' से एक ही संख्या 'दो' सूचित होती है, लेकिन प्रयोग में, दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं;

१- दो प्राणी या वस्तु बताने के लिए 'अळ^{4}' की जगह 'ल्याङ्^{3}' उपयुक्त मापक शब्द के पहले प्रयुक्त होता है; जैसे, ल्याङ्^{3}क

रन्^{2}, ल्याङ्^{3} पन्^{3} षू, ल्याङ्^{3} चाङ्^{1} चृ^{3}, ल्याङ्^{3} ख्वाय्^{4} छ्येन्^{2}। इसके कुछ अपवाद हैं; जैसे, अळ^{4} चिन्^{1} थाङ्^{2} (दो 'चिन्' (क्याटी चीनी) और 'अळ^{4} न्येन्^{2}' (दो वर्ष)। लेकिन इन पदों में भी 'अळ^{4}' की जगह 'ल्याङ्^{3}' का प्रयोग हो सकता है।

कुछ बड़ी संख्या के साथ दोनों में से किसी एक का प्रयोग हो सकता है; जैसे 'ल्याङ्^{3} पाय्^{3}' या 'अळ^{4} पाय्^{3}', 'अळ^{4} छ्येन्^{1}' या 'ल्याङ्^{3} छ्येन्^{1}', 'अळ^{4} वान्^{4}' या 'ल्याङ्^{3} वान्^{4}' इत्यादि।

२- "२०" को सिर्फ 'अळ^{4} षृ^{2}' के रूप में पढ़ा जाता है, 'ल्याङ्^{3} षृ^{2}' के रूप में कभी नहीं पढ़ा जाता। गिनती के वक्त भी गणनावाचक अंक 'अळ^{4}' का ही प्रयोग होता है; जैसे, 'अळ^{4} षृ^{2} अळ^{4}', 'ई^{4} पाय्^{3} लीङ्^{2} अळ^{4}', अळ^{4} पाय्^{3} अळ^{4} षृ^{2}', अळ^{4} षृ^{2} वान्^{4}', अळ^{4} पाय्^{3} वान्^{4}' इत्यादि।

३- अगर किसी बड़ी संख्या के अन्त में २ आता है तो 'अळ^{4}' का प्रयोग होता है, 'ल्याङ्^{3}' नहीं : 'षृ^{2} अळ^{4}', स्च्^{4} षृ^{2} अळ^{4} पन्^{3} षू^{1}'; 'ई^{2} ख्वाय्^{4} ल्याङ्^{3} माव्^{2} छ्येन्^{2}' संक्षेप में 'ई^{2} ख्वाय्^{4} अळ^{4}' लिखा जायेगा।

४- बड़ी संख्याओं में बड़ी इकाइयों के लिए 'ल्याङ्^{3}' और छोटी संख्याओं के लिए 'अळ^{4}' का प्रयोग होता है; जैसे, ल्याङ्^{3} छ्येन्^{1} अळ^{4} पाय्^{3}', 'ल्याङ्^{3} वान्^{4} अळ^{4} छ्येन्^{1} सान्^{1}', ल्याङ्^{3} माव्^{2} अळ^{4}' इत्यादि।

६-८ **लगभग संख्या** : दो या तीन को चीनी भाषा में 'दो-तीन' लिखा जाता है, इस तरह की अनिश्चित संख्या दो पड़ोसी अंकों का प्रयोग करके लिखी जाती है; जैसे,

ई^{4} ल्याङ्^{3}क रन्^{2} — एक या दो आदमी।

ल्याङ्^{3}सान्^{1} पन्^{3}षू^{1} दो या तीन किताबें।
स्च्^{४} उ^{3} माव्^{2} छयेन्^{2} चालीस या पचालस सेन्ट।
हिन्दी में भी बोलचाल की भाषा में "दो तीन आदमी", "तीन चार रुपये" इत्यादि प्रयोग होते है।

६-९ 'वान्^{४}' और 'वान्^{४} वान्^{४}' शब्द समूह : चीनी भाषा में हजार के ऊपर के अंक लाख नहीं है, दस हजार यानी 'वान्^{४}' है। 'वान्^{४}' के ऊपर के अंक के लिए 'वान्^{४}' के साथ 'षृ^{२}', 'पाय्^{3}' 'छयेन्^{१}' और 'वान्^{४} का गुणा करके बनते हैं।' वान्^{४} वान्^{४}' सर्वोच्च संख्या है जिसे 'ई^{४}' भी कहते हैं। गिनते वक्त हजार के ऊपर को संख्याओं को प्रति चार अंकों की समष्टि में भाग कर लेना चाहिए।

दस ह०	हजार	सौ	दस	दस				
द० हजार	द०ह०	दसह०	दसह०	ह०	हजार	सैंकड़ा	दहाई	इकाई
दस करोड़	करोड़		(लाख)					
						१	०	०
					१	०	०	०
				१	०	०	०	०
			१	०	०	०	०	०
		१	०	०	०	०	०	०
	१	०	०	०	०	०	०	०
१	०	०	०	०	०	०	०	०

६-१० **एक एक की कीमत :** हिन्दी के "रुपये का एक", "आठ आने का एक", जैसे वाक्य चीनी भाषा में इस तरह हो जाते हैं : ई^{२} ख्वाय्^{४} छयेन्^{२} इ^{२}क (इ^{४} पन्^{3} या इ^{४} चाङ् इत्यादि, उ^{3} माव्^{2} छयेन्^{2} इ^{2}क (इ^{४} पन्^{3} या इ^{४} चाङ् इत्यादि),

इत्यादि। हिन्दी के 'प्रत्येक को एक', 'प्रत्येक को १० डालर' इस तरह के वाक्य इस तरह कहे जाते हैं : इ^{२}क रन्^{२} इ^{२}क, इ^{२}क रन्^{२} षृ^{२} ख्वाय्^{४} छ्येन्^{२} ।

६-११ पान्^{४} (आधा) : यह भी एक अंक है। जब इस अंक का प्रयोग मापक शब्द के साथ हो, तो इसके स्थान के बारे में सावधान रहना चाहिए :

१. अगर 'पान्^{४}' के साथ किसी और अंक का प्रयोग न किया गया हो, तो साधारण अंकों की तरह इसे भी मापक शब्द के ठीक पहले रखना चाहिए ; जैसे,

पान्^{४} चाङ्^{१} चृ^{3}	कागज़ का आधा टुकड़ा (अथवा आधा ताव काग़ज)
पान्^{४} न्येन^{२}	आधा साल (न्येन^{२}, पाठ १३)

२- अगर शब्द 'पान्^{४}' का प्रयोग अंक के साथ किया जाए तो पूर्णांकों के मापक पूर्णांकों के ठीक बाद ही आते हैं और मापक शब्द के बाद 'पान्^{४}'; जैसे,

पूर्णांक	मापक	पान्^{४}	कर्ता
ल्याङ्^{3}	चाङ्^{1}	पान्^{४}	चृ^{3}

पाठ-७

लि[3]	शिन्[1] श्येन्[1]षङ्, निन्[2] आय्[4] छ्[1] चुङ्[1] क्वो[2] फ़ान्[4]मा ?	मि० सिंह क्या आप चीनी खाना पसंद करते हैं ?
शिन्[1]	वो[3] हन्[3] आय्[4] छ्[1] । वो[3] हाय्[2]च़्[,] ये[3] तौ[1] आय्[4]छ् ।	मैं इसे खुशी से खाता हूं। हमारे बच्चे भी इसे खुशी से खाते हैं।
लि[3]	निन्[2] थाय्[4]थाय् ह्वै[4] च़वो[4] चुङ्[4] क्वो[2] फान्[4] पु[2] ह्वै[4]?	क्या आपकी पत्नी चीनी खाना पकाना जानती हैं ?
शिन्[1]	ह्वै[4] इ[4] ल्याळ[3]।	थोड़ा-सा।
लि[3]	निन्[2] हाय्[2] च़् ये[3]ह्वै च़वो[4] फ़ान्[4] मा ?	क्या आपके बच्चे भी पकाना जानते हैं ?
शिन्[1]	हाय्[2]च़् पु[2] ह्वै[4] च़वो[4] फ़ान्।	बच्चे खाना नहीं पका सकते।
लि[3]	नि[3]मन् तौ[1]ह्वै[4] ष्वो[1] चुङ्[1]-क्वो[2] ह्वा[4]मा ?	क्या आप सभी चीनी भाषा बोलना जानते हैं ?
शिन्[1]	हाय्[2]च़् ह्वै[4] ष्वो। वो[3] थाय्[4] थाय् ये[3] ह्वै[4]ष्वो[1]। वो[3] च्यु[4] ह्वै[4] ष्वो[1] इ[4] त्याळ[2]।	बच्चे जानते हैं। मेरी पत्नी भी जानती है किंतु मैं केवल थोड़ा सा ही जानता हूं।
लि[3]	निन्[2] थाय्[4] ख[4] छि। चुङ्[1] क्वो[2] च़्[4] निन्[2] नङ्[2] श्ये[3]मा?	आप बहुत विनम्र हो रहे हैं। क्या आप चीनी अक्षर लिख सकते हैं ?

शिन्¹ पु⁴ नङ्²। ओह, वो³ न²ङ् श्ये³	नहीं मैं नहीं लिख सकता।
'इ¹' 'अळ⁴' 'सान्¹' सान्¹-कच्॒¹।	ओह, मैं तीन अक्षर लिख सकता हूं। एक, दो, तीन।
लि³ नि³मन् आय्⁴ छाङ्⁴ कळ¹मा?	क्या आप लोग गाना पसंद करते हैं।
शिन्¹ वो³मन् हन्³ आय्⁴ छाङ्⁴।	हमें गाने से प्रेम है।
लि³ वो³मन् श्येन्⁴ चाय्⁴ छाङ्⁴ इ⁴ त्याळ³, हाव्³ पु⁴ हाव्³ ?	अभी हम लोग थोड़ा सा गायें तो कैसा रहे ?
शिन्¹ नि³मन् ट्वान्⁴इ छाङ्⁴ ष²-म्मा कळ¹ ?	आप लोग किस प्रकार के गाने गाना पसंद करेंगे ?
लि³ नि³मन् ह्वे⁴ छाङ्⁴ चुङ्¹ क्वो² कळ¹ मा ?	क्या आप चीनी गाना गा सकते हैं।
शिन्¹ ह्वे⁴।	हाँ, हम गा सकते हैं।
लि³ हाव्³, वो³ मन् ख³इ छाङ्⁴ इ²क चुङ्¹क्वो² कळ¹।	अच्छा, तो हम एक चीनी गाना गा सकते हैं।

नये शब्द

श्येन्⁴ चाय्⁴ (गतिशील क्रि०वि०)	अभी, इसी वक्त
फ़ान⁴ (सं०)	खाना (पके हुए चावल)
थाङ्² (सं०)	चीनी, चीनी से बनी मिठाई।
ह्वा⁴ (सं०)	भाषण, बोले हुए शब्द, भाषा, बोली।
च्॒⁴ (सं०)	अक्षर, (लिखा हुआ अक्षर), चीनी रेखाक्षर।
षृ⁴ (छिङ्) (सं०)	काम
माय्³ माय् (सं०)	व्यापार (खरीदना-बेचना)

क^{१} (ळ) (सं०)	गाना
ता^{४} रन्^{२} (सं०)	जवान, वयस्क (आदमी), बालिग़।
चन्^{१} (क्रि० वि०)	सचमुच, ठीक
ख^{४} छि (वि०)	विनम्र होना. शराफत दिखाना।
नङ्^{२} (स० क्रि०)	सकना, समर्थ या योग्य होना।
ह्वै^{४} (स० क्रि०)	सकना, जानना (कोई काम)
ख^{3} इ (स० क्रि०)	सकना, (आज्ञा मांगना या देना)
र्‌वान्^{४}-इ (स० क्रि०)	चाहना, इच्छुक होना
आय्^{४} (क्रि०)	प्यार करना
आय्^{४} (स० क्रि०)	पसंद करना या चाहना
छ्^{१} (क्रि०)	खाना
श्ये^{3} (क्रि०)	लिखना
र्‌वो^{४} (क्रि०)	करना, बनाना
छाङ्^{४} (क्रि०)	गाना
शिन्^{१} (सं०)	कुल नाम, भारतीय पदवी 'सिंह' के लिए प्रयुक्त।

उदाहरणमाला

(क) क्रियापद-कर्म-संयुक्त-पद के साथ सहायकक्रिया का प्रयोग

श्वो^{१}ह्वा^{४}	बात करना (बोलना-भाषा)
खान्^{४}-षू^{१}	पढ़ना (देखना किताबों का)
श्ये^{3}-च्^{४}	लिखना (लिखना अक्षरों का)
छ्^{१}-फ़ान्^{४}	खाना (खाना खाना)

च़वो४-फ़ान्४ — पकाना (खाना बनाना)

छाङ्४ क१ (ळ) — गाना (गाना गाना)

नमूना : कर्ता (क) स०क्रि० क्रिया-कर्म

नि3 आय्४ छाङ्४ कळ१मा ?

क्या आप गाना पसंद करते हैं ?

वो3 हन्3 आय्४ छाङ्४ कळ१ ।

मैं बहुत पसंद करता हूँ ।

१- श्याव्3 हाय्2च़् तौ१ आय्४ छाङ्५ कळ१ । ता४ रन्2 ये3 आय्४ छाङ्४ कळ१ ।	बच्चे गाना पसंद करते हैं । बड़े लोग भी गाना पसंद करते हैं ।
षै2 पु2 आय्४ छाङ्४ कळ	कौन गाना पसंद नहीं करता ?
२- चाङ्१ श्येन्१षङ् हन्3 आय्४ खान्४ षू१,था१ ये3 हन्3 आय्४ श्ये3 च़्४, ख3षृ था१ पु2 आय्४ श्वो१ ह्वा४ ।	मिस्टर चाङ पढ़ना पसंद करते हैं । वह लिखना भी पसंद करते हैं । किंतु वह बात करना पसंद नहीं करते ।
३- वाङ्2 श्याव्3च्ये च्यु४ आय्४ खान्४ षू१ ।	कुमारी वाङ् सिर्फ पढ़ना ही पसंद करती हैं ।
था१ हन्3 पु2 ट़्वान्४इ च़वो४ षृ४	वह बिल्कुल काम करना नहीं चाहतीं ।
४- रन्2 रन्2 तौ१ ह्वै४ श्वो१ ह्वा४,	हर कोई बात कर सकता है ।
ख3षृ पु४ तौ१ ह्वै४ खान्४ षू१ ।	किंतु हर कोई पढ़ नहीं सकता ।
५- चुङ्१क्वो2 रन्2 हन्3 नङ्2 च़वो४ षृ४ ।	चीनी लोग बहुत काबिल होते हैं ।
६- ने४क रन्2 चन्१ ह्वै४ श्वो१ ह्वा४	वह आदमी सचमुच बात करना जानता है ।

७- वो3मन् श्येन्४चाय्४ ख3इ छृ१ फ़ान् मा ?	क्या हम अभी खाना खा लें ?

(ख) विशेषण युक्त कर्म के साथ क्रि०-कर्म से बने संयुक्त पद

नमूना :	कर्ता		क्रि०	विशेषण	कर्म
	नि3	आय्४	छाङ्४	ष२म्मा	कळ१ ?
	वो3	आय्४	छाङ्४	फ़ा3 क्वो२	कळ१ ?

आप किस प्रकार के गाने गाना पसंद करते है ? फ्रांसीसी गाने ।

१- नि3 य़्वान्४इ छृ१ ष२म्मा फ़ान्४?	तुम किस प्रकार का खाना खाना चाहते हो ?
२- नि3 याव्४ पु२ याव्४ छृ१ इ४-त्याळ3 इन्४तु४ फ़ान्४ ?	क्या तुम थोड़ा-सा भारतीय खाना पसंद करोगे ?
३- नि3 ह्वै४च्वो४ इन्४तु४ फ़ान्४ मा ।	क्या तुम भारतीय खाना पकाना जानते हो ?
४- नि3 ह्वै४ ष्वो१ ऋप४न्3 ह्वा४ पु२ ह्वै४ ?	क्या तुम जापानी भाषा बोलना जानते हो ?
५- नि3 ह्वै४ श्ये3 चुङ्१ क्वो२ च्४ पु२ ह्वै४ ?	क्या तुम चीनी अक्षर लिखना जानते हो ?
६- श्येन्४ चाय्४ नि3 नङ्२ खान्४ चुङ्१ क्वो२ पाव्४मा ?	क्या तुम अब चीनी अखबार पढ़ सकते हो ?
७- नि3 नङ्२ च्वो४ चे४क पु४ नङ्२?	क्या तुम यह (काम) कर सकते हो ?
८- चे४-क ह्वा४ ख3इ ष्वो१मा ?	क्या यह भाषा बोली जा सकती है ?

(ग) क्रिया विशेषण के रूप में "हाव्3"

१- चुङ्१ क्वो२ ह्वा४ हन्3 हाव्3 ष्वो१, ख3ष्ट चुङ्१क्वो२ च्४पु४हाव्3 श्ये3 ।	चीनी बोलना बहुत आसान है, किन्तु चीनी अक्षर लिखना आसान नहीं है ।

२- चे^{४}क षृ^{४}(छिङ्) चन्^{१} पु^{४} हाव्^{3} च.वो^{४} ।	यह काम करना आसान नहीं है ।
३- था^{१}ने^{४}क माय्^{3}माय् पु^{४} हाव्^{3} च.वो^{४} ।	उसका यह व्यापार चलाना आसान नहीं है ।
४- था^{१}त ह्वा^{४} हन्^{3} हाव्^{3} तुङ्^{3} ।	उसकी बोली जल्दी समझ में आ जाती है ।
५- था^{१} ष्वो^{१} चे^{४}पन्^{3} षू^{१} हाव्^{3} माय़्^{४} ।	वह कहता है कि यह किताब बेचना बहुत आसान है ।
६- नि^{3}मन् ने^{४} ल्याङ्^{3}क हाय्^{२}-च़ चन्^{१} हाव्^{3}खान्^{४} ।	आपके वे दो बच्चे सचमुच ही बहुत सुन्दर हैं ।
७- यौ^{3} त इन्^{४} तु^{१}कळ^{१} पु^{४} हाव्^{3} छाङ्^{४} ।	कई भारतीय गाने इतने आसान नहीं हैं ।
८- श्येन्^{४}चा़य्^{४} यौ^{3}त तुङ^{१}शि पु^{४} हाव्^{3} माय्^{१} ।	कई चीजें अभी खरीदना मुश्किल है ।

व्याकरण

७-१ सहायक क्रिया : शब्द भेद की दृष्टि से सहायक क्रियाएं क्रियापद के वर्ग में आती हैं । परन्तु वे अन्य सामान्य क्रियाओं से भिन्न हैं । वे क्रियापद के पहले प्रयुक्त होती हैं (देखिए व्याकरण नोट २-४), लेकिन उनकी अपनी कुछ व्याकरणीय विशिष्टताएं हैं । उनका प्रयोग द्विरुक्ति करके कभी नहीं किया जाता और उनके बाद कोई प्रत्यय या संज्ञावाचक कर्म नहीं आता । उनका प्रयोग क्रिया-विशेषण के पहले किया जाता है । सहायक क्रियाओं का मुख्य कार्य है सम्भावना, योग्यता, इच्छा, मांग या इरादा सूचित करना । यहां हम 'नङ्^{२}', 'ह्वै^{४}', 'ख^{3}इ' और 'याव्^{४}', इनकी विशेषताओं की व्याख्या करेंगे :

१- 'नङ्^{2}' व 'ख^{3} इ' से मनोगत या कायिक योग्यता का अर्थ निकलता है; जैसे,

नि^{3} नङ्^{2} (ख^{3} इ) च़्वो चे^{4} क पु^{4} नङ्^{2} ?	क्या तुम यह कह सकते हो ?
श्येन्^{4}चाय्^{4} नि^{3} नङ्^{2} (ख^{3}-इ) खान्^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} पाव्^{4} मा ?	क्या तुम अब चीनी अखबार पढ़ सकते हो ?

कभी-कभी किन्हीं विशेष अवस्थाओं में इनसे अनुमति का अर्थ भी निकलता है; जैसे,

वो^{3} मन् नङ्^{2} (ख^{3} इ)ष्वो^{1} ह्वा^{4} मा ?	क्या हम बातें कर सकते हैं ?

मनाही के अर्थ में :—

वो^{3} मन् पु^{4} नङ्^{2} चाय्^{4} चळ^{4} ष्वो^{1} ह्वा^{4} । (यहां 'पु^{4} ख^{3} इ' का प्रयोग नहीं होगा ।)	हम यहां बातें नहीं कर सकते ।

२- ह्वै^{4}: 'ह्वै^{4}' क्रियापद है, लेकिन यह एक सहायक क्रिया भी है जिसका प्रयोग क्रियापद या विशेषण के पहले किया जाता है। सहायक क्रिया के रूप में यह मनोगत योग्यता का अर्थ प्रगट करता है। परन्तु यह 'नङ्^{2}' से भिन्न है, क्योंकि 'ह्वै^{4}' का अर्थ होता है सीखकर प्राप्त किया गया कोई कौशल। इसलिए अर्थ की दृष्टि से यह प्रायः "कुशल होना" और "अधिकार प्राप्त करना" इन अर्थों के समान होता है; जैसे,

था^{1} ह्वै^{4} ष्वो^{1} चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} ।	वह चीनी भाषा बोल सकता है।

'ह्वै[४]' से कभी-कभी किन्हीं अवस्थाओं में **सम्भावना प्रगट होती है;** जैसे,

चे[४] पन्[३] षू[१] पु[२] ह्वै[४]षृ[४]था[१] त	यह किताब उसकी नहीं हो सकती।

३- 'ह्वै[४]' की तरह 'याव्[४]' भी एक क्रियापद है; जैसे,

वो[३] याव[४] ई[४] पन्[३] षू[१]	मैं एक किताब चाहता हूँ।

सहायक क्रिया के रूप में 'याव्[४]' **मनोगत इच्छा या इरादा** सूचित करता है; जैसे,

था[१] याव्[४] माय्[३] इ[४] पन्[३] षू[१]	वह एक किताब खरीदना चाहता है।

कभी-कभी वह **वस्तुगत आवश्यकता** सूचित करता है : श्ऱ्वे[२]-षङ् याव्[४] हाव्[३]हाव्[१]ळ त न्येन[४] षू[१]—"छात्रों को अच्छी तरह पढ़ाई करनी चाहिए"।

सहायक क्रियाओं के बारे में कुछ नियम :

१. यदि किसी सहायक क्रिया का प्रयोग वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य में करना हो तो सहायक क्रिया का सकारार्थक तथा निषेधार्थक दोनों रूप दे देने से ही काम चल जाएगा; जैसे,

नि[३] नङ्[२] पु[४] नङ्[२] खान्[४] षू[१]	तुम किताब पढ़ सकते हो या नहीं ?

यदि विधेय साधारण और छोटा हो तो सहायक क्रिया के बाद आनेवाला तत्व दोहराया जा सकता है। जैसे :

नि[३] नङ्[२] च़्वो[४] पु[४] नङ् (च़्वो[४])	तुम (यह) कर सकते हो या नहीं ?

नोट : इस प्रकार के प्रश्नार्थक वाक्यों में सहायक क्रिया को दोहराना पड़ता है। इसलिए हम "नङ्[२] च़्वो[४] पु[२] च़्वो[४]" नहीं कह सकते।

२- प्रश्नों का उत्तर देते समय यदि संदर्भ से अर्थ स्पष्ट होता है तो सहायक क्रिया अकेले रह सकती है, मुख्य क्रिया की जरूरत नहीं होती; जैसे,

नि^{3} याव्^{4} खान्^{4} पाव्^{4} मा ?	क्या तुम अखबार पढ़ना चाहते हो ?
याव्^{4} ।	हां ।
पु^{2} याव्^{4} ।	नहीं ।
नि^{3} ह्वै^{4} ष्वो^{1} चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} मा ?	क्या तुम चीनी भाषा बोल सकते हो ?
ह्वै^{4} ष्वो^{1} ई^{4} त्याळ^{3} ।	थोड़ा सा बोल सकता हूँ ।

निम्नलिखित सूची से सहायक क्रिया ('नङ्^{2}' व 'ख^{3} इ') का प्रयोग साफ-साफ पता चल जाएगा

	सकारार्थक	निषेधार्थक	प्रश्नार्थक
योग्यता	नङ्^{2}, ख^{3}इ	पु^{4} नङ्^{2}	नङ्^{2} पु^{4} नङ्^{2} ? नङ्^{2} मा ? ख^{3}इ मा ?
अनुमति	नङ्^{2} ख^{3}इ	पु^{4} नङ्^{2} पु^{4} ख^{3}इ	नङ्^{2} पु^{4} नङ्^{2} ? नङ्^{2} मा? ख^{3}इ पु^{4}ख^{3}इ ? ख^{3}इ मा?

७-२ क्रिया-कर्म संयुक्त पद (क्रि० क०) : कुछ साधारण वस्तुओं को बतानेवाली क्रियाएं अपने कर्म के साथ मिलकर संयुक्त क्रियापद बन जाती हैं । उनका अकर्मक क्रियापद के रूप में अनुवाद किया जाता है। कर्म का भिन्न रूप से अनुवाद करना नहीं पड़ता । कर्म-रहित क्रियापद की भाँति इससे एक ही विचार का बोध होता है; जैसे, ष्वो^{1} ह्वा^{4}– बोलना, 'छृ^{1} फ़ान्^{4}'

—खाना । हिन्दी में भी कभी-कभी कर्म और क्रिया दोनों का प्रयोग होता है और हिन्दी व्याकरण के नियमानुसार इसे कर्म-क्रिया-पद कह सकते हैं । जैसे कि : 'च्वो^{1}ह्वा^{4}' का 'बातें करना', बोली बोलना' और 'छृ^{1}फ़ान्^{4}' का 'खाना खाना' रूप से भी अनुवाद किया जाता है । 'वो^{3} याव्^{4} छृ^{1} फ़ान्^{4}' अंग्रेजी में "आई वांट टू ईट" होगा, लेकिन हिंदी में "खाना खाना चाहता हूँ" या "मैं खाना चाहता हूँ" होगा । ऐसे संयुक्त पद के बाद किसी और कर्म का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए । यदि कोई और विशेष कर्म अपेक्षित हो तो आदतन पहला साधारण अर्थ द्योतक कर्म छोड़ देना पड़ेगा; जैसे :—वों^{3} याव्^{4} छृ^{1} थाङ्^{2} (मैं मिश्री (या मिठाई) खाना चाहता हूँ) की जगह हम यह नहीं कह सकते कि 'वो^{3} याव्^{4} छृ^{1} फ़ान्^{4} थाङ्^{2}' ।

किसी और कर्म की तरह क्रियापद कर्म संयुक्त पद के कर्म के साथ भी विशेषण का प्रयोग हो सकता है; जैसे,

वो^{3} छाङ्^{4} इन्^{4} तु^{4} कळ^{1}	मैं भारतीय गाना गाता हूँ ।

हम यह कभी नहीं कह सकते कि 'वो^{3}छाङ्^{4}कळ^{1}इन्^{4}तु^{4}कळ^{1}' ।

७-३ **एकान्वयी संज्ञा** : दो या दो से अधिक संज्ञा साथ-साथ आ सकती हैं । इन्हें एकान्वयी संज्ञा कहते हैं । जैसे :—

वो^{3}मन् इन्^{4} तु^{4} रन्^{2} तौ^{1} आय्^{4} छाङ्^{4} कळ^{1} ।	हम सभी भारतीय लोग गाना पसंद करते हैं ।
इ^{1}, अळ^{4}, सान्^{1} सान्^{1} क च्^{4} हन्^{3} हाव्^{3} श्ये^{3} ।	इ, अळ, सान ये तीन चीनी अक्षर लिखना आसान है ।

७-४ विशेषण का क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयोग : चीनी विशेषण न केवल विशेषण और विधेय के रूप में प्रयुक्त होता है बल्कि क्रिया-विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है; जैसे,

था[१] चन्[१] हाव्[३] खान्[४]	वह सचमुच सुंदर है।
नै[४]क कळ[१] पु[४] हाव्[३] छाङ्[४]	वह गाना गाना सहज नहीं है।
फ़ान्[४] कौ[४] छृ[१] मा ?	खाना क्या पर्याप्त है ? (अथवा खाना खाने के लिए पर्याप्त है क्या ?)

इस तरह का क्रिया-विशेषण अन्य क्रिया-विशेषणों की तरह हमेशा मुख्य क्रियापद के पहले प्रयुक्त होता है।

पाठ-८

वो^{3} यौ^{3} इ^{2} क लाव्-फङ्^{2}यौ शिङ^{1} चौ^{4} । रन्^{2} रन्^{2} तौ^{1} शि^{3}-ह्वान्^{1} था^{1}, ष्वो^{1} था^{1} षृ^{4} ई^{2} क हाव्^{3} रन्^{2}। लाव्^{3} चौ^{4} चे^{4}क रन्^{2} । हन्^{3} यौ^{3}इ^{4} स्च् था^{1} ये^{3} हन्^{3} नङ्^{2} .च्वो^{4} षृ^{4} ।

मेरे चऊ नाम के एक पुराने मित्र हैं । प्रत्येक व्यक्ति उन्हें पसन्द करता है और कहता है कि वे एक अच्छे आदमी हैं । प्रिय चऊ बहुत दिलचस्प व्यक्ति हैं, और वे अति योग्य व्यक्ति भी हैं ।

ने^{4} ल्याङ्^{3}क हाय^{2}च्, इ^{2}क षृ नान्^{2} हाय्^{2} च्, इ^{2}क षृ न्यू^{3} हाय्^{2} च् । ने^{4} क नान्^{2} हाय्^{2} च् च्यु^{4} शि^{3} ह्वान् खान्^{4} षू^{1}, खान्^{4} पाव्^{4} । ने^{4} क न्यू^{3} हाय्^{2}च् शि^{3}ह्वान् माय्^{3} तुङ^{1} शि—माय्^{3} इ^{2} क पि^{3} षृ^{2} अळ^{4} ख्वाय् पान्^{4}, माय्^{3} ई^{2}क प्याव्^{3} स्च्^{4}षृ ख्याय् च्यु^{3} माव्^{2}। माय^{3} इत्याळ^{3} चे^{4}क, माय्^{3} इत्याळ^{3} ने^{4} क, था^{1} ष्वो^{1} था^{1} त छ्येन्^{2} पु^{2} कौ^{4} ।

उन दोनों बच्चों में से एक लड़का है, दूसरी लड़की । वह लड़का केवल किताब पढ़ना और अखबार पढ़ना पसन्द करता है । लड़की चीजें खरीदना ही पसन्द करती है । वह साढ़े बारह डालर में एक व कलम, चालीस डालर नब्बे सेंट में एक कलाई घड़ी खरीदी है । थोड़ी सी यह चीज़ खरीदती है, तो थोड़ी-सी वह चीज़ । वह कहती है उसके पास पैसे की कमी है ।

नए शब्द

सं०		सं०	
इ^{4} स्च्	अर्थ, मतलब	मु^{3} छिन्	माता
श्याङ^{1} श्या	देश (ग्रामीण क्षेत्र)	.फु^{4} मु^{3}	माता-पिता
माव्^{4} च्	टोप	क^{1} क	बड़ा भाई
फु^{4} छिन्	पिता	ति^{4} ति	छोटा भाई

सं०		क्रि०	
च्ये^{3} च्ये	बड़ी बहन	ताय्^{4}	पहनना (घड़ी, टोप आदि)
मै^{4} मै	छोटी बहन	यौ^{3}	होना(अस्तित्व सूचक)
श्य्व्^{2} षङ्	विद्यार्थी (सीखने वाला)	श्ऱ्.वे^{2}	पढ़ना, सीखना

वि०		क्रि० वि०	
त्वो^{1}	अधिक, बहुत		
षाव्^{3}	(मात्रा में) कम,	श्ऱ्.वे^{2}	सीखना
फ्येन्^{2} इ	सस्ता	शि^{3}ह्.वान्	पसंद करना

सहायक शब्द (स० श०)

लाव्^{3}	पुराना (वर्षों में)	त (द)	संज्ञा और क्रियापद, विशेषतासूचक प्रत्यय

उदाहरणमाला

(क) विशेषता-सूचक के रूप में संज्ञा

१. सामान्यतः बगैर "त" के

१- वों^{3} मन् च्.वो^{4} इ^{4}ल्याळ^{3} (आइए) हम कुछ चीनी भोजन

	चुङ्^{1}क्वो^{2} फ़ान्^{4}, हाव्^{3} पु^{4} हाव् ?	बनाएं, ठीक है या नहीं ?
२-	नि^{3} फु^{4} छिन् यो^{3} चुङ^{1} क्वो^{2} शिङ^{4} मै^{2} यो^{3} ।	क्या तुम्हारे पिता का चीनी कुल नाम है ?
३-	चे^{4} षृ^{4} षन्मा^{2} चृ^{3} ? षृ^{4} त^{2} क्वो^{2} चृ^{3} ।	यह किस प्रकार का कागज़ है ? यह जर्मन कागज़ है ?
४-	था^{1} क^{1} क ति^{4} ति तौ^{1} याव्^{4} श्य़वे^{2} (ष्वो) चुङ^{1} क्वो^{2} ह्वा^{4} ।	उसके बड़े और छोटे भाई चीनी भाषा (बोलना) सीखना चाहते हैं ।

२. सामान्यत: "त" के साथ

१-	नि^{3} त इ^{4} स्च़् हन^{3} त्वै	आपका विचार बिल्कुल सही है ।
२-	वो^{3} पु^{4} तुङ् नि^{3}त ह्वा^{4} ।	मैं आपकी बात नहीं समझ रहा हूँ ।
३-	चे^{4} षृ षै^{2} त इ^{4} स्च़् नि^{3} चृ^{1}-ताव् मा ?	यह विचार किसका है, क्या आप जानते हैं ।
४-	ने^{4} क श्य़्वे^{2}षङ्त च्ये^{3}च्ये ह्वै^{4} छाङ^{4} कळ^{1}, ख^{3} षृ था^{1} त मै^{4}मैं पु^{2} ह्वै ।	उस विद्यार्थी की बड़ी बहन गाना जानती है परन्तु उसकी छोटी बहन नहीं जानती ।
५-	चुङ्^{1}क्वो^{2} त श्याङ्^{1} श्या रन्^{2} ताय्^{4} माव्^{4}च़ पु^{2}-ताय् ?	क्या चीनी ग्रामीणजन टोप पहिनते हैं ?
६-	इ^{2} ख्वाय् छ्येन्^{2} त थाङ^{4} कौ मा ?	क्या एक डालर मूल्य की चीनी काफी होगी ?

३. वही लुप्त-संज्ञा के बोध सहित

१-	चे^{4}क पि^{3} षृ^{4} पैं^{2} त ? षृ^{4} इ^{2} क श़्वे^{2} षङ् त, पु^{2} षृ^{4} श्येन्^{1} षङ् त ।	यह कलम किसकी है ? यह एक विद्यार्थी की है, अध्यापक की नहीं ।
२-	नै^{4} ल्याङ्^{3} चाङ्^{1} ह्वाळ^{4} षृ^{4} ष^{2}म्मा रन्^{2} त ? वो^{3} पु^{4} चृताव्^{4} ।	वे दो चित्र किस व्यक्ति के हैं । मैं नहीं जानता ।
३-	नै^{3}क षृ नि^{3}त ? चे^{4}क षृ^{4} वो^{3}त, ने^{4}क षृ^{4}नि^{3}त ।	तुम्हारा कौन सा है ? यह मेरा है, वह तुम्हारा है ।
४-	चे^{4}क पु^{4} ये^{3} षृ^{4} नि^{3}त मा?	क्या यह भी तुम्हारा नहीं है ?
५-	नि^{3}माय्^{3}चि^{3} ख्वाय् छ्येन^{2}त चृ^{3} ?वो^{3}माय्^{3} सान्^{1} ख्वाय् छ्येन्^{2}त ।	तुम कितने डालर मूल्य का कागज़ खरीद रहे हो ? मैं तीन डालर मूल्य का खरीद रहा हूँ ।

(ख) संज्ञाएँ जिनकी विशेषता विशेषण द्वारा सूचित होती हैं

१. सामान्यतः बगैर "त" के (साधारण विशेषण)

१-	वो^{3} मै^{4} मै शि^{3} ह्वान्^{1} ताय्^{4} शिन^{1} माव्^{4} च़् ।	मेरी छोटी बहन नए टोप पहिनना पसंद करती है ।
२-	वो^{3} ति^{4}ति शि^{3}ह्वान् माय्^{3} च्यु^{4} षू^{1} ।	मेरा छोटा भाई पुरानी पुस्तकें खरीदना पसन्द करता है ।
३-	न्यू़^{3}रन्^{2} पु^{4}नङ्^{2} ताय्^{4} ता^{4} प्याव्^{3} ।	स्त्रियां बड़ी कलाई घड़ियां नहीं पहिन सकती हैं ।
४-	नि^{3}मन् यौ^{3} हाव्^{3} चृ^{3} मै^{2} यौ^{3} ?	क्या तुम लोगों के पास अच्छा कागज़ है ?
५-	हाव्^{3} रन्^{2} पु^{4} त्वो^{1} । चे^{4}क ह्वा^{4} त्वै^{4} पु^{2} त्वै ?	अच्छे लोग अधिक नहीं हैं । क्या यह बात सही है ?

६-	था^{1} च्ये च्येषृ^{4} क ह्राव्^{3} श्ट्.वे^{2}-षङ् ।	उसकी बड़ी बहिन एक अच्छी छात्रा है ।

२. सामान्यतः "त" के साथ

१-	अ^{2} क्वो^{2} षृ^{4} इ^{2} क हन्^{3}ता^{4}-त क्वो^{2}।	रूस एक बहुत बड़ा देश है ।
२-	था^{1} थाय्^{4}थाय् च्यु^{4} शि^{3}-ह्वान्^{1} ताय्^{4} हाव्^{3} खान्^{4}त माव्^{4}च् ।	उसकी पत्नी केवल सुन्दर टोप पहिनना पसंद करती है ।
३-	पु^{2}त्वै^{4}त षृ^{4} था^{1} पु^{2} च.वो^{4}।	वह ग़लत काम नहीं करता है ।
४-	चे^{4}क हन्^{3}श्याव्^{3}त तुङ्^{1}शि च्याव्^{4}ष^{2}म्मा ? वो^{3} पु^{4} चृ-ताव्^{4} ।	इस छोटी सी चीज का क्या नाम है ? मैं नहीं जानता ।
५-	चुङ्^{1}क्वो^{2} मै^{2}यौ हन्^{3}त्वो^{1} (त) ऋ^{4}पन्^{3} रन्^{2} (देखिए नोट ८-४)	चीन में अधिक जापानी लोग नहीं हैं ।
६-	मै^{3} क्वो^{2} यौ^{3} पु^{3} षाव्^{3} (त) चुङ्^{1}क्वो^{2}रन्^{2} (देखिए नोट ८-४)	अमरीका में चीनी लोग कम नहीं हैं ।

३. वही—लुप्त संज्ञा के बोध सहित

१-	नि^{3} याव्^{4} माय्^{3} ता^{4}त, याव्^{4} माय्^{3} श्याव्^{3}त ?	तुम बड़ा वाला खरीदना चाहते हो या छोटा वाला ?
२-	ता^{4}त फ्येन्^{2}इ, श्याव्^{3}त क्वै ।	बड़ा वाला सस्ता है, छोटा वाला मँहगा है ।
३-	चे^{4}क हाव्^{3} खान्^{4}त षृ^{4} था^{1}त,	यह सुंदर दिखनेवाला, उसका

	पु^{4}हाव्^{3}खान्^{4}त ये^{3}षृ^{4} था^{1}त ।	है, असुंदर दिखने वाला भी उसका है ।
४-	श्याव्^{3} प्याव्^{3} हाव्^{3}, ख^{3}षृ श्याव्^{3} त क्वै^{4} ।	छोटी कलाई घड़ी अच्छी होती है लेकिन छोटी घड़ी कीमती होती है ।
५-	चे^{4} चाङ्^{1} ह्वाळ^{4} षृ^{4} शिन^{1}त, नै^{4}चाङ्^{1} षृ^{4} च्यु^{4}त ।	यह चित्र नया है, वह पुराना है ।

व्याकरण

८-१ विशेषता सूचक : चीनी वाक्य के शब्दविन्यास के नियमानुसार विशेषता-सूचक को सर्वदा अपने केन्द्रीय शब्द के पहले आना चाहिए या उस शब्द के पहले आना चाहिए जिसकी वह विशेषता बतलाता हैं । यह विशेषता-सूचक कोई एक शब्द, शब्द-समुदाय वाक्शैली अथवा वाक्यखंड हो सकता है ।

विशेषता सूचित करने में 'त' एक भूमिका अदा करता है; लेकिन हर विशेषण के साथ 'त' का प्रयोग नहीं होता । यहां हम 'त' के प्रयोग की कुछ विधियां बतायेंगे :—

(१) कुछ संज्ञाएं तथा सर्वनाम जिनका प्रयोग विशेषण के रूप में किया जाता है, अपने शब्दों के इतने अखंडनीय भाग होते हैं कि वे सब स्थायी शब्द-समूह बन जाते हैं । ऐसी दशा में सहायक शब्द 'त' का प्रयोग नहीं होता । जैसे :—

वो^{3} फङ्^{3}यौ, निन् थाय्^{4}-थाय्, वो^{3}मेन हाय^{2}च्, आदि ।

(२) कुछ संज्ञाओं का प्रयोग इतना सार्वदेशिक है कि वे एक साथ मिलकर अविभाज्य स्थायी शब्दसमूह बन गये हैं और 'त' के प्रयोग की जरूरत नहीं होती; जैसे :—

फ़ान्^{4}-छयेन्^{2} (भोजन के लिए पैसे), ख रन्^{2} (अतिथि),

फ़ान्^{4}-च्वो^{1} (खाने की मेज) क्वो^{2}-क^{1} (राष्ट्रीय गीत)

जो संज्ञाएं निर्जीव पदार्थों की विशेषता प्रगट करती हैं उनके बाद 'त' का प्रयोग अवश्य होना चाहिये। जैसे :—वो^{3}-त ब्याव्^{3}, था^{1}-त-षू^{1}, षै^{2}त छयेन्^{2} आदि। किसी मूल्य-सूचक विशेषता प्रगट करने वाले वाक्यांश के साथ 'त' का प्रयोग जरूरी है जैसे :— उ^{3} माव^{2} छयेन्^{2}-त थाङ्^{2}, इ^{4} पाय्^{3} ख्वाय्^{4} छयेन्^{2} त षू^{1}, आदि।

(३) स्थान-वाचक विशेषता-सूचक संज्ञा के साथ 'त' अक्सर प्रयुक्त नहीं होता। जैसे :—मै^{3}क्वौ^{2} रन्^{2}, चुङ्^{1}क्वो^{2} पाव^{4}, ईङ^{1}क्वौ^{2} फङ्^{2}यौ, आदि।

(४) विशेषण का खास तौर से शब्दांशिक विशेषणों का प्रयोग करते समय आम तौर से 'त' की जरूरत नहीं होती; जैसे :— ता^{4} क्वो^{2}, हाव्^{3} रन्^{2}' लाव्^{3} रन्^{2}" लाव्^{3} थाय्^{4}थाय।

संज्ञा और सर्वनाम की तरह कुछ विशेषण भी अपने केन्द्रीय शब्दों के इतने अखंड भाग हो गये हैं कि अब वे स्थायी शब्द-समूह बन गये हैं, जैसे,

ता^{4} रन्^{2} (प्राप्त-वयस्क, युवा, बालिग), श्याव्^{3} रन्^{2} (बुरा आदमी, बदमाश) श्याव्^{3}-हाय^{2}च़् (बच्चा), ता^{4}-क^{1} (बड़ा भाई), ता^{4}च्ये^{3} (बड़ी दीदी), आदि।

(५) जब विशेषण के पहले कोई क्रिया विशेषण विशेषतासूचक के रूप में प्रयुक्त होता है तो 'त' का प्रयोग सामान्यतः अपरिहार्य हो जाता है; जैसे :—

हन्^{3} लाव्^{3}-त रन्^{2}, पुहाव्^{3}-त- हाय्^{2}च़्, हाव्^{3}-खान्-त ह्वाळ, मै^{2}-ई^{4}स्च़् त षू आदि।

८-२ यदि संदर्भ से यह स्पष्ट हो कि विशेष्य क्या है तो विशेष्य को छोड़ा जा सकता है, लेकिन विशेषण के पश्चात्

आने वाला 'त' किसी भी हालत में नहीं छोड़ा जा सकता, जैसे :—

चे^{4} षृ^{4} षै^{2} त ? वो त यह किसका है ? मेरा है ।

चुङ्^{1} क्वो^{2} षृ^{4} चुङ^{1}-क्वो^{2}रन्^{2} त चीन चीनदेशवासियों का है ।

८-३ "त्वो^{1}" और "षाव्^{3}" यह दोनों बहुत ही प्रचलित विशेषण हैं लेकिन इनके प्रयोग में कुछ विशेषताएं हैं । विधेय के रूप में (तुलना के अर्थ में) इनमें से कोई भी प्रयुक्त हो सकता है और इनके पहले कोई भी क्रिया विशेषण आ सकता है; जैसे :— श्य.वे^{2}षङ् त्वो^{1} श्येन्^{1}-षङ् षाव्, श्य.वे^{2}-षङ् हन् त्वो श्येन्^{3}-षङ् हन्^{3} षाव् (तुलनात्मक)

लेकिन संज्ञा के विशेषतासूचक के रूप में वे अन्य विशेषणों से भिन्न हैं । हमें 'हन्^{3} त्वो^{1}', 'हन्^{3} षाव्^{3}' कहना चाहिए । हम ऐसा नहीं कह सकते कि 'त्वो^{1} श्येन्^{1}-षङ् षृ^{4} इन्^{4}-तु^{4} रन्^{2},' इसकी अपेक्षा हमें इस प्रकार कहना चाहिये :—'हन्^{2} त्वो^{1} श्येन^{1}-षङ् षृ^{4} इन^{4}-तु^{4} रन्^{2} । एक और बात ध्यान में रखनी चाहिए कि 'हन्^{3} त्वो^{1}' और 'हन्^{3} षाव्^{3}' के बाद 'त' का प्रयोग वैकल्पिक है, जैसे :—हन^{3}-त्वो^{1} (त) रन^{2}, पु^{4} षाव्^{3} (त) तुङ्^{1}-शि, आदि । लेकिन हम 'त्वो^{1}' त रन्^{2}' षाव्^{3}-त तुङ्^{1}-शि' इत्यादि कभी नहीं कह सकते ।

८-४ यौ^{3} - 'यौ^{3}' का अर्थ 'के पास होना' है लेकिन इससे कोई व्यापार प्रगट नहीं होता । इससे स्वामित्व का सम्बन्ध व्यक्त होता है और इसका कर्त्ता हमेशा कोई प्राणिवाचक संज्ञा या सर्वनाम होता है; जैसे :—'वो^{3} यौ^{3} षू^{3}' मेरे पास किताब है; 'था^{1} मै^{2}यौ पि^{3}' उसके पास कलम नहीं है ।

लेकिन अगर हम यह बताना चाहें कि किसी स्थान पर कितने प्राणी अथवा वस्तुएं हैं, या किसी निश्चित अवधि में कितनी छोटी

इकाइयां हैं तो भी यौ का प्रयोग होता है। ऐसी दशा में स्थान-बोधक शब्द अथवा शब्द समूह कर्त्ता होता; जैसे :—

इन्^{1}- तु^{4} ये^{3} यो^{3} हाव्^{3} प्याव्^{3}—भारत में भी अच्छी घड़ियां मिलती हैं।

वो^{3}मन श्.श्वे^{2} श्याव् यौ^{3} हन्^{3} त्वो^{1} श्.श्वे-षङ्—हमारे विद्यालय में बहुत छात्र हैं।

अगर 'यौ^{3}' के पहले किसी कर्त्ता का प्रयोग न हो तो इसका व्यवहार अकर्तृक रूप में होता है और इसका अनुवाद 'है' या 'था' होता है, अंग्रेजी में इसका अनुवाद 'देयर इज (वाज)' 'देयर आर (वेर)' होता है अर्थात् 'यौ^{3}' वाक्य के आरम्भिक अर्थ में प्रयोग होता है :—यथा 'यौ^{3} ई^{2}क रन्^{2}-कोई एक आदमी था (है)।

८-५ मैं^{2}-यौ^{3}: 'यौ^{3}' का निषेधार्थक रूप 'मैं^{2} है, मैं^{2} यौ^{3}' हमेशा 'मैं^{2}' के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है जब भी वह क्रिया या कर्म के पहले प्रयुक्त हो; जैसे :—

वो^{3} मैं^{2} छयेन्^{2}—मेरे पास पैसे नहीं हैं।

था^{1} मैं^{2} लाय्^{3}—वह नहीं आया।

लेकिन जब 'मैं^{2} यौ^{3}' का प्रयोग किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए अकेले किया जाए तो इसे कभी भी संक्षिप्त नहीं करना चाहिये; जैसे :—

था^{1} यौ^{3} छयेन्^{2} मैं^{2} यौ ? उसके पास पैसे हैं या नहीं ?

मैं^{2} यौ^{3}—नहीं ?

नोट : चीनी भाषा में ग, ज, द, ब और घ, झ, ध, भ, ये ध्वनियां नहीं हैं। लेकिन उच्चारण करते समय ध्वनि संधि के फल-स्वरूप 'त' का 'द' और 'क' का 'ग' जैसे उच्चारण भी होता है, विशेषतया मापक शब्द 'क' और विशेषतासूचक 'त' का।

पाठ-९

वो^{3} यौ^{3} ल्याङ्^{3}क चुङ्^{1} ववो^{2} फङ्^{2}यौ। इ^{2}क शिङ्^{4}चाङ्^{1}इ^{2}क शिङ्^{4} छन्^{2}। शिङ्^{4} चाङ्^{1}त ने^{4}-क फङ्^{2}यौ यौ^{3} ल्याङ्^{3}क न्य़ू^{3}-अळ। था^{1}मन् तौ^{1} हन्^{2}छ़ूङ्^{1}-मिङ्।

मेरे दो चीनी मित्र हैं, एक का नाम चाङ् और एक का छन् है। जिसका नाम चाङ् है उसकी दो पुत्रियाँ है। दोनों बहुत प्रतिभाशाली (बुद्धिमान) हैं।

चाङ्^{1} श्येन्षङ् हन्^{3} ह्वै^{4}ह्‌वा^{4} ह्‌वाळ^4। था^{1}ह्वा^{4}त ह्वाळ^4 रन्^{2}रन्^{2} तौ^{1}शि^{3}ह्वान्^{1}। ता^{1} श्याव्^{3}च्ये ये^{3} श्याङ्^{3} श्य़वे^{2} ह्वा^{4} ह्वाळ^4। था^{1} ष्वो^{1} "पा^{4}पा, ह्वा^{4} ह्वाळ^4 च़वै यौ^{3}इ^{4}स्च़्। वो^{3} श्याङ्^{3} श्य़वे^{2} इ त्याळ^3। निन्^{2} नङ्^{2} च्याव्^{1} वो^{3} मा ?" था^{1} फ़ु^{4} छिन् ष्वो^{1}: "वो^{3} ह्‌वा^{4}त पु^{4} हाव्^{3}। यौ^{3}इ^{2}वै^{4}छन्^{2}श्येन्^{2}षङ्, था^{1} ह्‌वा^{4}त हन्^{3} हाव्^{3}। नि^{3} छिङ्^{3} था^{1} च्याव्^{1} नि^{3}, पु^{4} हाव्^{3} मा ?

श्री चाङ् चित्रकला जानते हैं। प्रत्येक व्यक्ति उनके चित्रों को पसंद करता है। बड़ी पुत्री भी चित्रकारी सीखना चाहती थी। वह बोली "पिताजी, चित्रकारी अत्यधिक दिलचस्प है। मैं तनिक सीखना चाहती हूँ। क्या आप मुझे सिखा सकेंगे ?" उसके पिता बोले: "मैं अच्छी चित्रकारी नहीं करता। यहाँ एक छन् महाशय हैं वे बहुत अच्छी चित्रकारी करते हैं। तुम उनसे सिखाने के लिए पूछो। ठीक है न ?"

अळ^4 श्याव्^{3}च्ये ष्वो^{1} चुङ्^{1}-क्वो^{2} श्ट्.वे^{2}षङ् च्.वै^{4}आय्^{4} श्ट्.वे^{2}त षृ^{4}इङ्^{2} वेन्^{1}। था^{2} श्याङ्^{3} च्याव् था^{1}मन्, ख^3-षृ था^{1}त इङ्^{1} वेन्^{2} पु^{2} थाय्^{4} हाव्^{3}। था^{1}छिङ्^{3}था^{1} मु^{3}छिन् च्याव्^{1} था^{1}। था^{1} मु^{3} छिन् ष्वो^{1}: "वो^{3}त इङ्^{1}वेन्^{2} ये^{3} पु^{2} थाय्^{4} हाव्^{3}। च्.वै^{4} हाव्^{3}, नि^{3} छिङ्^{3} च्याव्^{1} इङ्^{1}वेन्^{2}त ने^{4}वै वाय्^{4}क्वो^{2} श्येन्^{1}षङ् च्याव्^{1}नि^{3}।"

दूसरी पुत्री कहती है कि चीनी छात्र अधिकतम अंग्रेजी का अध्ययन करना पसंद करते हैं। वह उन्हें पढ़ाना चाहती है। लेकिन उसकी अंग्रेजी बहुत अच्छी नहीं है। उसने अपनी मां से कहा कि उसे पढ़ा दे। उसकी माँ बोली: "मेरी अंग्रेजी भी ज्यादा अच्छी नहीं है। सबसे ज्यादा अच्छी बात तुम्हारे लिए यह है कि तुम उन विदेशी सज्जन से पढ़ाने को कहो जो अंग्रेजी पढ़ाते हैं।"

नये शब्द

मा०

—श्ये^{1} कुछ

—वै^{4} (व्यक्तियों के लिये नम्रताबोधक)

सं०

अळ^{2}च्.	बेटा, पुत्र
न्.यू^{3} अळ	बेटी, पुत्री

क्रि०

श्याङ्^{3}	सोचना, बारे में सोचना, इच्छा करना (सहायक क्रिया--विचार करना, योजना बनाना, चाहना)
न्येन्^{4}	पढ़ना (उच्चारण करके), पढ़ाई करना
च्याव्^{1}	पढ़ाना
ह्.वा^{4}	चित्रकारी करना
ह^1	पीना

सं० **क्रिया-कर्म (क्रि० क०)**

इङ्^{1} वेन्^{2} अंग्रेजी भाषा न्येन्^{4} षू^{1} पढ़ाई करना, स्कूल जाना
छा^{2} चाय
ष्वै^{3} पानी, जल च्याव्^{1} षू^{1} अध्यापन करना।
च्यु^{3} मदिरा, शराब

क्रि० वि०

च़्वै अधिकतम, तम
छाङ्^{2} (छाङ्^{2}) प्रायः, हमेशा

वि०

नान्^{2} कठिन होना
रुङ्^{2}इ आसान होना, सरल
छ़ुङ्^{1} मिङ् बुद्धिमान होना, चालाक
हाव्^{3} थिङ्^{1} सुनने में अच्छा

उदाहरणमाला

(क) सामान्य वाक्यों में वाक्य-खंड (प्रायः 'तौ^{1}' के साथ)

नमूने :

(१-५) नङ्^{2} खान्^{4} षु^{1}त रन्^{2}तौ^{1} नङ्^{2} श्ये^{3} च़्^{4} मा ?

क्या जो पढ़ सकते हैं, वे लिखना भी जानते हैं ?

(६-१०) था^{1} ष्वो^{1}त ह्वा^{4} च़्वै^{4} यौ^{3} इ^{4} स्च्

उसकी कही बात अत्यन्त मज़ेदार होती है ।

१- ह्वै^{4} ष्वो^{1} चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4}त चीनी भाषा बोल सकने वाले
मै^{3}क्वो^{2} रन्^{2} पु^{4}षाव्^{3}, ख^{3}षृ अमरीकी कम नहीं हैं । लेकिन

	ह्.वै४ श्ये३ चुङ्१क्वो२च्.४त पु४त्वो१ ।	बहुत कम (अमरीकी) चीनी अक्षर लिख सकते हैं ।
२-	आय्४ ह१ च्यु३त रन्२ छाङ्२ छाङ्२ मै२ छ्येन्२ ।	शराब पीना पसंद करने वालों के पास अक्सर पैसा नहीं होता ।
३-	न्येन्४षु१त तौ१षृ३श्य.वे२षङ् मा ?	क्या पढ़ने वाले सब विद्यार्थी होते हैं ?
४-	च्.वो४ माय्३माय्त तौ१ यौ३ छ्येन्२ मा ?	क्या सब व्यापारी धनी हैं ?
५-	शि३ ह्वान् था१न्यू३ अळ त रन्२ पु४षाव्	बहुत लोग उसकी पुत्री को पसंद करते हैं ।
६-	था१ ष्वो१ त ह्वा४ नि३ तौ१ तुङ्३ मा ?	उसकी सारी बात क्या आप समझते हैं ?
७-	वो३ हन्३ आय्४ खान४ था१ च्.वो४त षू१ ।	उसकी लिखी हुई किताबें पढ़ना मैं पसंद करता हूं ।
८-	नि३मन् न्येन्४त षू१ नान्२ पुनान्२ ?	आप जो किताब पढ़ रहे हैं क्या वह कठिन है ?
९-	वो३ ष्वो१त त्वै४ पु२ त्वै४ ।	मैं जो कहता हूँ वह ठीक है या नहीं ?
१०-	था१मन् छाङ्४ त षृ४ ष२म्मा कळ१ ।	वे लोग कौन सा गीत गा रहे हैं ?

(ख) विशेष प्रकार के वाक्यों में वाक्यखंड (हमेशा निश्चयवाचक शब्द के साथ)

नमूने :

(१-४) छाङ्^{4} कळ^{1}त ने^{4}क रन्^{2}शिङ्^{4} लि^{3} ।

गाने वाले व्यक्ति का नाम ली है ।

(५-८) था^{1} छाङ्^{4}त ने^{4}श्ये कळ^{1} चन्^{1} हाव्^{3} थिङ्^{1} ।

वह जो गीत गा रहा है वह सचमुच मधुर है ।

(९-१०) ने^{4}क माय्^{4} थाङ्^{2}त षृ श्याङ्^{1}श्या रन्^{2} ।

वह मिठाई बेचने वाला व्यक्ति ग्रामीण है ।

१-	च्याव्^{1} इङ्^{1}वेन्^{2}त नेवै^{4} श्याव्^{3} च्ये शिङ्^{4} छन्^{2} ।	अंग्रेजी पढ़ाने वाली कुमारी महिला का नाम छन् है ।
२-	छिङ्^{3} नि^{3} छृ^{1}फ़ान्^{4}त नेवै श्येन्^{1}षङ् षृ^{4}पुषृ चाङ्^{1} श्येन्^{1}षङ् ?	तुम्हें भोजन पर निमंत्रित करने वाले महाशय क्या मि० चाङ् है ?
३-	छाङ्^{4} कळ^{1}त नेश्ये हाय्^{2}च्. तौ षृ वो^{3}त श्य्.वे^{2}षङ् ।	गाने वाले वे सब बालक मेरे छात्र हैं ।
४-	वो^{3}याव्^{4} खान्^{4} नि^{3} माय्^{3}त नेक शिन्^{1} पि^{3} ।	मैं तुम्हारी खरीदी हुई उस नई कलम को देखना चाहता हूँ ।
५-	वो^{3} श्येन्^{4}चाय्^{4} ताय्^{4}त चेक माव्^{4}च्. थाय्^{4} नान्^{2} खान्^{4} ।	यह टोप जो मैं अभी पहने हुए हूँ दिखने में बहुत खराब है ।
६-	था^{1} ष्वो^{1}त नेश्ये ह्वा^{4} पु^{1} त्वै^{4} ।	उसकी कही वे बातें सही नहीं हैं ।
७-	निन्^{2}त न्य्.^{3}अळ श्ये^{3}त नेश्ये च्.^{4}चन्^{1} हाव्^{3} ।	आपकी पुत्री द्वारा लिखे हुए वे अक्षर सचमुच सुन्दर हैं ।
८-	ने^{4}क माय्^{4} पाव्^{4}त श्येन्^{4} चाय्^{4} हन्^{3} यौ^{3}छ्येन्^{2} ।	समाचारपत्र का वह व्यापारी अब बहुत धनी है ।

९- ने^{4} ल्याङ्^{3} क च़वो^{4}फ़ान्^{4}त, इ^{2}क च्याव्^{4} लाव्^{3} चाङ्, इ^{2}क च्याव्^{4} लाव्^{3} लि^{3}।

उन दो खाना बनानेवालों में से एक का नाम लाव् (वृद्ध) चाङ् है और एक का नाम लाव् (वृद्ध) ली है ।

द्रुत-पाठ

हाय्^{2}च़् हन्^{3} छ़ूङ्^{1}मिङ्

श्याव्^{3} हाय्^{2}च़् हन्^{3} छ़ूङ्^{1} मिङ्

ने^{4}क श्याव्^{3} हाय्^{2}च़् हन्^{3} छ़ूङ्^{1} मिङ्

न्येन्^{4} षू^{1}त नेक श्याव्^{3} हाय्^{2} च़् हन्^{3} छ़ूङ्^{1}मिङ्

न्येन्^{4} चुङ्^{1} क्वो^{2} षु^{1}त नेक श्याव्^{3} हाय्^{2}च़् हन्^{3} छ़ूङ्^{2}मिङ्

न्येन्^{4} चुङ्^{1} क्वो^{2} षू^{1}त ने ल्याङ्^{3} क श्याव्^{3} हाय्^{2}च़् हन्^{3} छ़ूङ्^{1} मिङ्

न्येन्^{4} चुङ्^{1} क्वो^{2}षु^{1}त ने ल्याङ्^{3}क श्याव्^{3} हाय्^{2}च़् चन्^{1} छ़ूङ्^{1}मिङ्

व्याकरण

९-१ चीनी भाषा में विशेषता-सूचक वाक्यखंड आम विशेषण जैसे ही कर्त्ता के पहले प्रयोग किया जाता है । लेकिन इसे कर्त्ता से जोड़ने के लिये 'त' का प्रयोग होना ही चाहिये । यह वाक्यखंड मुख्य रूप से क्रिया और विशेषण दोनों से ही बनता है तथा उद्देश्य और विधेय दोनों ही स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है। अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद 'हु, 'हुइच' 'दैट' आदि से होता है और वाक्यखंड कर्त्ता के बाद आता है । लेकिन हिंदी में इसका प्रयोग चीनी भाषा की तरह ही होता है । उदाहरण के तौर से 'कल आने वाला आदमी' चीनी भाषा में 'च़वो^{2}-श्येन् लाय^{2}-त रन्^{2}' (कल आने वाला आदमी) । चालू हिन्दी

भाषा में इसे इस तरह भी कहते हैं —'वह आदमी जो कल आया था', अंग्रेजी—दि मैन हु कैम एसटर डे। ष्वो^{1} ह्वा^{4} त रन्^{2}—बातें करता हुआ आदमी, (अथवा जो आदमी बातें कर रहा है) । था^{1} ष्वो^{1}-त ह्वा^{4}—उसकी कही हुई बातें (अथवा जो बातें उस कहनीं)— दि थींग्स (हुइच्) हि सेज़। 'चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} हाव्^{3} त रन्^{2}—चीनी भाषा में निपुण व्यक्ति (अथवा जो चीनी अच्छी तरह जानता हो ।

९-२ अगर वाक्यखंड निश्चयवाचक और संख्यावाचक शब्द के साथ प्रयुक्त हो तो वाक्यखंड पहले आता है ।

(१) ने^{4}क रन्^{2}—वह आदमी,

ष्वो^{1}-ह्वा^{4}-त ने^{4}क रन्^{2}—बातों में लगा हुआ वह आदमी, (अथवा वह आदमी जो बातें कर रहा है) ।

(२) ने^{4}-वै^{4} श्येन्^{1}षङ्—वह अध्यापक ।

च्याव^{4} चुङ्^{1}-वेन्^{2}-त-ने^{4}-वै श्येन्^{1}षङ्—चीनी भाषा पढ़ाने वाला वह अध्यापक (अथवा वह अध्यापक जो चीनी पढ़ाते हैं)

(३) चे^{4} ल्याङ्^{3}क हाय्^{2}-च्—ये दो बच्चे ।

न्येन्^{4}-षु^{1}-त-चे^{4}-ल्याङ्^{3}क हाय्^{2} च्—पढ़ने वाले ये दो बच्चे, (अथवा ये दो बच्चे जो पढ़ाई करते हैं)। अंग्रेजी में उपरोक्त निश्चयवाचक शब्दों का अनुवाद 'दि' से होता है, 'दॅट' या 'दोज़, से नहीं ।

९-३ कुछ विशेषता-सूचक वाक्यखंड ऐसे हैं जो कोई व्यापार या अवस्था बताते हैं और उनके अंत में 'त' होता है । ऐसे वाक्यखंड संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होकर संज्ञा का कार्य संपन्न करते हैं; जैसे :—माय्^{4}-षु^{1}-त—पुस्तक बेचने वाला

च़वो४-माय्३ माय् त—व्यापारी

माय्४-पाव्४-त—अखबार वाला

च़वो४ फ़ान्४-त—पाचक (खाना बनाने वाला)

संज्ञा की तरह इनके साथ निश्चयवाचक या संख्यावाचक शब्द का प्रयोग हो सकता है; जैसे—ने४-क माय्४पाव्४ त शिङ्४ चाङ्१ —उस अखबार वाले का नाम मि० चाङ् है।

था१मन यौ३ ल्याङ्३क च़वो४-फ़ान४त—उसके पास दो पाचक हैं। यह बताना जरूरी है कि उपरोक्त शब्द बोलचाल की भाषा में ज्यादा प्रयुक्त होते हैं। वैसे इनके औपचारिक प्रयोग के लिये दूसरे शब्द भी हैं :—जैसे :—'च़वो४-फ़ान्४-त' के लिये दूसरे शब्द हैं 'छु२-च़्', और 'च़वो४-माय३-माय-त' के लिये 'षाङ्१रन्२ है।

६-४ क्रिया का प्रयोग द्विरुक्ति करके भी किया जाता है। चीनी भाषा में क्रिया की द्विरुक्ति से लघु तथा शीघ्रता का भाव प्रकट होता है। कुछ परिस्थितियों में क्रिया की द्विरुक्ति कोई अनौपचारिक या निरुद्देश्य व्यापार भी प्रगट कर सकती है। एक शब्दांशिक क्रिया को द्विरुक्ति करते समय दोनों के बीच 'इ१' (एक) का प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण :

खान्४ खान्४ या खान्४ इ खान्४—एक झलक देखना या पढ़ना।

श्याङ्३ श्याङ्३ या श्याङ्३ इश़्याङ्३—विचार करना, सोचना

वेन्४-वेन्४ या वेन्४ इ वेन्४—पूछना

पाठ-१०

क-	लि3 श्येन्1षङ्, निन्2च्या1 चाय़् ना3 ळ ?	ली महोदय, आपका घर कहाँ है ?
ख-	चाय़् नान्2चिङ्1 ।	नानकिङ में ।
क-	चाय़् छङ्1लि3थौ मा ?	क्या शहर के अन्दर है ?
ख-	पु4, चाय़् छङ्2 वाय़्4 थौ ।	नहीं, शहर के बाहर ।
क-	छङ्2 वाय़्4थौ ष2म्मा ति4-फाङ् ?	शहर के बाहर किस स्थान पर है ?
ख-	छङ्3 वाय़्4थौ यौ3 इ2क श्ऱ्वे4 श्याव्2। वो3मन् च्या1 च्यु4 चाय़् ने4 क श्ऱ्वे2-श्याव्4 हौ4थौ ।	शहर के बाहर एक स्कूल है । हमारा घर स्कूल के पीछे की ओर है ।
क-	निन्2 चाय़् ने4क श्ऱ्वे2-श्याव्4 लि च्याव्1षु1 मा ?	क्या आप उस स्कूल में पढ़ाते हैं ?
ख-	पु4 । वो3 षृ4क च्ऱ्वो4 माय़्3-माय त ।	नहीं, मैं एक व्यापारी हूँ ।
क-	नि3मन् त फु4च्. चाय़् ना3ळ ?	आपकी दुकान कहाँ है ?
ख-	चाय़् छङ्2 लि3 थौ । वो3-	शहर के अन्दर । हमारी दुकान

	मन् त फु^{4} च्‌् हन्^{3} श्याव्^{3} ।	बहुत छोटी है ।
क-	निन्^{2} थाय्^{4} ख^{4} छि । निन्^{2} छाङ्^{2} चाय् च्या^{1} छू^{1} फ़ान्^{4} मा ?	आप बहुत नम्रता दिखा रहे हैं । आप क्या अक्सर घर पर भोजन करते हैं ?
ख-	वो^{3} पु^{2} चाय् च्या^{1} छू ।	नहीं, मैं घर पर भोजन नहीं करता ।
क-	वै^{4} ष^{2}म्मा ?	क्यों ?
ख-	इन्^{1}वैं फु^{4}च्‌् लित षृ थाय्^{4} त्वो^{1} ।	क्योंकि दुकान में बहुत काम रहता है ।
क-	निन्^{1} चाय् ना^{3}ळ छू^{1} फ़ान्^{4} ?	आप भोजन कहां करते हैं ?
ख-	वो^{3}मन् फु^{4} च्‌् छ्येन्^{2}थौ यौ^{3} इ^{2}क श्याव्^{3} फ़ान्^{4}क्वा^{3}-ळ । वो^{3} छाङ्^{2} चाय् ना^{4}-ळ छू^{1}फ़ान्^{4} ।	हमारी दुकान के सामने एक छोटा जलपान-गृह है । मैं अक्सर वहीं भोजन करता हूँ ।

नये शब्द

गतिशील क्रि० वि०

वै^{4} ष^{2}म्मा	क्यों ? (किस कारण से)
इन्^{1} वै	क्योंकि, कारण से

सं०

षाङ्^{4} थौ	ऊपर
श्या^{4} थौ	नीचे
लि^{3} थौ	अन्दर
वाय^{4} थौ	बाहर

सं०

ऊ^{1} च्‌्	कमरा
ति^{4}फ़ाङ	स्थान
छङ्^{2}	शहर
इ्वे^{2}श्याव्^{4}	स्कूल
फु^{4} च्‌्	दुकान
फु^{4}	भण्डार, दुकान
फ़ान्^{4} क्वाळ^{3}	जलपान-गृह, रेस्टोरेंट

छयेन्² थौ सामने

हौ⁴ थौ पीछे

ति³ श्या नीचे

च⁴ ळ यहां

ना⁴ ळ वहां

ना³ ळ कहां ?

च्या¹ घर, परिवार

फ़ाङ्² च्. मकान, इमारत

लौ² कई तल्ले की इमारत

लौ²षाङ् ऊपर के तल्ले पर

क्रि०

चाय्⁴ पर होना, अंदर होना (अव्यय—पर, अन्दर)

स० श०

न (सकारात्मक वाक्यों में कार्य चलते रहना सूचित करने वाला शब्द)

उदाहरणमाला

(क)-'यौ' के पहले स्थान-सूचक संज्ञाएं—अस्तित्व सूचित करने के लिए

नमूना : **स्थान यौ संज्ञा**

च्वो¹ च्. षाङ् यौ³ षु¹	मेज़ के ऊपर पुस्तकें हैं।
१- छङ्² बाय्⁴ थौ मै²यौ³ फ़ान्⁴ क्वाळ³।	शहर के बाहर कोई जलपान-गृह नहीं है।
२- च्.वो¹च्. ति³ श्या यौ³ पु-षाव³ तुङ्¹शि।	मेज़ के नीचे चीज़ें कम नहीं (काफी) हैं।
३- च्या¹लि यौ³ रन्² मै²-यौ³ ?	क्या घर में कोई है ?
४- नि³मन् च्या¹ लि यौ³ त्वो¹-षाव् रन्² ?	आपके परिवार में कितने व्यक्ति हैं ?
५- नि³ मन् श्.ख्वे² श्याव्⁴ यौ³ चि³ वै⁴ श्येन्¹ षङ् ? यौ³ त्वो¹षाव् श्.वे²षङ् ?	तुम्हारे स्कूल में कितने अध्यापक हैं ? कितने विद्यार्थी हैं ?

६-	चुङ्१ क्वो२त श्याङ्१श्या यौ3 श्ट्वे२ श्याव्४ मै२ यौ3 ?	क्या चीन के ग्रामीण इलाकों में स्कूल है ?
७-	ना3ळ यौ3 फान्४ क्वा3 ळ ?	जलपानगृह कहां है ?

(ख)-स्थान-सूचक संज्ञाओं के साथ 'चाय्४'-स्थान सूचित करने के लिए

नमूना : सं०	चाय्४ स्थान	
वो3 मन् च्या१	चाय् छङ्२ वाय्४थौ	हमारा घर शहर के बाहर है ।
नि3 मन् त फु४ च्	चाय् ना3 ळ ?	आप की दुकान कहाँ है ?

१-	वौ3 मन् श्याङ्३ माय्3 त ने४ फ़ाङ्२च् चाय् श्याङ्१-श्या ।	वह मकान गाँव में है जिसे हम खरीदने की सोच रहे हैं ।
२-	हाय्२च् तौ१ चाय वाय्४-थौ न ।	सब बालक बाहर हैं ।
३-	चाङ्१ श्येन्षङ् पु२ चाय् च४-ळ, था१ चाय् वाय१ क्वो२ ।	मि० चाङ् यहाँ नहीं हैं, वे विदेश में हैं ।
४-	था१ मन् तौ१ चाय् लौ२ षाङ् न । श्या४ थौ४मै२ यौ रन्२ ।	वे सब ऊपर की मंज़िल में हैं, नीचे कोई नहीं है ।
५-	श्येन्१ षङ् चाय४ च्या१ मा ? चाय्४ च्या१ ।	क्या महाशय घर पर हैं ? हां ।
६-	वो3 त पि3 चाय् ना3 ळ ? चाय् च४ ळ न ।	मेरी कलम कहां है ? यहां हैं ।
७-	षै२ चाय् छयेन्१थौ त ऊ१-च् लि ?	सामने के कमरे में कौन है ?

(ग) अव्यय के रूप में 'चा़य[4]'—मुख्य कार्य के लिए सहायक

१-	था[1]मन् चा़य ने[4] क ऊ[1] च्.-लि छू[1]फ़ान्[4] न ।	वे उस कमरे में भोजन कर रहे हैं ।
२-	हाय्[2] च्. मन् तौ[1]चा़य् छङ्[2]-लि[3]थौ न्येन्[4] षु[1] ।	बालक शहर के अन्दर के स्कूल में पढ़ते हैं ।
३-	निन्[3] चा़य् ना[3] ळ च.यो[4] षृ[4] ? चा़य् नान्[2] चिङ् ।	आप कहां क्या काम करते हैं ? नानकिङ् में ।
४-	निन्[2] चा़य् नान्[2]चिङ्[1] च.वो ष[2]म्मा ?	आप नानकिङ् में क्या काम करते हैं ?
	वो[3] चा़य् नाळ[4] च्याव्[1] षू[1] ।	मैं वहां अध्यापन करता हूं ।
५-	छिङ्[3] निन्[2] चा़य् वो[3] मन् च्या[1]लि छू[1] इत्या[3]ळ तुङ्[1]शि ।	(कृपया) हमारे घर में कुछ जलपान कीजिए ।
६-	नि[3] श्येन्[4] चा़य्[4] नै[3] क फु[4]-च्. च.वो[4] षृ[4] ?	आजकल आप किस दुकान में काम करते हैं ?

(घ) स्थान-सूचक संज्ञाओं के साथ कुछ और वाक्य

१-	पाव्[4] षाङ् श्वो[1] ष[2]म्मा ?	समाचार-पत्र क्या कहता है ?
२-	निन्[2] षृ ना[3] ळ त रन्[2] ?	आप कहां के रहने वाले हैं ?
३-	च.वो[1] च्. ति[3] श्यात् तुङ्[1]-शि तौ[1] षृ षै[2] त ?	मेज़ के नीचे की चीजें किसकी हैं ?
४-	फु[4]च्. छयेन्[2]थौ त नै[4]वै श्येन्[1] षङ् शिङ्[4] चाव्[4] ।	स्टोर के सामने वाले व्यक्ति का नाम चाओ है ?
५-	वो[3]मन् चेक श्ये.वे[2]श्याव्[4] लित श्ये.वे[2]षङ्, इ पान्[4] षृ न्यु.[3] त ।	हमारे स्कूल में आधे विद्यार्थी महिलाएं हैं ।

६-	च^{4} ळ त रन्^{2} पु छाङ्^{2} खान्^{4} पाव्^{4} ।	यहां के लोग बहुधा समाचार पत्र नहीं पढ़ते ।
७-	फ़ाङ्^{2} च़ हौ^{4} थौ^{4} त ने^{4} क छि^{4} छ^{1} षृ नि^{3} त मा ? षृ ।	मकान के पीछे वाली गाड़ी (कार) क्या आपकी है ? हां ?

द्रुत-अभ्यास

वो^{3} त प्याव्^{3} चाय् ना^{3} ळ ?

वो^{3} ने^{4}क प्याव्^{3} चाय् ना^{3} ळ ?

वो^{3} त ने क प्याव्^{3} चाय् ना^{3} ळ ?

चाय् इ^{3}च् षाङ्

निन्^{2} त प्याव्^{3} चाय इ^{3}च् षाङ्

निन्^{2} ने क प्याव्^{3} चाय् इ^{3}च् षाङ्

निन्^{2} त ने क प्याव्^{3} चाय् इ^{3} च् षाङ्

चाय नै^{3} क इ^{3} च् षाङ् ?

चाय ने^{4} क ता^{4} इ^{3}चषाङ्

चाय नै^{3} क ता^{4} इ^{3} च् षाङ् ?

चाय हौ^{4} थौ ने क ता^{4} इ^{3} च् षाङ्

चाय् ऊ^{1} च़ हौ^{4} थौ त ने^{4} क ता^{4} इ^{3} च् षाङ्

निन्^{2} त प्याव्^{3} चाय् ऊ^{1} च़ हौ^{4} थौ त नै^{4} क ता^{4} इ^{3} च् षाङ्

निन्^{2} ने^{4} क प्याव्^{3} चाय् ऊ^{1} च़ हौ^{4} थौत ने^{4} क ता^{4} इ^{3} च्-षाङ्

निन्^{2} त ने^{4} क प्याव्^{3} चाय् ऊ^{1} च़ हौ^{4} थौ त ने^{4} क ता^{4} इ^{3}-च् षाङ्

व्याकरण

१०-१ स्थानवाचक संज्ञा : चीनी भाषा में कुछ संज्ञाओं का प्रयोग केवल स्थान सूचित करने के लिये किया जाता है; जैसे, लि^{3}थौ (लि^{3}प्येळ)—अन्दर, छ्येन्^{2}थौ (छ्येन्^{2}प्येळ)—

सामने, 'चळ४'—यहां; षाङ्४थौ (षाङ्४प्येळ)—ऊपर; इत्यादि अन्य संज्ञाओं की तरह स्थानवाचक संज्ञाओं का प्रयोग भी **कर्त्ता** के रूप में हो सकता है; जैसे,

षाङ्४थौ यौ3षू	ऊपर किताब है।
लि3थौ यौ3रन्२	अन्दर आदमी है।

कर्म के रूप में :—

श्य्.वे२षङ् तौ१ चा.य् वाय्थौ	सभी छात्र बाहर हैं।
वो3चा.य्४लि3प्येळ	मैं अन्दर हूँ।

विशेषण के रूप में :—

षाङ्४थौ त षू षृ४वो3त	ऊपर की किताब मेरी है।
वो3पु२खान्४श्या४थौ त पाव्४	मैं नीचे वाला अखबार नहीं पढूंगा।

१०-२ स्थानवाचक संज्ञाओं को दूसरी संज्ञाओं के बाद प्रत्यय के रूप में प्रयोग करके उन्हें स्थानवाचक संज्ञा बनाया जाता है। बहु प्रचलित शब्दों के बाद और यदि संज्ञा के बाद 'षाङ्४थौ' (षाङ्४ प्येळ) और(लि थौ (लिप्येळ)' का प्रयोग किया जाय तो 'थौ२(प्येळ) अक्सर छोड़ दिया जाता है; जैसे,

ने४पन्3 षू१चा.य्४च्वोच्.४षाङ्	वह किताब मेज के ऊपर है।
इ3च्.षाङ.त चे४क पि3षृ४ षै२त	कुर्सी के ऊपर यह कलम किसका है ?
था१चा.य्४ श्य.वे२श्याव्४लि3	वह स्कूल में (के अंदर) है।

ऐसी अवस्थाओं में हम 'थौ२'(या 'प्येळ१')का प्रयोग भी कर सकते हैं। लेकिन अन्य स्थानवाचक संज्ञाओं को इस प्रकार संक्षिप्त नहीं करना चाहिये क्योंकि थौ२ (या 'प्येळ') छोड़ देने से उनका

अर्थ ही बदल सकता है। 'वो^{3}मन् छ्येन्^{2} थौ' जैसे शब्दसमूह में 'त' छोड़ा जा सकता है किन्तु यदि 'लि^{3}थौ' और 'षाङ्^{1}थौ' को संक्षिप्त करके 'लि^{3} और 'षाङ्^{1}' बनाया जा चुका हो तो 'त' का प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिये। कहने का अभिप्राय यह है कि 'च्वो^{1}च् षाङ्^{4}' 'श्य़्वे^{2} श्याव्^{4}लि' तो ठीक है किन्तु 'च्वो^{1}च् त षाङ्^{4}' और 'श्य़्वे^{2} श्याव्^{4}त लि^{3}' ठीक नहीं है।

१०-३ अस्तित्व-सूचक "यौ^{3}"; 'यौ^{3}' के संबंध में हम पहले बता चुके हैं। (देखिये व्याकरण नोट ८-५)। यहां कुछ और उदाहरण दिये जाते हैं :—

'उच्^{1} हौ^{4} थौ यौ^{3} पुषाव्^{3}इ^{1}च्	कमरे के बाहर अनेक कुर्सियां हैं।
वो^{3}मन् च्या^{1}लि मै^{2}यौ श्याव्^{3} हाय्^{2}च्	हमारे घर में बच्चे नहीं है।
चुङ्^{1}क्वो^{2} श्येन^{4} चाय्^{4} मै^{2}यौ हन्^{3}त्वो^{1} ऋ^{4}पन्^{3} रन्^{2}	आजकल चीन में अधिक जापानी आदमी नहीं है।

१०-४ अस्तित्व सूचक 'चाय्^{4}' : 'चाय्^{4}' क्रिया है, जिसका अर्थ है 'होना' यानी रहना और इसके पश्चात् कोई स्थानवाचक शब्द कर्म के रूप में प्रयुक्त होता है; जैसे,

'नि^{3} चाय्^{4} नाळ^{3}	तुम कहां हो ?
'वो^{3} चाय्^{4} श्य़्वे^{2} श्याव्^{4}	मैं स्कूल में हूँ।
निन्^{2}त षू^{1} चाय्^{4} इ^{3}च्षाङ्	आपकी किताब कुर्सी पर है।

१०-५ संबंध-सूचक उपसर्ग 'चाय्^{4}':'चाय्^{4}' का प्रयोग संबंध-सूचक उपसर्ग के रूप में भी होता है। वाक्य में संबंधसूचक और इसका कर्म किसी स्थानवाचक शब्द या शब्दसमूह मिलकर एक संबंधसूचक शब्दसमूह बन जाता है जिसका प्रयोग बहुधा स्थानवाचक क्रिया विशेषण के समान किया जाता है।

वाक्य पढ़ते समय 'चा़य्[४]' पर जोर नहीं दिया जाता । उदाहरण के लिये :

था[१] चा़य्[४] चुङ्[१]क्वो[२] च्याव् षू ।	वह चीन में अध्यापन करता है ।
'वो[३]मन् चा़य्[४]चळ[४] श्य़्वे[२] चुङ्[१]-क्वो[२] ह़्वा[४]	हम यहां चीनी भाषा पढ़ते हैं ।

'चा़य्[४]' का प्रयोग चाहे क्रिया के रूप में किया जाये, चाहे संबंध-सूचक के रूप में, उसका कर्म आमतौर से स्थानवाचक संज्ञा या सर्वनाम ही होता है ।

१०-६ अपूर्ण क्रिया 'न' के साथ वक्ता वाक्य के अंत में 'न' सहायक शब्द जोड़कर निरन्तरतासूचक वर्तमानकाल का अर्थ प्रगट कर सकते हैं; जैसे,

'था[१]मन् श्येन्[४] चा़य्[४] छ़्[१] फ़ान्[४] न	वे अभी खाना खा रहे हैं ।
'नि[३] च़्वो[४] ष[२]म्मान? खान्[४]षू[१]न	तुम क्या कर रहे हो ? किताब पढ़ रहा हूँ ।

इसी तरह 'न' के प्रयोग से निरन्तरतासूचक भूतकाल का अर्थ भी प्रकट होता है; जैसे,

'वो[३] छ़्य़्[४] था च्या[१]त षृ[२]हौ था[१] चा़य्[४]छ़्[१] फ़ान्[४]न	जब मैं उसके घर गया तब वह खाना खा रहा था ।

उपरोक्त उदाहरणों में अगर 'न' के साथ 'चा़य्[४]' का प्रयोग किया जाय तो 'न' का प्रयोग वैकल्पिक है ।

१०-७ 'चा़य्[४]' के बाद 'लि[३] थौ' (या 'लि[३]प्येळ') के प्रयोग का नियम इस प्रकार है :

१- भौगोलिक शब्दों के साथ 'लि[३]थौ' (प्येळ) का प्रयोग नहीं होता; जैसे,

वो³मन् चा़य्⁴ इन्⁴ तु⁴ हम भारत में रहते हैं ।

यहां हम कभी नहीं कह सकते कि 'चा़य्⁴ इन्⁴ तु⁴ लि³ थौ (प्येळ)' या चा़य्⁴ इन्⁴ तु⁴ लि³',

२- अगर 'चा़य्⁴' शब्द के बाद इमारत, संगठन आदि के नामों का बोध कराने वाली संज्ञाएँ आयें और अगर 'लि³थौ (प्येळ)' का अर्थ उनमें लुप्त हो तो हम 'लि³थौ (प्येळ)' को यदि चाहें तो छोड़ सकते हैं; जैसे, हाय्²च् चा़य्⁴ श्य्वे²श्याव्⁴न —बच्चे पाठशाला में हैं ।

'था¹पु²चा़य्⁴च्या¹ वह घर पर नहीं है ।
'वो³मन् चा़य्⁴ नै³ क¹ फा़न्⁴-क्वाळ³ छ्¹फा़न्⁴ ? हम कौन से भोजनालय में खाना खायेंगे ?

अगर वाक्य अंदर का अर्थ प्रगट नहीं करता तो हमें 'वाय्⁴-थौ (प्येळ) 'हौ⁴थौ (प्येळ)' आदि जैसे स्थानवाचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिये इस बात का संकेत देने के लिये कि लोग 'घर' (च्या¹) या 'पाठशाला' (श्य्वे² श्याव्⁴') के बाहर हैं, या पीछे, या किसी और तरफ। यदि 'चा़य्' के कर्म के बाद कोई स्थानवाचक संज्ञा न हो तो 'लि³थौ (प्येळ)' नियमतः लुप्त रहता है ।

३- कुछ संज्ञाओं जैसे उपकरणों का बोध कराने वाली संज्ञाओं के साथ स्थानवाचक संज्ञा अवश्य आनी चाहिये, क्योंकि एक ही वस्तु के कई पहलू होते हैं और बिना स्थानवाचक संज्ञा के यह निश्चित करना मुश्किल होता है कि किस पहलू के बारे में कहा जा रहा है । इसलिये 'लि³'थौ' (प्येळ)' नहीं छोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिये :—

'ने⁴ चाङ्¹ चृ³ चा़य्⁴ षू¹लि (थौ) वह कागज किताब के अन्दर है ।

इसी तरह अन्य स्थानवाचक संज्ञाएं भी नहीं छोड़ी जा सकतीं ।

पाठ-११

क-	नि^{3}मन् ताव् ना^{3}ळ छ्य् ?	आप लोग कहां जा रहे हैं ?
ख-	वो^{3}मन् ताव् त^{2}-लि^{3} छय् ।	हम (लोग) दिल्ली जा रहे हैं ।
क-	नि^{3}मन् च.वो ह्वोछ^{3} छय् मा ?	क्या आप (लोग) रेलगाड़ी से (द्वारा) जा रहे हैं ?
ख-	पु^{4}, वो^{3}मन् च.वो छि^{4}छ^{1} ।	नहीं, हम (लोग) मोटर गाड़ी (कार) से (द्वारा) जा रहे हैं ।
क-	नि^{3}मन् ताव् ना^{4}ळ छय् च.वो^{4} ष^{2}म्मा ?	आप वहां क्या करने जा रहे हैं ?
ख-	वो^{3}मन् छय् खा^{4}न् ल्याङ्^{3}-क फ^{2}ङ्यौ, ये^{3} माय्^{3} इत्याळ^{3} तु^{1}ङ्शि ।	हम दो मित्रों से मिलने जा रहे हैं । हम कुछ वस्तु भी खरीदने का विचार कर रहे हैं ।
क-	नि^{2}मन् फङ्^{2}यौ चा़य् त^{2}-लि^{3} ष^{2}म्मा ति^{4}फ़ाङ् ?	दिल्ली में आपके मित्र किस स्थान पर हैं (रहते हैं) ?
ख-	चा़य्^{4} छ^{2}ड.्लि^{3}थौ, इ^{1} पाय्^{3} इ^{1}ष्^{2} च्ये^{1} ।	(वे) शहर में रहते हैं, ११० वें मार्ग में ।
क-	नि^{3}मन् हाय^{2}च् ये^{3} तौ छ्^{4}य् मा ?	क्या आपके सब बच्चे भी जा रहे हैं ?

ख	च़वै४ श्याव्३त पु छ्य़ू४, ता४ त तौ१ छ्य़४ू।	सबसे छोटा (बच्चा) नहीं जा रहा है। बड़े (बच्चों में) सभी जा रहे हैं।
क-	नि३मन् वै४ष२म्मा पु छिङ्३ नि३मन्फङ्यौ ताव् चळ४ लाय्२ ?	आप अपने मित्रों को यहां आने के लिए निमन्त्रित क्यों नहीं करते ?
ख-	था१मन् हन्३ शि३ह्वान् लाय्२। ख३षृ था१मन् त षृ-छिङ्थाय् त्वो१, हा२य्च़्ये३ थाय्४ श्याव्३, स्वो३इ३ श्येन्४ चा़य़४ पु न२ङ्लाय्२।	वे (मित्र लोग) (यहां) आना बहुत पसन्द करेंगे। परन्तु उनके पास काम (करने को) अधिक है और बच्चे बहुत छोटे हैं, इस लिए वे अभी नहीं आ सकते।

नये शब्द

सं०

छ१	गाड़ी
छि४छ१	मोटर गाड़ी
ह्वो३ छ१	रेलगाड़ी
छ्वान्२	नाव
फ़ै१ चि१	हवाई जहाज
च़्ये१	रास्ता, मार्ग, रोड
त२ लि३	दिल्ली

क्रि० वि०

स्वो३इ३ (गतिशील)	इसलिए,
इ२तिङ्४	जरूर, अवश्य, निश्चय ही
पु४ इतिङ्४	अनिश्चित, अनावश्यक
च़म्३ (मा)	कैसे

वि०

शिङ्^{२}	काफी है, ठीक है, पर्याप्त है।

संबंध सूचक (सं० सू०)

छ़ूङ्^{२}	से
ताव्^{४}	तक
च़्वो^{४}	से (वाहन से), चढ़कर (वाहन)

क्रि०

च़्वो^{४}	बैठना
लाय्^{२}	आना (यहां)
छ़ूयू^{४}	जाना (वहां)
खान्^{४}	देखना, मुलाकात करना
चान्^{४} छिलाय्	खड़ा होना, खड़ा हो जाओ
च़्वो^{४}श्या	बैठ जाना, बैठ जाओ

स० क्रि०

याव्^{४}	चाहना, चाहिए
छि^{३}ड़्च़्वो^{४}	बैठ जाइए, बैठिए, बैठ जाओ, बैठो।

उदाहरणमाला

(क)—'छ़ूङ्^{२}' व 'ताव्^{४}'-गति और दिशासूचक संबंधसूचक

नि^{३} छ़ूङ्^{२} ष^{२}म्मा ति^{४}फ़ाङ् लाय्^{२}। वो^{३} छ़ूङ्फुच़् लाय्^{२}	आप कहां से आए ? मैं दुकान से आया।
था^{१} छ़ूङ्^{२}ना^{३}ळ लाय्^{२} ? था छ़ूङ् श्व़े^{२}श्याव्^{४} लाय्^{२}।	वह कहां से आया ? वह विद्यालय से आया।

ने^{४}श्ये रन्^{२} ये^{3} तौ^{१} छ़्ङ़्^{१} श्ट़्वे^{२}श्याव्^{४} लाय्^{२} मा ? पु^{४}, था^{१}मन् छ़्ङ्^{२} छङ् वाय्^{४}थौ लाय्^{२} ।	क्या वे सब लोग भी विद्यालय से आए हैं; नहीं, वे लोग शहर के बाहर से आए हैं ।
नि^{3} ताव ष^{२}म्मा ति^{४}फ़ाङ् छ्य़् ? वो^{3} ताव् श्याङ्^{१}श्या छ्य़् ।	तुम कहां जा रहे हो ? मैं गांव जा रहा हूँ ।
नि^{३} छ़्ड़्^{२} च्योलि छ़्य़्^{४} मा ? पु^{४}, वो^{३} छ़्ङ्^{२} फु^{४}च़्-लि छ्यू^{४} ।	क्या तुम घर से जा रहे हो ? नहीं, (मैं) दुकान से (जा रहा हूँ) ।
नि^{3} पु^{२}ताव् त^{२}लि^{3} छ़्य़् मा ? पु छ़्य़्^{४} ।	क्या तुम दिल्ली नहीं जा रहे हो ? नहीं, मैं नहीं जा रहा हूँ ।

(ख) सम्बन्धसूचक 'च़्वो^{४}'

नि^{३}ताव् इङ्^{१}क्वो^{२} छ़्य़्, च़्वो^{४} छ्वान्^{२} मा ? पु^{४}, वो^{३} श्याङ्^{३} च़्वो फ़ै^{१}चि^{१} ।	क्या तुम नाव द्वारा (से) इंग्लैंड जा रहे हो ? नहीं, मैं वायुयान द्वारा जाने का विचार कर रहा हूँ ।
च़्वो^{४} फ़ै^{१}चि^{१} पुक्वै^{४} मा ? पु ह़न्^{३} क्वै^{४} ।	क्या वायुयान द्वारा जाना महंगा नहीं है ? नहीं, बहुत महंगा नहीं है ।
च़्वो^{४} ह्वो^{३}छ^{१} छ्यू^{४} शिङ्^{२} पु शिङ्^{२}, ? पु^{४}शिङ्^{२} मै^{२}यौ ह्वो^{३}छ^{१} ।	क्या रेलगाड़ी द्वारा जाया जा सकता है ? नहीं, यह सम्भव नहीं है । रेलगाड़ियां नहीं हैं (नहीं चलती हैं) ।

(ग)—प्रयोजन-दर्शक 'लाय2' व 'छ्यू4'

नि3मन् ताव्4 चेक श्ट्.वे2 श्याव्4 लाय्2 श्ट्.वे ष2म्मा ? श्ट्.वे2 चुङ्1क्वो2 ह्वा4 ।	तुम (लोग) इस स्कूल (में) क्या सीखने (पढ़ने) आते हो ? चीनी बोली (सीखने आते हैं)।
छिङ्3नि3 ताव् वो3मन् च्या1 लाय्2 च्.वो4 च्.वो ।	कृपया हमारे घर आइए और थोड़ी देर बैठिए ।
नि3 ताव् छङ्2 लि3 थौ छ्यू खा4न् षैं2 ? वो3 याव् खान्4 ने वै शिङ्4लि3 त ।	तुम शहर किससे मिलने जा रहे हो ? मैं ली नामक व्यक्ति से मिलना चाहता हूँ ।
था1 ताव् ऋ4पन्3 च्.वो4 माय्3माय् छ्यू मा? पु4, था1 च्याव्1 षू1 छ्यू4 ।	क्या वह जापान व्यापार करने जा रहा है ? नहीं, वह अध्यापन कार्य करने जा रहा है ।
नि3 ताव् ना3ळ छ्यू न्ये4न् षू1? वो3 य्.वान्4इ ताव् पै3चिङ्1, ख3षू वो2 फ़ु4मु3 पुय्वान4इ वो3 च्.याय् पै3चिङ्1 न्येन्4 षू1 ।	तुम पढ़ाई करने कहां जा रहे हो ? मैं पेकिंग जाना चाहूंगा, परन्तु मेरे माता-पिता नहीं चाहते कि मैं पेकिंग में पढ़ूं ।
नि3 वैं4 ष2म्मा पु2 ताव् वाय्4-क्वो2 छ्यू च्.वो4 षू4 छ्यू ? मैं2 छ्येन्2 ।	तुम काम करने विदेश क्यों नहीं जाते ? धन (पैसे) नहीं हैं (हैं)।

कक्षा में (अध्यापक और छात्र के बीच) व्यवहार करने योग्य वाक्य :

अध्यापक : छि3ङ् नि3 चान्4-छिलाय् ।	कृपया खड़े हो जाइए ।
छात्र : वो3 याव चा4न्छिलाय्	मैं खड़ा होने जा रहा हूँ ।
अ० : छिङ्3नि3 ताव् वो3 चळ लाय्2 ।	कृपया यहां मेरे पास आइए ।

छात्र : वो^{3} याव् ताव् नि^{3} नाळ^{4} छ्यू ।	मैं आपके पास (वहां) जा रहा हूँ ।
अ० वो^{3} याव् नि^{3} ताव् उ^{1}च्. हौ^{4}थौ छ्यू.	मैं चाहता हूँ कि तुम पीछे की ओर जाओ ।
छा० वो^{3} याव्^{4} ताव् उ^{1}च्. हौ^{4}थौछ्यू.	मैं पीछे की ओर जा रहा हूँ।
अ० नि^{3} श्येन्^{4}चा़य्^{4} चांय् नाळ^{3} ?	तुम अब कहाँ हो ?
छा० वो^{3} चा़य् उ.^{1}च् हौ^{4}थौ न ।	मैं कमरे के पीछे की ओर हूँ।
अ० नि^{3} शि^{3}ह्वान्^{1} चा़य् हौ^{4}थौ मा ?	क्या तुम कमरे के पीछे की ओर (रहना) पसन्द करते हो ?
छा० पु^{4} शि^{3}ह्वान्^{1}	नहीं, मैं पसन्द नहीं करता ।
अ० नि^{3} य़.वान्^{4}इ ताव् छ्येन्^{2}थौ लाय्^{2} मा ?	क्या तुम सामने की ओर आना चाहते हो ?
छा० वो^{3} हन्^{3} य़.वान्^{4}इ लाय्^{2}	मैं बहुत आना चाहूंगा ।
अ० हाव्^{3}, नि^{3} ख^{3}इ^{3} ताव् छ्येन्^{2} थौ लाय्^{2}	ठीक है, तुम सामने की ओर आ सकते हो ।
छा० वो^{3} च्यु^{4} याव् ताव छ्येन्^{2} थौ लाय्^{2}	मैं अभी सामने की ओर आनेवाला हूं ।
अ० नि^{3} य्वान्^{4}इ च.वो^{4}श्या मा ?	क्या तुम बैठना चाहते हो ?
छा० वो^{3} हन्^{3} य़.वान^{4}इ च.वो^{4}श्या	मैं बैठना चाहूंगा ।
अ० हाव्^{3}, नि^{3} ख^{3} इ^{3} च.वो^{4}श्या	ठीक है, तुम बैठ सकते हो ।
छा० श्ये^{4} श्ये ।	धन्यवाद ।

व्याकरण

११-१ 'लाय^{2}' और 'छ्यू.^{4}' : 'लाय्^{2}' और 'छ्.यू.^{2}' दोनों

गति और दिशा का अर्थ प्रगट करते हैं। यदि कोई व्यापार वक्ता की ओर हो (या उस वस्तु या वस्तुओं की ओर हो, जिनकी चर्चा हो रही है), तो हम क्रिया के बाद "लाय्^{2}" का प्रयोग करते हैं। यदि कोई कार्य विपरीत दिशा में हो, या वक्ता से दूर हो, तो हम लोग क्रिया के बाद 'छ्य़ू^{4}' का प्रयोग करते हैं, जैसे :

था^{1} लाय्^{2} च्या^{1}	वह घर आया
वो^{3} छ्य़ू^{4} श़्वे^{2}श्याव्^{4}	मैं पाठशाला जाता हूँ।

११-२ 'छ़ूङ्^{2} (से)' और 'ताव्^{4}' (तक) : ये दोनों संबंध-सूचक स्थानवाचक और काल-वाचक शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं, इनकी मुख्य क्रिया 'लाय्^{2}' या 'छ्य़ू^{4}' होती हैं। 'छ़ूङ्^{2}' क्रिया का उत्पत्ति स्थान या काल बताता है; और 'ताव्^{4}' क्रिया का लक्ष्य स्थान; अर्थात् 'छ़ूङ्^{2}' यह बताता है कि क्रिया या कोई व्यापार कहाँ से या किस समय से शुरू हुआ और 'ताव्^{4}' यह बताता है कि क्रिया या व्यापार की गति कहां तक या किस समय तक है। यह वाक्य-विन्यास अन्य क्रिया विशेषण की तरह मुख्य क्रिया के पहले आता है। निषेधार्थक क्रिया विशेषण इन दोनों के पहले ही आता है। जैसे,

था^{1} छ़ूङ्^{2} चुङ्^{1} क्वो^{2} लाय्^{2}, ताव्^{4} इन्^{4} तु^{4} छ्य़ू^{4}, वो^{3} पु^{2} ताव्^{4} याळ^{4} छ्य़ू^{4}	वह चीन से आया और भारत को गया, मैं वहां नहीं जाऊंगा।
वो^{3}मन छ़ूङ्^{2} श़्वे^{2}श्याव्^{4} ताव्^{4} च्या^{1} छ्य़ू^{4}	हम पाठशाला से घर जाते हैं।

कालवाचक

था^{1} छ़ूङ्^{2} इ^{1} च्यु^{3}ल्यू^{4}सान^{1} न्येन^{2} ताव्^{4} इ^{1} च्यु^{3} ल्यु^{4} च्यु^{3} न्येन^{2} चाय्^{4} चळ^{4} न्येन्^{4}	वह यहाँ १९६३ से १९६९ साल तक पढ़ा था।

षू^{1} (न्येन्^{2}=साल, पाठ १३)

११-३ संबंधसूचक 'च.वो^{4}' : 'च.वो^{4}' जिसका क्रिया के रूप में अर्थ है "बैठना" संबंधसूचक के रूप में "में" "से" के अर्थ में यात्रा के साधन बताता है। इसका कर्म कोई यान वाहन अर्थात् यात्रा का साधन होता है; जैसे,

था^{1} च.वो^{4} छ्वान्^{2} लाय्^{2} — वह जहाज से आया

वो^{3} पु^{2}च.वो^{4} फ़ै^{1}चि^{1} छ्यू^{4} — मैं हवाईजहाज से नहीं जाऊंगा।

यह ध्यान में रखना चाहिए कि 'च.वो^{4}' का अर्थ "बैठना" है, इसीलिए जो यात्रा यात्री के रूप में (अर्थात् चालक के रूप में नहीं) किया जाता है, उसी क्षेत्र में इसका प्रयोग होता है, और उसी वाहन का प्रयोग होता है जिसमें बैठने की जगह हो।

१०-४ प्रयोजनदर्शक 'लाय^{2}' और 'छ्यू^{4}' : कहीं आने या जाने का उद्देश्य या प्रयोजन सूचित करने के लिए 'लाय्^{2}' या छ्यू^{4}' के ठीक बाद में या पहले प्रयोजनदर्शक विन्यास प्रयुक्त होता है। कभी-कभी प्रयोजन बताने के बाद भी 'लाय्^{2}' और 'छ्यू^{4}' दुहराये जाते हैं। जैसे,

था^{1} ताव्^{4} चळ^{4} लाय्^{2}न्येन्^{4} षू^{1}। — वह यहां पढ़ने के लिए आया है।

वो^{3} पु^{2} ताव्^{4}चुङ्^{1} क्वो^{2} च.वो^{4} षृ^{4} छ्यू^{4}। — मैं चीन काम करने नहीं जाऊंगा।

वो^{3}मन् ताव्^{4} छङ्^{2}लि^{3} छ्यू^{4}माय्^{3} तुङ्^{1}शि छ्यू^{4}। — हम चीजें खरीदने शहर जायेंगे।

११-५ स्थानवाचक संज्ञा के साथ सर्वनाम : यदि संज्ञा या सर्वनाम से किसी प्राणी का बोध होता हो, तो उस कर्म को स्थानवाचक कर्म में बदलने के लिए 'चळ^{4}' और 'नाळ^{4} का प्रयोग होता है। हिंदी के "मेरे यहां" "तुम्हारे वहां", "मित्र के पास"

इत्यादि वाक्यांशों का अनुवाद इसी तरह करना चाहिए; जैसे,

छिङ्^{3} नि^{3} ताव्^{४}वो^{3} चळ^{४} लाय्^{२} ।	कृपया आप मेरे यहां आइये ।
वो^{3} पु^{२} ट़ वान^{४}ई ताव्^{४} था^{१} नाळ^{४} छ्य़ू^{४} ।	मैं उसके पास जाना नहीं चाहता
वो^{3} षू^{१} चा़य्^{४} श्येन्^{१} षङ् नाळ^{४} ।	मेरी किताब गुरुजी के (अध्यापक महोदय के) पास है ।

'छ़ूङ्^{२}' के संबंध में भी ऐसा प्रयोग किया जाता है; जैसे,

वो^{3} छ़ूङ्^{२} फङ्^{२}यौ नाळ^{४} लाय्	मैं मित्र के वहां से (पास से) आ रहा हूँ ।

पाठ-१२

नये शब्द

गतिशील क्रि० वि०

च़वो^{2}थ्येन्	(सं० भी है)	कल (भूतकाल)
चिन्^{1}थ्येन्	(सं० भी हैं)	आज
मिङ्^{2}थ्येन्	(सं० भी है)	कल (भविष्यत्)
चा़व्^{3}षाङ्	(सं० भी है)	सबेरा
वान्^{3}षाङ्	(सं० भी है)	शाम, रात
इ^{3}-चिङ्	(क्रि० वि०)	पहले ही
हाय्^{2}	(क्रि० वि०)	भी, अब भी

सं०

चा़व्^{3}फ़ान्^{4}	सबेरे का भोजन
चुङ्^{1}फान्^{4}	दोपहर का भोजन
वान्^{3} फ़ान्^{4}	दिन का प्रधान भोजन, दिन का अन्तिम भोजन
कु^{4}षृ	कहानी
प्ये^{2}त	दूसरा, और (लोग या चीज़)
प्ये^{2}रन्^{2}	दूसरा आदमी, और लोग या आदमी

क्रि०

चौ^{3}	चलना, जाना, प्रस्थान करना।
ह्वे^{2} लाय्	लौटना, लौट आना

ष्वो1 कु4षृ (क्रि० क०)	कहानी बतलाना, कथा कहना
थिङ्1 कु4 षृ (क्रि० क०)	कहानी या कथा सुनना
—'ल'	प्रत्यय या सहायक शब्द
मे2 (यौ)	(उपसर्ग) निषेधार्थक
न	सहायक शब्द
मै2ष2म्मा	कोई बात नहीं,
पै3चिङ1	पेकिंग (चीन की राजधानी)

उदाहरणमाला

(क)—'ल' द्वारा गति व दिशा की सूचना

१-	नि3त फङ्2यौ लाय्2ल मै-यौ ? था इ3चिङ् लाय्2ल ।	क्या तुम्हारा मित्र आ गया है ? हां, वह पहले से ही आ गया है ।
२-	लि3 श्येन्1षङ् चौल मा ? चौ3न ।	क्या ली महोदय चले गये हैं ? नहीं, अभी तक नहीं ।
३-	था1मन् च2वोथ्येन् छ्यू4 ल मै2 छ्यू ? मै2 छ्यू4, था4-मन् चिन्1थ्येन् छ्यू4 ।	क्या वे लोग कल चले गये थे ? नहीं, वे लोग नहीं गए । (वे लोग) आज जाएंगे) ।
३-	ने4क रन्2 ह्वै2लाय्ल मा? हाय्2 मै2न ।	क्या वह व्यक्ति (आदमी) लौट आया है ? अभी तक नहीं ।
५-	षै2 लाय्2ल? नि2त फङ्2यौ चाङ्1 श्येन्1षङ् लाय्2ल ।	कौन आया हैं । तुम्हारे मित्र चांग महोदय (आए हैं) ।
६-	नि3 मै2यू4 मा ? मै2 छ्यू4	क्या तुम नहीं गए ? नहीं, मैं नहीं गया ।
७-	निन्2 श्येन्1षङ्1 हाय्2 मै2 ह्वै2लाय् मा ? हाय्2 मै2	क्या आपके पति अभी तक नहीं लौटे ? अभी तक नहीं (लौटे

ह्वँ^{२} लाय् न ।	हैं) ।
८- रन्^{२} तौ^{१} चौल मा ?	क्या सब लोग चले गये हैं ? हाँ,
तौ^{१} चौ^{3} ल ।	सब लोग चले गए हैं ।
मैं^{२} तौ^{१} चौ^{3} ।	नहीं, सब लोग नहीं (गए हैं) ।
तौ^{१} मैं^{२} चौ ।	कोई नहीं गया है ।
वो^{3} पु^{४} चृ^{१}ताव्^{४} था^{१}मन् चौ^{१}ल मैं^{२}चौ ।	मुझे नहीं मालूम कि वे लोग चले गए हैं या नहीं ।
९- था^{१} ताव् चुङ्^{१}क्वो^{२} छ्यू^{४} चवो^{४} ष^{२}म्मा छ्यू ल । था^{१} छ्यू^{४} चयाव्^{१} षू^{१} छ्यूल ।	वह चीन क्या करते गया है ? वह अध्यापन कार्य करने गया है ।

ख—विशेषण रहित कर्म और क्रिया के साथ 'ल'

१- नि^{3}मन् छू^{१}ल चाव्^{3} फ़ान्^{४} ल मैं^{२}यौ ? वो^{3}मन् इ^{3}चिङ् छू ल ।	क्या आप (लोगों) ने नाश्ता कर लिया है ? हम लोगों ने पहले ही (नाश्ता) कर लिया हैं ।
२- नि^{3} खान्^{४} ल चिन्^{१}थ्येन् त पाव्^{४} ल मा ? हाय्^{४} मैं^{२} खान्^{४} न ।	क्या तुमने आज का समाचार-पत्र पढ़ लिया है ? अभी तक नहीं (पढ़ा है) ।
३- था^{१} कैं^{3} नि^{3} नेक छ्येन्^{२} ल मा ? मैं^{२} यौ ।	क्या उसने आपको धन दे दिया है ? नहीं, उसने नहीं दिया है ।
४- नि^{3} छिङ्^{3} था^{१}मन् ल मै यौ ? छि^{3}ङ् ल ।	क्या तुमने उन लोगों को निमंत्रित किया है, मैंने उन्हें निमंत्रित किया है ।
५- नि^{3} मैं^{२} छ्यू खान्^{४}था मा? वो^{3} छ्यू^{४} खान्^{४} था ल ।	क्या तुम उससे मिलने नहीं गए ? मैं उससे मिलने गया तो था ।

६- तुङ्^{3}शि तौ^{1} माय्^{3} ल मा ?	क्या सभी वस्तुएं खरीद ली गईं हैं।
मैं^{2} तौ^{1} माय्^{3} न।	सभी वस्तुएं अभी तक नहीं (खरीदी गईं हैं)।
तौ^{1} मैं^{2} माय्^{3} न।	अभी तक कुछ भी नहीं (खरीदा गया है)।
७- नि^{3}त छि^{4}छ^{1} माय्^{4}ल मैं-यौ ? मैं^{2} न। मैं^{2}रन्^{2} याव्^{4}।	क्या तुमने अपनी मोटर-गाड़ी (कार) बेच दी है ? अभी तक नहीं (बेची है)। कोई भी उसे नहीं (खरीदना) चाहता है।

(ग)—"षृ.....त" वाक्य

१- निन^{3}त् इङ्^{1} वेन्^{2} ष्वोत हन्^{3} हाव्^{3}, चाय् नाळ^{3} श्य.वे^{2}त ?	आप सचमुच उत्तम अंग्रेजी बोलते हैं। आपने (यह भाषा) कहां सीखी ?
२- नि^{2} नेक पि^{3}षृ चाय् नै^{3}क फु^{4}च्लि माय्^{3}त ? षृ चाय्^{4} छङ्^{2}लि नेक च्वै^{4} ता^{4}त फु^{4}च्लि माय्^{3}त	तुमने अपना वह कलम किस दुकान पर खरीदा ? शहर को सबसे बड़ी दुकान पर (खरीदा)।
२- ने^{4}वै^{4} श्याव्^{3} च्ये षृ छूङ्^{2} त^{2}क्यो^{2} लाय्^{2}त।	यह महिला जर्मनी से आयी।
४- वो^{3}मन तौ^{1} षृछूङ वो^{3}मन् च्या^{1}लि छ्यूत, ख^{3}षृ लि-श्येन्^{1}षङ् षृ छूङ्^{2} श्य.वे^{2}-श्याव्^{4} छ्यू^{4}त।	हम सब लोग अपने घरों से गए, परन्तु ली महोदय विद्यालय से गये
५- निन्^{2} षृ^{4} पुषृ च्वो छ्वान्^{2}	क्या आप नाव (या जहाज़) द्वारा

	लाय्^{2}त ? पु^{2}षृ, वो^{3} षृ च़वो छि^{4}छ^{1} लाय्^{2}त	आए ? नहीं, मैं मोटर गाड़ी (कार) द्वारा आया ।
६-	था^{1}षृ च़^{3}म्मा छ्यू त ? था^{1}षृ च़वो^{4} फङ्^{2}यौ त छि^{4} छ^{1} छ्यू^{4}त ।	वह कैसे गया ? वह एक मित्र की मोटरगाड़ी (कार) में गया ।
७-	था^{1}षृ वै^{4}ष^{2}म्मा लाय्^{2}त? था^{1}षृ खान्^{4} इक फङ्^{2}यौ लाय्^{2}त	वह यहाँ किसलिए आया ? वह एक मित्र से मिलने आया ।
८-	था^{1} ताव् नाळ^{4} छ्यू षृ च़वो^{4} ष^{2}म्मा छ्यू^{4}त ? षृ च़वो^{4} माय्^{3}माय् छ्यू^{4}त	वह वहां क्या करने गया ? वह (वहां) व्यापार करने गया ।

कक्षा में :

क : छिङ्^{3} नि^{3} चान्^{4}छिलाय्	कृपया खड़े हो जाइए ।
ख : वो^{3} चान्^{4}छिलाय्ल	मैं खड़ा हो गया हूं ।
ग : था^{1} चान्^{4}छिलाय्ल	वह खड़ा हो गया है ।
क : छिङ्^{3}नि^{3} ताव् चळ^{4} लाय्	कृपया यहां आइए ।
ख : वो^{2} ताव् चळ^{4} लाय्^{2}ल	मै यहां आ गया हूं ।
ग : था^{1} ताव् नाळ^{4} छ्यूल	वह वहां चला गया है ।
क : छिङ्^{3} नि^{3} ताव् हौ^{4}थौ छ्यू	कृपया पीछे की ओर जाइए ।
ख : वो^{3} ताव् हौ^{4}थौ लाय्ल^{2}	मैं पीछे की ओर आ गया हूँ ।
ग : था^{1}ताव् हौ^{4}थौ छ्यूल	वह पीछे की ओर चला गया है।
क : छिङ्^{3}नि^{3}ताव् छ्येन्^{2} थौलाय^{2}	कृपया सामने की ओर आ जाइए।
ख : वो^{3}ताव् छ्येन्^{2}थौ लाय^{2}ल	मैं सामने की ओर आ गया हूँ ।
ग : था^{1}ताव् छ्येन्^{2}थौ छ्यूल	वह सामने की ओर चला गया है।
क : नि^{3} ख^{3}इ^{3} च़वो^{4}श्या	तुम बैठ सकते हो ।
ख : वो^{3} च़वो^{4}श्याल	मैं बैठ गया हूँ ।
ग : था^{1} च़वो^{4}श्याल	वह बैठ गया है ।

व्याकरण

१२-१ पूर्णता-बोधक 'ल' : चीनी भाषा में किसी व्यापार का काल चाहे वह भूत हो या वर्तमान या भविष्यत, मुख्यतः किसी कालवाचक शब्द या शब्द-समूह द्वारा प्रगट किया जाता है; जैसे,

वो^{3}मन चवो^{2}थ्येन् खान्^{4} था।	हमने कल उसको देखा।
वो^{3} मिङ्^{2}थ्येन् ताव्^{4}था नाळ^{4} यू^{4}छ्यू	मैं कल उसके पास जाऊँगा।

लेकिन पूर्ण व्यापार का स्वरूप सूचित करने के लिये हम क्रिया के बाद प्रत्यय 'ल' का प्रयोग करते हैं, या वाक्य के अन्त में सहायक शब्द 'ल' (दोनों एक ही अक्षर हैं), या दोनों का प्रयोग करते हैं; उदाहरण के लिये :

था^{1} लाय्^{2}ल	वह आया है।
वो^{3} इ^{3}चिङ् छिङ्^{3} था^{1}मन् ल	मैंने पहले ही उसको निमंत्रण किया है (या दे दिया है)
था^{1} कै^{3} वो^{3} छ्येन्^{2} ल	वह मुझे पैसे दिया है

प्रत्यय 'ल' का प्रयोग भविष्य में किसी व्यापार की पूर्णता पर जोर देने के लिये भी किया जाता है; जैंसे,

मिङ्^{2}थ्येन् नि^{3}मन् ला^{2}य् ल, वो^{3}मन च्यू^{4} न्येन्^{4}षु^{1}	कल तुम्हारे आने के बाद हम पढ़ाई करेंगे।

यह ध्यान में रखना चाहिये कि चाहे कार्य भूत काल में हुआ हो, फिर भी हम प्रत्यय 'ल' का प्रयोग तब तक नहीं कर सकते जब तक किसी व्यापार की पूर्णता पर जोर नहीं देना चाहते; जैसे,

था^{1} इ^{1}-च्यू^{3}-छि^{1}-अळ^{4} न्येन् चाय्^{4} चळ^{4} न्येन्^{4} षू^{1}	१९७२ साल में वह यहां पढ़ता था।
छूङ्^{2} छ्येन्^{2} था छाङ्^{2}छाङ्^{2}लाय्^{2}	पहले वह हमेशा आता था।

'ल' और कर्म: साधारण कर्म हो (अर्थात् जिस कर्म के साथ कोई विशेषण न हो) तो क्रिया के साथ प्रत्यय 'ल' और कर्म के बाद अर्थात् वाक्य के अन्त में, सहायक शब्द 'ल' ये दोनों 'ल' के प्रयोग हो सकते हैं; जैसे,

निछृ^{31}ल फ़ान्^{4}ल मा ?   क्या तुम खा चुके हो ?

वो^{3} कैल था^{1} ने^{4}पन् षू^{1}ल   मैंने उसको किताब दी है ?

ऐसे वाक्यों में प्रत्यय 'ल' छोड़ा जा सकता है लेकिन सहायक शब्द 'ल' अर्थात् वाक्य के अन्त में आने वाला 'ल' कभी नहीं छोड़ा जा सकता; उपरोक्त दोनों वाक्य इस तरह भी लिखे जा सकते हैं :

नि^{3} छृ^{1}-फ़ान्^{4} ल मा ?

वो^{3} कै^{3} था^{1} नै^{4}पन् षू^{1} ल ।

जब कर्म के पहले विशेषतासूचक हो तो आमतौर से प्रत्यय 'ल' का प्रयोग होता है; जैसे,

वो^{3} कै^{3}ल था^{1} ई^{4}पन षू   मैंने उसको एक किताब दी ।

वो^{3} मा^{3}य्ल ई^{2}क पि^{3} मैंने एक कलम खरीदी ।

१२-२ पूर्णताबोधक क्रिया का निषेधार्थक रूप : जब हम कोई ऐसा व्यापार प्रगट करना चाहते हैं जो नहीं हुआ, तो क्रिया के पहले सिर्फ 'मै^{2}' (या 'मै^{2}यौ') जोड़ देना चाहिये । हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि 'मै^{2}यौ' या 'मै^{2}' पूर्णताबोधक स्वरूप का निषेधार्थक रूप है, इसलिए इसके साथ प्रत्यय 'ल' कभी भी नहीं जोड़ना चाहिए; जैसे,

था^{1} मै^{2}लाय^{2} वह नहीं आया ।

(अथवा मै^{2}यौ लाय^{2})

वो^{3}मन् तौ मै^{2} छ्य् ।   हममें से कोई भी नहीं गया ।

वो^{3} मै^{2}खान्^{4} पाव्^{4} ।	मैंने समाचारपत्र नहीं पढ़ा ।

हम यहां 'था^{1} मै^{2}लाय्^{2} ल', 'वो^{3} मन् मै^{2}छ्य्^{4} ल' या 'वो^{3} मै^{2}खान्^{4} पाव्^{4}ल' कभी नहीं कह सकते ।

१२-३ **अपूर्णार्थ बोधक 'न'** : व्याकरण नोट १०-६ में हम बता चुके हैं कि वाक्य के अन्त में सहायक शब्द 'न' का प्रयोग करके हम बताते हैं कि व्यापार या क्रिया अभी जारी है । अगर कोई व्यापार पूरा नहीं हुआ है, लेकिन शीघ्र ही पूरा होने वाला है, तो हम 'मै^{2}' या 'हाय्^{2} मै^{2}' के साथ सहायक-शब्द 'न' का प्रयोग कर सकते हैं (अर्थात् '(हाय्^{2})मै^{2}(यौ)न' 'अभी तक नहीं' ऐसे वाक्य विन्यास का प्रयोग करते हैं) । 'न' यहां भावदर्शक सहायक शब्द है; जैसे,

था^{1} मै^{2} (यौ) लाय्^{2} न ।	वह अभी तक नहीं आया ।
षू^{1} हाय् मै^{2} (यौ) माय्^{3} न ।	किताब अभी तक नहीं खरीदी गई ।
था^{1} मै^{2} कै^{3} वो^{3} छ्येन्^{2} न ।	उसने मुझे अभी तक पैसे नहीं दी ।

१२-४ पूर्णताबोधक क्रिया और प्रश्नार्थक वाक्य : पूर्णताबोधक स्वरूप का निम्नलिखित प्रश्नार्थक रूप ध्यान में रखना चाहिए :—

(१) कर्मरहित साधारण वाक्य—

था^{1} ला^{2}य्-ल मा ?	क्या वह आ गया है ? (अथवा वह आया है या नहीं)।
था^{1} लाप्^{2}-ल मै^{2} लाय् ?	"
था^{1} लाय्^{2}-ल मै^{2} यौ ?	"
था^{1} मै^{2} लाय्^{2} मा ?	क्या वह नहीं आया है ?

(२) वाक्य कर्म के साथ :

निन्^{२} छृ^{१} (ल) फ़ा^{४}न्ल मा ?	क्या आपने खाना खाया है? (अथवा खा चुके हैं)
निन्^{२} छृ^{१} (ल) फ़ान् ल मैं^{२}यौ ?	"
निन्^{२} मैं^{२} छृ^{१}-फ़ान् मा ?	क्या आपने खाना नहीं खाया है ?

(३) अगर कर्म वाक्य के शुरू में हो (जिसे अपवृत्त कर्म कहते हैं) तो सिर्फ प्रत्यय "ल" का प्रयोग होता है :

चिन्^{१}-थ्येन्-त पाव्^{४}, निन्^{२}खान्^{४}-ल मा ?	क्या आपने आज का समाचारपत्र पढ़ा है? (अथवा आज का समाचार पत्र आपने पढ़ा है या नहीं।)
चिन्^{१}-थ्येन्-त पाव्, निन्^{२}खान^{४}-ल मैं^{२}-खान् ?	"
चिन्^{४}-थ्येन्-त पाव्^{४}, निन्^{२} खान्^{४}-ल मैं^{२}-यौ ?	"
चिन^{१}-थ्येन् त पाव्^{४}, निन्^{२} मे^{२}-खान्^{४} मा ?	क्या आपने आज का समाचारपत्र नहीं पढ़ा है ?

जब भी 'मैं^{२}-यौ' क्रिया के पहले प्रयुक्त हो इसे हमेशा 'मैं^{२}' के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है। लेकिन जब 'मैं^{२}यौ' का प्रयोग किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिये अकेले किया जाय तो इसे कभी भी संक्षिप्त नहीं करना चाहिये; जैसे,

था^{१} लाय्^{२}-ल मैं^{२}यौ ?
मैं^{२}यौ, (अथवा) मैं^{२}लाय्,
(अथवा) हाय्^{२} मैं^{२} (यौ) लाय्^{२} न।

१२-५ प्रयोजन-दर्शक वाक्य पूर्णताबोधक क्रिया के साथ : हम ग्यारहवें पाठ में (व्याकरण नोट ११-५) तीन तरह के प्रयोजन-दर्शक वाक्य सीख चुके हैं, इन वाक्यों में 'लाय्^{२}' और 'छ्य़ू^{४}' का प्रयोग होता है। क्रिया की पूर्णता सूचित करने के लिये 'ल' का प्रयोग इन वाक्यों के अन्त में होता है, लेकिन उन्हीं दो प्रकार के वाक्यों के अन्त में इसका प्रयोग होता है जिनके अंत में 'लाय्^{२}' या 'छ्य़ू^{४}' हो; उदाहरण के लिये :

था^{१} ताव् चुङ्^{१}क्वो^{२} च्याव्^{१}षु^{१} छ्य़ू^{४}-ल^{१}	वह चीन में पढ़ाने के लिये गया है।
था^{१} ताव् छङ्^{२}वाय्^{४}-थौ छ्य़ू^{४}खान्^{४} फङ्^{२}यौ छ्य़ू-ल।	वह दोस्त से मिलने के लिये शहर से बाहर गया हुआ है।

१२-६ "षृ^{४}—त" सहित क्रिया-विधेय वाक्य : व्यापार की पूर्णता पर जोर देने के लिये क्रिया के बाद हम प्रत्यय "ल" जोड़ देते हैं। लेकिन, अगर यह बात जाहिर हो कि व्यापार पहले ही हो चुका है और हम लोग खास तौर से उसके समय ('थ्येन्^{१}' 'न्येन्^{२}' इत्यादि), स्थान (स्थान वाचक संबंध-सूचक 'चा़य्^{४}' 'छ़ूङ^{२}' इत्यादि के साथ), रीति (साधन-दर्शक संबंध 'युङ्^{४}' 'च़वो^{४}' इत्यादि के साथ), प्रयोजन, या कार्य संपादन करने वाले कर्त्ता के ऊपर जोर देना चाहते हों तो विधेय में "षृ^{४}—त" इस विन्यास का प्रयोग करते हैं, और इस विशेष प्रकार के क्रिया-विधेय को 'षृ^{४}' और 'त' के बीच में रखते हैं; जैसे,

(स्थान) निन्^{२}त माव्^{४}च़् (षृ) चा़य् नाळ^{3} माय्^{3}-त	आपका टोप कहां से खरीदा गया है ?
(स्थान) था^{१} (षृ) छ़ूङ्^{२} नाळ^{3} लाय्^{२}त ?	वह कहां से आया है ?
(रीति) वो^{3} (षृ) च़वो^{४} ह्वो^{3}छ^{१} ह्वं^{२}लाय्त	मैं रेलगाड़ी से आया हूं।

(प्रयोजन) वो³मन् (षृ) ताव्⁴ चळ⁴ लाय्² न्येन्⁴-षू¹त (अथवा न्येन्⁴-षू¹ लाय्²त)	हम लोग यहां पढ़ने के लिये आये हैं।
(कर्त्ता के ऊपर जोर) षू¹(षृ) था माय्³त)	किताब उसने खरीदी है।

इस तरह के विन्यास में "षृ⁴" का प्रयोग वैकल्पिक है। लेकिन निषेधार्थक रूप में "षृ⁴" का प्रयोग अनिवार्य है; उदाहरण के लिए हम 'वो³ च्वो⁴ ह्वो³छ¹ लाय²-त' कह सकते हैं, लेकिन इसके निषेधार्थक रूप में 'वो³ पू²षृ च्वो⁴ह्वो³छ¹ लाय्²त' कहना अनिवार्य है।

निम्नलिखित उदाहरणों से "षृ⁴... त" की विशेषता प्रगट होगी :

वो³ फङ्²यौ च्वो²थ्येन् लाय्²-ल।	मेरा मित्र कल आया है।
वो फ²ङ्यौ च्वो²थ्येन् लाय्²-त।	कल मेरा मित्र आया है (अथवा मेरा मित्र कल के रोज आया है)
वो³ चिन्¹थ्येन् माय्³ (ल) षू¹ ल।	मैंने आज एक किताब खरीदी।
षू¹ षृ चिन्¹थ्येन् माय³-त।	किताब आज खरीदी गई है।

अगर "षृ⁴ ...त" युक्त क्रिया-वाक्य में कोई कर्म हो तो उसे वाक्य के अन्त में यानी "त" के बाद या "त" के पहले रख सकते हैं; जैसे,

नि³ (षृ) चा⁴य् ना³ळ श्व़वे²-त चुङ्¹वेन्²	तुमने चीनी भाषा कहां सीखी है ?
था¹ पु²षृ चाय्⁴ चळ⁴ माय्³ त षू¹	उसने किताब यहां नहीं खरीदी है।

अगर कर्म पुरुष-वाचक सर्वनाम हो या क्रिया विधेय में क्रिया-कर्म विन्यास के बाद वाक्य के अन्त में दिशाबोधक पूर्ति आई हो तो कर्म अक्सर 'त' के पहले ही रखते हैं; जैसे,

वो^{3} (षृ) च़वो^{२}थ्येन् खान्^{४} मैंने उसे कल देखा है।
था^{१} त।

था^{१} (षृ) चिन्^{३}थ्येन् ताव्^{४} वह आज चीन गया है।
चुङ्^{१}क्वो^{२} छ्य़ू^{४}त।

पाठ-१३

इ^{४} न्येन्^{२} यौ^{3}चि^{3}क ट़.वे^{४} ?	एक वर्ष में कितने मास होते हैं ?
इ^{४}न्येन्^{२} यौ^{3} षृ^{२}अळ^{४}क ट़.वे^{४} ।	एक वर्ष में बारह मास होते हैं।
यौ^{3}त्वो^{१}षाव् थ्येन् ?	कितने दिन होते हैं ?
सान्^{१} पाय्^{3} ल्यू^{४}षृ ऊ^{3}थ्येन्	३६५ दिन होते हैं।
इ^{२}क ट़.वे^{४} यौ^{3}त्वो^{१}षाव् थ्येन् ?	एक मास में कितने दिन होते हैं?
यौ^{3}त यौ^{3} सान्^{१}षृ थ्येन्, यौ^{3}त यौ^{3} सान्^{१}षृइ^{१}थ्येन् ।	कुछ में ३० दिन, कुछ में ३१ दिन होते हैं।
अळ^{४}ट़.वे मै^{२}यौ सान्^{१} षृ^{२} थ्येन्^{१} पा ?	फरवरी के महीने में ३० दिन नहीं होते। क्या होते हैं ?
मै^{२} यौ, अळ^{४}ट़.वे च्यु^{४} यौ^{3} अळ^{४} षृ^{२} पा^{१} थ्येन् ।	नहीं, नहीं होते। फरवरी में केवल २८ दिन होते हैं।
ति^{४}इ^{२}क ट़.वे^{४}, चुङ^{१}क्वो^{२} ह्वा^{४} च्याव्^{४} ष^{२}म्मा ?	चीनी भाषा में पहले महीने को क्या बोलते हैं।
च्याव्^{४}इ^{२}ट़.वे^{४} ।	इसे पहला महीना कहते हैं।
ति अळ^{४}क ट़.वे^{४}च्यु^{४} च्याव्^{४} अळ^{४}ट़.वे पा ?	तो दूसरा महीना दूसरा महीना हीं कहलाता है। है ना ?

त्वै^{४}ल ।	आप ठीक हैं ।
औ, ना^{४}पु नान्^{२} । इ^{२}क ट्.वे^{४}	ओह ! यह तो कठिन नहीं है ।
यौ^{३}चि^{३}क लि^{३}पाय्^{४} ।	एक महीने में कितने सप्ताह होते हैं ?
स्च्^{४} क लि^{३}पाय्^{४} । इन्येन्^{२} यौ^{३}ऊ^{३}षृ अळ^{४}क लि^{३}पाय्^{४}, इ^{२}क लि^{३}पाय्^{४} यौ^{३} छि^{१}-थ्येन् ।	चार सप्ताह । एक वर्ष में ५२ सप्ताह होते हैं, एक सप्ताह में ७ दिन होते हैं ।
'इतवार' चुङ्^{१}क्वो^{२} ह्वा^{४} च्याव् ष^{२}म्मा ?	चीनी भाषा में इतवार को क्या कहते हैं ।
'इतवार' च्याव्^{४} लि^{४}पाय^{४}-थ्येन्, 'सोमवार' च्याव्^{४}लि^{३}-पाय् इ^{१} ।	इतवार को "लिपाय् थ्येन्" सोमवार को "लिपाय्ई" (सप्ताह का पहला दिन) कहते हैं ।
ना^{४}ये^{३}पुनान्^{४} ।	यह भी कठिन नहीं है ।
स्वो^{३}इ^{३} वो^{३} ष्वो^{१} चुङ्^{१}-क्वो^{२} ह्वा^{४} हन्^{३} रुङ्^{२}इ इट्.वे^{२} ।	इसलिए मैं कहता हूँ कि चीनी भाषा पढ़ना बहुत आसान है ।

नये शब्द

यौ^{३} (त) षृ^{२} हौ	(गतिशील क्रि० वि०)	कभी-कभी
छ्यू^{४}न्येन्^{२}	(गतिशील क्रि०वि०,सं०)	पिछले वर्ष
चिन्^{१} न्येन्^{४}	(गतिशील क्रि०वि०,सं०)	इस वर्ष
मिङ्^{२}न्येन्^{२}	(गतिशील क्रि०वि०,सं०)	अगले वर्ष
ना^{४}	(निश्चयवाचक सर्व०)	वह
चि^{३}	(निश्चयवाचक सर्व०)	कितना

थ्येन्[१]	(सं०)	दिन
न्येन्[२]	(सं०)	वर्ष
हाव्[४]	(सं०)	दिन (महीने का), नंबर (घर का, कमरे आदि का)।
ट.वे[४]	(सं०)	महीना
लि[3]पाय्[४]	(सं०)	सप्ताह
षृ[२]हौ	(सं०)	समय
छ[१] चान्[४]	(सं०)	स्टेशन
ह्वो[3]छ[१] चान्[४]	(सं०)	रेलवे स्टेशन
छि[४]छ[१] चान्[४]	(सं०)	बस-स्टाप या अड्डा
थ्येन्[१] थ्येन्[१]	(क्रि० वि०)	प्रतिदिन
याव्[४] चिन्[3]	(वि)	आवश्यक (होना)
ताव्[४]	(क्रि०)	पहुँचना
शि[१]वाङ्	(क्रि०)	की आशा करना, की आशा
	(सं०)	आशा, उम्मीद
ति[४]	उपसर्ग	(क्रमवाचक अंक बनाने के लिए)
पा	सहायक शब्द	(सम्भावना के अर्थ में)

(ना[४])पु[२] याव्[४]-चिन्[3] ।	कोई बात नहीं, कुछ भी नहीं।
त्वैं[४]ल ।	बिलकुल ठीक है (सहमति देना)

साल	महीना	दिन
इछ्येन्[४]-च्यु[3]पाय्[3]न्येन्[२] १९००	इ[२]ट.वे[१] जनवरी	इ[२]हाव् पहला
इछ्येन्[४]-पा[१]पाय्[3]ल्यु[४]षृ		

सान्[1] न्येन्[2] १८७३ अळ[4]य्.वे फरवरी अळ[4]हाव् दूसरा
सान्[1]य्.वे मार्च सान्[1]हाव् तीसरा
इछ्[1]येन्-च्यु[3]पाय्[3]स्च्
षृ-छि[1]न्येन्[2] १९४७ स्च्[4]य्.वे अप्रैल स्च्[4]हाव् चौथा
उ[3]य्.वे मई उ[4]हाव् पांचवा
ल्यु[4]य्.वे जून ल्यु[4]हाव् छठा
छि[1]य्.वे जुलाई छि[1]हाव् सातवाँ

(टेलीफोन के ढंग से)

इ[1]-स्च्[4]-च्यु[3]-अळ[4]न्येन्[2] १४९२ पा[1]य्.वे अगस्त पा[1]हाव् आठवाँ
इ[1]-लिङ्[2]-सान्[1]-इ[1]-
न्येन्[2] १०३१ च्यु[3]य्.वे सितंबर च्यु[3]हाव् नौवाँ
इ[1]-पा[1]-लिङ्[2]-लिङ्[2]-
न्येन्[2] १८०० षृ[2]य्.वे अक्तूबर षृ[2]हाव् दसवाँ
षृ[2]इ[1]य्.वे नवंबर षृ[2]इ[1]हाव् ग्यारहवाँ
षृ[2]आळ[4]य्.वे दिसंबर षृ[2]आळ[4]हाव् बारहवां

ष[3]म्मा न्येन्[2] कौन सा वर्ष चि[3]य्.वे कौन सा महीना (वर्ष का) चि[3]हाव् कौन सा दिन (महीने का)
छ्यु[4]न्येन्[2] पिछला वर्ष षाङ्[4]य्.वे पिछला महीना च्वो[2]थ्येन् कल (बीता हुआ)
चिन्[1]न्येन्[2] इस वर्ष चे[4]य्.वे इस महीने चिन्[1]थ्येन् आज
मिङ्[2]न्येन्[2] अगले वर्ष श्या[4]य्.वे अगले महीने मिङ्[2]थ्येन् कल (आने वाला)

नै^{3}न्येन्^{2}	कौन सा वर्ष ?	नै^{3}ट.वे	कौन सा महीना	नै^{3}थ्येन्	कौन सा दिन ?

सप्ताह

षाङ्^{4}लि^{3}पाय्^{4}(२)	पिछला सप्ताह	लि^{3}पाय् थ्येन्^{1}	इतवार
चे^{4}लि^{3}पाय्^{4}	इस सप्ताह	लि^{3}पाय्इ^{1}	सोमवार
श्या^{4}लि^{3}पाय्^{4}	अगला सप्ताह	लि^{3}पाय्अळ^{4}	मंगलवार
नै^{3}लि^{3}पाय्^{4}	कौन सा सप्ताह	लि^{3}पाय् सान्^{1}	बुधवार
षाङ्^{4}लि^{3}पाय सान्^{1}	पिछले सप्ताह बुधवार	लि^{3}पाय् स्च्^{4}	बृहस्पति-वार
चे^{4}लि^{3}पाय् सान्^{1}	इस सप्ताह बुधवार	लि^{3}पाय् उ^{3}	शुक्रवार
श्या^{4}लि^{3}पाय् सान्^{1}	अगले सप्ताह बुधवार	लि^{3}पाय् ल्यु^{4}	शनिवार
नै^{3}लि^{3}पाय सान्^{1}	कौन सा बुधवार ?	लि^{3}पाय् चि^{3}	क्या दिन (सप्ताह का) ?

(१) इ^{2}ट.वे (जनवरी) और इ^{2}कट.वे^{4} (एक महीना) इन दोनों का अंतर ध्यान में रखना चाहिये।

(२) इन दोनों कालम (सारणी) के बीच "क" का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे 'षाङ्^{4} क ट.वे^{4}', 'नै^{3}क ट.वे^{4}' ? 'षाङ्^{3} क लि^{3}-पाय् ', नै^{3}क लि^{3}पाय्^{4}' ? इत्यादि।

क्रम वाचक अंक

ति^{4} इ^{4}थ्येन्^{1}	प्रथम दिन
ति^{4} अळ^{4} थ्येन्^{1}	दूसरा दिन, अगला दिन
ति^{4} सान्^{1} न्येन्^{2}	तीसरा वर्ष
ति^{4} स्च्^{4}क	चौथा (व्यक्ति या वस्तु)

ति^{4} उ^{3}वै^{4}	पांचवे व्यक्ति (अध्यापक आदि के लिये आदरसूचक प्रयोग)
ति^{4} ल्यु^{4}पन्^{3}	छठा खण्ड (पुस्तक आदि के लिए)
ति^{4} छि^{1} चाङ्	सातवाँ ताव या तख्ता (कागज के लिए)
ति^{4} चि^{3}पन्^{3}	कौन सा खण्ड (ग्रंथ-खण्डों में से)

उदाहरणमाला

(क)—क्रिया से पहले आने वाली काल-वाचक अभिव्यक्तियां ('किस समय')

नि^{3} च़वो^{2}थ्येन् वान्^{3}षाङ् छ्यू़^{4}ल मा ? मै^{2}छ्यू़^{4}।	क्या आप कल शाम को गये थे ? नहीं, मैं नहीं गया।
चाङ्^{1} श्येन्^{1}षङ् मिङ्^{2}थ्येन् लाय्^{2}पु लाय्^{2} ? पुलाय्^{2}, मिङ्^{2}थ्येन् पुलाय्^{2}।	क्या मि० चांग कल आ रहे हैं ? नहीं, वह कल नहीं आ रहे हैं।
था^{1} लि^{3}पाय् अळ^{4} ह्वै^{2}लाय् ल मै^{2}यौ ? लाय्^{2} ल।	क्या वह मंगलवार को वापस नहीं आया ? हां, वह वापस आ गया।
षाङ्^{4}लि^{3}पाय्^{4} नि^{3} चा़य् नाळ^{3} ? षाङ्^{4} लि^{3}पाय्^{4} वो^{1}चा़य् त^{2}लि^{3}।	पिछले सप्ताह आप कहां थे ? पिछले सप्ताह मैं दिल्ली में था।
नि^{3} श्या^{4}ऱ्वे पु^{2}ताव्^{4}इङ्^{1}-क्वो^{2} छ्यू़ मा ?	अगले महीने क्या आप इंगलैंड नहीं जा रहे हैं ?
पु छ्यू़^{4}। नि^{3} च़^{3}म्मा चृ^{1}-ताव् वो^{3} पुछ्र् यू़^{4} ?	नहीं। आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं नहीं जा रहा ?

छ्यु^{४} न्येन्^{२} लाय्^{२}त ने^{४}क रन्^{२}ताव् नाळ^{3} छ्यु ल ?	जो व्यक्ति पिछले वर्ष आया था वह कहां गया ?
वो^{3}शि^{१}वाङ् नि^{3} मिङ्^{२}थ्येन् नङ्^{२}लाय्^{२} ।	मुझे आशा है कि आप कल आ सकते हैं (आएंगे) ।

(ख)—"पा" के साथ सम्भावना का अर्थ

नि^{3}षृ चाङ्^{१} श्येन्शङ् पा?	क्या आप मि० चांग हैं ?
षृ ।	हां ।
नि^{3}मन् पु^{२}माय्^{४} वाय्^{४}क्वो^{२} छा^{२} पा ?	आप दूसरे देश की चाय तो नहीं बेचते ?
माय्^{४} । नि^{3} माय्^{3}त्वो^{१}-षाव् ?	हाँ, हम बेचते हैं । आपको कितनी चाहिए ?
श्य्.वे^{१}षङ् तौ^{१} ह्व^{२}च्या^{१}ल पा ? त्वै^{४}ल, तौ^{१} ह्व^{२} च्या^{१} ल ।	मेरे ख्याल से सब छात्रगण घर वापस चले गये हैं ? ठीक है, वे सब घर चले गये है ।
नि^{१}चिन्^{१}थ्येन् पु छ्यु^{४}पा? पुछ्यु^{४} ।	मेरे विचार से आज तुम नहीं जा रहे हो, क्यों ? मैं नहीं जा रहा हूँ ।
नि^{3} थ्येन्^{१} थ्येन्^{१} ताव् था^{१} नाळ^{४}छ्.यू^{४}, पा? वो^{3} यौ^{3} षृ^{२}हौ छ्यु^{४}, यौ^{3}षृ^{२}हौ पु^{२} छ्.यू ।	मेरे विचार से आप प्रतिदिन उसके घर जाते हो ? कभी मैं वहां जाता हूँ, कभी नहीं जाता ।

(ग)—"षृ^{४}......त" वाक्य के साथ जोर देने के लिये कालवाचक अभिव्यक्तियां

१- ने^{४}क रन्^{२} षृ नै^{3}थ्येन् चौत ? था^{१}षृ च.वो^{२}थ्येन् चौत ।

२- निन्^{२}थाय्^{४}थाय् षृ लि^{3}पायचि^{3} ताव् मङ्^{४}माय् (बंबई)

छ्य़ू त ? वो3 थाय्4 थाय् षृ लि3 पाय् सान्1 छ्य़ू त ।

३- चे4क च्वो1च् षृ नै3ट़वे माय्3त ? षृ षाङ्4ट़वे माय्3त ।

४- चाव्4श्याव्3च्ये षृ चि2ट़वे लाय2त ? था1 षृ षृ2 इ3ट़वे लाय्2त ।

५- नि3त फङ्2यौ षृ चि3हाव् ह्वै2लाय् त ?
था1 षृ उ3ट़वे षृउ3 (हाव्) ह्वै2लाय् त ।

व्याकरण

१३-१ कालबोधक शब्द का प्रयोग हमेशा क्रिया-विशेषण के रूप में किया जाता है, जिससे उस समय का बोध होता है, जिस समय कोई व्यापार होता है या कोई अवस्था रहती है । ऐसी सूरत में, कोई भी काल-बोधक शब्द चाहे वह अवधि सूचित करता हो या निश्चित समय, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो सकता है; जैसे,

वो3 मि3ङ्2थ्येन् छ्य़ू4 ।	मैं कल जाऊंगा ।
चिन्1थ्येन् वान्3षाङ् छिङ्3 नि3 मन ताव्4 वो3मन् च्या1 लाय्2 छृ1 इ त्या3ळ चु1ङ्- क्वो2 फ़ान्4 ।	आज शाम को कृपया थोड़ा-सा चीनी खाना खाने के लिए हमारे घर पधारिये ।

'मिङ्2थ्येन्' और 'चिन्1थ्येन् वान्3षाङ्' काल-बोधक शब्द हैं, जिनसे निश्चित समय सूचित होता है । जब हम यह प्रगट करना चाहते हैं कि 'किस समय' कोई बात हुई या नहीं हुई, तो क्रिया-विशेषण के रूप में ऐसे कालबोधक शब्द का प्रयोग कर सकते हैं जिससे एक निश्चित समय का बोध होता है । अन्य उदाहरण ये हैं :

था1 षृ च़वो2थ्येन् लाय्2 त	वह कल के रोज आया ।

वो^{3} चे^{४}ल्याङ्^{3}थ्येन् मै^{२} षृ^{४}	इन दो दिन मुझे कोई काम नहीं मिला (अथवा मेरे पास कोई काम नहीं है)।

१३-२ सहायक शब्द 'पा (बा)' से अनिश्चय का भाव :

'पा' इस सहायक शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से किसी निर्णय में अनिश्चय प्रगट करने के लिए किया जाता है। जब हम किसी वस्तु का अनुमान लगाते हैं लेकिन निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि वह सच है या नहीं, तो हम वाक्य के अन्त में सहायक 'पा' का प्रयोग करते हैं; जैसे,

निन्^{२} हन्^{3} माङ्^{२} मा ?	क्या आप बहुत व्यस्त हैं ?
निन्^{२} हन्^{3} माङ्^{२} पा ?	शायद आप बहुत व्यस्त हैं, हैं न ?
था^{१} ताव् चुङ्^{१}क्वो^{२} छ्यू़ ल मा ?	क्या वह चीन चला गया है ?
था^{१} ताव् चुङ्^{१}क्वो^{२} छ्यू़-ल पा ?	शायद वह चीन चला गया है। है न ?
था^{१} मै^{२} छ्यू़^{४} मा ?	क्या वह नहीं गया है ?
था^{१} मै^{२} छ्यू़^{४} पा ?	मेरा विचार नहीं है कि वह गया। क्या वह चला गया ? (या मुझे लगता है कि वह नहीं गया है, यह क्या ठीक है ?)

१३-३ क्रमवाचक अंक : चीनी भाषा में, ऊपसर्ग 'ति^{४}' जोड़ देने से संख्या का क्रम सूचित होता है। गणनावाचक अंक के पहले 'ति^{४}' लगा देने से क्रमवाचक अंक बन जाता है; जैसे,

ति^{४}इ^{१}—पहला (ली); ति^{४}अळ^{४}-दूसरा (री)

गणनावाचक अंकों की तरह क्रमवाचक अंक जब संज्ञा के साथ जोड़े जाते हैं तब क्रमवाचक अंक भी सामान्यतः मापक शब्दों की अपेक्षा करते हैं; जैसे,

ति^{4} इ^{2}क र^{2}न्—पहला आदमी; ति^{4} सान्^{1} पन्^{3}––तीसरा खंड (किताब का), इत्यादि।

आमतौर से क्रमवाचक अंकों के पहले उपसर्ग 'ति^{4}' लगता है, लेकिन इस नियम के कुछ अपवाद हैं। नीचे हम कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बता रहे हैं जिनमें अंक के पहले उपसर्ग नहीं लगाया जाता, फिर भी उससे क्रम सूचित होता है :

(१) जिस अंक से साल, महीना, दिन और समय का बोध होता है, उसके पहले उपसर्ग नहीं लगाया जाता। फिर भी वह कालक्रम सूचित करता है; जैसे,

अळ^{4} ऱ्.वे^{4} अळ^{4} ऋ^{4} फरवरी की दूसरी तारीख (अर्थात् दूसरा महीना, दूसरा दिन)

यह स्पष्ट है कि चाहे उपसर्ग 'ति^{4}' हो या न हो क्रमवाचक अंक के लिये केवल 'अळ^{4}' का प्रयोग किया जाता है, न कि 'ल्याङ्^{3}' का।

(२) वस्तुओं के विभिन्न वर्गों को प्रगट करने के लिये उपसर्ग 'ति^{4}' का प्रयोग नहीं किया जाता; जैसे,

ई^{4} न्येन्^{2} चि^{2} श्ऱ्.वे^{2}षङ् पहली श्रेणी के छात्र (अर्थात् पहले साल के विद्यार्थी)
(चि^{2}=पंक्ति, वर्ग)

सान्^{1} तङ्^{3} तीसरी श्रेणी
(तङ्^{3}=श्रेणी, वर्ग)

(३) आमतौर से परिवार के सदस्यों और सम्बन्धियों को

सम्बोधित करने के लिये उपसर्ग 'ति^{4}' का प्रयोग नहीं होता; जैसे,

सान्^{1}-क^{1} (क)	तीसरा बड़ा भाई, अर्थात् संझला भाई

उपसर्ग-रहित क्रमवाचक अंकों को आम गणनावाचक अंकों के साथ गड़बड़ नहीं करना चाहिये। हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि गणनावाचक अंकों के साथ मापक शब्द लगता है। लेकिन उपसर्ग-रहित क्रमवाचक अंक के साथ किसी मापक शब्द की जरूरत नहीं होती। इसलिये **'अळ^{4} द्वे^{4}'** और **'सान्^{1}-क^{1}'** के साथ मापक शब्द नहीं लगा है। अगर हम लोग कहें, "दो महीने", और "तीन बड़े भाई" तो उनका अनुवाद होगा : "ल्याङ्^{3}-क द्वे^{4}" और "सान^{1}-क क^{1}क^{1}"।

१३-४ "षृ" रहित वाक्य : बोलचाल की भाषा में साधारण और छोटे वाक्य में 'षृ^{4}' का प्रयोग अक्सर नहीं किया जाता। इसके कुछ प्रचलित नियम इस प्रकार हैं :

(१) जब विधेय से काल प्रकट होता है; जैसे,

मिङ^{2}थ्येन् (षृ) लि^{3}पाय्चि^{3}	कल कौन सा दिन है ?
लि^{3}पाय्ल्यु^{4}	शनिवार।
चिन्^{1}थ्येन् (षृ) चि^{3} हाव्^{4}?	आज कौन सी तारीख है ? (अथवा आज की तारीख क्या है) ?
चिन्^{1} थ्येन् (षृ) षृ^{2}सान^{1}हाव्^{4}	आज तेरह तारीख है।
चिन्^{1}न्येन^{2} (षृ) ष^{2}म्मा न्येन्^{2}?	यह कौन सा साल है ?
चिन्^{1}न्येन^{2} (षृ) ई^{1}-च्यु^{3}-छि^{1} स्च्^{4}-न्येन^{2}	यह १९७४ का साल है।

(२) जब विधेय से जन्मस्थान प्रगट होता है, तब भी 'षृ^{4}' का प्रयोग वैकल्पिक है; जैसे,

निन्^{2} (षृ) नाळ^{3} रन्^{2}	आप कहां के रहने वाले हैं ?

	(आपका जन्मस्थान कहाँ है?)
वो^{3} (षृ) त^2-लि^{3} रन्^{2}	मैं दिल्ली का रहने वाला हूँ (त^2-लि^{3} = दिल्ली का चीनी रूप है)।

१३-५ तारीख और पता : चीनी भाषा में तारीख और समय बताने के वक्त बड़ी इकाइयां पहले आती है और बाद में छोटी इकाइयां, यानी सबसे पहले 'न्यन्^{2}' इसके बाद 'ट्वे^{4}' फिर 'ऋ^4' (हाव^4) और अन्त में 'त्येन्^{3} (षृ); जैसे,

ई^1-च्यू^{3}-छि^{1}-ई^1-न्येन्^{2} पा^{2} ट्वे^{4} षृ^{2}स्च्^{4}	१४ अगस्त, १९७१ (या १९७१ के साल का १४ अगस्त)
लि^{3}पाय्-अळ^4 वान्^{3}षाङ्	मंगलवार, सायंकाल,

अगर तारीख में साल, महीना, दिन और समय सब साथ-साथ आए हों, तो शब्द-क्रम इस प्रकार होगा :

ई^1-च्यु-छि^{1}-स्च्^{4}-न्येन् षृ^{2}-इ^1-ऋ^4 (हाव्^{4}) लि^{3}पाय्^{4}अळ^4 षृ^{4} त्येन्^{3}	१ अक्टूबर, १९७४, मंगलवार, दस बजे
पता : षाङ्^{4}हाय्^{3} चुङ्^{1}षान्^{1}-लु^{4} षृ^{2} हाव्	१० नं०, चुङ्^{1} सान^1 (सान यात् सेन) मार्ग, शंघाइ।

भौगोलिक शब्दों मे भी यही तरीका अपनाया जाता है; जैसे,

चुङ्^{1}क्वो^{2} पै^{3} चिङ्^{1}	पैकिङ्, चीन देश
इनुतु^{4} चुङ्^{1} षङ्^{3} ईन्^{4} तौ^{1} अळ^3	इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

जैसे कि पहले कहा जा चुका है (देखिये व्याकरण नोट, १३-३ (१)) साल, महीना, दिन और समय-बोधक शब्दों के साथ उपसर्ग 'ति^{4}' का प्रयोग नहीं होता।

पाठ-१४

क-	चिन्^{१}थ्येन् वान्^{3}षाङ् वो^{3} श्याङ् ताव् च्ये^{१}षाङ् छ्यू छृ त्याळ^{3} चुङ्^{१}क्वो^{२} फ़ान्^{४}, षै^{२} कन्^{१} वो^{3} छ्यू^{४} ?	आज रात को मैं चीनी भोजन खाने के लिये बाहर जाने की सोच रहा हूँ । मेरे साथ कौन चलेगा ?
ख-	वो^{3} कन्^{१} नि^{3} छ्यू^{४}	मैं तुम्हारे साथ चलूँगा ।
क-	नि^{3} ह्वै^{४}युङ्^{४} ख्वाय्^{४}च् मा ?	क्या तुम चौपस्टिक का प्रयोग कर सकते हो ? (चौपस्टिक से खा सकते हो) ?
ख-	इत्याळ^{3} तौ^{१} पुह्वै^{४}	मैं बिलकुल नहीं जानता ।
क-	ना^{४}पु^{४}याव्चिन्^{3} । नि^{3}याव् युङ्^{४} छा^{१}च्, फ़ान^{४}क्वाळ^{3}-लि तौ^{१} यौ^{3} । नि^{3} याव् श्य़्वे^{२} युङ्^{४} ख्वाय्^{४}च्, वो^{3} ख^{3}इ^{3} च्याव्^{१} नि^{3}	चिन्ता की कोई बात नहीं । यदि तुम छुरी कांटे का प्रयोग करना चाहो तो जलपान गृह में वह भी है । यदि तुम चौपस्टिक का प्रयोग करना सीखना चाहो तो मैं सिखा सकता हूँ ।
ख-	वो^{3}मन् ताव् नै^{3}क फ़ान्^{४}-छ्यू^{४} क्वाळ^{3} ?	हम लोग किस जलपान गृह में जाएंगे ?

क-	छङ्२लि३थौ यौ3 इक श्याव्3 फ़ान्४क्वाळ3 च्याव्४ शिन्१-ह्वा२ लौ२। वो3 थिङ्१ ष्वो१ नाळ४त छ्ाय्४ पुछ्.वो४	नगर के अन्दर एक छोटा जल-पान गृह है जिसका नाम 'नवचीन' है। सुनने में आता है कि वहां का भोजन काफी अच्छा है।
ख-	औ, वो3 चृ१ताव् ने४क ति४फ़ाङ्	अरे! मैं उस स्थान से परिचित हूँ।

नये शब्द

वि०

यौ3युङ्४	उपयोगी होना लाभदायक,
पु२छ्.वो४	अच्छा है, ठीक है बढ़िया।
थिङ्४ष्वो१	सुनने में आया कि
वेन्४...हाव्3	किसी की कुशलता के बारे में पूछ-ताछ करना।
कौ४ ल !	बहुत है, काफी है, पर्याप्त है।

मा०

-वान्3	कटोरी
च्.यू४	'ह्वा२' शब्द के लिए

संज्ञा

छ्ाय्४	हरी सब्जियां, चीनी खाने की डिश
रौ४	माँस
यू२	मछली
थाङ्१	सूप, झोल
ताव्१च्.	छुरी, चाकू।

छा[1]च्	कांटा
षाव्ळ[2]	चम्मच
ख्याय्[4]च्	चौपस्टिक (चीन देश में भोजन करने में प्रयुक्त होनेवाली सलाइयां)
वान्[3]	कटोरी
शिन्[4]	पत्र, चिट्ठी
च्य्[4]च्	वाक्य
कुङ्[1]फ़ु	अवकाश, फ़ुरसत
क्रि० वि०	
श्येन्[1]	पहले
इ[2]ख्वाळ[4]	एक साथ (संज्ञा भी है)
सं० सू०	
कन्[1]	साथ, और
कँ[3]	लिए, के लिए, को
थि[4]	के बदले, के स्थान पर
युङ्[4]	से
त्वै[4]	ओर, को, विषय में
क्रि०	
युङ्[4]	प्रयोग या इस्तेमाल करना, काम में लाना
वाळ[2]	खेलना

उदाहरणमाला

(क) संबंध सूचक

(१) कन्[1] (साथ, से)

वो^{3}मन् मि^{2}ङ्थ्येन् याव् कन्^{1} लि^{3} श्येन्^{1}षङ् लि^{3}थाय्^{4}थाय् इ^{2}ख्वाळ^{4} छ़्^{1} वान्^{3}फ़ान्^{4}	हम कल शाम का भोजन श्री और श्रीमती ली के साथ करेंगे।
नि^{3} त चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} षृ कन्^{1} षै^{2} श्ऱ्.वे^{2}त।	तुम किससे चीनी भाषा सीखे हो ?

(२) कै^{3} (के लिए)

लि^{3}थाय्^{4}थाय् याव्^{4} कै वो^{3}-मन् च.वो^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} फ़ान्^{4}	श्रीमती ली हमारे लिए चीनी भोजन बनायेंगी।

(३) थि^{4} (के बदले)

लि^{3}श्येन्^{1}षङ् याव्^{4} थि^{4} लि^{3} थाय्^{4}थाय् माय्^{3} छ़ाय्^{4}।	श्रीमती ली के बदले श्री ली मांस और सब्जियाँ खरीद रहे हैं।

(४) त्वै^{4} (की, ओर,)

लि^{3} श्येन्^{1}षङ् लि^{3}थाय^{4}-थाय् त्वै^{4} वो^{3}मन् हन्^{3} हाव्^{3}।	श्री और श्रीमती ली हमारे प्रति बहुत अच्छे हैं।

(ख) अनिश्चय-सूचक प्रश्नार्थक शब्द

१- नि^{3} याव्^{4} ष^{2}म्मा ? वो^{3} ष^{2}म्मा तौ^{1} पुयाव्^{4}।	तुम्हें क्या चाहिए ? मुझे कुछ नहीं चाहिए।
२- नि^{3} ताव्^{4} नाळ^{3} छ्यू ? वो^{3} पु^{2}ताव् नाळ^{3} छ्यू^{4}।	तुम कहां जा रहे हो ? मैं कहीं नहीं जा रहा।
३- नि^{3} कन्^{1} षै^{2} ष्वो^{1}ह्वा^{4}?वो^{3} मै^{2} कन्^{1} षै^{2} ष्वो^{1} ह्वा^{4}।	आपने किस के साथ बातें कीं ? मैंने किसी के साथ बातें नहीं की।

४- नि^{3}मन् श्ट.वे^{2}श्याव्^{4} यौ^{3} त्वो^{1}षाव् श्ट.वे^{2}षङ् ! मैं^{2} त्वो^{1}षाव् ।	तुम्हारे स्कूल में कितने छात्र हैं ? अधिक नहीं है ।

(ग) अंतर्गत व निषेधक के अर्थ में प्रश्नार्थक शब्द

१- नि^{3} याव्^{4} ष^{2}म्मा ? वो^{3} ष^{2}म्मातौ^{1} याव्^{4},(अथवा)वो^{3} ष^{2}म्मा तौ^{1} (या मे^{3})पुयाव्^{4}	तुम्हें क्या चाहिए ? कुछ चाहिए, या कुछ भी नहीं चाहिए ?
२- षैं^{2} चृ^{1}ताव् चे^{4}क षृ^{4}छिङ् ?	इसके विषय में कौन जानता है ?
षैं^{2}-तौ^{1} चृ^{1}ताव् ।	प्रत्येक व्यक्ति जानता है ।
षैं^{1} तौ^{1} पुचृ^{1}ताव् ।	कोई भी नहीं जानता ।
३- नाळ^{3} यौ^{3} फ़ान्^{4}क्वाळ^{3} ?	जलपानगृह किधर है ?
नाळ^{3} तौ^{1} यौ^{3} ।	हर जगह है ।
नाळ^{3} ये^{3} मै^{2}यौ^{3} ।	कहीं भी नहीं ।
४- नै^{3}क छि^{4}छ^{1} षृ नि^{3}त ? नै-क तौ^{1} पु^{2}षृ वो^{3}त । वो^{3}त माय्^{4} ल ।	तुम्हारी कौन सी मोटरगाड़ी है ? इनमें से कोई भी मेरी नहीं है । मेरी बिक गई है ।
५- नि^{3} याव् खान्^{4} नै^{3}पन्^{3} षू^{1} ?	तुम कौन सी पुस्तक पढ़ना चाहते हो ?
नै^{3}पन् तौ^{1} ख^{3}इ^{3} ।	कोई सी भी ठीक रहेगी ।
६- नि^{3} ष्वो^{1} नै^{3}थ्येन् चौ हाव्^{3} ?	तुम बताओ जाने के लिए कौन-सा दिन अच्छा है ?
ने^{3}थ्येन् तौ^{1} शिङ्^{2} ।	कोई भी दिन ठीक है ।

(घ)—निषेधक अर्थ पर बल का प्रयोग ('भी नहीं')

१- नि^{3} याव्^{4} त्वो^{1}षाव् ? वो^{3}	तुम्हें कितना चाहिए ? बिलकुल

	इत्याळ^{3} तौ^{१} (या ये^{3}) पु^{२} याव्^{४}	नहीं।
२-	नि^{3} ह्वै^{४} श्ये^{3} त्वो^{१}षाव् च्^{४} ? वो^{3} इ^{२}क च्^{४} ये^{3} पु^{१}ह्वै श्ये^{3} ।	तुम कितने अक्षर लिख सकते हो? मैं एक अक्षर भी नहीं लिख सकता।
३-	नि^{3} खान्^{४}ल चि^{3}पन्^{3} षू^{१}ल? वो^{3} इपन्^{3} तौ^{१} मै^{२}खान्^{४} न।	तुमने कितनी पुस्तकें पढ़ी ? मैंने एक भी पुस्तक अभी तक नहीं पढ़ी।
४-	निन्^{२} ह्वै^{४}ष्वो^{१} इङ्^{१}वेन्^{२} मा ? वो^{3} इत्याळ^{3} तौ^{१} पु^{२}ह्वै ष्वो^{१} ।	क्या आप अंग्रेजी बोल सकते हैं? मैं बिलकुल भी नहीं बोल सकता।
५-	नि^{3} यौ त्वो^{१}षाव् छयेन्^{२} ? इमाव्^{२} छयेन्^{२} ये मैयौ^{3} ।	तुम्हारे पास कितना पैसा है ? एक सिक्का भी नहीं है।
६-	नि^{3} नङ्^{२}छ्रृ^{१} चि^{3}वान्^{3} फ़ान्^{४}? पान्^{४}वान्^{3} तौ^{१} पु^{४}नङ् छ्रृ^{१}	तुम कितना चावल खा सकते हो ? आधी कटोरी भी नहीं खा सकता।
७-	नि^{१} याव्^{४} ष^{२}म्मा ? यो^{3} ष^{२}म्माये^{3} (या तौ^{१}) पुयाव्^{४} ।	तुम्हें क्या चाहिए ? मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

व्याकरण

१४-१ कन^{१}, कै^{3}, थि^{४}, युङ्^{४} व त्वै^{४} : संबंधसूचक 'चा़य्^{४}' का प्रयोग हम पाठ १० में बता चुके है (देखिये व्याकरण नोट, १०-५)। यहाँ पांच और संबंधसूचकों के साथ परिचय कराया गया है। ये हैं, 'कन्^{१}' (के साथ, के पीछे), 'कै^{3}' (के लिये), 'थि^{४}' (के बदले, के बजाय, के लिये), 'युङ्^{४}' (से, में) और 'त्वै^{४}' (के प्रति, के लिये)। इनका प्रयोग 'चा़य्^{४}' की तरह ही होता है। उदाहरण के लिये :

नि^{3} कन्^{1} षै^{2} छ्यू^{4}	तुम किसके साथ जा रहे हो (अथवा जाओगे)
था^{1} थ्येन्^{1}-थ्येन्^{1} कै^{3} वो^{3} माय्^{3} पाब्^{4}	वह मेरे लिये हर रोज अख़बार खरीदता है।
वो^{3} ख^{3}ई^{3} थि^{4} नि^{3} छ्यू मा ?	क्या तुम्हारी जगह मैं जा सकता हूँ ?
श्येन्^{1}षङ् युङ्^{4} चुङ्^{1}-वेन्^{2} ष्वोह्ला^{4}	अध्यापक महोदय चीनी भाषा में बोलते हैं।
वो^{3} त्वै^{4} था^{1}मन् ष्वो^{1}वो^{3} पुनङ्^{2} छ्यू^{4}	मैंने उनसे कहा कि मैं नहीं जा सकूंगा।

'कै^{3}' का अनुवाद 'के लिये' है, और इससे सेवा का लक्ष्य सूचित होता है, जैसे,

क^{1}-क कै^{3} वो^{3} माय्^{3}ल ई^{4}-पन्^{3} षू^{1}	मेरा बड़ा भाई मेरे लिए एक किताब खरीद लाया।

'कै^{3}' का प्रयोग कभी-कभी 'थि^{4}' की जगह भी हो सकता है। उदाहरण के तौर पर हम उपरोक्त वाक्य को इस तरह भी लिख सकते हैं : 'क^{1}क थि^{4} वो^{3} माय्^{3}ल ई^{4}-पन् षू^{1}' लेकिन इसका अर्थ होगा (मेरा) बड़ा भाई मेरे बदले एक किताब खरीद लाया (अथवा मेरे बजाय मेरा बड़ा भाई एक किताब खरीद लाया)।

१४-२ अनिश्चय सूचक प्रश्नार्थक शब्द :

'चि^{3}' (कितना), 'षै^{2}' (कौन), 'ष^{2}म्मा' (क्या), 'नाळ^{3}' (कहां), जैसे प्रश्नवाचक सर्वनामों को अनिश्चित प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों परिमाणों या व्यापारों आदि को सूचित करने के लिये भी

प्रयोग करते हैं। ऐसे वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों के ऊपर जोर नहीं दिया जाता; जैसे,

था१ यौ३ चि३ पन्३ षू१ ?	उसके पास कितनी किताबें हैं ?
था१ यौ३ चि३ पन्३ षू१ ।	उसके पास कुछ किताबें हैं ।
ने४ वान्३लि यौ३ ष२म्मा ?	उस कटोरी में क्या है ?
मै२ ष२म्मा ।	कुछ नहीं ।
छ१षाङ् यौ३ त्वो१षाव् रन्४ ? मै२ त्वो१-षाव् रन्२ ।	उस ट्रेन में (रेलगाड़ी में) कितने आदमी हैं । ज्यादा नहीं ।
लि३ पाय्४ थ्येन्१वो३ श्याङ्३ ताव्४ नाळ३ छ्यू वाळ२-बा२ळ ।	मैं रविवार को कहीं खेलने के लिए जाना चाहता हूँ ।

१४-३ 'षै२ तौ१' 'ष२म्मा तौ' इत्यादि : कभी-कभी प्रश्नवाचक सर्वनाम बिना किसी अपवाद के 'हरेक' 'हर कोई' आदि अर्थ में और निषेधार्थक रूप में 'कोई भी नहीं' 'कुछ भी नहीं' इत्यादि के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

षै२ शि३ह्वान् था१ ? षै२ तौ शि३ह्वान् था ।	उसको कौन पसन्द करता है ? उसको सभी पसन्द करते हैं ।
ष२म्मा र२न् याव्४ चे४क ?	कौन आदमी इसे चाहता है ?
ष२म्मा रन्२ तौ१ (या ये३) पु२याव्४ ।	कोई भी नहीं चाहता ।
षै२ तौ१ ह्वै४ ।	हर कोई जानता है ।
षै२ तौ१ पु२ह्वै४ ।	कोई भी नहीं जानता ।

१४-४ निषेधार्थक वाक्य में बल प्रगट करने का तरीका : निषेधार्थक वाक्य में, जिस संज्ञा पर हम बल देना चाहते हैं, उसके

पहले अक्सर 'इ^{1}' या बहुत थोड़ी संख्या या परिमाण सूचित करता हो ऐसा कोई शब्द और मापक शब्द प्रयुक्त करते हैं। संज्ञा के बाद, 'तौ^{1}' या 'ये^{3}' भी आता है, जिसके बाद क्रिया का निषेधात्मक रूप प्रयुक्त होता है; जैसे,

नि^{3} ह्वे^{4} च्वो^{4}फ़ान्^{4} मा ?	क्या तुम खाना बनाना जानते हो ?
वो^{3} ई^{4}-त्याळ^{3} तौ^{1}(ये^{3})पु^{2} ह्वे^{4} ।	मैं बिलकुल नहीं जानता।
हाय्^{2}च्. छ्रृ^{1}-ल चि^{3}वान्^{3} फ़ान्^{4} ल ?	बच्चे ने कितने कटोरे चावल खाया ?
पान्^{4}वान्^{3} तौ^{1} (ये^{3}) मैं^{2} छ्रृ^{1} न ।	अभी तक आधा भी नहीं खाया।
इ^{2}क रन्^{2} ये^{3} मैं^{2}लाय्^{2} ।	कोई भी नहीं आया है।
था^{1} इ^{2}च.यू^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} तौ^{1} पु^{2} ह्वे^{4} ष्वो^{1} ।	वह चीनी भाषा का एक शब्द भी नहीं बोल सकता।

पाठ-१५

वो३ यौ३ इक फङ्२ यौ, शिङ्४ षन्३। यौ३ इ४थ्येन्१ षन्३ श्येन्१षङ् ताव् चुङ्१क्वो२ छ्यू.ल।	मेरा एक मित्र है जिसका नाम मि० सेन है। एक दिन सेन महोदय चीन गए।
था१पु२षृ इ२क रन्२ छ्यू.त, था१ षृ कन्१ ल्याङ्३क फङ्२-यौ इ२ख्वाळ४ छ्यू.त।	वह अकेले नहीं गए। वह दो मित्रों के साथ गए।
था१मन् च.वो४ छ्वान्२, चौ.ल उ३थ्येन्१ च्यु४ ताव्४ल चुङ्१क्वो२।	उन लोगों ने पांच दिन तक नाव द्वारा यात्रा की और चीन पहुंचे।
ताव्४ल चुङ्१क्वो२, श्या४ ल छ्वान्२ था१मन् च्यु षाङ्४ल ह्वो३छ१ ल।	चीन पहुँचने पर वे लोग नाव से उतर गये और रेलगाड़ी पर बैठे।
था१मन्त ह्वो३छ१ षृ४ लि३पाय्१सान्१ खाय्२त, ति४ अळ४ थ्येन् चा.व्३षाङ् च्यु ताव्४ल पै३चिङ्१ ल।	उनकी रेलगाड़ी बुधवार को चली (छूटी), और दूसरे दिन सुबह वे लोग पेकिंग आ गए।
ताव्४ल पै३चिङ्१, था१मन् च्यु चा.य् छङ्२ लि३थौ चाव्३ ल	पेकिंग पहुंचने पर उन लोगों ने शहर में एक होटल की खोज

इक ल्यू^{3}क्वन्^{3} । — की ।

था^{1}मन् चाय् ने^{4}क ल्यू^{3}क्वा^{3}-न्लि चु^{4}ल इ^{2}कत्वो^{1} लि^{3}-पाय्^{4}, हौ^{4}लाय् च्यु ताव्^{4} इक फङ्^{2}यौ च्या^{1} छ्यू^{4} चु छ्यूल ।

वे लोग उस होटल में लगभग एक सप्ताह तक रहे और बाद में एक मित्र के घर रहने चले गये ।

षन्^{3} श्येन्^{1}षङ् कन्^{1} था^{1}त फङ्^{2}यौ चाय् ने^{4}क रन्^{2}त च्या^{1}लि चु^{4}ल पान्^{4} न्येन्^{2}, च्यु ह्वे^{2} इन्^{4}तु^{4} ल ।

सेन महोदय व उनके दो मित्र उस व्यक्ति के घर पर आधे वर्ष तक ठहरे और तब भारत वापस आ गये ।

नये शब्द

गतिशील क्रि० वि०

हौ^{4}लाय	बाद में तत्पश्चात्
पान्^{4}थ्येन्^{1} (सं० भी है)	देर तक
इ^{4}थ्येन्^{1} (सं० भी है)	एक दिन, पूरे दिन

क्रि० वि०

च्यु^{4}	तब

संख्या

हाव्^{3} चि^{3}	कई
हाव्^{3} श्ये^{1}	कई, काफी

मा०

-ख्वाय्^{4}	रुपये पैसे के लिए
-ख^{4}	पाठ
-फ़ङ्^{1}	पत्र के लिए

सं०

ल्यू[3]क्वान्[3]	होटल,

स० क्रि०

तै[3]	अवश्य, अवश्य चाहिए
पु[2]पि[4]	आवश्यकता नहीं, प्रयोजन नहीं
पु[2]युङ्[4]	कोई उपयोग या लाभ नहीं, निरर्थक
इङ्[1] ताङ्[1]	चाहिए, उचित
प्ये[2]	नहीं (आज्ञासूचक, पु[2]याव्[4] का संक्षिप्त रूप)

क्रि०

षाङ्[4]	जाना (ऊपर को), चढ़ना इत्यादि (नीचे देखिए)
श्या[4]	नीचे जाना या आना
चु[4]	रहना, वास करना
ह्वै[2]	लौटना
चाव्[3]	ढूँढ़ना, खोजना
खाय्[1]	खोलना, चलना या चलाना (गाड़ी जहाज इत्यादि)

क्रि० क०

षाङ्[4] श्य्वे[2]	स्कूल आना, स्कूल में पढ़ना
षाङ्[4]ख[4]	कक्षा में (पढ़ने) जाना
षाङ्[4]छ[1]	गाड़ी पर चढ़ना
षाङ्[4]च्ये	बाजार जाना

षाङ्^{४}लौ^{२}	मकान के ऊपरी खण्ड (मंजिल) पर चढ़ना या जाना
ह्वै^{२}च्या^{१}	घर लौटना
ह्वै^{२}क्वो^{२}	(अपने) देश वापस जाना
षन्^{3}	भारतीय पदवी 'सेन' के लिए प्रयुक्त

उदाहरणमाला

(क) प्रत्यय "ल" साधारण कर्म के साथ

१- वो^{3}मन् षाङ्^{४}ल लौ^{२} च्यु च वो^{४}-श्या^{४}ल	हम लोग ऊपर पहुंच कर बैठ गए।
२- था^{१} माय्^{3}ल थाङ्^{२} च्यु ह्वै^{२}-च्या^{१} ल	वह मिठाई (मिश्री) खरीद कर घर वापस लौटा।
३- था^{१}मन् श्या^{४}ल छ^{१} च्यु षाङ्^{४} ल्यू^{3}क्वान्^{3} छ्यू	वे लोट रेलगाड़ी से उतर कर होटल गए।
४- वो^{3}मन् ताव्^{४}ल छ^{१}चान्^{४}, ह्वो^{3}छ^{१} इ^{3}चिङ् खाय्^{१}ल	जब हम लोग स्टेशन पहुँचे तो रेलगाड़ी पहले ही जा (छूट) चुकी थी।
६- था^{१}मन ताव्^{४}ल थ्येन्^{१}चिङ् च्यु मै^{२} श्या^{४} छ्वान्^{२}	जब वे लोग थियेन्चीङ् पहुंचे तो नाव से नहीं उतरे।
७- निन्^{२} छूल फ़ान्, खान्^{४}ल पाव्^{४}, च्यु छिङ्^{3} निन्^{२} षाङ्^{४} लौ^{२}	जब आप भोजन कर चुकें और समाचार पत्र पढ़ चुकें तो कृपया ऊपर आइए।

(ख) एक या दो "ल" मापकयुक्त कर्म के साथ :

१-	(क): वो षाङ्^{4}ट्.वे खान्^{4} ल सान्^{1}पन्^{3} षू^{1}	(क): मैंने पिछले महीने तीन पुस्तकें पढ़ीं।
	(ख): श्येन्^{1}षङ् याव्^{4} वो^{3}मन् खान्^{4} उ^{3}पन्^{3} षू^{1}, वो^{3} खान्^{4}ल सानपन्^{3}ल^{3}	(ख): अध्यापक महोदय चाहते हैं कि हम लोग पांच पुस्तकें पढ़ें। मैं अभी तक तीन (पुस्तकें) पढ़ चुका हूँ।
२-	(क): वो^{3}वेन्^{4}ल ल्याङ्^{3}क रन्^{2}, था^{1}मन् तौ^{1} ष्वो^{1} पु^{1}चृताव्^{4}	(क) मैंने दो व्यक्तियों से पूछा। उन दोनों ने कहा कि उन्हें मालूम नहीं।
	(ख): वो^{3} वेन्^{4}ल ल्याङ्^{3}क रन्^{2}ल। वो^{3} हाय्^{2} तै^{3} वेन्^{4} चि^{3}क रन्^{2}	(ख) मैं पहले ही दो व्यक्तियों से पूछ चुका हूं। मुझे अभी कुछ और व्यक्तियों से अवश्य पूछना चाहिए।
३-	(क): था^{1}मन् छ्यु्.न्येन्^{2} चा़य् वाय्^{4} क्वो^{2} इ^{2}कुङ्^{4} ताव्^{4}ल पा^{2}क ति^{4}फ़ाङ्	(क) पिछले वर्ष विदेश में रहते समय वे लोग आठ स्थानों को गये।
	(ख): था^{1}मन् चिन्^{1}न्येन् इ^{3}-चिङ् ताव्^{4}ल सान्^{1}क ति^{4}फ़ाङ्ल	इस वर्ष वे लोग पहले ही तीन स्थानों को हो आये हैं।
४-	(क): वो^{3} च़.वो^{2}थ्येन् वान्^{3}-षाङ् माय्^{3}ल इत्याळ^{3} थाङ्^{2}	(क): पिछली रात मैंने कुछ मिश्री (या मिठाई) खरीदी।
	(ख): वो^{3}मन् इ^{3}चिङ् छृ^{1}ल ईपान्^{4} ल।	(ख): हम लोग पहले ही (उसकी) आधी खा चुके हैं।
५-	(क) वो^{3} छ्यु्.न्येन् चा़य्	(क) पिछले वर्ष मैंने चीन में चीनी-

चुङ्^{1}क्वो^{2} श्य़.वे^{2}ल चि^{3}च्यू ह्वा^{4} ।	भाषा के कुछ वाक्य सीखे ।
(ख) :वो^{3}मन् न्येन्^{4}ल षृ^{2}उ^{3}-ख^{4} ल ।	(ख) हम लोग पन्द्रह पाठ पढ़ चुके हैं ।

(ग)—व्यतीत समय (काल वाचक शब्द क्रिया के साथ)

१- वो^{3} श्येन्^{1}षङ् चा़य् वाय्^{4} क्वो^{2} चु^{4}ल पुषाव्^{3} षृ^{2}हौ ल ।	मेरे पति अधिक समय से विदेश में रह रहे हैं ।
२- वो^{3} श्याङ्^{3} ल हन्^{3}त्वो षृ^{2}-हौ ल । मिङ्^{2}थ्येन् वो^{3} चा़य्^{4} श्याङ्^{3}श्याङ् ।	मैं इसके बारे में एक लम्बे समय तक सोचता रहा हूँ । मैं कल इस पर और (अधिक) विचार करूंगा ।
३- था^{1} लाय्^{2}ल इ^{4}थ्येन्^{1} ल ।	उसका आना एक दिन हो गया ।
४- था^{1} च.वो^{4} ल पान्^{4}थ्येन्, हौ-लाय् च्यु चौ़ल ।	वह देर तक बैठा रहा, फिर चला गया ।
५- वो^{3} चा़य् चळ^{4} इ^{3}चिङ् श्य़.वे^{2}-ल ल्याङ्^{3}कत्वो य़.वे^{4}त चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4}ल ।	मैं यहां दो माह से अधिक चीनी बोली सीखता रहा हूँ ।
अथवा—श्य़.वे^{2}चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} श्य़.वे^{2}ल ल्याङ्^{3}कत्वो^{1} य़.वे^{4}ल ।	
६- था^{1} श्ये^{3}ल हाव्^{3} चि^{3} न्येन्^{2}-त^{2} च.^{4} ल; अथवा—श्ये^{3} च. श्ये^{3}ल हाव^{3} चि^{3} न्येन्^{2} ल । स्वो^{3}इ^{3} था^{1}-	वह कई वर्षों तक अक्षर लिखता रहा है, इसलिए उसके अक्षर सबसे अच्छे हैं ।

त चृ4 चवै4 हाव्3।

(घ) 'ल' व 'षृ4'....त' वाक्यों की तुलना

१-	वो3 छ्यू4न्येन्2 ताव् त2क्वो2 छ्यूल। नि3 षृ कन्1 षै2 छ्यूत ?	पिछले वर्ष मैं जर्मनी गया। तुम किसके साथ गये ?
२-	वो3 चिन्1न्येन् ऱ्व्वे2ल इत्याळ3 त2वेन्2। नि3 षृ कन्1 षै2 ऱ्वेत।	इस वर्ष मैंने थोड़ी जर्मन भाषा सीखी। तुमने किसके साथ (जर्मन भाषा) सीखी ? (या किसके पास सीखी ?)
३-	वो3 षाङ्4 ऱवे4 चाय् न्यू3ऱवे माय्3ल इ2क छि4छ1। नि3 षृ कै3 षै2 माय्3त ?	पिछले माह मैंने न्यूयार्क में एक मोटर गाड़ी (कार) खरीदी। तुमने (कार) किसके लिए खरीदी ?
४-	वो3 कै3 था1 श्ये3ल हाव्3 चि3फ़ङ्1 शिन्4। ने4श्ये शिन्4 षृ कै3 षै2 श्ये3 त।	मैंने उसे (या उसके लिए) कई पत्र लिखे। तुमने वे सब पत्र किसको लिखे ?
५-	वो3 चवो2थ्येन् च्याव्1ल इत्याळ3 षू1। निन्1 षृ थि4 षै2 च्याव्1त ?	कल मैंने थोड़ा सा पढ़ाया। तुमने किसकी जगह पढ़ाया ?
६-	वो3मन् चिन्1थ्येन् चाय् इ2क फङ्2यौ च्या1लि छृ1 चुङ्1-क्वो2 फ़ान्4। नि3मन् षृ युङ्4 ख्वाय्4चृ छृ1त पा ?	आज हमने एक मित्र के घर चीनी भोजन किया। तुम लोगों ने चौपस्टिक से भोजन किया होगा, ठीक है न ?

व्याकरण

१५-१ 'ल' का प्रयोग (२) : यदि क्रिया के बाद केवल प्रत्यय 'ल' हो और साधारण कर्म वाले वाक्य में क्रिया के साथ

प्रत्यय 'ल' हो और कर्म के बाद सहायक शब्द 'ल' न हो, तो वाक्य अपूर्ण रहता है। वाक्य पूरा करने के लिए उसमें कुछ और तत्त्व जोड़ने की आवश्यकता होती है। ऐसे अपूर्ण वाक्य हिन्दी के आश्रित वाक्य-खण्डों की तरह होते हैं जो "जब", "—के बाद" जैसे शब्दों से आरम्भ होते हैं। अर्थ पूर्ण करने के लिए बाद का कथन प्रायः क्रियाविशेषण 'च्यु^{4}' (तब) से आरम्भ होता है और उसका अनुवाद हिंदी में नहीं होता और न ही बोलने में उस पर बल देते हैं। यहां क्रियाविशेषण 'च्यु^{4}' का प्रयोग हमेशा उत्तरोत्तर व्यापार या कार्य-कारण संबंध करने के लिए होता है; जैसे,

था^{1} छृ^{1}-ल फ़ान्^{4} च्यु खान्^{4} पाव्^{4}।	वह खाना खाने के बाद अख़बार पढ़ता है।
था^{1} छृ^{1}-ल फ़ान्^{4} च्यु खान् पाव्^{4} छ्यू^{4}-ल।	वह खाना खाने के बाद अखबार पढ़ने गया।
था^{1} छृ^{1}ल फ़ान्^{4} च्यु श्याङ्^{3} खान्^{4} पाव्।	खाना खाने के बाद वह समाचार पत्र पढ़ना चाहता है।
था^{1} श्र्वे^{2}ल चुङ्^{1}वेन्^{2}च्यु नङ्^{2} खान्^{4} चुङ्^{1}वेन्^{2} षू^{1}।	चीनी भाषा पढ़ने के बाद वह चीनी किताब पढ़ सकेगा।

१५-२ मापक के साथ कर्म और एक 'ल' या दो 'ल' का प्रयोग : किसी वाक्य में जब कर्म के पहले कोई अंक और मापक शब्द आए, तब उस हालत में 'ल' के प्रयोग पर ध्यान देना चाहिये। अगर सिर्फ प्रत्यय 'ल' (यानी क्रिया के साथ) हो, तो इसका मतलब होता है कि व्यापार पूरा हो चुका है, लेकिन अगर प्रत्यय 'ल' और सहायक शब्द 'ल' दोनों का प्रयोग साथ-साथ किया गया हो, तो इसका मतलब यह होता है कि व्यापार अभी जारी है, क्रिया को वर्तमान तक लाकर उससे किसी रूप में सम्बन्धित कर दिया जाता है। निम्नलिखित वाक्यों के जोड़ों में अन्तर समझिए :

था^{1} छू^{1}-ल सान^{1}-वान्^{3} फ़ान्	उसने तीन कटोरे चावल खाए।
था^{1} छू^{1}-ल सान^{1} वान्^{3} फ़ान्ल	वह अब तक तीन कटोरे चावल खा चुका है।
वो^{3} चाय्^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} चु^{4}-ल सान्^{1} न्येन्^{2}।	मैं (एकबार) चीन में तीन वर्ष रहा।
वो^{3} चाय्^{4}चुङ्^{1}क्वो^{2} चु^{4}-ल सान्^{1} न्येन्^{2}-ल	मुझे चीन में रहते तीन वर्ष हो चुके हैं (मैं चीन में तीन वर्ष से रहता रहा हूँ)।

१५-३ व्यतीत समय और पूर्ति के रूप में काल-बोधक शब्द : जब हम यह प्रगट करना चाहते हैं कि कितनी देर तक कोई व्यापार हुआ या कोई अवस्था रही, या वर्तमान समय तक होता रहा या भविष्य में होता रहेगा, तो ऐसे कालवाचक शब्द क्रिया के बाद पूर्ति के रूप में आते हैं। यह उस स्थिति से भिन्न है जब क्रिया-विशेषण के रूप में कालबोधक शब्दों का प्रयोग क्रिया के पहले यह बताने के लिये किया जाता है कि किस समय या किस अवधि में कोई व्यापार हुआ या कोई अवस्था रही (देखिए व्याकरण नोट १३-१); जैसे,

वो^{3} छ्यू^{4}न्येन् चाय्^{4} चळ^{4}चु^{4}	मैं पिछले वर्ष यहां रहा (किस समय)।
वो^{3} चे^{4} ल्याङ्^{3}क ए.वे^{4} चाय्^{4} चळ^{4}न्येन्^{4}-षू^{1}	मैं पिछले दो महीने से यहां पढ़ता रहा हूँ (किस अवधि में)।
वो^{3} चाय्^{4}चळ^{4}चु^{4}-ल ल्याङ्^{3}-क ए.वे^{4}ल	मुझे यहां रहते अब तक दो महीने हो चुके हैं (कितनी देर तक)।

अगर क्रिया के बाद कोई कर्म हो, तो तीन उपाय किये जा सकते हैं, लेकिन अर्थ में कोई भिन्नता नहीं होगी :

(१) पहले बिना प्रत्यय 'ल' के क्रिया और उसके कर्म को

घोषित किया जाता है। फिर क्रिया को दुहरा कर (प्रत्यय 'ल' के साथ या बिना उसके, जैसा भी हो) उसके बाद कालबोधक शब्द को रखते हैं; जैसे,

वो^{3}चा़य्^{4}चळ^{4}न्येन्^{4}षू^{1} न्येन्^{4}-ल ल्याङ्^{3}-क ऱ़वे^{4}ल	(शब्दार्थ : जहां तक मेरे यहां पढ़ने का संबंध है, मुझे पढ़ते हुए अब तक दो महीने हो चुके हैं)।

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रत्यय और क्रिया-विशेषण को द्विरुक्त क्रिया के साथ रखना पड़ता है। दूसरी बात यह है कि व्यतीत समय बताने वाले शब्द मापक युक्त कर्म के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसलिये कितनी देर तक कोई व्यापार हुआ या कोई अवस्था रही इन तत्त्वों को प्रगट करने वाले कालबोधक शब्दों के साथ जो 'ल' आता हैं उसके संबंध में वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा ऊपर नोट १५-२ में बताया गया है।

(२) अगर क्रिया की द्विरुक्ति न हो तो कालबोधक शब्दों को क्रिया और उसके कर्म के बीच रखा जाता है। ये कालबोधक शब्द कर्म के पहले विशेषता-सूचक की स्थिति में प्रयुक्त होते हैं। सहायक ज्ञब्द 'त' का प्रयोग कालबोधक शब्दों के बाद हो सकता है; जैसे,

वो^{3}चा़य्^{4}चळ^{4} न्येन्^{4}ल ल्याङ्^{3}-क ऱ़वे^{4}त षू^{1}ल	मुझे यहाँ पढ़ते दो महीने हो चुके हैं (शब्दार्थः दो महीने की अवधि समाप्त हो चुकी है और मेरी पढ़ाई अभी भी जारी है)।
वो^{3}मन् ई^{3}-चिङ्^{1} श्ऱ़वे^{2}ल ई^{2}-क त्वो^{1} ऱ़वे^{4}(त) चुङ्^{1}वेन्^{2}ल	हमें अब तक चीनी पढ़ते एक महीने से ज्यादा हो चुका है।

(३) कर्म, अपवृत्त कर्म की तरह, वाक्य के आरम्भ में रखा जा सकता है, विशेषकर यदि कर्म पर बल देना हो या यदि वह कुछ जटिल हो; जैसे,

चिन^{1}थ्येन्त ख^{4} वो^{3} मै^{2}-न्येन्^{4}-वान्^{2}, च्यु^{2} न्येन्^{4}-ल इ^{4}त्याळ^{3}	मैंने आज का पाठ अभी तक नहीं किया, सिर्फ थोड़ा सा ही पढ़ा है।
नि^{1} च़वो^{2}थ्येन् कै^{3}वो^{3}-त षू^{1}वो हाय्^{2} मै^{2}खान्वान्^{2}, च्यु^{4} खान्^{4}लं ई^{2}-पान्^{4}	मैंने तुम्हारी दी हुई किताब अभी तक खत्म नहीं की है, केवल आधी ही पढ़ी है।

पाठ-१६

यौ^{3}इ^{४}थ्येन्^{१} चाङ्^{१} श्येन्^{१}षङ्‌ चाव्^{3} वो^{3} लाय्^{२}ल । वो^{3}-छ्‌ङ्‌^{२} लौ^{२}षाङ् श्या^{४}लाय्, कै^{3} था^{१} खाय्^{१}मन्^{२} । वो^{3} ष्वो^{१} : औ, चाङ्‌^{१} श्येन्^{१}षङ् लाय्^{२}ल । छिङ्^{3}चिन्^{४}लाय् पा ।"	एक दिन श्री चाङ्‌ मुझसे मिलने आये । मैं ऊपर (की मंजिल) से उनके लिए दरवाज़ा खोलने के लिए नीचे आया । मैंने कहा : चाङ् महाशय, आइए कृपया अंदर आइए ।"
चाङ्‌^{१} श्येन्^{१}षङ्‌ कन्^{१} वो^{3} चाय् ख^{४}थिङ्^{१}लि थान्^{२}ल ह्वा^{४} । हौ^{४}लाय् वो^{3}त हाय्^{२}च्‌ चाय् लौ^{२}षाङ् च्वाव्^{४}वो^{3} ष्वो^{१} : "पा^{१}पा, वो^{3}मन् ये^{3} याव् च्येन्^{४}च्येन् चाङ्‌^{१}श्येन्^{१}-षङ्‌ । वो^{3} ष्वो^{१} :—"हाव्^{3}, ख्वाय्^{४} श्या^{४}लाय् पा ।" हाय्^{२}च्‌ च्यु श्या^{४}लाय् ल ।	श्री चाङ् और मैं बैठक में बैठे, और थोड़ी देर बातचीत के बाद मेरे बच्चों ने मुझे ऊपर (की मंजिल) से बुलाकर कहा : "पिताजी, हम भी श्री चाङ्‌ से मिलना चाहते हैं ।" मैंने कहा, : "अच्छा, जल्दी से नीचे आ जाओ" तब बच्चे नीचे आ गये ।
हाय्^{२}च्‌मन् श्या^{४}लौ^{२}, श्या^{४}-लाय् त हन्^{3} ख्वाय्^{४}, कन्^{१}-चाङ्^{१}श्येन्^{१}षङ्‌ ष्वो^{१}ल ल्याङ्^{3}-	बच्चे काफी तेज गति से नीचे आये, श्री चाङ्‌ से कुछ शब्द कहे और फिर खेलने के लिए

च.यू ह्वा^{4} च्यु श्याङ्^{3} छु^{1}-छ्यू. वाळ^{2} । था^{1}मन् वेन्^{4}-वो^{3} ख^{3}इ^{3} पु ख इ । वो^{3}श्वो^{1} ख^{3}इ^{3}, था^{1}मन् च्यु फाव्^{3}ताव् वाय्^{4}थौ छ्.यू^{4} वाळ^{2} छ्यू. ल । हाय्.^{2}च्. फाव्^{3}लु^{4} फाव्^{3}त चन् ख्वाय्^{4} ।

बाहर जाना चाहा । उन्होंने मेरी अनुमति मांगी । मैंने अनुमति दे दी और वे बाहर की ओर खेलने के लिए दौड़े । बच्चे सचमुच बहुत तेज भाग सकते हैं ।

नये शब्द

सं०

इह्वै ळ^{3}	एक क्षण (गतिशील क्रि० वि० भी है)
ख^{4}थिङ्^{1}	बैठक (मेहमानों का कमरा)
मन्^{2}	दरवाज़ा
छ्वाङ्^{1}हु	खिड़की
लु^{4}	खिड़की

वि०

ख्वाय्^{4}	तेज़, जल्दी (क्रिया विशेषण—जल्दी)
मान्^{4}	धीरे

क्रि०

च्येन्^{4}	देखना, मिलना ('खान्^{4}' से अधिक औपचारिक)
क्वान्^{1}(षाङ्)	बंद करना, ('खाय्^{1}' का विलोम)
पान्^{1}	हटाना (निवासस्थान बदलना)
पान्^{1}च्या^{1}	(क्रिया-कर्मपद) अपना निवास स्थान बदलना
चिन्^{4}छङ्^{2}	(क्रियाकर्म पद) शहर जाना
छु^{1}मन्^{2}	(क्रियाकर्म पद) जाना (घर के बाहर)

क्रि०		सं० श०	
चान्[4]	खड़ा होना	पा	वाक्य प्रत्यय—प्रार्थना सूचक
च.वो[4]	बैठना	चि[2]ल	विशेषणों का प्रत्यय-- अधिकतम मात्रा सूचक
चिन्[4]	अन्दर जाना		
छु[1]	बाहर जाना		
थान्[2]	बातचीत करना		
थान्[2] ह्वा[4]	(क्रियाकर्म-पद) बातचीत करते रहना		
फाव्[3]	दौड़ना		
तङ्[3]	प्रतीक्षा करना		
च्याव्[4]	बुलाना (किसी को)		
(संबंधसूचक)	बताना, आज्ञा देना, (करने देना)		

मुहावरेदार कथन

त्वै[4]पुछि[3]क्षमा कीजिए। मुझे खेद है।

उदाहरणमाला

(क) गति सूचक क्रिया पद 'लाय्[2]' और 'छ्य्.[4]' के साथ

षाङ्[4]लाय्	ऊपर आना (यहाँ)	षाङ्[4]छ्य्.	ऊपर जाना (वहां)
श्या[4]लाय्	नीचे आना (यहां)	श्या[4]छ्य्.	नीचे जाना (वहां)
चिन्[4]लाय्	अंदर आना (यहां)	चिन्[4]छ्य्.	अंदर जाना (वहां)
छु[1]लाय्	बाहर आना (यहां)	छु[1]छ्य्.	बाहर जाना (वहां)
ह्वै[2]लाय्	वापस आना (यहां)	ह्वै[2]छ्य्.	वापस जाना (वहाँ)
पान्[1]लाय्	एक जगह से दूसरी जगह आना (यहां)	पान्[1]छ्य्.	एक जगह से दूसरी जगह जाना (वहां)

नमूनाः वो^{3} याव् छु^{1}छ्य्., इह्वै$^{\text{ळ}}$^{3} च्यु ह्वै^{2}लाय् ।

मैं बाहर जा रहा हूं और एक मिनट में वापस आ जाऊंगा ।

१- था^{1}च्याव्^{4} नि^{3} षाङ्^{4} छ्य्., नि^{3} वै^{4}ष^{2}म्मा पु षाङ्^{4}छ्य्. ?	उसने तुम्हें ऊपर जाने को कहा । तुम ऊपर क्यों नहीं जाते ?
२- छिङ्^{3}चिन्^{4}लाय् च.वो इह्वैळ^{3} ।	कृपया अंदर आइए और थोड़ी देर बैठिए ।
३- ने^{4}क ऊ^{1}च्. वो^{3}मन् पु नङ्^{2} चिन्^{4}छ्य्.	हम उस कमरे के अंदर नहीं जा सकते ।
४- चिन्^{1}थ्येन् त पाव्^{4} हाय्^{2} मै^{2}छु^{1}-लाय् न ।	आज का समाचारपत्र अभी तक नहीं आया है ।
५- निन्^{3}फ़ु^{4}छिन् ह्वै^{2}ल मै^{2}यौ ?	क्या आपके पिताजी वापस आ गये ?
६- त्वै^{4}पुछि^{3}, वो^{3} तै^{3} श्येन्^{1} ह्वै^{2}-छ्य्. ।	क्षमा कीजिए, अब मुझे अवश्य वापस जाना है ।
७- नि^{3}मन् षृ नै^{3}थ्येन् पान्^{1}लाय्त?	आप किस दिन (यहां) जगह बदल कर आये ?
८- नि^{3}मन् ष^{2}म्मा षृ^{2}हौ पान्^{1}छ्य्. ?	आप कब (वहां) जगह बदल कर जाएंगे ?

(ख) स्थान--सूचक क्रियापदों के प्रत्यय के रूप में 'चाय्^{4}'

चान्^{4}चाय्	खड़ा होना (किसी जगह पर)
च.वो^{4}चाय्	बैठना (किसी जगह पर)
चु^{4}चाय्	रहना (किसी जगह पर)

नमूनाः छिङ्^{3} नि^{3} चू^{4}चाय वो^{3}मन् चळ^{4}

कृपया हमारे यहां रहिए ।

१-	छिङ्^{3}नि^{3}चान्^{४}चा़यच़वो^{१}च़् छ्येन्^{२}थौ ।	कृपया मेज़ के सामने खड़े होइए।
२-	नि^{3} ट़वान्^{४}इ च़वो^{४}चा़य् ना^{3}ळ ?	आप कहाँ बैठना चाहते हैं ?
३-	प्ये^{२} च़वो^{४}चा़य ने^{४}क इ^{3}-च़षाङ् ।	उस कुर्सी पर मत बैठो ।
४-	चिन्^{१}थ्येन् वान्^{3}षाङ् नि^{3} चु^{४}चा़य् नाळ^{3} ?	आज रात आप कहां ठहर रहे हैं ?

(ग) गति-सूचक क्रियापदों के प्रत्यय के रूप में 'ताव्^{४}'

चिन्^{४}ताव् (लाय्^{२}या छ्यु^{४})	अंदर आना (यहां या वहां)
ह्वे^{२}ताव् (लाय्^{२}या छ्यु^{४})	वापस आना (यहां या वहां)
पान्^{१}ताव् (लाय्^{२}या छ्यु^{४})	जगह बदल कर (यहां या वहां) आना
चौ^{3}ताव् (लाय्^{२} या छ्यु^{४})	चलना (यहां या वहां)
फाव्^{3}ताव् (लाय्^{२} या छ्यु^{४})	दौड़ना या जल्दी जाना (यहां या वहां)
न्येन्^{४}ताव्	(तक) पढ़ना या अध्ययन करना।

१-	छिङ्^{3}नि^{3} चिन्^{४}ताव् चे^{४}क ऊ^{१}च़् लाय्^{२}खान्^{४}खान् ।	कृपया इस कमरे में आइए और एक नजर देखिए ।
२-	नि^{3} ष^{२}म्मा^{२} षृ^{२}हौ ह्वे^{२} (ताव्) मै^{3}क्वो^{२} छ्यु ?	आप अमरीका कब वापस जा रहे हैं ?
३-	वो^{3}मन् याव् चौ^{3}ताव् फ़ै^{१}-चि^{१} छ्येन्^{२}थौ च्यु ह्वे^{२} लाय् ।	हम वायुयान के सामने तक जाकर वापस आ जायेंगे ।
४-	हाय़्^{२}च़् तौ^{१}फाव्^{3}ताव्	सब बच्चे शहर से बाहर खेलने

छङ्^{2}वाय्^{4}थौ छ्यू^{4} वाळ^{4} छ्यू ल।	(दौड़कर) गए हैं।
५- नि^{3}मन् इ^{3}चिङ् न्येन्^{4}ताव् नाळ^{3}ल ?	तुमने कहां तक पढ़ा है ?

(घ)—किसी कार्य की रीति सूचित करना

(छृ^{1}फ़ान्) छृ^{1}त थाय्^{4}ख्वाय्^{3}	बहुत शीघ्र खाता है।
(ष्वो^{1}ह्वा^{4}) ष्वो^{1}त हन्^{3}मान्^{4}	बहुत धीरे बोलता है।
ष्वो^{1}त यौ^{3}इ^{4}स्चू	मजेदार बातें करता है।
(श्ये^{3}चू^{4}) श्ये^{3}त हाव्^{3}चि^{2}ल	बहुत अच्छा लिखता है।
(छाङ्^{4}कळ^{1}) छाङ्^{4}त चन्^{1}-हाव्^{3}।	सचमुच अच्छा गाता है।
(चृवो^{4}षृ) च्वो^{4}त हन्^{3}हाव्^{3}।	काम बहुत अच्छा करता है।
(चौ^{3}लु^{4}) चौ^{3}त पु^{2}मान्^{4}	काफी तेज चलता है।
(खाय्^{1}छ^{1}) खाय्^{1}त पु^{2}छ्वो^{4}	(गाड़ी) अच्छी चलाता है।

नमूने :

'त' क्रि० विशेषण

था^{1} श्यृवे चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4}, श्यृवे^{2}त हन्^{3}ख्वाय्^{4}।

वह चीनी भाषा बहुत शीघ्र सीखता है (शाब्दिक :—जहां तक उसके चीनी भाषा सीखने का संबंध है, वह………)

या था^{1}त चुङ्^{1}क्वो^{2}ह्वा^{4}, श्यृवे^{2}त हन्^{3}ख्वाय्।

(शाब्दिक : जहां तक उसकी चीनी भाषा का संबंध है, वह………)

१- ने^{4}क हाय्^{2}चू, छृ^{1}फ़ान्^{4}, छृ^{1}त थाय्^{4}ख्वाय्^{4}।	वह बालक बहुत जल्दी खाना खाता है।
२- था^{1}त इङ्^{1}वेन्^{2} ष्वो^{1}त हन्^{3}-हाव्^{3}।	वह अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलता है।

३- ल्यु^{2}श्येन्^{1}षङ् श्ये^{3}च़्, श्ये^{3}त च़वै^{4}हाव्^{3} ।	श्री ल्यू सबसे अच्छे अक्षर लिखते हैं ।
४- चे^{4}क षृ^{2}छिङ नि^{3}च़वो^{4}त पु-छ़्वो^{4} ।	यह तुमने काफी अच्छी तरह से किया ।
५- लि^{3} श्याव्^{3}च्ये च़वो^{4} चुङ्^{1}-क्वो^{2} फ़ान्^{4}, च़वो^{4}त चन्^{1}-हाव्^{3}छृ^{1} ।	कुमारी ली सचमुच स्वादिष्ट चीनी भोजन बनाती हैं ।
६- लाव्^{3}थाय्^{4}थाय्मन् चौ़^{3}लु^{4}, चौ़^{3}त हन्^{3} मान्^{4} ।	अधिक आयु की महिलाएं बहुत धीरे चलती हैं ।
७- वो^{3} खाय़्छ^{1},खाय़्^{1}त पु थाय़्^{4} हाव्^{3} । वो^{3} च्ये^{3}च्ये खाय़् त हाव्^{3}चि^{2}ल ।	मैं गाड़ी अच्छी नहीं चलाता । मेरी बड़ी बहन बहुत ही अच्छी चलाती है ।

(च) आज्ञा और प्रार्थना की रीति सूचित करना

नमूने : ख्वाय्^{4}षाङ्^{4} छ^{1} पा । छ^{1}इह्वै^{1}ळ^{3}च्यु खाय़्^{1} ।

जल्दी बैठो (सवार हो) । गाड़ी जाने ही वाली है ।

ख्वाय्^{4}इत्याळ^{3} फाव्^{3}, या फाव्^{3} ख्याय्^{4} इ त्याळ^{3} ।

ज़रा तेज़ भागो ।

१- ख्वाय्^{4}छ्.यू^{4}कन्^{1}लि^{3}श्येन्^{1}षङ् छ्वो^{1}इष्वो ।	जल्दी जाओ और श्री ली से इसके बारे में बोलो ।
२- छिङ्^{3}नि^{3} ख्वाय्^{4} खाय्^{1}खाय् (या क्वान्^{1}षाङ्)ने^{4}क मन्^{2} (या छ्वाङ्^{1}हु) ।	कृपया यह दरवाजा (या खिड़की) जल्दी खोलो (या बंद करो) ।
३- था^{1} मु^{3}छिन् च्याव्^{4}था^{1}ख्वाय्^{4} च़वो^{4}श्या, ख^{3}षृ था^{1}च़वो^{4}-श्यात हन्^{3} मान्^{4} ।	उसकी माँ ने उसे शीघ्र बैठने को कहा, पर वह बहुत धीरे-धीरे बैठा ।

४-	फ्येन्^{2}इ इत्याळ^{3} पा।	थोड़ा सस्ता दीजिए।
५-	छिङ्^{3}निन्^{2}मान्^{4}इत्याळ^{3}ष्वो^{1}	कृपया थोड़ा धीरे बोलिए।
६-	वो^{3}मन् तै^{3}चौ़^{3}ख्वाय्^{4}इत्याळ^{3}।	हमें थोड़ा सा तेज चलना चाहिए।
७-	नि^{3}चौ़^{3}त थाय्^{4}ख्वाय्^{4}। नि^{3} नङ्^{2}मान्^{4}इ त्याळ^{3}चौ़^{3}मा?	तुम बहुत तेज़ चलते हो। क्या तुम थोड़ा धीरे चल सकते हो?
८-	वो^{3} शि^{1}वाङ् निन्^{2} ख्वाय्^{4} इत्याळ^{3} ह्वै^{2}लाय्।	मै आशा करता हूँ कि आप ज़रा जल्दी वापस आएंगे।

(छ) कुछ अन्य सामान्य संयुक्त-क्रियापद

१-	था^{1}मन् तौ^{1} ह्वै^{2}च्या^{1}ल। चळ^{4}इ^{2}क रन्^{2}तौ^{1} मै^{2}यौ^{3}।	वे सब घर वापस चले गए हैं। यहां एक भी व्यक्ति नहीं है।
२-	मा^{3} श्येन्^{1}षङ् ह्वै^{2}क्वो^{2}ल।	मि० मा अपने देश वापस चले गए हैं।
३-	वो^{3} थाय्^{4} थाय् चिन्^{4} छङ्^{2} माय्^{3}तुङ्^{1}शि छ्यू़ ल। था^{1} इह्वै़ळ^{3} च्यु ह्वै^{2}लाय्।	मेरी पत्नी चीजें खरीदने शहर गई हैं। वे कुछ क्षणों में वापस आ जाएंगी।
४-	वो^{3} श्येन्^{1}षङ् छु^{1}मन्^{2}ल। था^{1} ष्वो^{1} था^{1} श्या^{4}ट़वे ह्वै^{2}लाय्।	मेरे पति यात्रा पर गए हैं। उन्होंने कहा है कि वे अगले महीने वापस आ जाएंगे
५-	चाङ्^{1} थाय्^{4}थाय् पाङ्^{4}-च्ये^{1}ल।	श्रीमती चाङ चीज़ें खरीदने गई हैं।
६-	था^{1}मन् इ^{3}चिङ् पान्^{1}च्या^{1}ल पान्^{1}ताव् छङ्^{2}वाय्^{4}थौ छ्यू़ ल।	वे (जगह बदलकर) चले गए हैं। वे शहर के बाहर चले गए हैं।

द्रुत-अभ्यास

हाय्^{2}च् वाळ^{2} छ्यु ल ।
हाय्^{2}च् छ्यु^{4}वाळ^{2} छ्यु ल ।
हाय्^{2}च् तौ छ्यु^{4}वाळ^{2} छ्यु ल ।
हाय्^{2}च् तौ^{1} ताव् वाय्^{4}थौ छ्यु^{4}वाळ^{2} छ्यु ल ।
हाय्^{2}च् तौ^{1} ताव् छङ्^{2}वाय्^{4}थौ छ्यू^{4} वाळ^{2}छ्यू ल ।
हाय्^{2}च् तौ^{1}फाव्^{3}ताव् छ्ङ्^{2}वाय्^{4}थौ छ्यू^{4}वाळ^{2} छ्यू ल ।
वो^{3}मन् हाय्^{2}च् तौ^{1} फाव्^{3}ताव् छङ्^{2}वाय्^{4}थौ छ्यू^{4} वाळ^{2}छ्यूल ।
वो^{3}मन् श्याव्^{3}हाय्^{2}च् तौ^{1}फाव्^{3}ताव् छङ्^{2}वाय्^{4}थौ छ्यू^{4} वाळ^{2} छ्यू ल ।
वो^{3}मन् त श्याव्^{3}हाय्च् तौ^{1} फाव्^{3}ताव् छङ्^{2}वाय्^{4}थौ छ्यू वाळ छ्यू ल ।

व्याकरण

'लाय्^{2}' और 'छ्यु^{4}' दिशाबोधक के रूप में : 'लाय्^{2}' और 'छ्यु^{4}' इन दोनों क्रियाओं को किसी और क्रिया के साथ प्रत्यय के रूप में जोड़कर व्यापार की दिशा भी सूचित की जाती है। यदि कोई व्यापार वक्ता की ओर हो (या उस वस्तु या वस्तुओं की ओर हो, जिनकी चर्चा हो रही है), तो हम क्रिया के बाद दिशा-बोधक प्रत्यय 'लाय्^{2}' जोड़ते हैं। यदि कोई कार्य विपरीत दिशा में हो, या वक्ता से दूर हो, तो हम क्रिया के बाद दिशाबोधक 'छ्यु^{4}' प्रत्यय का प्रयोग करते हैं; जैसे,

वो^{3}पु^{4}नङ्^{2} श्या^{4}छ्यु, छिङ्^{3}	मैं नीचे नहीं जा सकता।
नि^{3} षाङ्^{4}लाय् पा ।	मेहरबानी करके तुम ऊपर आ जाओ।

इस तरह के संयुक्तपद के साथ कर्म नहीं आता, क्योंकि इनके अर्थ में ही "यहां" या "वहां" का अर्थ छिपा होता है। पढ़ते वक्त

दिशाबोधक ‘लाय्^{2}’ या ‘छ्यू़^{4}’ पर जोर नहीं दिया जाता।

हिन्दी में भी इस तरह के संयुक्त पद हैं, जैसे “चले आना”, “चले जाना”, “आ जाना”, “ले आना” इत्यादि।

१६-२ प्रत्यय ‘चा़य्^{4}’ : ‘चा़य्^{4}’ का प्रयोग न केवल मुख्य क्रिया और संबंधसूचक के रूप में होता है (देखिये पाठ १०), बल्कि कुछ अस्तित्वसूचक क्रियाओं के बाद परिणामबोधक प्रत्यय के रूप में भी होता है। ‘चा़न्^{4}’ (खड़ा होना), ‘च़्वो^{4}’ (बैठना), और ‘चु^{4}’ (वास करना, रहना) कुछ ऐसी अस्तित्वसूचक क्रियाओं में से हैं। इन क्रियाओं के बाद जोड़ने से प्रत्यय ‘चा़य्^{4}’ का अपना अस्तित्व नहीं रहता यह अपना क्रिया का एक अभिन्न अंग बन जाता है। ‘चा़य्^{4}’ के बाद हमेशा स्थानवाचक शब्द का प्रयोग होता है। उदाहरण :

छिङ्^{3} नि^{3}चान्^{4}चा़य् चळ^{4}	कृपया यहां पर खड़े रहें।
वो^{3}याव् च़वो^{4}चा़य् चे^{4}क इ^{3}च़्षाङ्।	मैं इस कुर्सी पर बैठना चाहता हूँ।
वो^{3}पुशि^{3}ह्वान् चु^{4}चा़य्ल़्यू^{3}-क्वान्^{3}लि।	मैं होटल में रहना पसन्द नहीं करता।

१६-३ ‘ताव्^{4}’ प्रत्यय के रूप में : ‘ताव्^{4}’ एक प्रचलित क्रिया है, जैसे :

श्येन्^{1}षङ् ताव्^{4}ल।	अध्यापक पहुँच गये हैं।

इसके गतिसूचक व दिशाबोधक संबंधसूचक रूप का प्रयोग हम पहले ही सीख चुके हैं (पाठ ११) ‘ताव्^{4}’ परिणामबोधक प्रत्यय के रूप में ‘ह्वै^{2}’ (लौटना), ‘पान्^{1}’ (हटाना) आदि गति-सूचक क्रिया के बाद प्रयुक्त होता है। प्रत्यय ‘ताव्^{4}’ से बने संयुक्तपद का कर्म स्थानवाचक शब्द होता है, वह उस स्थान को सूचित करता है जहां व्यापार समाप्त हुआ है। कर्म के बाद दिशा-

बोधक 'लाय्२' और 'छ्.यू४' का प्रयोग भी हो सकता है; जैसे,

वो३मन् मिङ्२थ्येन् याव् पान्१-ताव् नान्२चिङ् छ्.यू ।	हम लोग अगले साल जगह बदलकर नानकिङ् चले जायेंगे ।
वो३मन् न्येन्४ताव् चळ४ल ।	हमने यहां तक पढ़ा है ।
हाय्२च्.मन् तौ१फाव्ताव्छङ्२-लि३ थौ छ्.यू४ वाळ२छ्.यू ल ।	सभी बच्चे खेल कूद के लिये भागते हुए शहर को गये हैं ।

१६-४ मात्राबोधक पूर्ति : यह हम पहले ही बता चुके हैं कि क्रिया-विशेषण सदा मुख्य क्रिया के पहले आता है । लेकिन जब हम यह बताना चाहते हैं कि क्रिया किस तरह सम्पन्न हुई, किस मात्रा या सीमा (या परिणाम) तक कोई व्यापार हो चुका है, या, पहुंच चुका है, तो मात्राबोधक पूर्ति का प्रयोग करते हैं । ये पूरक तत्व क्रिया के बाद प्रयुक्त होते हैं । व्यापार अक्सर पहले ही पूरा हो चुकता है (या मान लिया गया होता है कि पूरा हो चुका है), या आदत के कारण यह व्यापार प्राय: होता रहता है, या किसी सीमा या परिणाम तक पहुंचता है; जैसे,

था१लाय्२त ख्वाय्४ ।	वह जल्दी आया है ।
था१फाव्३त पु२मान्४ ।	वह तेज चलता है ।
था१छाङ्४त हाव्३चि२ल ।	उसने बहुत ही अच्छा गाया ।

इस तरह की वाक्य रचना में क्रिया और मात्राबोधक पूर्ति के बीच 'त' का प्रयोग दोनों को जोड़ने के लिए किया जाता है । मात्राबोधक पूर्ति आमतौर से विशेषण से बनती है ।

इस तरह के वाक्यों के साथ उन वाक्यों का प्रभेद ध्यान में रखना चाहिए जिनमें विशेषतासूचकों के बाद संज्ञा नहीं आती (पाठ ८ देखिये); जैसे,

था१छ्र्१त (खाना) हन्३ त्वो१	वह बहुत खाता है ।
था१छाङ्४त (गाना) षृ चुङ्१-	वह चीनी गाना गा रही है ।

क्वो^{2} कळ^{1} ।	(अथवा वह जो गाना गा रही है वह चीनी गाना है)

अगर क्रिया के बाद कोई कर्म हो तो क्रिया की द्विरुक्ति करनी पड़ती है, और पूर्ति को क्रिया को दुहराने के बाद रखना पड़ता है। इसका क्रम इस प्रकार है :

क्रिया-कर्म-द्विरुक्तक्रिया-त-पूर्ति

उदाहरण

था^{1}श्यु.वे^{2}चुङ्^{1}वेन्^{2} श्यु.वे^{2}त ख्वाय्	वह बड़ी शीघ्रता से चीनी भाषा सीखती है ।
श्येन्^{1}षङ् च्याव्^{1}चुङ्^{1}वेन्^{2}-च्याव्^{1}त हाव ।	अध्यापक बड़ी अच्छी तरह चीनी भाषा पढ़ाते हैं ।

हम चाहें तो कर्म को क्रिया के पहले रख सकते हैं; जैसे,

था^{1} (त) च़्^{4} श्ये^{3}त हाव्^{3}	उसके लिखे हुए चीनी अक्षर बहुत अच्छे लगते हैं ।
नि^{3}चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} ष्वो^{1}त हन्^{3}हाव्^{3}	तुम चीनी भाषा बहुत अच्छी तरह बोल लेते हो ।

वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य में, पूर्ति के सकारार्थक और निषेधार्थक दोनों रूप दिये जाते हैं, लेकिन क्रिया के दोनों रूप नहीं दिये जाते; जैसे :

था^{1}छ़ृ^{1}त ख्वाय्^{4}पु^{2}ख्वाय्^{4}	क्या वह जल्दी खाना खाता है?
था^{1} श्यु.वे^{2}चुङ्^{1}वेन्^{2} श्यु.वे^{2}त हाव्^{3}पु हाव्^{3}	उसने चीनी भाषा अच्छी तरह पढ़ी है या नहीं ?

१६-५ आज्ञार्थक वाक्य में मात्राबोधक क्रिया विशेषण : आज्ञार्थक वाक्यों में मात्राबोधक क्रिया विशेषण पूर्ति के रूप में क्रिया के बाद नहीं आते, बल्कि क्रिया के पहले प्रयुक्त होते हैं। जैसे :—

ख्वाय्^{4} श्या^{4}लाय्	जल्दी नीचे आओ ।
ख्वाय्^{4}लाय्^{2} छृ^{1}फ़ान्^{4}	जल्दी आकर खाना खाओ ।

क्रियाविशेषण पर ज्यादा या कम जोर देने के लिये मात्रासूचक "ई^{4}त्याळ^{3}' अथवा 'त्याळ^{3}' क्रियाविशेषण के बाद जोड़ दिया जाता है, और अपने विशेषतासूचक के साथ ये क्रियाविशेषण क्रिया के ठीक पहले या बाद में प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

छिङ्^{3} नि^{3} मान्^{4}ईत्याळ^{3} ष्वो^{1}	कृपया जरा धीरे धीरे बोलें
छिङ्^{3}नि^{3}ष्वो^{1} मान्^{4} ईत्याळ^{3}	"
ख्वाय्^{4}त्याळ^{3}चौ^{3}	जरा जल्दी चलो
चौ^{3}ख्वाय्^{4}त्याळ	"

१६-४ पा (बा) : 'पा' एक भाव-दर्शक सहायक-शब्द है, जो वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होता है । इसे आज्ञार्थक वाक्य के अन्त में प्रयोग करके आज्ञा को मृदु रूप दे दिया जाता है, या उसे सलाह, या प्रार्थना (अनुरोध) के रूप में बदल दिया जाता है । जैसे :

कै^{3}वो^{3}पा	जरा मुझे दो (कृपया मुझे दो)
वो^{3}मन् चौ^{3}पा	हमें जाना चाहिये । (या हम चलें)।
वो^{3}मन् श्येन्^{1} छृ^{1}फ़ान्^{4}पा	हम पहले खाना खा लें । (अथवा हमें पहले खाना खाने दो) ।

पाठ-१७

क-	वो^{3}मन् याव् पान्^{1}च्या^{1}, निन्^{2}-थिङ्^{1}ष्वो^{1} ल मैं यौ ?	हम अभी घर बदल रहे है, क्या आपने सुना है ?
ख-	थिङ्^{1} ष्वो^{1} ल, स्वो^{3} ई^{3} वो^{3} याव्^{2}खान्^{4} नि^{3}मन्। तुङ्^{1}शि तौ^{1}पान्^{1}ताव् शिन^{1} फ़ाङ्^{2}च़् छ्.यू ल मा ?	हां, मैंने सुना था, इसलिए मैं तुमसे मिलना चाहता था। क्या नए घर में सब चीजें चली गई हैं ?
क-	ता^{4}तुङ्^{1}शि तौ^{1}पान्^{1}छ्.यू ल। हाय्^{2}यौ^{3} श्ये श्याव्^{3}तुङ्^{1}शि वो^{3}मन् चङ्^{4}च़ाय् पान्^{1} न	सभी बड़ी-बड़ी चीज़ें चली गई हैं। अभी कुछ छोटा-छोटा सामान है जिसे हम लोग ले जा रहे है।
ख-	वो^{3}ख^{3}ई^{3} षाङ्^{1} नि^{3}मन पा^{3} चि^{3}च्येन् श्याव्^{3} तुङ्^{1}शि पान्^{1}छ्.यू, हाव्^{3}पु हाव्^{3} ?	कुछ छोटी चीज़ें ले जाने में मैं सहायता कर सकता हूँ। कैसा रहेगा ?
क-	निन्^{2}यौ^{3} छि^{4}छ^{1}मा ?	क्या आपके पास गाड़ी (कार) है ?
ख-	यौ^{3}	हां, हैं।
क-	निन्^{2}मैं^{2}कुङ्^{1}फ़ु पा ?	आपके पास समय तो नहीं होगा, क्या है ?
ख-	वो^{3}चिन्^{1}थ्येन् इत्याळ^{3} षृ^{4}तौ^{1}	आज मुझे कोई भी काम नहीं

	मै यौ^{3} ।	करना है ।
क-	वो^{3}मन् च्या^{1}लित षू^{1} पुषाव्^{3}। पु^{4}चूताव्^{4} निन्^{2}नङ्^{2}पुनङ् पा^{3} चेश्ये षू^{1}कै^{3}वो^{3}मन् पान्^{1} छ्य् ।	हमारे घर में काफी पुस्तकें हैं मुझे मालूम नहीं कि आप हमारे लिए इन पुस्तकों को ले जा सकेंगे या नहीं ।
ख-	तौ^{1} फाङ्^{4}चाय् षु^{1}फाङ्^{2}लि मा ?	क्या वे सब पढ़ने के कमरे में रखनी हैं ?
क-	तौ^{1}चाय् षु^{1}फाङ्^{2}लि फ़ाङ्^{4}च पु शिङ्^{2} । मै^{2}ति^{4}फ़ाङ्। वो^{3}-मन् श्याङ्^{3} पा छ्वाङ्^{1}हु ति^{3}श्या नैश्ये षू^{1} फाङ्^{4}चाय् ख^{4}थिङ्^{1}लि	सब की सब तो पढ़ने के कमरे में नहीं रखी जा सकेंगी । जगह नहीं है । हमारे विचार से जो पुस्तकें खिड़की के नीचे रखी हैं वे हम रहने के कमरे में रख देंगे ।
ख-	हाय्^{2}यौ^{3}ष^{2}म्मा ?	और कोई चीज़ ?
क-	हाय्^{2}यौ^{3}चे^{4}ल्याङ्^{3}क श्याव्^{3}-चवो^{1}च् ।	अभी ये दो छोटी मेजें हैं ।
ख-	हाव्^{3}, वो^{3}श्येन्^{1} पा^{3} चे^{4} चि^{3} च्येन्^{4} सुङ्^{4} छ्य्, ह्वै^{2}लाय् चाय्^{4}ना^{2}प्ये^{2} त ।	ठीक है, मैं पहले ये कुछ चीज़ें ले जाता हूँ, और वापस आकर दूसरी चीज़े ले जाऊंगा ।
क-	लाव्^{2}च्या^{4}, लाव्^{2}च्या^{4} ।	मैं आपको बहुत कष्ट दे रहा हूं ।
ख-	मै^{2}ष^{2}म्मा ।	यह तो कुछ भी नहीं है ।

नये शब्द

मापक शब्द

च्येन् वस्तु, चीज़, आदि

सं०

फ़ान्^{4}थिङ्^{1}	खाने का कमरा
षु^{1}फ़ाङ्^{2}	पढ़ने का (किताबें रखने का) कमरा
ति^{4} (श्या)	ज़मीन, फर्श

क्रि० वि०

चङ्^{4} (चा़य्)	(किसी काम के) बीच में।
चा़य्^{4}	फिर (भविष्य में)
यौ^{4}	फिर (भूत में)

सं० सू०

पा^{3}	कार्य को क्रिया से पहले रखने में प्रयुक्त

क्रि०

ना^{2}	पकड़ना (चीज़ को), ले जाना (छोटी चीज़ को)
फ़ाङ्^{4}	रखना, जाने देना
पान्^{1}	हटाना, ले जाना (भारी सामान) एक जगह से दूसरी जगह
ताय्^{4}	साथ ले जाना या साथ लाना
सुङ्^{4}	भेजना, छोड़ के आना, बिदाई देना, साथ जाना
सुङ्^{4}(कै^{3})	भेंट देना (वस्तु)

सं०

थौ^{2}	सिर
खौ^{3}ताळ	जेब
षौ^{3}	हाथ

क्रियापद

ना^{2}छि लाय्	उठाना
फाङ्^{4}श्या (लाय्)	रखना

स० श०

-च	क्रिया प्रत्यय, कार्य जारी है सूचित करने के लिए
-ळ	संज्ञाओं के लिए सूक्ष्म प्रत्यय

मुहावरेदार कथन

लाव्^{2} च्या^{4}	क्या मैं आपको कष्ट दे सकता हूँ ? आभारी हूं ?

पाङ्^{1}(चु) सहायता करना (किसी की)

पाङ्^{1}माङ्^{2} (क्रि० क०) सहायता देना

उदाहरणमाला

(क) 'पा' विन्यास

१- नि^{3}मन् मिङ्^{2}थ्येन्	पा^{3} नि^{3}मन्त षु^{1}	तौ^{1}ना^{2}लाय्।
२- नि^{3}ख^{3}ई^{3}	पा^{3}नि^{3}त हाय्^{2}च्	च्याव्^{4}लाय्।
३- नि^{3}मन् चिन्^{1}थ्येन्	पा^{3}पि^{3}	ताय्^{4}लाय्ल मै-यौ ?
४- वो^{3}च् वो^{2}थ्येन्	मै^{2}पा^{3}वो^{3}हाय्^{2}च्	ताय्^{4}छ्.यू। था^{1} पु^{2}ए्.वान^{4}इ छ्यु्.
५- नि^{3}मन् इ^{3}चिङ्	पा^{3}तुङ्^{1}शि	तौ^{1}पान् छ्यू्.ल मा?
६- नि^{3}	पा^{3} वो^{3}श्ये^{3}त ने^{4}फ़ङ्	शिन्^{4}सुङ्^{4}छ्.यूल मै यौ ?
७- ख्वाय्^{4}इत्याळ^{3}	पा^{3} चे^{4}क रौ^{4}	ना^{2}चौ^{3}।
८- षै^{2}	पा^{3}वो^{3}त पि^{3}	ना^{2}चौ^{3} ल ?
९- प्ये^{2}	पा^{3}मन्^{2} (अथवा छ्वाङ्^{1}हु)	खाय्^{1}खाय्।
१०- लाव्^{2}च्या^{4}, छिङ्^{3}निन्^{2}	पा^{3}मन्^{2} (अथवा छ्वाङ्^{1}हु)	क्वान्^{1}षाङ् त्याळ^{3}।
११- नि^{3}मनपु^{2}याव्	पा^{3}माव्^{4}च्	ताय्^{4}षाङ्।
१२- छिङ्^{3}नि^{3}	पा^{3}षाङ्^{4}थौत ने^{4} पन्^{3}षु^{1}	ना^{2}श्यालाय्, कै^{3} वो^{3}।
१३- नि^{3}मन् ख^{2}इ^{3}	पा^{3}नि^{3}मन् त इ^{4}स्च्	श्ये^{3}श्या लाय्

१४-		पा^{3}ने^{4}ल्याङ्^{3}क इ^{3}च़्	पान्^{1}चिन्लाय् पा ।
१५-	वो^{3}च्याव्^{4}हाय्^{2}च़्	पा^{3}खौ^{3}ताळलित तुङ्^{1}शि	तौ^{1}ना^{2} छुलाय् ।
१६-	नि^{3}ख^{3}इ^{3} चाय्^{4}	पा^{3}नि^{3}त इ^{4}स्च्	छ्वो^{1}छुलाय् ।
१७-	था^{1}यौ^{4}	पा^{3}था^{1}त इ^{4}स्च्	छ्वो^{1}छुलाय् ल ।
१८-	लाव्^{2}च्या^{4},छिङ्^{3}निन्^{2}	पा^{3}वो^{3}त माव्^{4}च़्	ना^{2}षाङ् छय़ू
१९-	नि^{3}वै ष^{2}म्मा	पु^{4}पा^{3}चे^{4}क ता^{4} च़वो^{1}च़्	पान्^{1}छु छय़ू
२०-	छिङ्^{3}नि^{3}	पा^{3}चे^{4}क	फाङ्^{4}चाय् लौ^{2}षाङ्
२१-		पा^{3}नि^{3}त षौ^{3}	फ़ाङ्^{4}चाय् नि^{3}त खौ^{3} ताळ लि ।
२२-	नि^{3}इङ्^{1}ताङ्^{1}	पा^{3}चे^{4}श्ये षू^{1}	कन्^{1}ने^{4}श्ये फ़ाङ्^{4}चाय् इखवाळ^{4} ।
२३-		पा^{3}ने^{4}चाङ् ह्वाळ^{4}	ना^{2}ताव् वो^{3}चळ^{4}लाय्^{2}।
२४-	छिङ्^{3}नि^{3}पाङ्^{1}वो^{1}	पा^{3}चे चि^{3}क इ^{3}च़्	पान्^{1}ताव् लौ^{2}षाङ् छय़ू ।
२५-	प्ये^{2}	पा^{3}नि^{3}त फङ्^{2}यौ	ताय्^{4}ताव् लौ^{2}श्या^{4} छय़ू ।

(ख) क्रिया-'च' के साथ कार्य जारी रहना

चान्^{4}च	खड़ा होना	चौ^{3}च	टहलना, चलना
च़वो^{4}च	बैठना	तङ्^{3}च	प्रतीक्षा करना
चु^{4}च	रहना, ठहरना	ताय्^{4}च	साथ ले जाते रहना
ना^{2}च	लेना, ले जाना	खाय्^{1}च	खुला रहना
फ़ाङ्^{4}च	पड़ा रहना (चीज़ों के लिए)	क्वान्^{1}च	बंद रहना

१- नि^{3} वै^{4}ष^{2}म्मा चान्^{4}च ? च़वो^{4}श्या पा	तुम खड़े क्यों हो ? बैठ जाओ।
२- था^{1}ष्वो^{1}छाङ्^{2}चा़य् इ^{2}क ति^{4}-फ़ाङ् चु^{4}च मै^{2}इ^{4}स्च़् ।	वह कहता है कि हमेशा एक स्थान पर रहना नीरस होता है।
३- नि^{3}त पि^{3}चा़य् च्वो^{1}च़ षाङ् फ़ाङ्^{4}ल ।	तुम्हारा कलम मेज़ पर पड़ा है।
४- नि^{3}षौ^{3}लि ना^{2}च ष^{2}म्मा ?	तुम हाथ में क्या उठाए हो ?
५- क्वान्^{1}च छ्वाङ्^{1}हु पुहाव्^{3} । खाय्^{1}च इत्याळ^{3}हाव्^{3} ।	खिड़की को बंद रखना अच्छा नहीं होता । उसको थोड़ा खुला रखना अच्छा होता है ।
६- रन्^{2}रन्^{2} तौ^{1} शि^{3}ह्वान् च़वो^{4}च छॄ^{1}फ़ान्^{4}	हर आदमी बैठकर खाना पसंद करता है ।
७- था^{1}मन् चा़य् वाय्^{4}थौ चान्^{4}च थान्^{2}ल पु षाव्^{3}त ह्वा^{4} ।	वे काफी समय तक बाहर खड़े होकर बातें करते रहे ।
८- नि^{3}मन् मै^{2}ताय्^{4}च श्याव्^{3}ति^{4}-ति छ्.यू मा ? मै^{2}यौ ।	क्या तुम छोटे भाई को साथ नहीं ले गए ? नहीं, हम नहीं ले गए ।
९- वो^{3}मन् चौ^{3}च ष्वो^{1}पा ।	चलो, इसके बारे में चलते हुए बात करें ।
१०- यौ^{3}त रन्^{2}खान्^{4}च षू^{1} छॄ^{1}फ़ान्।	कुछ लोग खाते हुए पढ़ते हैं ।

वाक्य 'न' के साथ जारी रहना—पुर्नविचार

१- था^{1}चा़य् च्या^{1}च़वो^{4} ष^{2}म्मा न? छॄ^{1}फान्^{4}न ।	वह घर पर क्या कर रहा है? खाना खा रहा है ।
२- लि^{3}थाय्^{4}थाय् चा़य् नाळ^{3}न? था^{1}चा़यछु^{2}फाङ्^{2}लि च़वो^{4}-	श्रीमती ली कहां हैं ? वह रसोईघर में खाना बना रही

फ़ान् न ।	हैं ।
३- नि^{3}श्ये^{3}ल ने^{4}फ़ङ् शिन्^{4}ल मै^{2}-यौ ? वो^{3} चङ्^{4}श्ये^{3} न ।	क्या तुमने वह पत्र लिख लिया है ? मैं अभी लिख रहा हूँ ।
४- प्ये^{2}नाचौ, वो^{3}हाय्^{2}याव् न ।	(इसको) मत ले जाओ, मुझे कुछ और चाहिए ।
५- वो^{3}मन् चळ^{4}हाय्^{2}यौ^{3}न । नि^{3}-हाय्^{2}याव्^{4} मा ?	हमारे पास अभी भी कुछ यहां पर है । क्या तुमको और चाहिए ।

(घ) 'च' और 'न' दोनों के साथ कार्य जारी रहना

१- था^{1}मन् हाय्^{2}चाय् नाळ^{4}चान्^{4}-च च्वो^{1}ह्वा^{4}न ।	वे अभी भी खड़े होकर बातें कर रहे हैं ।
२- था^{1}मु^{3}छिन् चाय् नान^{2}चिङ्^{1}-चु^{4}च न ।	उसकी मां नान किङ में रह रही हैं ।
३- नि^{3}षौ^{3}लि ना^{2}च ष^{2}म्मा न ?	तुम अपने हाथ में क्या पकड़े हुए हो ?
४- नि^{3}थाय्^{4}थाय् चाय् श्य़्वे^{2}-श्याव्^{4} तङ्^{3}च नि^{2}न् ।	तुम्हारी पत्नी स्कूल में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं ।
५- मन्^{2} खाय्^{1}च न, ख^{2}पृ था^{1}-मन् पा^{3} छवाङ्^{1}हु तौ^{1}क्वान्^{1}-षाङ् ल ।	दरवाज़ा खुला हुआ है, पर उन्होंने सारी खिड़कियां बंद कर दी हैं ।

कक्षा में :

पा^{3} पि^{3} ना^{2}छिलाय् ।	कलम उठा लो ।
पा^{2} पि^{3} फ़ाङ्^{4}श्या	कलम नीचे रखो ।
चाय्^{4} ना^{2}छिलाय्	इसको फिर से उठा लो ।
चाय्^{4} फ़ाङ्^{4}श्या ।	इसको फिर से नीचे रखो ।

पा^{3}पि^{3}कै^{3}वो^{3} ।	कलम मुझे दो ।
ना^{1}ह्वै छ्यू ।	इसको वापस ले जाओ ।
चा़य् कै^{3}वो^{3} ।	इसे फिर मुझे दो ।
ना^{2}चौ़^{3} ।	इसे ले जाओ (उठाकर)
पा^{3}पि^{3}ना^{2}ताव् वाय्^{4}थौ छ्यू	कलम को बाहर ले जाओ ।
ना^{2}चिन्लाय् ।	उसको अन्दर ले आओ ।
चा़य्^{4}ना^{2}छु छ्यू ।	इसको फिर बाहर ले जाओ ।
ना^{2}ह्वै लाय् ।	उसको वापस ले आओ ।
पा^{3}पि^{3}फ़ाङ्^{4}चा़य् नि^{3}त थौ^{2}-षाङ् ।	कलम को अपने सिर पर रखो ।
ना^{2}श्यालाय् ।	उसको नीचे उतारो ।
पा^{3}पि^{3}फ़ाङ्^{4}चा़य् नि^{3}त खौ^{3}-ताळ लि ।	कलम को अपनी जेब में रखो ।
ना^{2}छु लाय ।	उसको बाहर निकालो ।
चा़य्^{4}फ़ाङ्^{4}चिन्छ्यू ।	इसको फिर अन्दर रखो ।
पा^{2}पि^{3}फ़ाङ्^{4}चा़य् ति^{4}श्या ।	कलम को फर्श पर रखो ।
ना^{2}छिलाय् ।	उसको उठाओ ।
पा^{3} पि^{3} कन्^{1} षू फ़ाङ्^{4}चा़य् इ-खवाळ^4 ।	कलम और पुस्तक को एक साथ रखो ।
पा^{3} पि^{3} ना^{2}ताव् वो^{3}चळ लाय् ।	कलम को यहां मेरे पास ले आओ ।
फ़ाङ्^{4}चा़य् वो^{3}त षौ^{3}षाङ्^{2}	इसको मेरे हाथ पर रखो ।
ना^{2}चौ़^{3}	इसको ले जाओ ।

व्याकरण

१७-१ 'पा' विन्यास : आम तौर से क्रिया-विधेय वाक्य में क्रिया हमेशा अपने कर्म के पहले आती है। "पा-विन्यास" भी क्रिया-विधेय वाक्य होता है, लेकिन इसका शब्द क्रम इस तरह होता है :

कर्ता–पा^{3}+कर्म-क्रिया-अन्य तत्त्व

संबंधसूचक शब्द 'पा^{3}' का प्रयोग करके कर्म को क्रिया के ठीक पहले लाया जाता है। आमतौर से 'पा^{3}' के कर्म से किसी विशेष प्राणी या वस्तु का बोध होता है। इस तरह के वाक्य हिंदी की वाक्य रचना से मिलता जुलता है, हिंदी में कर्म क्रिया से पहले आती है; जैसे,

पा^{2}इ^{3}च् पान्^{1}-छुछ्.यू ।
कुर्सी हटा ले जाओ ।

'पा^{3}' का अनुवाद हिंदी में या अंग्रेजी में नहीं किया जाता है। 'पा^{3}' विन्यास के कुछ नियम :

१- जब वक्ता किसी बात पर विशेष रूप से जोर देना चाहता है तो 'पा^{3}' का प्रयोग होता हैं; जैसे,

था^{1}पा^{3}चिन्^{1}-थ्येन्त पाव्^{4}खान्^{4}ल ।
आज का अखबार वह पढ़ चुका है ।

२- जटिल विधेय-वाले वाक्य में अगर प्रत्यय जैसे तत्त्व हो या क्रिया द्विरुक्त रूप में हो, तो कर्म को 'पा^{3}' की सहायता से क्रिया के पहले ले आना वाक्य रचना के ख्याल से अच्छा रहता है; जैसे,

छिङ्^{3}नि^{3}पा^{3}नि^{2}त षू^{1} ना^{2}ताव् वो^{1}चळ लाय्
कृपया तुम अपनी किताब मेरे पास (इधर) लाओ ।
वो^{3}इ^{3}चिङ् पा^{3}छि^{4}छ^{1} माय्^{4}ल ।
मैंने मोटर गाड़ी (या कार) बेच दी है ।

२- दो कर्म वाले क्रिया वाक्यों में भी 'पा^{3}' का प्रयोग प्रायः किया जाता है, मुख्य कर्म 'पा' के बाद रखा जाता है और गौण कर्म क्रिया के बाद रखा जाता है; जैसे,

वो^{3}पा^{3}षू^{1} सूङ्^{4}कै था^{1}ल । मैंने उसे किताब भेज दिया है।

निषेधार्थक वाक्य में क्रिया-विशेषण 'पु^{4}' और 'मै^{4}यौ' का

प्रयोग हमेशा संबंधसूचक 'पा^{3}' के पहले करना चाहिए; जैसे-

वो^{3}पु^{4}पा^{3}षू^{1} सुङ्^{4}कै था^{1}	मैं उसे किताब नहीं भेजूंगा।
वो^{3}मैं^{2}यौ पा^{3}पाव्^{4}खान्^{4} वान्^{2}न।	मैंने अभी तक अखबार पढ़ कर खत्म नहीं किया है।

१७-२ संयुक्त दिशा-बोधक प्रत्यय : 'लाय्^{2}' और 'छ्.यू^{4}' से बने 'छू^{1}लाय्^{2}' 'चिन्^{4}लाय्' जैसे संयुक्त पद के बारे में हम पहले ही बता चुके है (पाठ १६)। इन संयुक्त पदों को 'ना^{2}' (लेना) 'ताय^{4}' (लाना), 'पान्^{1}' (हटाना) 'चौ^{3}; (चलना), 'फाव्^{3}' (दौड़ना), जैसे दूसरी क्रियाओं के बाद दिशाबोधक प्रत्यय के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। इनसे बने पद को हम दिशाबोधक संयुक्तपद कह सकते हैं। उदाहरण के लिये :

वो^{3}मन् षृ चौ^{3}षाङ्^{4}छ्.यून	हम चलकर उपर गये।
पा^{3}च्वोच्.^{1}च्^{1}पान्^{1}चिन् लाय्^{2}	मेज़ को हटाकर अंदर लाओ।

ऊपर के अनुवाद से यह पता लग जाता है कि चीनी दिशा-बोधक शब्दों का हिंदी अनुवाद चीनी भाषा की तरह ही होता है जैसे "ऊपर गया", "अंदर लाया", इत्यादि।

संयुक्त दिशाबोधक प्रत्यय के बाद आने वाले कर्म को 'लाय^{2}' या 'छ्यू^{4}' के पहले रखना चाहिये; जैसे,

था^{1}फाव्^{3}ह्वैच्या^{1}छ्.यू ल	वह दौड़कर घर वापस गया।
पा^{3}इ^{3}च्. पान्^{1}चिन्^{4} फ़ान्^{4}-थिङ्^{1}लि लाय्	कुर्सी को हटाकर खाने के कमरे में लाओ।

अगर कर्म द्वारा सूचित कोई प्राणी अथवा वस्तु व्यापार से प्रभावित होकर अपना स्थान बदल देता है, और आमतौर से जब वह व्यापार पूर्ण होता है, तब कर्म को संयुक्त दिशाबोधक प्रत्यय के बाद रख सकते हैं; जैसे,

था^{1}माय^{3}ह्व$^{}$लाय् छ्वै^{3}क्वो^{3}ल	वह फल खरीद कर वापस आया। (छ्वै^{3}क्वो^{3} == फल)

लेकिन 'पा^{3}' विन्यास की विधि के अनुसार इन वाक्यों में 'पा^{3}' का प्रयोग करना मुहावरेदार भाषा की दृष्टि से कहीं अच्छा होता है :

था^{1}पा^{3}छ्वै^{3}क्वो^{3} माय्^{3}ह्वै लाय़ ल	
पा^{3}चे^{4}पन्^{3}षु^{1} ना^{2}ह्वै श्य़.वे^{2}श्याव्^{4} छ्.यू	इस किताब को स्कूल वापस ले जाओ।

१७-३ निरंतरता बोधक प्रत्यय—'च' चीनी भाषा में क्रिया के बाद प्रत्यय 'च' जोड़कर निरंतरताबोधक स्वरूप सूचित किया जाता है। अगर वाक्य में कोई कर्म हो तो उसे क्रिया और प्रत्यय 'च' के बाद रखना चाहिये; जैसे,

वो^{3}च्यु^{4}च़ाय् चळ^{4} चान्^{4}च पा	मैं यहीं पर खड़ा रहूँगा।
था^{1}च़ाय् इ^{3}च़् षाङ् च़.वो^{4}च	वह कुर्सी पर बैठा हुआ है।
था^{1}छ्^{1}च फ़ान् (न)	वह खाना खा रहा है।

'च' के कुछ और नियम :

१- कभी-कभी अगर व्यापार हो चुका है और व्यापार का फल जारी है तो भी क्रिया के बाद 'च' का प्रयोग होता है; जैसे,

षू^{1}षाङ् श्ये^{3}च चि^{3}क चुङ्^{1}क्वो^{2}च़्	किताब पर कुछ चीनी शब्द लिखे हुए हैं।

यहां लिखने (श्ये^{3}) का व्यापार पूरा हो चुका है और चीनी शब्द अब भी किताब पर लिखे हुए हैं, इसलिये यहां निरंतरता प्रगट करने के लिये प्रत्यय 'च' का प्रयोग किया गया है।

२- अगर दो व्यापार साथ-साथ हो रहे हों और पहला व्यापार दूसरे व्यापार की विधि या रीति का विधान करता है तो पहली क्रिया के बाद प्रत्यय 'च' जोड़ दिया जाता है; जैसे,

वो^{3}मन् ख^{3}इ^{3} च.वो^{4}च थान्^{2}ह्वा^{4}	हम बैठकर बातें कर सकते हैं।
श्येन्^{1}षङ् चान्^{4}च च्याव्^{1}षू^{1}	अध्यापक खड़े होकर पढ़ाते हैं।
वो^{3}मन् षृ चौ^{3}च छ्.यू^{4}त	हम पैदल गये थे।

३- वाक्य में प्रत्यय 'च' के साथ सहायक शब्द 'न' का प्रयोग भी कर सकते हैं; जैसे,

छवाङ्^{1}हु क्वान्^{1}च न	खिड़की खुली है।
वो^{3}मन् चङ्^{4}चाय् छृ^{1}च फ़ान्^{4}न	हम अभी खाना खा रहे हैं।

४- निरन्तरता बोधक स्वरूप के निषेधार्थक रूप में आम तौर से क्रिया के साथ क्रिया-विशेषण 'मै^{2}यौ' का प्रयोग करते हैं :—

छवाङ्^{1}हू मै^{2}यौ क्वान्^{1}च	खिड़की बंद नहीं है,
मन् क्वान्^{1}च न	दरवाजा बंद है।

१७-४ प्रत्यय 'ळ' : चीनी भाषा में बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके अंत में स्वरों का उच्चारण 'ळ' के साथ किया जाता है। 'ळ' और उसके पूर्ववर्ती स्वर को जोड़कर एक शब्दांश बना दिया जाता है। कुछ शब्द 'ळ' को स्वर में जोड़कर बनाये जाते हैं, और कुछ मूल शब्दांश में से अंतिम स्वर या व्यंजन निकाल कर और मुख्य स्वर में 'ळ' मूल शब्दांश के बाद रख कर किया जाता हे। यह 'ळ' 'अळ^{2}' (बच्चा, क्षुद्रता) से आया है, लेकिन इस तरह के शब्दों में यह अर्थ मुख्यतः प्रयुक्त नहीं होता। उदाहरण के लिये :

ह्वाळ^{4}, कळ^{1}, चळ^{4}, नाळ^{4}, नाळ^{3} ?

षाव्ळ^{2}, श्याव्^{3}हाळ^{2}, फान्^{4}क्वाळ^{3}, इत्याळ^{3}, इह्वाळ^{3},

इख्वाय्ळ^{४}

ध्यान में रखना चाहिये कि दुसरी संज्ञाओं के साथ भी, जो हम पढ़ चुके हैं, 'ळ' का प्रयोग होता है; जैसे, षृ^{२}हौ (समय) = षृ^{२}हौळ, षृ^{४} (बात, मामला) = षळ^{४}

१७-५ "चा़य्^{४} और यौ^{४}" इन दोनों क्रिया-विशेषणों से पुनरुक्ति सूचित होती है। लेकिन प्रयोग में ये दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं :—

१- 'यौ^{४}' यह सूचित करता है कि किसी व्यापार या अवस्था की पुनरुक्ति या पुनरावृत्ति हो गई है,

च़्वो^{२}थ्येन् था^{१}लाय्^{२}ल, चिन्^{१}थ्येन् था^{१}यौ^{४}लाय्^{२}ल	वह कल आया था, आज भी आया।

२- 'चा़य्^{४}' भी पुनरुक्ति प्रगट करता है जिसका अर्थ होता है "एक बार और" आमतौर से इसका अर्थ यह होता है कि पुनरुक्ति होने वाली (या नहीं होने वाली) है, जैसे,

था^{१} छृ^{१}ल ल्याङ्^{३} वान्^{३}फ़ान्^{४}, चा़य्^{४} याव् छृ^{१}इ^{४}वान्^{३}	उसने दो कटोरी खाना खा लिया है, और एक कटोरी चाहता है।

३- कभी कभी किसी व्यापार (खास तौर से नियतकालिक) की पुनरुक्ति अभी तक नहीं हुई है किन्तु वक्ता को पूर्ण विश्वास है कि पुनरुक्ति होकर रहेगी। ऐसी सूरत में भी "यौ^{४}" का प्रयोग होता है; जैसे,

मिङ्^{१}थ्येन् यौ^{४}षृ लि^{३}पाय्^{४}ल्यु^{४}-ल।	फिर से कल शनिवार आ गया।
ह्वै^{२}क्वो^{२}त षृ^{२}हौळ यौ^{४} ख^{३}इ^{३}	देश लौटते समय फिर से मित्रों

खान[४]च्येन् फङ्[२]यौ ल	के साथ मुलाकात होगी।

४- अगर हम यह बताना चाहते हैं कि किसी व्यापार की पुनरुक्ति भूतकाल में नहीं हुई तो 'यौ[४]' की जगह 'चाय्[४]' का का प्रयोग करते हैं। 'चाय्[४]' को 'मै[२]यौ' के बाद और क्रिया के पहले रखा जाता है; जैसे,

चुङ्[१]वेन्[२] वो[३]न्येन्[४]ल ई[४]न्येन्[२], मै[२]यौ चाय्[४]न्येन्[४]।	मैंने एक साल चीनी भाषा पढ़ी, उसके बाद और नहीं पढ़ी।

पाठ-१८

वो^{3}यो^{3}इक मै^{3}क्वो^{2}फङ्^{2}यौ । था यौ इक श्याव्^{3} न्यू^{3} हाय्^{2}-च़्. च्याव्^{4},आय्^{4}, वो^{3}वाङ्^{4}ल । ना^{4}पु^{2}याव्चिन्^{3}, वो^{3}मन ख^{3}इ^{3}-च्याव्^{4}था श्याव्^{3}माव्ळ^{1} ।	मेरा एक अमरीकी मित्र है । उसकी एक छोटी (सी) लड़की है, जिसका नाम--ओह, मैं भूल गया। कोई बात नहीं, हम लोग उसे किटी कह सकते हैं ।
श्याव्^{3}माव्ळ^{1}चिन्^{1}न्येन् पा^{2}-स्वै^{4}ल । यौ^{3}इथ्येन्^{1} था^{1} च़ाय् लौ^{2}षाङ् कन् था ति^{4}तिवाळ^{2}। था मु^{3}छिन् च़ाय् छु^{2}फाङ्^{2}लि च़.वो^{4}फ़ान्^{4} ।	किटी इस वर्ष आठ वर्ष की हो गई है। एक दिन वह ऊपर अपने छोटे भाई के साथ खेल रही थी। उसकी माँ रसोईघर में खाना पका (बना) रही थी ।
ने^{4}थ्येन् था मु^{3}छिन् हन्^{3}माङ्^{2}, स्वो^{3}इ^{3} था श्याङ्^{3} चाव्^{3} श्याव्^{3}माव्ळ^{1} षाङ्^{1}माङ्^{2}, “श्याव् माव्ळ^{1} नि^{3}लाय्^{2}पाङ्^{1}-वो^{3}इत्याळ^{3} माङ्^{2} ।”	उसकी माँ उस दिन बहुत व्यस्त थी, इसलिए वह किटी की सहायता चाहती थी । “किटी, आओ और मेरी सहायता करो ।”
“लाय्^{2}ल । लाय्^{2}ल ।”——ख^{3}-षृ श्याव्^{3} माव्ळ^{1} मै^{2}छ्.यू^{4} ।	“आ रही हूँ, आ रही हूँ ।” परन्तु वह गई नहीं ।
था^{1}मु^{3}छिन् यौ^{4} च्याव्^{4}था,	उसकी माँ ने उसे फिर पुकारा

“श्याव्^{3}मावळ^{१}, ख्वाय्^{४} श्या^{४}-लाय् ।” “लाय्^{२}ल ।” ख^{3}षृ था^{१}हाय्^{२}षृ मैं^{२}छ्.यू^{४} ।

(बुलाया), “किटी, जल्दी करो और नीचे आओ ।” “आ रही हूँ, आ रही हूँ ।” परन्तु वह फिर भी नहीं गई ।

मु^{४}छिन् ति सान्^{१}छ् च्याव्^{४} थात न.यू^{3}अळ: “श्याव्^{3} मा-वळ^{१}, नि^{3}च्^{3}म्मा पुलाय्^{२} ? श्येन्^{४}चाय्^{४}नि^{3}पु^{२}पि लाय्^{२}ल । वो^{3} पु^{२}युङ् नि^{3} पाङ्^{१}माङ्^{२}ल ।”

माँ ने अपनी पुत्री को तीसरी बार पुकारा (बुलाया), “किटी, तुम आती क्यो नहीं हो ? अब तुम्हें आने की आवश्यकता नहीं है । अब मुझे तुम्हारी सहायता नहीं चाहिए ।”

श्याव्^{3}मावळ^{१} थिङ्^{१}च्येन् चेक ह्वा^{४} च्यु श्या^{४}छ्.यू ल । था मु^{3}-छिन् हन्^{3} षङ्^{१}छि^{४}, “वो^{3}-च्याव्^{४}नि^{3}, नि^{3} वै^{४}ष^{२}म्मा पुलि^{४}ख^{४} लाय्^{२} ?”

जब किटी ने यह सुना तो वह नीचे गई । उसकी माँ बहुत नाराज थी । “मैं जब पुकारती (बुलाती) हूँ तो तुम तुरन्त क्यों नहीं आती हो !”

श्याव्^{3}मावळ^{१} खु^{१}च त्वै^{४}था मु^{3}-छिन् ष्वो^{१} “मा^{१}, वो^{3} चन्^{१}त्वै^{४}-पुछि^{3} निन्^{२} । निन्^{२}श्या^{४}छ् चाय् च्याव्^{४}वो^{3}, वो^{3}इ^{२}तिङ् लि^{४}ख^{४} च्यु^{४}लाय्^{२} ।”

किटी ने रोते हुए अपनी माँ से कहा: “माँ मुझे बहुत पश्चात्ताप है । आप जब मुझे अगली बार फिर पुकारेंगी (बुलाएंगी) तो मैं तुरन्त आ जाऊंगी ।”

था मु^{3}छिन् थिङ्^{१}च्येन् चे^{४}क ह्वा^{४} च्यु पु^{४}षङ्^{१}छि^{४}ल ।

जब उसकी मा ने यह सुना तो वह नाराज नहीं रही ।

नये शब्द

ह्वँ^{२} (मा) — एक समय, घटना (बार)

मैं^{3} (संख्या)	प्रत्येक
स्वै^{4} (मा.)	वर्ष (आयु)
पिङ्^{4} (सं०)	बीमारी
त्येन्^{3}शिन् (सं०)	स्वल्पहार
छु^{2}फ़ाङ्^{2} (सं०)	रसोईघर

क्रि० वि०

छ.ङ्^{2}छ्येन्^{2} (गतिशील)	पहले
पु^{2}ता^{4}	बहुत नहीं
च्यु^{4}	तुरंत
लि^{4}ख^{4} (च्यु)	तुरंत
च^{3}म्मा	क्यों? ऐसा कैसे है कि ?

वि०

छिङ्^{1}छू	स्पष्ट (अर्थ में)
काव्^{1}शिङ्^{4}	प्रसन्न
षु^{1}फ़ु	आराम से (रहना)
पु षु^{1} फ़ु	कष्ट में होना, अस्वस्थ

छ. (मा)	एक समय अवसर (बार)

क्रि०

षङ्^{1}छि^{4}	नाराज होना
यौ^{3}पिङ्^{4}	अस्वस्थ होना
खु^{1}	रोना
वाङ्^{4}	भूलना
मिङ्^{2}पाय्	समझना (स्पष्ट रूप से)
खान्^{4}च्येन्	देखना
थिङ्^{1}च्येन्	सुनना
पिङ्^{4}ल	अस्वस्थ या बीमार होना या हो गया
हाव्^{3}ल	फिर से स्वस्थ हो जाना, तैयार रहना, तैयार है (खाना आदि)
ह्वाय^{4}ल	खराब हो जाना (खाना आदि), ठीक से कार्य करने की दशा में न रहना

क्रि०		क०	
ह्माय्^{4}	बुरा होना	थौ^{2} (उप०)	प्रथम (देखिए नोट ५)
पु ह्माय्^{4}	बुरा न होना, अच्छा होना।	च^{3}म् (मा) ल	क्या हुआ ? क्या मामला है ?

उदाहरणमाला

(क) 'ल' के साथ अवस्था-परिवर्तन

१- श्येन्^{4}चाय्^{4} तुङ्^{1}शि तौ^{1} क्वै^{4}ल	सभी वस्तुएं अब महंगी हो गई हैं।
२- वो^{3} च.वो^{2}थ्येन् माय्^{3}त रौ^{4} इ^{3}चिङ् ह्माय्^{4}ल।	जो मांस मैंने कल खरीदा था वह पहले ही खराब हो चुका है।
३- था^{1}फ़ु^{4}छिन् लाव्^{3}ल, पुनङ्^{2} च.वो^{4}षृ^{4}ल।	उसके पिता वृद्ध हो गए हैं। अब काम नहीं कर सकते।
४- था^{1}च.वो^{2}थ्येन् हन्^{3}हाव्^{3}, ख^{3}-षृ चिन्^{1}थ्येन् था^{1} यौ^{4} पु हाव्^{3}-ल।	कल वह बहुत अच्छा था, परन्तु आज वह फिर अस्वस्थ हो गया है।
५- च.वो^{2}थ्येन् था^{1} ष्वो^{1}था^{1}इ^{2}-तिङ् लाय्^{2}, चिन्^{1}थ्येन् था^{1}ष्वो^{1} पुलाय्^{2}ल।	कल उसने कहा था कि वह अवश्य आयेगा। आज वह कहता है कि वह नहीं आ रहा है।
६- निन्^{2}ह्राय्^{2}याव्^{4}ष^{2}म्मा। पु^{2}-याव् ष^{2}म्मा ल।	आपको और क्या चाहिए ? अब कुछ नहीं (चाहिए)।
७- वो^{3} छ्.ङ्^{2}छ्येन् ह्वै^{4}ष्वो^{1} फ़ा^{3}-वेन्^{2}। श्येन्^{4}चाय्^{4} पु^{2}ह्वै ष्वो^{1} ल।	पहले मैं फ्रेंच (भाषा) बोल सकता था। अब मैं नहीं बोल सकता हूँ।

८- छ्.ङ्^{2}छ्येन्^{2}वो^{3} पु^{2}आय् छृ^{1} चुङ्^{1}क्वो^{2} फ़ान्^{4} । श्येन्^{4}-चा़य्^{4}वो^{3}हन्^{3}आय्^{4}छृ^{1}ल ।	पहले मैं चीनी भोजन पसन्द नहीं करता था। अब मैं बहुत पसन्द करता हूं।
९- था^{1}छ्.यू^{4}न्येन् मै^{2}छ्येन्^{2}, ख^{3}-षृ था^{1}चिन्^{1}न्येन् यौ^{3} छ्येन्^{2}-ल ।	पिछले वर्ष वह निर्धन था, परन्तु इस वर्ष वह धनी हो गया है।

(ख) 'ल' के साथ आसन्न भविष्यकाल

१- छृ^{1}फ़ान्^{4}त षृ^{2}हौ ख्वाय्^{4}ताव्^{4}-ल ।	अब भोजन का समय है।
२- ख्वाय्^{4}खाय्^{1}छ^{1}ल । छिङ्^{3} षाङ्^{4}छ ।	रेलगाड़ी छूटने वाली है। कृपया (सब लोग) गाड़ी पर सवार हो जाइए।
३- वो^{3}मन् इ^{4}ह्वै ळ^{3} च्यु^{4}षाङ्^{4}-ख^{4}ल ।	हम लोग थोड़े समय में कक्षा में जाने वाले हैं।
४- लि^{3}श्येन्^{1}षङ्च्यु^{4}याव् चा़ै ल ।	ली महोदय अभी जाने ही वाले हैं।
५- त्वै^{4}पु छि^{3}, वो^{3}तै^{3}ह्वै^{2}छ्.यू ल ।	मुझे दुःख है, परन्तु मुझे वापस जाना ही है।
६- षृ^{2}हौ ताव्^{3}ल, वो^{3}मन् तै चा़ै ल ।	समय समाप्त हो गया है, हमें जाना चाहिए।

१. क्रियापद के पहले ('किस समय') क्रियामापक शब्द

१- श्या^{4}ह्वै वो^{3} इ^{2}तिङ्^{4} कन्^{1}नि^{3} छ्.यू^{4} ।	अगली बार मैं तुम्हारे साथ अवश्य जाऊंगा।
२- चे^{4}षृ वो ति अळ^{4}ह्वै छृ^{1}चुङ्^{1}-क्वो^{2} फ़ान्^{4}, थौ^{2}इह्वै^{2}षृ	यह दूसरी बार है कि मैंने चीनी भोजन किया है। पहली

चा़य्^{४} लि^{3}श्येन्^{१}षङ् च्या^{१}छ्^{१}-त ।	बार ली महोदय के घर पर किया था ।
३- वो^{3}मै^{3}छ्. ताव्^{४} था च्या^{१}छ्.यू, था^{१} तौ^{१} कै^{3}वो^{3}छा^{२} ह^{१}, कै^{3} वो^{3} त्येन्^{3}शिन् छ्^{१} ।	हर बार जब मैं उसके घर जाता हूँ, वह मुझे चाय और मिठाई देता है ।

२. क्रिया के बाद ('व्यतीत समय') क्रिया-मापक शब्द

१- नि^{3}ताव् मङ्^{४}माय् छ्य्.ल त्वो-षाव् ह्वै^{२}ल ।	तुम बंबई कितनी बार गये हो ?
२- वो^{3} ताव् था^{१}च्या^{१} छ्.यूल हाव्^{3}चि^{3}छ्.^{४}ल ।	मैं उसके घर कई बार गया हूँ ।
३- था^{१}ष्वो^{१}ल स्च्उ^{3}ह्वै^{२}, वो^{3}-हाय्^{२}षृ पुमिङ्^{२}पाय् था^{१}त इ^{४}-स्च् ।	उसने चार या पांच बार कहा, परन्तु मैं उसका अर्थ नहीं समझा ।
४- छिङ्^{3}निन्^{२} चा़य्^{४}ष्वो^{१} इह्वै^{२} ।	कृपया फिर कहिए ।

व्याकरण

१८-१ हम पाठ १२ व १५ में सीख चुके हैं कि 'ल' का प्रयोग क्रिया-प्रत्यय के रूप में किया जा सकता है, जिससे कि क्रिया की पूर्णता सूचित होती है । इसका प्रयोग भावदर्शक सहायक शब्द के रूप में किसी व्यापार की पूर्णता सूचित करने के लिए भी किया जाता है ।

१. इसके अलावा, 'ल' का प्रयोग कोई नई परिस्थिति या अवस्था सूचित करने के लिए भी विशेष्य (विधेय) वाक्य में किया जाता है; जैसे,

चिन्^{१}थ्येन् त ईन्^{४}तु^{४} षृ^{४} ईन्^{४}-तु^{४}रन्^{२}मिन्^{२}त ल ।	आजका भारत भारत-वासी का हो गया है, (पहले

	नहीं था) ।
था^{1} हाव्^{3}ल	वह अब अच्छा हो गया है, (पहले नहीं था) ।
कौ^{4}पुकौ ? कौ^{4}ल ।	पर्याप्त है या नहीं ? पर्याप्त है ।
श्येन्^{4}चाय्^{4} पुनान्^{2}ल	अब मुश्किल नहीं (है) ।
था^{1} मै^{2}शि^{1}वाङ् ल	अब उसके लिए कोई आशा नहीं है ।

यहां ध्यान रखने योग्य बात यह है कि क्रिया-कर्म पद 'मै^{2}शि^{1}-वाङ्' को विशेषण पद भी मान सकते हैं; (यौ^{3}छ्येन्^{2}, यौ^{3}इ^{4}स्चू, इत्यादि तुलनीय है) ।

२. विशेष्य-वाक्य व विशेषण-वाक्य के अलावा दूसरी क्रियाओं के साथ भी 'ल' का प्रयोग इस अर्थ में होता है; जैसे,

च़्वो^{2}थ्येन् वो यौ छ्येन्^{2}, चिन्^{1}थ्येन् मै^{2}यौ ल, चिन्^{1}थ्येन् पु^{4}नङ्^{2}माय्^{3}षू^{1} ।	कल मेरे पास पैसे थे, आज नहीं हैं, इसलिए आज किताबें नहीं खरीद सकता ।

यह बताना उचित होगा कि 'पु^{4}' और 'मै^{2}यौ' के प्रयोग से वाक्यों के "अब नहीं", "आखिरकार नहीं" जैसे अर्थ होते हैं । कुछ और उदाहरण :

था^{1}पु^{2}याव्^{4}ल	वह अब नहीं चाहता ।
वो^{3}पु^{2}छ्.यूल	आखिरकार मैं नहीं जा रहा हूँ ।
वो^{3}मन् पु^{2}चाय् चळ^{4}चु^{4}ल	हम अब यहां नहीं रह रहे हैं (या रहते हैं) ।

३- सहायक क्रिया युक्त कुछ वाक्यों के साथ 'ल' जोड़ देने से भी किसी नई परिस्थिति अथवा अवस्था का बोध होता है; जैसे,

वो3मन तौ14ह्व1ष्वो1 इत्याळ3 चुङ्1क्वो2ह्वा ल।	अब हम थोड़ी सी चीनी बोल लेते हैं।
वो3पुश्याङ्3छ्.यू4ल।	अब मैं नहीं जाना चाहता।
नी3पु2पि लाय्2ल	अब तुम्हें आने की जरूरत नहीं।
वो3पु2आय् छ्1थाङ्2 ल	अब मैं मिठाई (या मिश्री) खाना पसन्द नहीं करता।

१८-२ 'ल' का भविष्य काल में प्रयोग : जब हम कोई ऐसा व्यापार या अवस्था व्यक्त करना चाहते हैं जो कि अभी होने ही वाली है, तो हम विधेय में 'ख्याय्4' 'च्यु4' आदि क्रिया-विशेषण या 'याव्4', (चाहना, चाहिये) आदि सहायक क्रिया के साथ सहायक शब्द 'ल' का प्रयोग करते हैं। ऐसे वाक्यों का मतलब होता है "(करने) वाले हैं", और इस तरह के वाक्यों का प्रयोग तभी किया जाता है जबकि कोई व्यापार या अवस्था होना निश्चित है और वक्ता यह सोचता है कि व्यापार या अवस्था तुरन्त हो जाएगी; जैसे,

लि3श्येन्1षङ् ख्याय्4लाय्2ल	मि० ली जल्दी ही आ जाएंगे।
हाय्2च् ख्वाय्4हाव्3ल	बच्चा जल्दी अच्छा हो जाएगा।
वो3तै3चौ3ल। चाय्4 च्येन्4पा	मुझे जाना है। नमस्ते।

जब 'याव्4' के पहले 'च्यु4' या 'ख्वाय्4' आता है तो व्यापार तुरंत होने की भावना और गहरी हो जाती है, और "च्यु4याव्4… ल" द्वारा व्यक्त व्यापार और भी जल्दी हो जाता है; जैसे,

था1मन् च्यु4याव् ताव्4ल—वे लोग अभी-अभी आ जाएंगे (या सेकंडों में आ जाएंगे)।

ख्वाय्4याव् षाङ्4ख4ल—क्लास शुरू होने वाली ही है। (या पाठ शुरू होने वाला ही है)।

यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि "ख्वाय्^{4}याव्^{4}... ल" के साथ कोई कालवाचक शब्द या वाक्यखंड क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकता। हम "सान्^{1} फ़न् चुङ्^{1}इ^{3}हौ^{4}च्यु^{4}याव्^{4}षाङ्^{4}-ख^{4}ल" (तीन मिनट बाद ही पाठ शुरू होने वाला है) कह सकते हैं, लेकिन यह नहीं कह सकते : "सान्^{1}फ़न्^{1}चुङ्^{1}इ^{3}हौ^{4} ख्वाय्^{4} याव्^{4} षाङ्^{4}ख^{4}ल"। (फन् = मिनट, पाठ १९ देखिए; इ^{3}हौ^{4} = बाद में, पाठ २० देखिए)।

१८-३ क्रिया मापक शब्द 'छ़्^{4}' और 'ह्वै^{2}' : चीनी भाषा में संज्ञामापक शब्दों के अलावा क्रिया मापक शब्द भी होते हैं, लेकिन प्रयोग में वो एक समान नहीं है। संज्ञा मापक शब्द और अंक विशेषण के रूप में संज्ञा के पहले साथ-साथ प्रयुक्त होते हैं। लेकिन क्रिया मापक शब्द 'छ़्^{4}' और 'ह्वै^{2}' क्रिया के पहले और बाद में दोनों स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। नियम इस प्रकार है :

१- जब कोई निश्चित समय के लिए निश्चय वाचक शब्दों के साथ 'छ़्^{4}' और 'ह्वै^{2}' जोड़े जाते हैं तो ये क्रिया के पहले प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

वो^{3} ति इ^{2}छ़्य़्^{4}, था^{1}पु^{2}चा़य् च्या^{1}	मैं जब पहली बार गया तब वह घर पर नहीं था।
था^{1}चे^{4}चि^{3}ह्वै^{2}लाय्^{2}मै^{2}ताय्^{4}च षू^{1}	पिछले कई बार आने के वक्त वह बगैर किताब लिये ही आया था।

२- अन्य स्थान पर 'छ़्^{4}' और 'ह्वै^{2}' क्रिया के बाद जोड़े जाते हैं; जैसे,

षाङ्^{4}लि^{3}पाय्^{4} था^{1}लाय्^{2}ल ल्याङ् छ़्^{4}	पिछले हफ्ते वह दो बार आया था।
वो^{3}छ़्य़्^{4}ल हाव्^{3}चि़^{3}ह्वै^{2}ल	मैं अब तक कई बार जा चुका हूँ।

अगर कर्म हो तो क्रिया मापक शब्दों के बाद ही प्रयुक्त होता है; जैसे,

वो^{3}छू^{1}ल ल्याङ्^{3}छ्^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} फ़ान्^{4}ल	मैंने दो बार चीनी खाना खाया।

लेकिन अगर यह कर्म पुरुषवाचक संज्ञा या स्थानवाचक शब्द हो तो वह क्रिया मापक शब्द के पहले जोड़ा जाता है; जैसे,

वो^{3}छ्यू^{4}न्येन् खान्^{4}च्येन् था^{1} षृ^{2} चि^{3}ह्वै^{2}।	मैंने पिछले साल उसे दस पन्द्रह बार देखा था।
वो^{3} षाङ्^{4}पै^{3}चिङ्^{1} पु^{4}षाव्^{3} छ्ल।	मैं अब तक अनेक बार पेकिंग जा चुका हूँ।
वो^{3}काव्^{4}सु (ल) था^{1}हाव्^{3} चि^{3} ह्वै^{2}ल।	मै उसको बहुत बार बता चुका हूँ।

१८-४ क्रियाओं की रिरुक्ति : हम यह सीख चुके हैं कि क्रियाओं की द्विरुक्ति करके उनका प्रयोग किया जा सकता है। (व्याकरण नोट ६-५)। क्रिया की द्विरुक्ति से लघु तथा शीघ्र व्यापार का भाव प्रकट होता है। क्रिया की पूर्णता व्यक्त करने के लिए प्रत्यय 'ल' का प्रयोग सिर्फ द्विरुक्त क्रियाओं के दोनों रूपों में से पहले के स:थ ही होता है; जैसे;

वो^{3}मन् चाय् वाय्^{4}थौ चौ^{3}ल इ चौ^{3}	हम (थोड़ी देर के लिए) बाहर से टहल कर आए।
वो^{3}श्याङ^{3}ल इश्याङ्^{3} च्यु छ्यू ल	मैंने सोचा और चल दिया।

१८-५ क्रमवाचक उपसर्ग 'ति^{4}' व 'थौ^{2}' : उपसर्ग 'ति^{4}' का अर्थ हिन्दी के (पह) ला, (दूस) रा, (तीस) रा, (चौ) था, (पांच) वाँ, जैसा है; इससे किसी एक प्राणी, वस्तु, समय अथवा किसी भी श्रेणी या किसी भी वर्ग की एक ही इकाई सूचित होती है। जैसे "ति^{4}इ^{1}" (नंबर एक, पहला) "ति^{4}अळ^{4}क" (दूसरा), आदि है।

लेकिन क्रमवाचक 'थौ^{2}' पहला एक या एक से ज्यादा व्यक्ति या वस्तु सूचित करता है; जैसे, थौ^{2}इ^{2}क^{1} (पहला आदमी), थौ^{2}ल्याङ्^{3}क रन्^{2} (पहले दो आदमी) थौ^{2}षृ^{2} थ्येन्^{1} (पहले दस दिन), इत्यादि।

१८-६ 'च्यु^{4}षृ' इत्यादि : हम लोग जानते हैं कि योजक 'षृ^{4}' का प्रयोग केवल विशेष्य-विधेय वाक्य में होता है। लेकिन 'षृ^{4}' बल भी प्रगट कर सकता है, अगर इसका प्रयोग किसी भी वाक्य के विधेय में किया जाए। यहां 'षृ^{4}' का अर्थ होता है "हीं" "सचमुच" या "वास्तव में"; जैसे,

था^{1} षृ^{4}छुङ्^{1}मिङ्	वह सचमुच बुद्धिमान हैं।
षृ^{4}चेक^{4}हाव्^{3}	वास्तव में यह अच्छा है।

बल प्रगट करने के लिए 'षृ^{4}' के पहले 'च्यु^{4}' 'हाय्^{2}' इत्यादि भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

वो^{3}च्यु^{4}षृ पु^{4}शि^{3}ह्वान् च.वो^{4} फ़ान्^{4}	मैं सचमुच खाना बनाना पसंद नहीं करता।
हाय्^{2}षृ चे^{4}क हाव्^{3}	(वास्तव में) यही अच्छा है।
चे^{4}क हाय्^{2}च्. चन्^{1}षृ छुङ^{1}मिङ	यह बच्चा सचमुच बुद्धिमान् है।
नि^{3} च्यु^{4} षृ वो^{3}त शि^{1}वाङ्^{4}	तुम्हीं मेरा भरोसा हो।

हम यह बता चुके हैं कि बोलचाल की भाषा में कुछ साधारण और छोटे वाक्यों में योजक 'षृ^{4}' का प्रयोग नहीं होता (व्याकरण नोट १३-४)

उम्र पूछने के समय भी वाक्य में 'षृ^{4}' का प्रयोग जरूरी नहीं है। इसका कारण यह है कि जब विधेय में एक अंक या कई अंक होते हैं तब योजक का प्रयोजन नहीं होता; जैसे,

नि^{3} अळ^{4}षृ^{2}चि^{3} स्वै^{4}	आप कितने साल के हैं। (शब्दार्थ : आप बीस के ऊपर कितने साल के हैं)
वो^{3} अळ^{4}षृ^{2}छि^{1} स्वै^{4}	मैं सत्ताईस साल का हूँ।

पाठ-१६

क-	नि^{3} मै^{3}थ्येन् चाव्^{3}षाङ् ष^{2}म्मा षृ^{2}हौ छि^{3}लाय् ?	प्रत्येक दिन प्रातः तुम कितने बजे उठते हो ?
ख-	वो^{3} मै^{3}थ्येन् छा^{4}पुत्वो^{1} ल्यु^{4}-त्येन्चुङ्^{1} छि^{3}लाय् ।	प्रत्येक दिन मैं लगभग ६ बजे उठता हूँ ।
क-	नि^{3} चि^{3}त्येन्^{3}चुङ्^{1} छू^{1} चाव्^{3}-फान्^{4} ?	तुम नाश्ता किस समय करते हो ?
ख-	ल्यु त्येन्^{3} सान्^{1} ख^{4} ।	पौने सात बजे ।
क-	नि^{3} मै^{3}थ्येन् च़वो^{4} षृ^{14}च़वो चि^{3}क चुङ्^{4}थौ^{2} ?	तुम प्रत्येक दिन कितने घंटे काम करते हो ?
ख-	छि^{2}क चुङ्^{1}थौ^{2} । षाङ्^{4} उ^{3}, छू़ङ्^{2} पा^{1}त्येन्^{3}पान्^{4} च़वो-ताव् षृअळ^{4}त्येन्, श्या^{4}उ^{3}, छू़ङ्^{2} इ^{4} त्येन्^{3} इ^{2} ख^{4} च़वो^{4} ताव् स्च़्^{4}त्येन्^{3}सान्^{1}ख^{4} । याव्^{4} षृ षृ^{4}छिङ् माङ्^{2} वो^{3} च्यु च़वो^{4}ताव् उ^{3}त्येन्^{3} त्वो^{1} चुङ्^{1}।	सात घंटे । मैं दोपहर से पहले ८.३० से १२ बजे तक काम करता हूँ, दोपहर के बाद १.१५ से ४.४५ तक। यदि ज्यादा काम हो तो ५ बजे के बाद तक काम करता हूँ ।
क-	नि^{3} मै^{2}षृ^{4}त षृ^{2} हौ च़वो^{4} ष^{2}म्मा ?	तुम जब काम नहीं कर रहे होते हो तो क्या करते हो ?

ख- यौ^{3}त षृ^{2}हौचाय् षू^{1}फाङ्^{2}लि खान^{4}खान् षू^{1}, यौ^{3}त षृ^{2}हौवो^{3} चाय् लौ^{2}षाङ् कन् हाय्^{2}च् मन् वाळ^{2} ।	कभी मैं अध्ययन कक्ष में पढ़ता हूँ, कभी मैं ऊपर बच्चों के साथ खेलता हूँ ।

नये शब्द

क्रि० वि०

षाङ्^{4} उ^{3}	(गतिशील)	(सं० भी है)	दोपहर से पहले
चुङ्^{1} उ^{3}	,,	,,	दोपहर
श्या उ^{3}	,,	,,	दोपहर के बाद
पाय्^{2} थ्येन्	,,	,,	दिन के समय, दिन में
ये^{4} लि	,,	,,	रात के समय, रात में
इ^{2} ये^{4}	,,	,,	एक रात, पूरी रात
काङ्^{1} छ्राय्^{2}	(गतिशील)		कुछ ही क्षण पहले
याव्^{4} षृ	(गतिशील)		यदि
काङ्^{1} (काङ्)			अभी, इसी मिनट
छा^{4}			कम (होना)
ख^{3}			वास्तव में, अवश्य, फिर भी

मा०

-त्येन^{3}	घंटा
-ख^{4}	१५ मिनट
-फ़न्^{1}	मिनट
-ये^{4}	रात

सं०

ऋ^{4}च्	दिन, एक विशेष दिन

चुङ्^{1} थौ^{2}	एक घंटा
उ^{3} फ़ान्^{4}	दोपहर का खाना

वि०

च़ाव्^{3}	शीघ्र होना
वान्^{3}	देर होना
है^{1}	काला होना, गहरा अंधकार
पाय्^{2}	सफेद होना, सफेद
ल्याङ्^{4}	प्रकाशित या चमकीला होना (अंधकार के विपरीत)

क्रि०

क्वो^{4}	गुजरना, अतीत
छि^{3} लाय्	खड़ा होना, उदय होना
काव्^{4} सु (ङ्)	बताना, सूचित करना
ष्वै^{4} च्याव्^{4} (क्रि० क०)	सोना
छा^{4}पुत्वो^{1} (मुहावरेदार वाक्य)	लगभग
च़^{3}म्मा पान्^{4} ? ,,	इसके बारे में क्या हो सकता है ?

समय

इ^{4} त्येन्^{3} चुङ्^{1}	एक बजे
इ^{4} त्येन्^{3} षृ^{2} फ़न्^{1}	एक दस (एक बजकर दस मिनट)
इ^{4} त्येन्^{3} षृ^{2} उ^{3}फ़न् (अथवा इ^{4} त्येन्^{3} इ^{2} ख^{4})	सवा बजे या एक बजकर १५ मिनट
इ^{4} त्येन्^{3} अळ^{4} षृ फ़न्^{1}	एक बीस
इ^{4} त्येन्^{3} सान्^{1}षृ फ़न् (अथवा इ^{1} त्येन्^{3} पान्^{4})	एक तीस या डेढ़

इ^{4} त्येन्^{3} स्च्^{4} षृ उ^{3} फ़न् (अथवा इ^{4} त्येन्^{3} सान्^{1} ख^{4})	एक पैंतालीस, या दो बजने में १५ मिनट
इ^{4} त्येन्^{3} उ^{3} षृ फ़न्^{1}	एक पचास
ल्याङ्^{3} त्येन्^{3} चुङ्^{1}	दो बजे
ल्याङ्^{3} त्येन्^{3} त्वो^{1} चुङ्^{1}	दो बजे के पश्चात्
इ^{4} फ़न् चुङ्^{1}	एक मिनट
ल्याङ्^{3} फ़न् चुङ्^{1}	दो मिनट
स्च्^{4} उ^{3} फ़न् चुङ्^{1}	४ या ५ मिनट
षृ^{2} उ^{3}फ़न् चुङ्^{1} (या इ^{2} ख^{4} चुङ्^{1})	१५ मिनट (या चौथाई घंटा)
सान्^{1} षृ फ़न् चुङ्^{1} (या पान्^{4} त्येन्^{3} चुङ्^{1})	३० मिनट (या आधा घंटा)
स्च्^{4}षृ उ^{3} फ़न् चुङ्^{1} (या सान्^{1} ख^{4} चुङ्^{1})	४५ मिनट (या पौना घंटा)
इ^{1} त्येन्^{3} चुङ्^{1}	एक घंटा
इ^{4} त्येन्^{3} त्वो^{1} चुङ्^{1}	एक घंटे से अधिक
इ^{4} त्येन्^{3} (लिङ्^{2}) षृ^{2} फ़न्	एक घंटा १० मिनट
इ^{4} त्येन्^{3} सान्^{1} ख^{4} चुङ्^{1}	१ घंटा ४५ मिनट
पान्^{4}क चुङ्^{1}थौ^{2}	आधा घंटा
इ^{2}क चुङ्^{1}थौ^{2}	एक घंटा
इ^{2}क त्वो^{1} चुङ्^{1}थौ^{2}	एक घंटे से अधिक
इ^{2}क पान्^{4} चुङ्^{1}थौ^{2}	डेढ़ घंटे
स्च्^{4} उ^{3}क चुङ्^{1}थौ^{2}	४ या ५ घंटे

उदाहरणमाला

(क) 'किस समय'

१- छ्^{1}ष^{2}म्मा षृ^{2}हौ ताव्^{3} ? श्या^{4}उ^{3}सान्^{1}त्येन्^{3}-	रेलगाड़ी कितने बजे आती है ? दोपहर के बाद ३-५०

उ^{3} षृ^{2}फ़न्^{1} ताव्^{4} ।	पर ।
२- वो^{3}मन् मिङ्^{2}थ्येन् चि^{3} त्येन्^{3} चुङ्^{1} छ्.यू^{4}? च़ाव्^{3}षाङ् च्यु^{3}त्येन्^{1} चुङ्^{1} हाव्^{3} पुहाव् ?	कल किस समय पर हम चलेंगे ? सुबह ९ बजे के लिए क्या विचार है ?
३- नि^{3} श्या^{4} लि^{3}पाय् सान्^{1} चि^{3} त्येन्^{3} चुङ्^{1} ताव्^{4} वो^{3}चळ^{4} लाय्^{2} ? वो^{3} षृ^{2}त्येन्^{3}सान्^{1}ख लाय्^{2} ।	अगले बुधवार को कितने बजे यहाँ आ रहे हो ? मैं पौने ग्यारह बजे आ रहा हूँ ।
४- वाङ्^{2}श्येन्^{1}षङ् षृ ष^{2}न्मा षृ^{2} हौ चो^{3}त ? था^{1} षृ चिन्^{1}थ्येन् षाङ्^{4}उ^{3} षृ^{2}- इ^{1}त्येन्^{3} षृ^{2}फ़न्^{1} चो^{3}त ।	मि० वांग कितने बजे गये ? वह आज दोपहर से पहले ११ बज कर १० मिनट पर गये ।
५- छ^{1} षृ चि^{3}त्येन्^{3} चुङ्^{1} ताव् चळ^{4}त ? (या ताव्^{4}त चळ^{4} ?) स्च्^{4} त्येन्^{3} इ ख^{4}	(रेल) गाड़ी कितने बजे यहां आई थी (पहुंची थी) ? सवा चार बजे ।

(ख) व्यतीत समय

१- वो^{3} चिन्^{1}थ्येन् इ^{3}चिङ् न्येन्^{4}ल पा^{2}क चुङ्^{1}थौ त षू^{1} ल । ना^{4} ख^{3} चन्^{1} पुषाव्^{3} ।	आज मैं पहले ही ८ घंटे पढ़ चुका हूँ । यह तो वास्तव में बहुत है ।
२- था^{1} कन्^{1} वो^{3} थान्^{2} ल इ^{2}कत्वो^{1} चुङ्^{1}थौ^{2}त ह्वा^{4} च्यु ह्वे^{2} छ्यू ल ।	उसने एक घंटे से अधिक मुझसे बातें की और फिर लौट गया ।
३- था^{1} कन्^{1} वो^{3}मन् हाय्^{2}च़् वाळ^{2}ल छा^{4}पुत्वो^{1} सान्^{1} क चुङ्^{1}थौ^{2}ल ।	वह हमारे बच्चों के साथ लगभग ३ घंटे खेला ।

४-	वो^{3} तङ्^{3} था सान्^{1}ख चुङ्^{1}ल । वो^{3} चाय्^{4} तङ्^{3} पान्^{4} त्येन्^{3} चुङ्^{1} । याव्^{4}-षृ था^{1} पु लाय्^{2}, वो^{3} च्यु तै^{3} चौ^{3} ।	मैं उसकी पौन घंटे से प्रतीक्षा कर रहा हूँ । मैं आधा घंटा और प्रतीक्षा करूंगा, और यदि वह नहीं आता है तो मैं अवश्य चला जाऊंगा ।
५-	नि^{3} थ्येन्^{1}थ्येन् छ्वै^{4} च्याव्^{4}, छ्वै^{4} चि^{3}क चुङ्^{1}-थौ^{2} ? वो^{3} छ्वै^{4} छि^{2}क चुङ्^{1} थौ^{2} च्यु छि^{3}लाय् ।	हर रोज तुम कितने घंटे सोते हो ? में ७ घंटे सोता हूँ, और फिर उठ जाता हूँ ।

(ग) 'छा^{4}' व 'क्वो^{4}' का प्रयोग

१-	ताव्^{4} (ल)षाङ्^{4} ख^{4} त षृ^{2} हौ ल मा ?	क्या यह क्लास का समय है ?
	हाय्^{2} मै^{2} ताव्^{4} न	अभी नहीं ।
	हाय्^{2} चाव्^{3} न	अभी तो जल्दी है ।
	हाय्^{2}छा^{4}पान्^{4}त्येन्चुङ्^{1}न^{3}	अभी तो आधा घंटा है ।
	ताव्^{4} ल	हाँ ठीक है
	इ^{3}चिङ् ताव्^{4}ल	समय हो गया है ।
	चाव्^{3} ताव्^{4}ल	बहुत पहले समय हो चुका था ।
	काङ्^{1}काङ् ताव्^{4} षृ^{2}हौ	अभी अभी समय हो गया है ।
	क्वो^{4}ल	समय गुजर चुका है ।
	चाव्^{3} क्वो^{4} षृ^{2}हौल	समय बहुत पहले गुजर चुका है ।
२-	ताव्^{4}(ल)ल्याङ्^{3}त्येन्^{3}-चुङ्^{1}ल मै यौ ?	क्या अभी २ बजे हैं ?
	मै^{2} ताव्^{4}न	अभी नहीं ।
	हाय्^{2} मै^{2} ताव्^{4} ल्याङ्^{3}-त्येन्^{3}न	अभी २ नहीं बजे ।

हाय्2 छा4 त्वोषाव् ? (या चि3फ़न् ?)	कितने समय में २ बज जाएंगे?
हाय्4 छा4 षृ2 फ़न् चुङ्1	१० मिनट की कमी है ।
इ3चिङ् क्वो4ल	अभी तो २ से अधिक का समय हो गया है।
चाव्3 क्वो4ल ?	२ बहुत पहले बज चुके थे ।
क्वो4 त्वो1षाव्ल ?	कितने पहले ।
क्वो4 (ल)इ2ख4चुङ्1ल	पन्द्रह मिनट पहले (या पन्द्रह मिनट गुजर चुके हैं)
३- हाय्2 छा4 त्वो1षाव् छ्येन्2	(मुझे तुमको) अभी और कितना देना है ?
हाय्2 छा4 सान्1माव् छ्येन्2न	(तुमको मुझे) अभी ३० सेन्ट देने हैं ।

(घ) 'जैसे ही—वैसे ही' (बल प्रगट करने के लिये)

१- वो3 ई4थिङ्1च्वो वो3 मु3छिन् पिङ्4ल, वो3 लि4ख4 च्यु ह्व2 च्या1ल	ज्योंही मैंने सुना कि मेरी मां बीमार है, मैं घर लौट गया ।
२- वो3 पा3 छ्येन्2 इकै3था, था1 च्यु चौल	ज्योंही मैंने उसको पैसे दिये वह चला गया ।
३- वो3 इखान्4च्येन् नि3 च्यु चृ1-ताव् नि3 ई2तिङ्4 षृक छूङ्1-मिङ् रन्2	जैसे ही मैं तुमसे मिला, मैं जान गया कि तुम अवश्य ही एक बुद्धिमान व्यक्ति हो ।
४- हाय्2च़् ई पुन्येन्4 षू1, फ़ु4मु3 च्यु पु4 काव्शिङ्4	जब भी बच्चे नहीं पढ़ते हैं, माता-पिता नाराज हो जाते हैं ।
५- रन्2 इह1च्यु3, च्यु हन्3 रुङ्2इ पा3 षृ4छिङ् वाङ्4ल	जब भी लोग शराब पीते हैं वह आसानी से बातें भूल जाते हैं ।

६- वो^{3}मन् इताव्^{4}ल न्यु^{3}ऱ.वे, वो^{3}च्यु याव् श्येन्^{1} छय़् खान्^{4} इक फङ्^{2}यौ	ज्योंही हम न्यूयार्क पहुंचेंगे, मैं एक मित्र से मिलने जाना चाहता हूँ ।

(च) '(याव्^{4}षृ)'—च्यु^{4} (शर्त या अनुमान-विषयक)

१- (याव्^{4} षृ) नि^{3}मन् पुमिङ्^{2} पाय् वो^{3}त इ^{4}स्च्, वो^{3}च्यु ख^{3}इ^{3} चा़य्^{4}ष्वो^{1} इह्वै^{2}	यदि तुम मेरा अर्थ नहीं समझते हो, मैं एक बार फिर कह सकता हूँ ।
२- (याव्^{4} षृ) वो^{3} ष्वो^{1}त थाय्^{4} ख्वाय्^{4}, छिङ्^{3} नि^{3} काव्^{4}सु(ङ्) वो^{3}, वो^{3}च्यु ख^{2}इ^{3} ष्वो^{1} मान्^{4} इत्याळ^{3}	यदि मैं बहुत तेज बोलता हूँ तो कृपया मुझे बता देना, और मैं और धीरे बोलूंगा ।
३- नि^{3}याव्^{4}षृ मै^{2} षृ^{4}, नि^{3} नङ्^{2} पुनङ् पाङ्^{1} वो^{3} इत्याळ^{3} माङ्^{2} ?	यदि तुम कुछ नहीं कर रहे हो, तो क्या तुम मेरी थोड़ी सहायता कर सकते हो ?
४- (याव्^{4} षृ) नि^{3} चन्^{1} खान्^{4} च्येन् था ल, छिङ्^{3} काव्^{4}सु(ङ्) वो^{3} था^{1} हाव्^{3} पुहाव् ।	यदि तुम वास्तव में उससे मिल चुके हो तो कृपया मुझे बताना कि वह ठीक है या नहीं ।
५- था^{1}(याव्^{4} षृ) इ^{3}चिङ् चौ़ ल, वो^{3}मन् च्यु पु^{2}पि तङ्^{3} था ल	यदि वह पहले ही जा चुका है तो हमें उसकी प्रतीक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।
६- याव्^{4} षृ वो^{3} वाङ्^{4}ल च़^{3}म्मा पान्^{4} ?	यदि मैं भूल जाता हूं (या भूल गया होता) तो क्या किया जायेगा (या किया जाता)?

७-	(याव्^{४} षृ) नि^{३} च.वो^{२}थ्येन् मै^{२}छ्य्. खान्^{४} था, नि^{३} च्^{३}म्मा चृ^{१}ताव् था पिङ्^{४}ल	यदि तुम कल उससे मिलने नहीं गये तो तुम कैसे जानते हो कि वह बीमार है ?
८-	था^{१} याव्^{४}षृ हाय्^{२} ष्वै^{४}च्याव्^{४} न, नि^{३} च्यु प्ये^{२} च्याव्^{४} था।	यदि वह अभी सो रहा है तो उसको मत बुलाओ।

व्याकरण

१६-१ समय : चीनी भाषा में समय बताने के लिए काल-बोधक मापक शब्द '-त्येन्^{3}' (बजे), 'ख^{४}' (घन्टे का एक चौथाई) 'फ़न्' (मिनट) इस्तेमाल होते हैं, इन मापक शब्दों के पहले समय सूचक अंक और बाद में 'चुङ्^{१}' (घड़ी) आते हैं। पूर्ण अंकों में समय बताने पर बाद में अक्सर 'चुङ्^{१}' का प्रयोग होता है। लेकिन अगर बड़ी इकाई के बाद छोटी इकाई आये तो प्रायः 'चुङ्^{१}' का प्रयोग नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए :

इ^{४}त्येन्^{३}चुङ्^{१}	एक बजे
ई^{४}त्येन्^{३}सान्^{१}ख^{४}	पौने दो बजे, अथवा एक बज-कर पैंतालीस मिनट।

अगर पूर्ण अंक दस से ऊपर की संख्या में हो तो अक्सर 'चुङ्^{१}' का प्रयोग नहीं किया जाता; जैसे :

षृ^{२}अळ^{४}त्येन्^{3} (चुङ्) बारह बजे

१६-२ 'त्येन्^{3}चुङ्^{१}' व 'चुङ्^{१}थौ^{२}' :—'त्येन्^{3}चुङ्^{१}' समय का परिमाण या समय का कोई निश्चित बिंदु सूचित करता है। लेकिन 'चुङ्^{१}थौ^{२}' साठ मिनट का समय सूचित करता है। लेकिन 'पान्^{४}-त्येन्^{3}चुङ्^{१}' और 'पान्^{४}क चुङ्^{१}थौ^{२}' दोनों का अर्थ आधा घंटा है; जैसे :

वो^{3}ष्वै^{४}ल पान्^{४}त्येन्^{3}चुङ् त च्याव्^{४} च्यु छि^{3}लाय्ल।

वो^{3}ष्वै^{4}ल पान्^{4}क चुङ्^{1}थौ^{2}त च्याव्^{4}च्यु छि^{3}लाय्^{2}ल ।

वो^{3}ष्वै^{4}ल पान्^{4}त्येन्^{3}चुङ्^{1}त कुङ्^{1}फ़ू च्यु छि^{3}लाय्^{2}ल ।

इन तीनों वाक्यों का अर्थ है :—"वह आधे घंटे के लिए सोकर उठ गया", लेकिन "वो^{3}मन ल्याङ्^{3}त्येन्^{3}चुङ्^{1}षाङ्^{4}ख^{4}" का अर्थ है "हम लोगों का पाठ दो बजे से शुरू होगा" (या पढ़ाई शुरू होगी); और "वो^{3}मन् षाङ्^{4}ल्याङ्^{3}क चुङ्^{1}थौ^{2}त ख^{4}" का अर्थ है "हम दो घन्टे के लिए कक्षा में जाते हैं।"

तारीख में साल, महीना, दिन और समय सब साथ-साथ हों तो इनका शब्दक्रम कैसा होगा यह हम पहले ही सीख चुके हैं (व्याकरण नोट १३-५)। घड़ी का समय सूचित करते वक्त भी हमें बड़ी इकाई पहले और छोटी इकाई बाद में देनी चाहिए; जैसे :—

चिन्^{1}थ्येन् श्या^{4}उ^{3}स्च्^{4}त्येन्^{3}-इ^{2}ख ।	आज शाम चार बजकर पंद्रह मिनट (पर)।
षाङ्^{4}लि^{3}पाय्थ्येन्^{1} चाव्षाङ् पा^{1} त्येन्^{3}पान्^{4} ।	पिछले रविवार सबेरे साढ़े आठ बजे ।

१९-३ समय पूछने का तरीका : कीमत (पाठ-८), तारीख (पाठ १३), उम्र (पाठ-१८) पूछने के वक्त किसी क्रिया (षृ^{4}) की जरूरत नहीं होती। इसी तरह समय पूछने के लिए क्रिया का सहारा नहीं लेना पड़ता, हालांकि कभी-कभी 'षृ^{4}' या 'यौ^{3}' का प्रयोग होता है। पूर्णताबोधक 'ल' भी कभी कभी प्रयुक्त होता है; जैसे,

ष^{2}म्माषृ^{2}हौ (ल)।	कितना समय हुआ है ? (या कितने बजे हैं ?)
उ^{3}त्येन्^{3}पान्^{4} (ल)	साढ़े पांच ।
श्येन्^{4}चाय्^{4} चि^{3}त्येन्^{3}चुङ्^{1} (ल) ?	अभी कितने बजे हैं ?

सान्1त्येन्3इ2ख4 (ल)	तीन बजकर पंद्रह मिनट हुए हैं, (या सवा तीन बजे हैं)।

१९-४ "याव्4षृ..........च्यु4" : चीनी भाषा में शर्त जाहिर करने के लिए वाक्यांश "याव्4षृ. . . . च्यु4" का प्रयोग किया जाता है, इसका अर्थ 'मानो' "यदि ऐसा हो तो", "अगर (यदि)...... तो (तब)" इन वाक्यांशों से प्रगट किया जाता है। "याव्4 षृ" (अगर, यदि) को पहले हिंदी के तरह वाक्यांश में कर्ता के पहले या बाद में रखा जा सकता है, लेकिन 'च्यु4' को दूसरे बाक्यांश में विधेय के पहले जरूर रखना चाहिए। 'याव्4षृ' छोड़ा जा सकता है, लेकिन आमतौर से 'च्यु4' छोड़ा नहीं जाता। अंग्रेजी के इस तरह के वाक्य में ठीक इससे विपरीत होता है, उदाहरण के लिए :—

(याव्4षृ) नि3पुलाय्2, वो3मन् च्यु4पु छ्.यू4ल।	(अगर) तुम नहीं आओगे तो हम नहीं जायेंगे।
(याव्4षृ) नि3पु2काव्4सु वो3 चे4च्येन्4 षृ4 (छिङ्) वो3-च्यु4पुचृ1ताव्	(अगर) तुम मुझे यह बात नहीं बताते तो मुझे पता नहीं चलता।

अगर दूसरे वाक्यांश में क्रिया विशेषण हो तो 'च्यु4' अक्सर छोड़ा जाता है; जैसे :—

(याव्4षृ) नि3पु2काव्4सु वो3 चे4च्येन्4षृ4(छिङ्)वो3इ2तिङ्4 पु चृ1ताव्4।	(अगर) तुम मुझे इसके बारे में नहीं बताते तो मुझे कतई पता नहीं चलता।

१९-६ "इ1 . . . . च्यु4" : हिंदी के "जैसे ही—वैसेही" "ज्योंही—त्योंही"" "जभी-तभी" इस तरह की शर्त जाहिर करने वाले आश्रितार्थक वाक्य को चीनी भाषा के 'इ1' (एक) और 'च्यु4' (तब), दोनों के सहारे रूपान्तरित किया जाता है। यहां 'इ1' और 'च्यु4' दोनों क्रिया विशेषण हैं, और सापेक्ष योजी के रूप में

प्रयुक्त हैं। इस विन्यास का प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार से किया जाता है :—(१) जब दो व्यापार समय की दृष्टि से घनिष्टतापूर्वक जुड़े होते हैं; जैसे :—

वो^{3}इकन्^{1}था ष्वो^{1} ह्वा^{4} था^{1} च्यु^{4} षङ्^{1}छि^{4}ल	मैंने ज्योंही उसके साथ बातें की त्योंही वह गुस्से में आ गया।
नि^{3} क^{1}क इ ह्वै^{2}लाय् वो च्यु^{4} याव् च्येन्^{4} था	जैसे ही तुम्हारा बड़ा भाई (आयेगा वैसे ही) मैं उससे मिलना चाहता हूँ।

२- जब उससे शर्त प्रगट होती है; जैसे :

वो^{3}इ छृ^{1} यू^{2}च्यु^{4}पू षु^{1}फ़ु	मैं जभी मछली खाता हूं (तभी) बीमार सा हो जाता हूँ।

यहां विन्यास "याव्^{4}षृ……च्यु^{4}" तुलनीय है। "याव्^{4} षृ… च्यू^{4}" भी शर्त प्रगट करता है, इसलिए इस तरह के वाक्य में "ई^{1}——च्यु^{4}" की जगह इसका प्रयोग हो सकता है। लेकिन एक अंतर है; "इ^{1}—च्यु^{4}" एक आम शर्त प्रगट करता है, यानी अमुक परिस्थिति में अमुक बात हमेशा होती है, पर "याव्^{4} षृ—च्यु^{4}" न केवल एक आम शर्त प्रगट करता है, बल्कि एक विशेष शर्त भी प्रगट करता है। उदाहरण के लिए "याव्^{4} षृ नि^{3} पु लाय्^{2} वो^{3}च्यु^{4}पु छ्यू^{4}ल" (अगर तुम नहीं आओगे तो मैं नहीं जाऊंगा), इस वाक्य में हम केवल "याव्^{4} षृ—च्यु^{4}" का ही प्रयोग कर सकते हैं, "इ^{1}—च्यु^{4}" का प्रयोग कभी नहीं करते। लेकिन "वो^{3}ई छृ^{1} यू^{2} च्यु^{4}पुषु^{1}फ़ू^{2}" इस वाक्य में "याव्^{4} षृ—च्यू^{4}" का प्रयोग भी कर सकते हैं।

पाठ-२०

वो3 यौ3 इक इन४तु४ फङ्2-यौ। वो3 रन्४षृ था हाव्3चि3-न्येन्२ ल। यौ3 इन्येन्२ था ता3स्वान् ताव् चुङ्१क्वो२ छ्.यू४। था१ श्ये3 शिन्४ काव्४-सुङ् वो3 था१ इ3छ्येन्२ मै२-ताव् चुङ्१क्वो२ छ्.यू४क्वो।	मेरा एक भारतीय मित्र है। मैं उसको कई सालों से जानता हूँ। एक साल उसने चीन जाने की योजना बनाई। उसने मुझे लिखा कि वह पहले कभी चीन नहीं गया है।
वो3 त फङ्२यौ चा़य् छ्वान्२-षाङ् त षृ२हौ श.ग्वे२ ल चि3-च.यू चुङ्१क्वो२ रन्२ छाङ्२ युङ्४ त ह्वा४। श्या४ छ्वान्२ इ3 छ्येन्२ था१ इ3चिङ् ह्वै४ ष्वो१ : निन्२ हाव्3 आ, श्ये४-श्ये, चा़य्४ च्येन्४। श्या४ ल छ्वान्२ इ3हौ४ था१ यौ४ श्य.वे२ ल हाव्3 श्ये१।	जब मेरा (भारतीय) मित्र पानी के जहाज पर था, उसने चीनी भाषा के कुछ सामान्य वाक्य सीखे। जहाज से उतरने से पहले वह कह सकता था : "आप कैसे हैं", "धन्यवाद" "फिर मिलेंगे।" जहाज से उतरने के बाद उसने और अधिक सीखा।
था श्येन्१ चा़य्४ षाङ्४हाय्3 चु४ ल श्ये ऋ४च्., हौ४-लाय् च्यु ताव् नान्२चिङ्१ छ्.यू४ ल। ता3चाङ्४ इ3-	वह पहले कुछ दिन शंघाई में ठहरा। उसके बाद वह नान-किङ् गया। युद्ध से पहले इस शहर की जनसंख्या अधिक

छ्येन्2 छङ्2 लि3थौ त रन्2 हन्3 त्वो। ता3 चाङ्4 त षृ2 हौ रन्2 च्यु षाव्3 ल। श्येन्4-चाय्4 पु4 ता3चाङ्4ल, रन्2 तौ1 ह्वै2लाय् ल।

थी। युद्ध में जनसंख्या बहुत कम रह गई। अब युद्ध के समाप्त होने पर सब लोग वापस लौट आये हैं।

वो3 फङ्2यौ हन्3 श्याङ्3 च्येन्4च्येन चि3 वै4 यौ3मिङ्2-त चुङ्1क्वो2 रन्2। इन्1वै था1 पु रन्4षृ था1मन, पु हाव्3 च्4चि3 छ्यू च्येन्4 था1मन, स्वो3इ3 था1 चाव्3 ल इक फङ्2यौ कै3 था च्ये4षाव्।

मेरा मित्र चीन के कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों से मिलने का इच्छुक था। क्योंकि वह उनको नहीं जानता था और उनसे मिलने के लिए स्वयं सुगमता से नहीं जा सकता था, उसने एक मित्र ढूंढ़ा जो उसको उनसे परिचित करवा सकता था।

था1 च्येन्4 ल था1मन् इ3हौ4 च्यु ह्वै2 इन्4तु4 छ्यू4 ल। था1 चौ3 त षृ2हौ च्यूवे2त हन्3 काव्1शिङ्1। यौ3 चि3 क फङ्2यौ सुङ्4 था षाङ्4 छ्वान्2, खाय् छ्वान्2 त षृ2हौ त्वै4 था ष्वो : चाय्4 च्येन्4, ई2 लु4 फिङ्2 आन्1।

उनसे मिलने के पश्चात् वह भारत वापस गया। जब वह वापस लौटा तो बहुत प्रसन्न था। कुछ मित्र उसको विदा करने आए थे जिन्होंने जहाज चलने पर कहा : फिर मिलेंगे। आपकी यात्रा प्रसन्नतापूर्वक हो।

नये शब्द

गतिशील क्रि० वि०

इ3 छ्येन्2	पहले
—इ3 छ्येन्2	पहले, -के पहले
इ3 हौ4	इस (उस) के पश्चात्

—इ$_{६}$ हौ^{४}	बाद में,—के बाद
पन्^{३} लाय्^{२}	मूलतः, प्रारम्भ से
छ्येन्^{२} थ्येन् (संज्ञा भी है)	परसों (बीता हुआ)
हौ^{४} थ्येन् (संज्ञा भी है)	परसों (आने वाला)

संज्ञा

छ्येन^{२}	सामने, पहले वाला
च्^{४} चि^{३}	स्वयं, अपने आप
श्याव्^{४} ह्वा	मज़ाक

क्रि० वि०

ज़ाव्^{३}	सदैव, जारी रखना

वि०

फिङ्^{२}छाङ्^{२}	साधारण (होना)
थ^{४} प्ये^{२}	विशेष (होना), भिन्न (होना)
यौ^{३}मिङ्^{२}	प्रसिद्ध (होना)

क्रि०

रन्^{४} त	जानना, पहचानना,
रन्^{४} षृ	परिचित होना
च्ऱ्.वे^{१}त	अनुभव करना, विचारना
खान्^{४}	देखना, सोचना, विचारना
ता^{३}स्वान्^{४}	योजना बनाना
च्ये^{४} षाव्	परिचय करना
श्याव्^{४}	हंसना या मुस्कराना
श्याव्^{४} (ह्वा)	हंसना (किसी पर)
ता^{३}चाङ्^{४}	(क्रि० कर्म) लड़ना, युद्ध करना

स० श०

क्वो^{४}	अनुभव सूचक क्रिया प्रत्यय

आ	वाक्य प्रत्यय (देखिए व्याकरण नोट २०-४)

मुहावरेदार वाक्य-खण्ड

पु^{4} कान्^{3} ताङ्^{1} ।	तुम बिना बात मेरी प्रशंसा करते हो, धन्यवाद ।
इ^{2} लु^{4} फिङ्^{2} आन्^{1}	यात्रा प्रसन्नतापूर्वक हो, यात्रा सकुशल हो ।

उदाहरणमाला

(क) क्रिया प्रत्यय-'क्वो^{4}'

नमूने : (१-६) नि^{3} छृ^{1} क्वो ऋ^{4}पन्^{3} फ़ान्^{4} मै यौ ? छृ^{1} क्वो ।

क्या तुमने कभी जापानी खाना खाया है ? हां, खाया है ।

(७-८) नि^{3} छृ^{1} क्वो फ़ान्^{4} ल मा ? छृ^{1} क्वो ल, श्ये^{4}श्ये ।

क्या तुमने खाना खा लिया है? हां, खा लिया है, धन्यवाद ।

१-	नि^{3} ताव्^{4}क्वो चुङ्^{1}क्वो^{2} मै^{2} यौ ? मै^{2} ताव्^{4}क्वो । वो^{3} ता^{3}स्वान् चिन्^{1} न्येन् छ्.यू^{4} ।	क्या तुम कभी चीन गए हो ? नहीं, मैं नहीं गया । मैं इस साल जाने की योजना बना रहा हूँ ।
२-	था^{1} चाय् चुङ्^{1}क्वो^{2} चु^{4} क्वो मा ? चु^{4} क्वो ।	क्या वह कभी चीन में रहा है ? हां, वह रहा है ।
३-	नि^{3} मै^{2} खान्^{4}क्वो चे^{4} पन्^{3} षू^{1} मा ? खान्^{4} क्वो । वो^{3} च्त्र्.वे^{2}त चे^{4} पन् षू^{1} थाय्^{4}मै^{2}-इ^{4}स्च्.^{1} ।	क्या तुमने यह पुस्तक कभी नहीं पढ़ी है ? हां, मैंने पढ़ी है, और मेरे विचार से यह पुस्तक रोचक नहीं हैं ।
४-	था^{1} च्या^{1}लि मै^{2} छ्येन्^{2}, स्वो^{3}-इ^{3} ने^{4}क हाय्^{2}च्. मै^{2}न्येन्^{4}-क्वो षू^{1} ।	उसके परिवार के पास पैसा नहीं है, इसलिए वह बच्चा कभी स्कूल नहीं गया है ।

५- नि3 च्येन4 क्वो लि3 श्येन्1षङ् मा ? मै2 च्येन्4 क्वो, छिङ्3 नि3 कै3 च्ये4षाव् च्येषाव् ।	क्या तुम ली महोदय से पहले मिले हो ? नहीं, मैं नहीं मिला । कृपया मुझे उनसे परिचित करवा दीजिए ।
६- मै3क्वो2 कन्1 चुङ्1क्वो2 ता3 क्वो चाङ्4 मै2 यौ ?मै2यौ ।	क्या अमेरिका और चीन कभी लड़े हैं ? नहीं, वे नहीं लड़े ।
७- नि3 युङ्4क्वो ख्वाय्4 च् मै2-यौ ? वो3 युङ्4क्वो चि3 ह्वै2 (ल), ख3षृ हाय्2षृ पु2ता ह्वै4 युङ्4 ।	क्या तुमने कभी चौपस्टिक का प्रयोग किया है ? हाँ, कई बार, परन्तु मैं अभी भी (इसके विषय में) पूरी तरह नहीं जानता हूँ ।
८- नि3 छ्यू4 खान्4 था1मन् ल मै2 यौ ? छ्यू4क्वो ल, ख3-षृ4 च्या1लि मै2 रन्2 ।	क्या तुम उन (लोगों) से मिलने गए हो ? हां, परन्तु घर पर कोई नहीं था ।

(ख) सामान्य सापेक्ष समय

१- ने4क रन्2 इ3छ्येन्2 हन्3 ट.वान्4इ च.वो4 षृ4 । था1 हौ4 लाय् यौ3छ्येन्2 ल, च्यु पुट.वान्4 इ च.वो4 षृ4 ल ।	वह व्यक्ति पहले काम करना बहुत चाहता था । बाद में उसके पास पैसा हो गया और वह काम करने का इच्छुक नहीं रहा ।
२- इ3 छ्येन्2 वो3मन् चु4 चाय् न्यु3 ट.वे1 । हौ4लाय् वो3 मन् पान्1 ताव् चळ4 लाय्2 ल ।	पहले हम न्यूयार्क में रहते थे । बाद में यहां आ गए ।
३- नि3 छू.ङ्2छ्येन्2 छाङ्2 ष्वो1 चुङ्1क्वो2 ह्वा4 । नि3 च्3म्मा श्येन्4 चाय्3 पुष्वो1 ल ।	पहले तुम चीनी भाषा बहुत बोलते थे । अब तुम क्यों नहीं बोलते हो ?

४- छु.ङ्२छ्येन्२ वो3 पु रन्४त था। श्येन्४ चा़य्४ वो3मन् षृ हाव्3 फङ् यौ।	पहले मैं उसको नहीं जानता था। अब हम अच्छे मित्र हैं।
५- वो3 पन्3लाय् ये3 ता3-स्वान् छ्यु.४ । हौ४लाय् षृ४छिङ् माङ्२ल, वो3 च्यु पु नङ्२ छ.यू४ल।	मैंने पहले जाने की योजना बनाई थी। बाद में क्योंकि काम बहुत बढ़ गया, मैंने जाने का विचार छोड़ दिया (या, जा नहीं सका)।
६- छ्येन्२ चि3 थ्येन्१ वो3 थ४-प्ये२ माङ्२। चे४ ल्याङ्3-थ्येन् हाव्3 इ त्याळ3ल।	मैं कुछ दिन पहले विशेष तौर से व्यस्त था। इन दो दिनों से कुछ कम व्यस्त हूँ।
७- क्वो४ ल्याङ्3 थ्येन् चा़य्४ खान्४ पा।	कुछ दिनों बाद फिर इस पर विचार करेंगे।

(ग) निश्चित सापेक्ष समय

१- —इ3 छ्येन्२ (पहले,— के पहले)

१- ष्वै४च्याव्४ इ3 छ्येन्, वो3 यौ3 षृ२हौ खान्४ इत्याळ3 षू१	मैं सोने से पहले कभी-कभी थोड़ा पढ़ लेता हूँ।
२- ताव् वाय्४क्वो२ छ्यु.४ इ3-छ्येन्२ वो3मन् तै3 माय्3 पु षाव्3 तुङ्१शि।	विदेश जाने से पहले हमें कुछ वस्तुएं अवश्य खरीदनी चाहिए।
३- नि3 षाङ्४ छ्वान्२ इ3-छ्येन्२ प्ये२ वाङ्४ल श्ये3-शिन्४ काव्४सुङ् वो3 नैं3 थ्येन् चौ3	मुझे तुम जहाज पर सवार होने से पहले (पत्र) लिखना न भूलना कि तुम किस दिन रवाना हो रहे हो।

४- था^{1}मन् पान्^{1}च्या^{1} इ^{3}छ्येन्^{2} चु^{4} चा़य् थ्येन्^{1}चिङ् ।	जगह बदलने से पहले वे थ्येनचींग में रहते थे ।
५- वो^{3}मन् सान्^{1}क ट़ वे^{4} इ^{3}छ्येन्^{2} इ^{2} च्यु^{4} चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} ये^{3} पु^{2} ह्वै ष्वो^{1} । श्येन्^{4}-चा़य्^{4} नि^{3}खान्^{4}, वो^{3}मन् तुङ्^{3} त्वो^{1}षाव् ल।	तीन महीने पहले हम चीनी भाषा का एक शब्द भी नहीं बोल सकते थे । अब आप देखिए, हम कितना समझ सकते हैं ।
६- था^{1} षृ पान्^{4}त्येन्^{3}चुङ्^{1} ई^{3}-छ्येन्^{2} ह्वै^{2}लाय् त ।	वह आधा घंटा पहले वापस आया ।

२- "‥‥ त षृ^{2}हौ" (जब, के समय)

१- चुङ्^{1}क्वो^{2} रन्^{2} छृ^{1}फ़ान्^{4} त षृ^{2}हौ पु^{2} ता आय्^{4} ष्वो^{1} ह्वा^{4} ।	खाना खाते समय चीनी लोग बातचीत करना पसन्द नहीं करते ।
२- प्ये^{2}रन् छाङ्^{4}कळ^{1}त षृ^{2}हौ, पु^{2} याव् ष्वो^{1}ह्वा^{4} ।	जब दूसरे लोग गाना गा रहे हों, हमें बातें नहीं करनी चाहिए ।
३- वो^{3} पा^{1}त्येन्^{3}चुङ्^{1} षाङ्^{4} ख त^{4} षृ^{2} हौ, हाय्^{2} च्य़ वे^{2}त लै^{4} ।	जब मैं आठ बजे कक्षा में जाता हूँ तो मुझे तब भी थकान महसूस होती है ।
४- निन्^{2} छ्येन्^{2} थ्येन् लाय्^{2}खान्^{4} वो^{3} त षृ^{2}हौ, वो^{3} षाङ्^{4} पै^{3}चिङ्^{1} छ़्यू ल ।	जब तुम परसों मुझसे मिलने आए थे तो मैं पेकिंग गया था ।
५- वो^{3} ष्वो^{1} चुङ्^{1}क्वो^{2} ह्वा^{4} त षृ^{2} हौ, छिङ्^{3} नि^{3} प्ये^{2} श्याव्^{4} (ह्वा) वो^{3} ।	जब मैं चीनी भाषा बोलूँ तो कृपया मुझ पर हँसें नहीं ।

३- "..... इ^{3} हौ^{4}" (बाद में, -के बाद)

१- मै^{3} थ्येन् छृ^{1} ऊ^{3} फ़ान्^{4} इ^{3} हौ^{4} वो^{3} तै^{3} ष्वै^{4} इह्वैळ^{2}। पु ष्वै^{4} पुशिङ्^{2}।	दोपहर का खाना खाने के बाद मैं थोड़ी देर अवश्य सोता हूँ। न सोने से काम नहीं चलता।
२- वो^{3}मन् पान्^{1}च्या^{1} इ^{3}हौ^{4} छिङ्^{3} नि^{3} ताव् वो^{3} मन् च्या^{1} लाय्^{2} छृ^{1}फ़ान्^{4}।	जब हम घर बदल लें तो कृपया हमारे घर खाने के लिए आइए।
३- वो^{3} च्.^{4}चि^{3} मिङ्^{2}पायल इ^{3}-हौ^{4}, च्यु रूङ्^{2}इ च्याय्^{1} रन्^{2} ल।	(इसको) स्वयं ठीक से समझने के बाद मैं दूसरों को आसानी से पढ़ा सकता हूँ।
४- था^{1} चौ^{3} ल इ^{3}हौ^{4} वो^{3}मन् च्यु छृ^{1} फ़ान्^{4} ल।	उसके जाने के बाद हमने खाना खाया।
५- तुङ्^{1}शि माय्^{3}ल इ^{3} हौ, वो^{3}-मन् च्यु ताव् छ^{1}चान्^{4} छ्.यू ल।	वस्तुएं खरीदने के बाद हम लोग स्टेशन गए।
६- वो^{3} पान्^{4}त्येन्^{3}चुङ्^{1} इ^{3}हौ^{4} च्यु ह्वै^{3} लाय्^{2}।	मैं आधे घंटे में वापस आ जाऊंगा।
७- पान्^{4} न्येन्^{2} इ^{3} हौ^{4} वो^{3}मन् च्यु याव्^{4} ताव् चुङ्^{1}क्वो^{2} छ्.यू ल।	हम छः महीने बाद चीन जाएंगे।
८- चाय्^{4} क्वो^{4} सान्^{1} क ट.वे^{4} (इ^{3}-हौ^{4}), वो^{3}मन् त चुङ्^{1}क्वो^{2}ह्वा^{4} इत्तिङ्^{4} च्यु पु छ्वो^{4} ल।	और तीन महीने बाद हमारी चीनी भाषा अवश्य अच्छी हो जाएगी।

व्याकरण

२०-१ प्रत्यय 'क्वो^{4}' : क्रियाविधेय वाक्य में जब हम किसी भूतकालिक व्यापार जो एक बार या कई बार हो चुका हो, पर जोर देना चाहते हैं, तो क्रिया के बाद प्रत्यय 'क्वो^{4}' जोड़ते हैं;

था^{1} छ्ूङ्^{2} छ्येन्^{2} लाय्^{2} क्वो	वह पहले आ चुका हैं ।
वो^{1} छ्.यू^{4}क्वो नेक^{4} फ़ान्^{4}-क्वाळ^{3} ।	मैं उस भोजनालय में जा चुका हूँ ।
निन्^{2} खान्^{4}क्वो चे^{4}पन्^{3} षू^{1} मा ?	क्या तुम वह किताब पढ़ चुके हो ?
खान्^{4}क्वो, यौ इ^{4}स्च्चि^{2}ल ।	पढ़ चुका हूँ, बड़ी ही रोचक है ।

हम यह सीख चुके हैं कि प्रत्यय 'ल' का प्रयोग पूर्णता-बोधक स्वरूप सूचित करने के लिए किया जाता है, इसलिये यदि भूतकालिक अनुभव के रूप में किसी व्यापार की पूर्णता पर जोर देना हो, तो 'क्वो^{4}' और 'ल' का प्रयोग साथ-साथ किया जा सकता है । आम तौर से प्रत्यय 'क्वो^{4}' प्रत्यय 'ल' के पहले आता है; जैसे,

नि^{3} ताव्^{4} था च्या छ्.यूल मा ?	क्या तुम उसके घर गये थे ?
छ्.यू^{4}क्वोल ।	हां, गया था ।
चिन्^{1} थ्येन्त पाव्^{4} नि^{3} खान्^{4} ल मा ? खान्^{4}क्वोल । मै^{2} ष^{2}म्मा याव्^{4}चिन्^{3}त षू^{4}	क्या तुम आज का अखबार पढ़ चुके हो ? हाँ, पढ़ चुका हूँ । कोई खास समाचार नहीं है (अथवा कोई महत्वपूर्ण समाचार नहीं है) ।
था^{1} छ्येन्^{2}थ्येन् लाय्क्वोल	वह (गत) परसों आया था ।

निषेधार्थक वाक्य में क्रिया के ठीक पहले ‘मैं^{2}(यौ)’ लगाते हैं, और क्रिया के ठीक बाद प्रत्यय ‘क्वो^{4}’ लगा रहता है । इसमें और पूर्णता बोधक स्वरूप में यह फ़र्क है कि निषेधार्थक वाक्य में ‘क्वो^{4}’ लगाये रखना पड़ता है, लेकिन पूर्णता-बोधक स्वरूप वाले वाक्य में ‘ल’ को नहीं रख सकते; उदाहरण के लिये—

था^{1} मैं^{2} यौ लाय्^{2}क्वो	वह (कभी भी) नहीं आया है।
नि^{3} च़्वो^{4}क्वो फ़ैं^{1}चि^{1} मैं^{2} यौ ? मैं^{2} च़्वो^{4}-क्वो ।	क्या तुम कभी भी हवाई जहाज पर चढ़े हो ? अभी तक नहीं (अथवा कभी भी नहीं चढ़ा हूँ)।

२०-२ ‘छ़ुङ्^{2}छ्येन्^{2}’, ‘हौ^{4}लाय्’, इत्यादि सामान्य काल वाचक शब्द : नीचे दिये संयुक्तपद सामान्यतः भूतकाल या भविष्यकाल की सूचना देते हैं :

छ़ुङ्^{2} छ्येन्^{2}	अतीत में, पहले
श्येन्^{4} चाय्^{4}	अभी, इस समय
ई^{3} छ्येन्^{2}	अतीत में, पहले
ई^{3} हौ^{4}	बाद में, तत्पश्चात्
हौ^{4}लाय्	बाद में, तत्पश्चात्

ये गतिमान् क्रिया-विशेषण हैं, इसलिये ये मुख्य क्रिया के पहले प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

ई^{3}छ्येन्^{2} वो^{3} मैं^{2} छ़ृ^{1}क्वो	मैंने पहले कभी खाना नहीं खाया ।
चुङ^{1} क्वो^{2} फ़ान्^{4} ई^{3}हौ^{4} वो^{3} याव् छाङ्^{2} छ़ृ^{1}	बाद में (अब) अक्सर खाने की इच्छा रखता हूँ (खाना चाहता हूं)।

उपरोक्त काल-वाचक शब्द, क्रिया-विन्यास या किसी और वाक्यांश के बाद भी प्रयुक्त हो सकते हैं, इस प्रकार ये ऐसे विन्यास बन जाते हैं जिससे काल का बोध होता है और इनका प्रयोग क्रिया-विशेषण के रूप में होता है; जैसे,

षृ^{2} ई^{1} त्येन्^{3} ई^{3} छ्येन्^{2} वो याव्^{4} षाङ्^{4} ख^{4}	मैं ग्यारह बजे के पहले कक्षा में जाना चाहता हूँ (या क्लास में जाना चाहता हूँ)।
निन्^{2} षाङ्^{4} छ्वान्^{2} ई^{3}-छयेन्^{2} ख^{3}ई^{3}कै^{3} वो^{3} ई^{2}क शिन्^{4}, वो^{3} श्याङ्^{3} सूङ्^{4} सु_ङ निन्^{2}	(पानी के) जहाज में चढ़ने से पहले मुझे खत दीजियेगा, (क्योंकि) मैं विदा करना चाहता हूँ।
सान्^{1} न्येन्^{2} ई^{3}छयेन्^{2} वो पु^{2}चा़य् चळ	तीन साल पहले मैं यहाँ नहीं था।
पान्^{4} न्येन्^{2} ई^{3} हौ था^{1} च्यु^{4} याव् लाय्^{2} ल	वह छह महीने बाद आएगा।
वो^{3} ताव्^{4}ल चुङ^{1}क्वो^{2} ई^{3}हौ^{4} च्यु^{4} काव्^{1}-शिङ^{4} ल	चीन पहुँचने के बाद मुझे खुशी हुई (अथवा, जब मैं चीन पहुँचा, तब बहुत खुश हुआ)।

इस प्रकार के विन्यास की एक विशिष्टता है कि 'ई^{3}छ्येन्^{2}' के पहले का विन्यास चाहे सकारार्थक हो या निषेधार्थक, लेकिन उसके अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता, इसलिये 'वो^{3} छृफ़ान्^{4} ई^{3}छ्येन्^{2} खान्^{4} पाव्' (मैं खाना खाने के पहले अखबार पढ़ता हूँ), इस वाक्य को इस प्रकार भी लिखा जा सकता है : वो^{3} मै^{2} छृ^{1}फ़ान् ई^{3}छयेन्^{2} खान्^{4} पाव्^{4}। ऊपर की उदाहरणमाला '(ग)' के १-४ नंबर तक के उदाहरणों (जिसमें 'ई^{3} छ्येन्^{2}' है) को भी इसी ढांचे में, बिना अर्थ परिवर्तन के ढाल सकते हैं।

२०-३ 'त^{2}षृ^{4}हौ' (ळ) : यह विन्यास हिन्दी के 'जब' या '— के समय' का समानार्थी है। यह 'छु.ङ^{2}छ्येन्^{2}' इत्यादि कालवाचक शब्दों की तरह किसी शब्द, वाक्यांश या किसी जटिल विन्यास के बाद रखा जाता है, और इसका प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में मुख्यक्रिया के पहले होता है; जैसे,

षाङ्^{४} ख^{४} त षृ^{२}हौ प्ये^{२} ष्वो^{१} इङ्^{१} वेन्^{२}	जब कक्षा चल रही हो तब अंग्रेजी में बात मत करो (अथवा, क्लास के वक्त अंग्रेजी में बात मत करो) ।

(अधिक उदाहरणों के लिये उदाहरणमाला (ग) २ देखिये)

२०-४ सहायक शब्द 'आ' : सहायक शब्द 'आ' के प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कोई मूल परिवर्तन नहीं होता, लेकिन वक्ता के भाव में कुछ हल्का सा परिवर्तन सूचित होता है। 'नि^{3} हाव्^{3} आ' एक ऐसा ही सुप्रचलित वाक्य है जो 'नि^{3} हाव्^{3} आ' की जगह प्रयुक्त होता है। 'लाव्^{3} चाव्^{४} आ' जैसे वाक्य किसी निकट मित्र जैसे व्यक्ति को संबोधित करने में प्रयुक्त होते हैं। इसके कुछ आलंकारिक प्रयोग भी हैं; जैसे,

नि^{3} मैं^{२} काव्^{४} सु वो^{3}, वो^{3} नाळ^{३} चृ^{१}ताव् नि^{3} चा़य्^{४} चळ^{४} आ ।	तुमने मुझे बताया नहीं, मुझे कैसे मालूम हो कि तुम यहां हो।

('नाळ^{3}' का प्रयोग बल प्रगट करने के लिए) ।

परिशिष्ट १

इस पुस्तक में प्रयुक्त मुख्य व्याकरण संबंधी शब्दों की सूची

(कोष्ठक में संक्षिप्त रूप दिये गये हैं)

अंतर्गतार्थक	Inclusive
अपवाद	Exception
अपवृत्त कर्म	Inverted object
अवधि (कालबोधक)	Period (of time)
अस्तित्व	Location
आश्रितार्थक वाक्यांश	Dependent (clause)
आश्रित वाक्य	Conditional sentence
इकाई	Unit
एकान्वयी संज्ञा	Noun in apposition, appositive noun
एक शब्दांशिक शब्द	Mono-Syllabic word
काष्ठा	Pitch
क्रमवाचक अंक	Ordinal number
क्रियापद (क्रि०)	Verb
क्रिया-विशेषण (क्रि० वि०) या क्रियापद-विशेषण	Adverb
क्रिया-कर्म संयुक्त पद (क्रिया० क०)	Verb-object compound
गणनावाचक अंक	Cordinal number
गतिशील क्रिया-विशेषण	Movable adverb
दिशाबोधक	Directional
नियतकालिक व्यापार	Periodic action
निरन्तरताबोधक स्वरूप	Continuous aspect
निश्चयवाचक सर्वनाम	Specifiers (pronouns)
निषेधक	Exclusiveness
निषेधार्थक (वाक्य)	Negative (sentence)
पूर्ण व्यापार	Completed action

पूर्ति	Complement
प्रत्यय	Suffix
प्रयोजन	Purpose
मात्रा	Degree
मापकशब्द (मा०)	Measure word
रीति	Manner
लगभग संख्या	Indefinite numbers
लुप्त संज्ञा	Noun understood
वर्णनात्मक वाक्य	Descriptive sentence
विधानार्थक वाक्य	Declarative sentence
विन्यास	Construction
विशेषण (वि)	Adjective
विशेषण रूपी विशेषता-सूचक, या विशेषण के रूप में प्रयुक्त शब्द	Adjective modifiers
व्यतीत समय	Time spent
शब्दांश	Syllable
शून्यस्वर	Neutral Tone
श्रेणीबद्ध	In series
सकारार्थक वाक्य	Affirmative sentence
सर्वनाम (सर्व०)	Pronoun
सहायक शब्द (स० श०)	Particle
सहायक क्रिया (स० क्रि०)	Auxiliary verb
सापेक्ष योजी	Relative Connective
सापेक्ष समय	Relative Time
सीमावाचक क्रिया-विशेषण	Adverb of extent
संख्या	Number
संज्ञा (सं)	Noun
संबंध सूचक (सं० सू०)	Preposition
संयुक्त पद	Compound
स्वर	Tone

परिशिष्ट-२

पेकिंग-बोली की भाषणध्वनियों की (चीन द्वारा स्वीकृत रोमन लिपि 'फिन्इन्' और नागरीलिपि में तुलनात्मक सारणी)

फिन्इन्	देवनागरी	फिनइन्	दे०ना०
a	आ	cen	छ़न्
ai	आय्	ceng	छ़ङ्
an	आन्	cha	छा
ang	आङ्	chai	छाय्
ao	आव्	chan	छान्
ba	पा	ehange	छाङ्
bai	पाय्	chao	छाव्
ban	पान्	che	छ
bang	पाङ्	chen	छन्
bao	पान्	cheng	छङ्
bei	पै	chi	छृ
ben	पन्	chong	छुङ्
beng	पङ्	chou	छौ
bi	पि	chu	छ़ु
bian	प्येन्	chuai	छ्वाय्
biao	प्याव्	chuan	छ्वान्
bie	प्ये	chung	छ्वाङ्
bin	पिन्	chui	छ्वै
bing	पिङ्	chun	छुन्
bo	पो	chuo	छ्वो
bou	पौ	ci	छ् (थ्छ्)
bu	पु	cong	छुङ्
ca	छ़ा (थ्छा)	cou	छ़ौ
cai	छ़ाय्	cu	छ़ु
can	छ़ोय्	cuan	छ्वान्
cang	छ़ाङ्	cui	छ़्वै
cao	छ़ाव्	cun	छ़ुन्
ce	छ़ (थ्छ)	cuo	छ़्वो

फिन्इन्	दे० ना०	फिलइन्	दे०ना०
da	तां	gan	कान्
dai	ताय्	gang	काङ्
dan	तान्	gao	काव्
dang	ताङ्	ge	क
dao	ताव्	gei	कै
de	त	gen	कन्
dei	तै	geng	कङ्
deng	तङ्	gong	कुङ्
di	ति	gou	कौ
dian	त्येन्	gu	कु
diao	त्याव्	gua	क्वा
die	त्ये	guai	क्याय्
ding	तिङ्	guan	क्वान्
diu	त्यु	guang	क्वाङ्
dong	तुङ्	gui	क्वे
dou	तौ	gun	कुन्
du	तु	guo	क्वो
duan	त्वान्	ha	हा
dui	त्वै	hai	हाय्
dun	तुन्	han	हान्
duo	त्वो	hang	हाङ्
e	अ	hao	हाव्
ei	ऐ	he	ह
en	अन्	hei	है
eng	अङ्	hen	हन्
er	अळ	heng	हङ्
fa	फ़ा	hong	हुङ्
fan	फ़ान्	hou	हौ
fang	फ़ाङ्	hu	हु
fei	फ़ै	hua	ह्वा
fen	फ़न्	huai	ह्वाय्
feng	फ़ङ्	huan	ह्वान्
fo	फ़ो	huang	ह्वाङ्
fou	फ़ौ	hui	ह्वै
fu	फ़ु	hun	हुन्
ga	का	huo	ह्वो
gai	काय्	ji	चि

फिन्इन्	देवनागरी	फिन्इन्	दे० ना०
jia	च्या	leng	लङ्
jian	च्येन्	long	लुङ्
jiang	च्याङ्	lou	लौ
jiao	च्याव्	li	लि
jie	च्ये	lia	ल्या
jin	चिन्	lian	ल्येन्
jing	चिङ्	liang	ल्याङ्
jiong	चियुङ्	liao	ल्याव्
jiu	च्यु	lie	ल्ये
ju	च्यु	lin	लिन्
juan	च्य्वान्	ling	लिङ्
jue	च्य्वे	liu	ल्यु
jun	च्यून्	lu	लु
ka	खा	luan	ल्वान्
kai	खाय्	iun	लुन्
kan	खान्	luo	ल्वो
kang	खाङ्	lu	ल्यु
kao	साव्	luan	ल्य्वान्
ke	ख	lue	ल्य्वे
ken	खन्	m	म्
keng	खङ्	ma	मा
kong	खुङ्	mai	माय्
kou	खौ	man	मान्
ku	खु	mang	माङ्
kua·	ख्वा	mao	माव्
kua	ख्वाय्	mei	मै
kuan	ख्वान्	men	मन्
kuang	ख्वाङ्	meng	मङ्
kui	ख्वै	mi	मि
kun	खुन्	mian	म्येन्
kuo	ख्वो	miao	म्याव्
la	ला	mie	मिन्
lai	लाय्	min	म्ये
lan	लान्	ming	मिङ्
lang	लाङ्	miu	म्यु
lao	लाव्	mo	मो
le	ल	mou	मौ
lei	लै	mu	मु

फिन्इन्	दे० ना०	फिन्इन्	देवनागरी
n	न्	piao	फ्याव्
na	ना	pie	फ्ये
na	नाय्	pin	फिन्
nan	नान्	ping	फिङ्
nang	नाङ्	pu	फु
nao	नाव्	qi	छि
ne	न	qia	छ्या
nei	नै	qian	छ्येन्
nen	नन्	qiang	छ्याङ्
neng	नङ्	qiao	छ्याव्
nong	नुङ्	qie	छ्ये
nou	नौ	qin	छिन्
ni	नि	qing	छिङ्
nian	न्येन्	qiong	छ्युङ्
niang	न्याङ्	qiu	छ्यु
niao	न्याव्	qu	छ्यू
nie	न्ये	quan	छ.य्वान्
nin	निन्	que	छ.य्वे
ning	निङ्	quu	छ.यून्
niu	न्यु	ran	रान्
nu	नु	rang	राङ्
nuan	न्वान	rao	राव्
nuo	न्वो	re	र(ऱ्र)
nu	न्यू	ren	रन्
nue	न.य्वे	reng	रङ्
o	ओ	ri	ऋ
ou	औ	rong	रुङ्
pa	फा	rou	रौ
pai	फाय्	ru	रु
pan	फान्	rua	र्वा
pang	फाङ्	ruan	र्वान्
pao	फाव्	rui	र्वे
pei	फै	run	रुन्
pen	फन्	ruo	र्वो
peng	फङ्	sa	सा
po	फो	sai	साय्
pou	फौ	san	सान्
pi	फि	sang	साङ्
pian	फ्येन्		

फिन्इन्	दे० ना०	फिन् इन्	देवनागरी
sao	साव्	ti	थि
se	स	tian	थ्येन्
sen	सन्	tiao	थ्याव्
seng	सङ्	tie	थ्ये
sha	षा	ting	थिङ्
shai	षाय्	tong	थुङ्
shan	षान्	tou	थौ
shang	षाङ्	tu	थु
shao	षाव्	tuan	थ्वान्
she	ष	tui	थ्वै
shei	षै	tun	थुन्
shen	षन्	tuo	थ्वो
Sheng	षङ्	wa	वा
Shi	षृ	wai	वाय्
shou	षौ	wan	वान्
shu	षू	wang	वाङ्
shua	ष्वा	wei	वै
shuai	ष्वाय्	wen	वेन्
shuan	ष्वान्	weng	वङ्
shuang	ष्वाङ्	wo	वो
shui	ष्वै	wu	उ
shun	षुन्	xi	शि
shuo	ष्वो	xia	श्या
si	स्च	xian	श्येन्
song	सुङ्	xiang	श्याङ्
sou	सौ	xiao	श्याव्
su	सु	xie	श्ये
suan	स्वान्	xin	शिन्
sui	स्वै	xing	शिङ्
sun	सुन्	xiong	श्युङ्
suc	सो	xiu	श्यु
ta	था	xu	श्यू
tai	थाय्	xuan	श्य़्वान्
tan	थान्	xue	श्य़्वे
tang	थाङ्	xun	श्यून्
tao	थाव्	ya	या
te	थ	yai	याय्
teng	थङ्	yan	येन्

फिन्इन्	दे० ना०	फिन्इन्	दे० ना०
yang	याङ्	zhang	चाङ्
yao	याव्	zhao	चाव्
ye	ये	zhe	च
yi	इ	zhei	चै
yin	इन्	zhen	चन्
ying	इङ्	zheng	चङ्
yo	यो	zhi	चृ
yong	युङ्	zhong	चुङ्
you	यौ	zhou	चौ
yu	य़ु	zhu	चु
yuan	य़्वान्	zhua	च्वा
yue	य़्वे	zhuai	च्वाय्
yun	य़ुन्	zhuan	च्वान्
za	च़ा	zhuang	च्वाङ्
zai	च़ाय्	zhui	च्वै
zan	च़ान्	zhun	चुन्
zang	च़ाङ्	zhuo	च्वो
zao	च़ाव्	zi	च़्
ze	च़् (त्स्)	zong	च़ुङ्
zei	च़ै	zou	च़ौ
zen	च़न्	zu	च़ु
zeng	च़ङ्	zuan	च़्वान्
zha	चा	zui	च़्वै
zhai	चाय्	zun	च़ुन्
zhan	चान्	zuo	च़्वो

परिशिष्ट ३

वर्णानुक्रमिक शब्द सूची

चीनी शब्द	संज्ञा, विशेषण आदि पद संक्षिप्त रूप में	अर्थ	पाठ संख्या
अळ4	(ग० वा० अं)	दो	३
अळ2 च्	(सं)	बेटा, पुत्र	६
अळ4षृ2	(ग० वा० अं)	बीस	३
अळ4षृ2इ1	(ग० वा० अं)	इक्कीस	३
आ	(स० श०)	वाक्य प्रत्यय	२०
आय्4	(क्रि०)	प्यार करना	७
आय्4	(स० क्रि०)	पसन्द करना या चाहना	७
इ1	(ग० वा० अं)	एक	३
इ2कुङ्4	(क्रि० वि०)	कुल	६
इ2ख्वाळ4	(सं)	एक साथ	१४
इ2ख्वाळ4	(क्रि० वि०)	एक साथ	१४
इङ्1ताङ्1	(स० क्रि०)	चाहिए, उचित	१५
इङ्1वेन्2	(सं)	अंग्रेजी भाषा	१
इ3चिङ्	(क्रि० वि०)	पहले ही	१२
इ3च्	(सं)	कुर्सी	४
....इ3छ्येन्2	(गतिशील क्रि० वि०)	पहले	२०
इ3छ्येन्2	(गतिशील क्रि० वि०)	'',-के पहले	२०
इ2तिङ्4	(क्रि० वि)	जरूर, आवश्यक, निश्चय ही	११
इ4त्येन3चुङ्1		एक बजे	१६
इ4त्येन्3षृ2उ3फ़न्1 (अथवा इ4त्येन्3, ई2ख4)		सवा बजे या एक बज कर १५ मिनट	१६
इ4त्येन3षृ2फ़न्1		एक दस (एक बज कर दस मिनट)	१६
इ4थ्येन्1	(सं, क्रि० वि०)	एक दिन, पूरा दिन	१५
इन्4 तु4	(सं)	भारत	२
इन्1 वै4	(गति० क्रि० वि०)	क्योंकि, कारण से	१०
इ2 ये4	(क्रि० वि०)	एक रात, पूरी रात	१६

इ^{2} लु^{4} फिङ्^{2} आन्^{1}	(मुहावरेदार वाक्य)	यात्रा प्रसन्नता पूर्वक हो (सकुशल हो)	२०
इ^{4}स च्	(सं)	अर्थ, मतलब	८
इ^{3} हौ^{4}	(गतिशील क्रि० वि०)	इसके (या उसके) पश्चात्	२०
…इ^{3} हौ^{4}	(गतिशील क्रि० वि०)	बाद में……, के बाद	२०
इह्वैळ^{3} (अथवा इ^{1}ह्वैळ^{4})	(सं क्रि० वि०)	एक क्षण	१६
उ^{3}	(ग० वा० अं)	पांच	३
उ^{1} च्	(सं)	कमरा	१०
उ^{3}फ़ान्	(सं)	दोपहर का खाना	१९
ऋ^{4} च्	(सं)	दिन, एक विशेष दिन	१९
क^{1}क	(सं)	बड़ा भाई	८
क (ग)	(मा० श०)	प्राणियों अथवा वस्तुओं से संबद्ध मापक शब्द	४
कन्	(सं० सू०)	साथ, और	१४
क^{1} (ळ)	(सं)	गाना	७
काङ्^{1} (काङ्)	(क्रि० वि०)	अभी, इसी मिनट	१९
काङ्^{1}छाय्^{2}	(क्रि० वि०)	कुछ ही क्षण पहले	१९
काव्^{1}	(वि०)	लम्बा, ऊँचा	१
काव्^{1} शिङ्^{4}	(वि०)	प्रसन्न	१८
काव्^{4}सु (ङ)	(क्रि०)	बताना, सूचित करना	१९
कुङ्^{1}फ़ु	(सं)	अवकाश, फ़ुरसत	१४
कु^{4}ष्	(सं)	कहानी	१२
कै^{3}	(सं सू०)	लिये, के लिये, को	१४
कै^{3}	(क्रि०)	देना	३
कौ^{4}	(वि०)	काफी, पर्याप्त, यथेष्ठ	६
कौ^{4}ल		बहुत है, काफी हैं, पर्याप्त है	१४
क्वान्^{1}(षाङ्)	(क्रि०)	बंद करना ('खाय्^{1}' का विलोम)	१६
क्वै^{4}	(वि०)	कीमती	२
क्वै^{4}शिङ्^{4}		आपका शुभ (कुल) नाम ?	५

क्वो^{2}	(सं)	देश, राज्य	५
क्वो^{4}	(क्रि०)	गुजरना, अतीत	१९
क्वो^{4}	(स० श०)	अनुभव सूचक क्रिया प्रत्यय	२०
ख^{3}	(क्रि० वि०)	वास्तव में, अवश्य, फिर भी	१९
—ख^{4}	(मा०)	१५ मिनट	१६
—ख^{4}	(मा०)	पाठ के लिए प्रयुक्त	१५
ख^{3}इ^{3}	(सं० क्रि०)	सकना, सकना (आज्ञा मांगना या देना)	७
ख^{4}छि	(वि०)	विनम्र होना, शराफ़त दिखाना	७
ख^{4}थिङ्^{1}	(सं)	बैठक (मेहमानों का कमरा)	१६
ख^{3}षृ	(गति० क्रि० वि०)	लेकिन	४
खान्^{4}	(क्रि०)	देखना, मुलाकात करना	११
खान्^{4}	(क्रि०)	देखना, सोचना, विचारना	२०
खान्^{4}	(क्रि०)	देखना, पढ़ना (अखबार आदि)	२
खान्^{4}च्येन्	(क्रि०)	देखना	१८
खाय्^{1}	(क्रि०)	खोलना, चलना या चलाना (गाड़ी, जहाज इत्यादि)	१५
खु^{1}	(क्रि०)	रोना	१८
खौ^{3} ताळ	(सं)	जेब	१७
ख्वाय्^{4}	(मा०)	डालर	६
—ख्वाय्^{4}	(मा०)	रुपये पैसे के लिए प्रयुक्त	१५
ख्वाय्^{4}	(वि०)	तेज, जल्दी	१६
	(क्रि० वि०)	जल्दी	१६
ख्वाय्^{4}.च्	(सं)	चौपस्टिक (चीन देश के भोजन में प्रयुक्त होने वाली सलाइयां)	१४
—च	(स० श०)	क्रिया-प्रत्यय, कार्य जारी है सूचित करने के लिये	१७
चङ्^{4} (चाय्)	(क्रि० वि०)	(किसी काम के) बीच में	१७
चन्^{1}	(क्रि० वि०)	सचमुच, ठीक	७

चळ^4	(सं)	यहाँ	१०
चाङ्^{1}	(मा०)	कागज़, चित्र, मेज़ आदि के लिये मापक शब्द	६
चान्^{4}	(क्रि०)	खड़ा होना	१६
चान्^{4}छिलाय्	(क्रि०)	खड़ा होना, खड़ा हो जाओ	११
चाव्^{3}	(क्रि०)	ढूंढ़ना, खोजना	१५
चि^{3}	(नि० सर्व०)	कितना ?	१३
चिन्^{4}	(क्रि०)	अन्दर जाना	१६
चिन्^{4}छङ्^{1}	(क्रि० क०)	शहर के अंदर जाना	१६
चिन्^{1}थ्येन	(सं, क्रि० वि०)	आज	१२
चिन्^{1}न्येन्^{2}	(सं, क्रि० वि०)	इस वर्ष	१३
शि^{2}ल	(सं श०)	विशेषणों का प्रत्यय, अधिकतम मात्रा सूचक	१६
चु^{4}	(क्रि०)	रहना, वास करना	१५
चुङ्^{1}उ^3	(क्रि० वि०)	दोपहर	१६
चुङ्^{1} क्वो^{2}	(सं)	चीन (देश)	२
चुङ्^{1}थौ	(सं)	(एक) घण्टा	१८
चुङ्^{1}फ़ान्^{4}	(सं)	दोपहर का भोजन	१२
चृ^{3}	(सं)	कागज़	६
चृ^{1}ताव्	(क्रि०)	जानना	५
चे^{4} (च^4)	(नि० वा० सर्व०)	यह, (यहाँ)	४
च्या^{1}	(सं)	घर, परिवार	१०
च्याव्^{1}	(क्रि०)	पढ़ाना	९
च्याव्^{4}	(क्रि०) (सं०सू०)	बुलाना (किसी को) बताना, आज्ञा देना, करने देना	१६
च्याव्^{4}	(यो०क्रि०)	नाम होना	५
च्याव्^{1}षू^{1}	(क्रि०क०(	अध्यापन करना	९
च्यु^{3}	(ग०वा०अं०)	नौ	३
च्यु^{3}	(सं)	मदिरा, शराब	९
च्यु^{4}	(क्रि०वि०)	तब	१५
च्यु^{4}	(क्रि०वि०)	केवल, फ़ौरन, अभी	६
च्यु^{4}	(क्रि०वि०)	तुरन्त	१८
च्ये^{1}	(सं०)	रास्ता, मार्ग, रोड	११
च्ये^{3}च्ये	(सं०)	बड़ी बहन	८
च्येन्^{4}	(क्रि०)	देखना, मिलना ('खान्^{4}' से अधिक औपचारिक)	१६
च्ये^{4}षाव्^{4}	(क्रि०)	परिचय करना	२०

च़य^{4}	(मा०)	शब्द के लिये प्रयुक्त मापक शब्द	१४
च़यू^{4}च़	(सं०)	वाक्य	१४
च्ट़वे^{2}त	(क्रि०)	अनुभव करना, विचारना	२०
च्यो^{1}च़्	(सं)	मेज़	४
.च्^{4}	(सं)	अक्षर (लिखा हुआ अक्षर), चीनी रेखा-अक्षर	७
.च्^{4}चि^{3}	(सं)	स्वयं, अपने आप	२०
च़^{3}म्मा	(क्रि०वि०)	कैसे	११
च़^{3}म्मा	(क्रि०वि)	क्यों ? ऐसा कैसे है कि	१८
च़^{3}म्मा पान्^{4}	(मुहावरेदार वाक्य)	इसके बारे में क्या हो सकता है ?	१६
च़म्^{3} (मा) ल	(क्रि०)	क्या हुआ ? क्या मामला है ?	१८
चाय्^{4}	(सं०सू०)	पर, अन्दर	१०
चाय्^{4}	(क्रि०)	पर होना, अंदर होना	१०
चाय्^{4}	(क्रि०वि०)	फिर (भविष्य में)	१७
चाय्^{4} च्येन्^{4}		नमस्ते (अथवा फिर मिलेंगे)	६
चाव्^{3}	(वि०)	शीघ्र होना	१६
चाव्^{3}फ़ान्	(सं०)	सबेरे का भोजन	१२
चाव्^{3}षाङ्	(सं०,क्रि०वि०)	सबेरा	१२
चौ^{3}	(क्रि०)	चलना, जाना, प्रस्थान करना	१२
.च्वै^{4}	(क्रि०वि०)	अधिकतम, —तम	६
.च्वो^{4}	(क्र०)	करना, बनाना	७
.च्वो^{4}	(क्रि०)	बैठना	११
.च्वो^{4}	(सं०सू०)	से (वाहन से), चढ़कर (वाहन)	११
.च्वो^{2}थ्येन्	(सं०, क्रि०वि०)	कल (भूतकाल)	१२
.च्वो^{4}श्या	(क्रि०)	बैठ जाना, बैठ जाओ	११
छ^{1}	(सं)	गाड़ी	११
छ ङ्^{2}	(सं)	शहर	१०
छ^{1} चान्^{4}	(स)	स्टेशन	१३
छा^{2}	(सं)	चाय	६
छा^{4}	(क्रि० वि०)	कम (होना)	१६
छाङ्^{4}	(क्रि०)	गाना	७
छाङ्^{2} (छाङ्^{2})	(क्रि० वि०)	प्रायः (हमेशा)	६

छा[१] च़्	(सं)	काँटा	१४
छा[४]पुत्वो[१]	(मुहावरेदार वाक्य)	लगभग	१६
छि[१]	(ग० वा० अं०)	सात	३
छिङ्[3]	(क्रि०)	निमंत्रित करना, कृपया, पूछना, निवेदन करना	
छिङ्[3] च़वो[४]		बैठ जाइए, बैठिए, बैठ जाओ, बैठो	११
छिङ्[१] छु	(वि०)	स्पष्ट (अर्थ में)	१८
छि[४] छ[१]	(सं०)	मोटरगाड़ी	११
छि[४] छ[१] चान्[४]	(सं०)	बसस्टाप या अड्डा	१३
छि[3] लाय्	(क्रि०)	खड़ा होना, उदय होना	१९
छु[१]	(क्रि०)	बाहर जाना	१६
छु[२] फ़ाङ्[२]	(सं)	रसोईघर	१८
छु़[१] मन्[२]	(क्रि० क०)	जाना, (घर के बाहर जाना)	१६
छृ[१]	(क्रि०)	खाना	७
छयेन्[१]	(संख्या)	हजार	६
छयेन्[२]	(स)	धन, पैसा (पैसे)	३
छ्येन्[२]	(सं०)	सामने, पहलेवाला	२०
छयेन्[२] थौ	(सं०)	सामने	१०
छ्येन्[२] थ्येन्[१]	(गतिशील क्रि० वि०, सं०)	परसों, (बीता हुआ)	२०
छ् यू़[४]	(क्रि०)	जाना (वहाँ)	११
छ्यू़[४] न्येन्[२]	(सं०, क्रि०वि०)	पिछले वर्ष	१३
छ्वान्[२]	(सं०)	नाव	११
छ् वाङ्[१]हु	(सं)	खिड़की	१६
छ़्[४]	(मा०)	एक समय, अवसर (बार)	१८
छा़य्[४]	(सं)	हरी सब्जियाँ, चीनी खाने की डिश	१४
छ़ू ङ्[२]	(सं० सू०)	से	११
छ़ूङ्[२] छ्येन्[२]	(क्रि० वि०)	पहले	१८
छ़ू ङ्[१] मिङ्	(वि०)	बुद्धिमान होना, चालाक	९
त (द)	(स० श०)	संज्ञा और क्रियापद विशेषता सूचक प्रत्यय	८
तङ्[3]	(क्रि०)	प्रतीक्षा करना	१६
त[२] लि[3]	(सं)	दिल्ली	११
ता[४]	(वि०)	बड़ा	४

ता^{3} चाङ्^{4}	(क्रि० क०)	लड़ना, युद्ध करना	२०
ताय्^{4}	(क्रि०)	पहनना (घड़ी, टोप आदि)	८
ताय्^{4}	(क्रि०)	साथ ले जाना या साथ लाना	१७
ता^{4} रन्^{2}	(सं)	जवान, प्राप्तवयस्क (आदमी), बालिग़	७
ताव्^{4}	(क्रि)	पहुंचना	१३
ताव्^{4}	(सं० सू०)	तक	११
ताव्^{1} च्	(सं)	छुरी, चाकू	१४
ता^{3} स्वान्	(क्रि०)	योजना बनाना	२०
ति^{4}	(उपसर्ग)	क्रमवाचक अंक बनाने के लिए प्रयुक्त	१३
ति^{4} ति	(सं)	छोटा भाई	८
ति^{4} फ़ाङ्	(सं)	स्थान	१०
ति^{3} श्या	(सं)	नीचे	१०
तुङ्^{3}	(क्रि०)	समझना	४
तुङ्^{1} शि	(सं)	वस्तु, चीज, विषय	५
तै^{3}	(स० क्रि०)	अवश्य,	१५
तौ^{1}	(क्रि० वि०)	सब, सारा, उभय, दोनों	२
— त्येन्^{3}	(मा०)	घंटा	१९
त्येन्^{3} शिन्	(सं)	स्वल्पाहार	१८
त्वै^{4}	(सं० सू०)	ओर, की, विषय में	१४
त्वै^{4}	(वि०)	ठीक (होना), शुद्ध (होना)	४
त्वै^{4} पुछि^{3}	(मुहावरेदार कथन)	क्षमा कीजिये, मुझे खेद है।	१६
त्वै^{4} ल		बिल्कुल ठीक है (सहमति देना)	१३
त्वो^{1}	(वि०)	अधिक, बहुत	८
त्वो^{1} षाव्	(संख्या)	कितना	६
थ^{4} प्ये^{2}	(वि०)	विशेष(होना), भिन्न (होना)	२०
था^{1}	(सर्व०)	वह, उसे	१
थाङ्^{1}	(सं०)	सूप, झोल	१४
थाङ्^{2}	(सं)	चीनी, चीनी से बनी मिठाई	७
थान्^{2}	(क्रि०)	बातचीत करना	१६
थान्^{2} ह्वा^{4}	(क्रि० क०)	बातचीत करते रहना	१६
था^{1} मन्	(सर्व०)	वे, उन्हें	१

थाय्^{४}	(क्रि० वि०)	ज्यादा, अतिरिक्त, अत्यधिक	२
थाय्^{४}-थाय्	(सं)	महिला, साहिबा, महोदया, बीबी, श्रीमती, पत्नी के लिए शिष्ट प्रयोग	५
थि^{४}	(सं० सू०)	के बदले, के स्थान पर	१८
थिङ्^{१} कु^{४} षृ	(क्रि० क०)	कहानी या कथा सुनना	१२
थिङ्^{१} च्येन्	(क्रि०)	सुनना	१८
थिङ्^{१} ष्वो^{१}		सुनने में आया कि	१४
थौ^{२}	(सं)	सिर	१७
थौ^{२}	(उपसर्ग)	प्रथम	१८
थ्येन्^{१}	(स)	दिन	१३
थ्येन्^{१} थ्येन्^{१}	(क्रि० वि०)	प्रतिदिन	१३
न	(स० श०)	सकारार्थक वाक्यों में कार्य चलते रहना सूडित करने वाला शब्द	१०
नङ्^{२}	(स० क्रि०)	सकना, समर्थ या योग्य होना	७
ना^{२}	(क्रि०)	पकड़ना (चीज़ की) ले जांना (छोटी चीज़ को)	१७
ना^{४}	(नि० सर्व०)	वह	१३
ना^{२} छि क्षाय्	(क्रि०)	उठाना	१७
नान्^{२}	(सं, वि,)	पुरुष संबंधी, पुरुष (पुंल्लिग)	५
नान्^{२}	(वि)	कठिन होना	६
नाळ^{3}	(सं)	कहाँ ?	१०
नाळ^{४}	(सं)	वहाँ	१०
नि^{3}	(सर्व०)	तुम (एक व०)	१
नि^{3} मन	(सर्व०)	तुम (लोग), तुम्हें	१
ने^{४}(ना^{४})	(नि० वा० सर्व०)	वह (वहाँ), दूसरा	४
नै^{3}	(नि० वा० सर्व०)	कौन सा	४
न्येन्^{२}	(सं)	वर्ष	१३
न्येन्^{४}	(क्रि०)	पढ़ना (उच्चारण करके), पढ़ाई करना	६
न्येन्^{४} षू^{१}	(क्रि० क०)	पढ़ाई करना स्कूल जाना	६
न्यू^{3}	(सं, वि०)	स्त्री, स्त्रीजाति संबंधी (स्त्रीलिंग)	५

न्यू[3] अळ		बेटी, पुत्री	९
पन्[3]	(मा० श०)	प्रति, किताबों से संबद्ध मापक शब्द	४
पन्[3] लाय्[2]	(गतिशील क्रि०वि०)	मूलतः, प्रारम्भ से	२०
पा	(स० श०)	वाक्य प्रत्यय— प्रार्थनासूचक	१६
पा	(स० श०)	सम्भावना के अर्थ में प्रयुक्त	१३
पा[1]	(ग० वा० अं०)	आठ	३
पा[3]	(सं०सू०)	कर्म को क्रियासे पहले रखने में प्रयुक्त	१७
पाङ्[1] (चू)	(क्रि०)	सहायता करना (किसी की)	१७
पाङ्[1] माङ्[2]	(क्रि० क०)	सहायता देना	१७
पान्[1]	(क्रि०)	हटाना (निवास स्थान बदलना,	१६
पान्[1]	(क्रि०)	हटाना, ले जाना (भारी सामान एक जगह से दूसरी जगह),	१७
पान्[4]	(संख्या)	आधा	६
पान्[1] च्या[1]	(क्रि० क०)	अपना निवास स्थान बदलना	१६
पान्[4] थ्येन्[1]	(सं०, क्रि० वि०)	देर तक	१५
पाय[3]	(संख्या)	सौ	६
पाय्[2]	(वि०)	सफेद होना, सफेद	१९
पाय्[2] थ्येन्	(क्रि० वि०)	दिन के समय, दिन में	१९
पाव्[4]	(सं०)	अखबार, समाचार-पत्र	२
पि[3]	(सं०)	कलम, पेंसिल, कोई भी लेखनी	२
पिङ्[4]	(सं०)	बीमारी	१८
पिङ्[4] ल	(क्रि०)	अस्वस्थ या बीमार होना या हो गया	१८
पु[4]	(क्रि० वि०)	मत, नही	१
पु[4] इ तिङ्[4]	(क्रि० वि०)	अनिश्चित, अनावश्यक	११
पु[4] कान्[3] ताङ्[1]	(मुहावरेदार वाक्य)	तुम बिना बात मेरी प्रशंसा करते हो, धन्यवाद	२०
पु[2] छ्‌वो[4]	(वि)	अच्छा है, ठीक हैं, बढ़िया	१४
पु[2] ता[4]	(क्रि० वि०)	बहुत नहीं	१८
पु[2] पि[4]	(स० क्रि०)	आवश्यकता नहीं, प्रयोजन नहीं	१५

(ना^{४}) पु^{२} याव्^{४} चिन्^{३}		कुछ भी नहीं, कोई बात नहीं	१३
प्^{२} युङ्^{४}	(स० क्रि०)	कोई उपयोग या लाभ नहीं, निरर्थक	१५
पु षु^{१} फ़ु	(वि०)	कष्ट में होगा, अस्वस्थ	
पु^{२} ह्वाय्^{४}	(वि०)	बुरा न होना, अच्छा होना	१८
पै^{३} चिङ्^{१}	(सं०)	पेकिंग (चीन की राजधानी	१२
प्याव्^{३}	(सं०)	कलाई घड़ी	३
प्ये^{२}	(स० क्रि०)	नहीं (आज्ञासूचक पु^{२} याव् का संक्षिप्त रूप)	१५
प्ये^{२} त	(सं०)	दूसरा, और (लोग या वस्तु, चीज़)	१२
प्ये^{२} रन्	(सं०)	दूसरा आदमी, और लोग या आदमी	१२
फङ्^{२} यौ	(मँ)	दोस्त, मित्र	४
फाव्^{३}	(क्रि०)	दौड़ना	१६
फिङ्^{२} छाङ्^{२}	(वि०)	साधारण (होना)	२०
—फु^{४}	(सं)	दुकान, भण्डार	१०
फु^{४} च्	(सं)	दुकान, भण्डार	१०
फ्येन्^{२} ई	(वि०)	सस्ता	८
—फ़ङ्^{१}	(मा०)	पत्र के लिए प्रयुक्त	१५
फ़न्^{१}	(मा०)	सेन्ट	६
—फ़न्	(मा०)	मिनट	१९
फ़ाङ्^{४}	(क्रि)	रखना, जाने देना	१७
फ़ाङ्^{२} च्	(सं)	मकान, इमारत	१०
फ़ाङ्^{४} श्या (लाय्)	(क्रि०)	रखना	१७
फ़ान्	(सं)	खाना (पके हुए चावल)	७
फ़ान्^{४} क्वाळ^{३}	(सं)	जलपान-गृह, रेस्टोरेंट	१०
फ़ान्^{४} थिङ्^{१}	(सं)	खाने का कमरा	१७
फु^{४} छिन्	(सं)	पिता	८
फ़ु^{४} मु	(सं)	पिता-माता	८
फ़े^{१} चि^{१}	(सं)	हवाई जहाज	११
मन्^{२}	(सं)	दरवाजा	१६
मा	(स० श०)	प्रश्नार्थक सहायक शब्द	१
माङ्^{२}	(वि०)	व्यस्त (होना)	१
मान्^{४}	(वि०)	धीरे	१६

माय^3	(क्रि)	खरीदना	२
माय्^{4}	(क्रि)	बेचना	६
माय्^{3} माय्	(सं)	व्यापार (खरीदना बेचना)	७
माव्^{2}	(मा)	डालर का एक दसाँश दस सेन्ट	६
माव्^{4} च्	(सं)	टोप	८
मिङ्^{2} थ्येन्	(सं०, क्रि० वि०)	कल (भविष्यत्)	१२
मिङ्^{2} न्येन्	(सं०, क्रि० वि०)	अगले वर्ष	१३
मिङ्^{2} पाय्	(क्रि०)	समझना (स्पष्ट रूप से)	१८
मु^{3} छिन्	(सं)	माता	८
मै^{3}	(संख्या)	प्रत्येक	१८
मै^{3} क्वो^{2}	(सं)	अमरीका (सं० राष्ट्र)	२
मै^{4} मै	(सं)	छोटी बहन	८
मै^{2}	(क्रि)	(निषेधार्थक उपसर्ग	१२
मै^{3} यौ^{3}		के पास नहीं होना (यौ^{3} का निषेधार्थक रूप)	३
मै^{2} ष^2 म्मा		कोई बात नहीं	१२
याव्^{4}	(स० क्रि०)	चाहना, चाहिए	११
याव्^{4}	(क्रि०)	चाहना	२
याव्^{4} चिन्^{3}	(वि०)	आवश्यक (होना)	१३
याव्^{4} षृ	(क्रि० वि०)	यदि	१६
युङ्^{4}	(सं० सू०)	से	१४
युङ्^{4}	(क्रि०)	प्रयोग या इस्तेमाल करना, काम में लाना	१४
ये^{3}	(क्रि० वि०)	भी, और	३
—ये^{4}	(मा०)	रात	१६
ये^{4} लि	(क्रि० वि०)	रात के समय, रात में	१६
यौ^{3}	(क्रि०)	के पास होना	३
यौ^{3}	(क्रि०)	होना (अस्तित्वसूचक)	८
यौ^{4}	(क्रि० वि०)	फिर (भूत में)	१७
यौ^{3} त		कुछ, कोई-कोई	४
यौ^{3} (त) षृ^{2} हौ	(क्रि० वि०)	कभी-कभी	१३
यौ^{3} मिङ्^{2}	(वि०)	प्रसिद्ध (होना)	२०
यौ^{3} पिङ्^{4}	(क्रि०)	अस्वस्थ होना	१८
यौ^{3} युङ्^{4}	(वि०)	उपयोगी होना, लाभदायक	१४
यू^{2}	(सं०)	मछली	१४

य्वान्^{4}इ	(स० क्रि०)	चाहना, इच्छुक होना	७
य्वे^{4}	(सं०)	महीना	१३
रन्^{2}	(सं०)	आदमी	४
रन्^{4} त	(क्रि०)	जानना, पहचानना, परिचित होना	२०
रन्^{2} रन्^{2}		हर आदमी (केवल कर्त्ता के रूप में), प्रत्येक आदमी	४
रन्^{4} षृ	(क्रि०)	जानना, पहचानना, परिचित होना	२०
रूङ्^{2} इ	(वि०)	आसान होना, सरल	६
रौ^{4}	(सं)	मांस	१४
ल	(प्रत्यय व सहायक शब्द)		१२
लाय^{2}	(क्रि०)	आना (यहां)	११
लाव्^{3}	(वि०)	पुराना (वर्षों में)	८
लाव्^{3}	(क्रि० वि०)	सदैव, जारी रखना	२०
लाव्^{2} च्या^{4}	(मुहावरेदार कथन)	क्या मैं आपको कष्ट दे सकता हूं ? आभारी हूं।	१७
लि^{4} ख^{4} (च्यु)	(क्रि० वि०)	तुरन्त	१८
लिङ्^{2}	(संख्या)	शून्य	६
लि^{3} थौ	(सं)	अन्दर	१०
लि^{3} पाय्^{4}	(सं)	सप्ताह	१३
लु^{4}	(सं)	सड़क	१६
लौ^{2}	(सं)	कई तल्ले की इमारत	१०
लौ^{2} षाङ्	(सं)	ऊपर के तल्ले पर	१०
ल्याङ्^{4}	(वि०)	प्रकाशित या चमकीला होना (अंधकार के विपरीत)	१९
ल्यु^{4}	(ग० वा० अं०)	छः	३
ल्यू^{3}क्वान्^{3}	(सं)	होटल	३५
वाङ्^{4}	(क्रि०)	भूलना	१८
वान्^{3}	(सं)	कटोरी	१४
वान्^{3}	(वि०)	देर होना	१९
—वान्^{3}	(मा०)	कटोरी	१४
वान्^{4}	(संख्या)	दस हजार	६
वान्^{3} फ़ान्	(सं)	दिन का प्रधान भोजन, दिन का अन्तिम भोजन	१२
वान्^{3} षाङ्	(सं, क्रि० वि०)	शाम, रात	१२
वाय्^{4} थौ	(सं)	बाहर	१०

वाळ[2]	(क्रि०)	खेलना	१४
वेन्[4]	(क्रि०)	पूछना	५
वेन्[4]......हाव्[3]		किसी की कुशलता के बारे में पूछताछ करना	१४
वै[4]	(मा०)	व्यक्तियों के लिए नम्रताबोधक मापक शब्द	६
वै[4] ष[2]म्मा	(गति० क्रि० वि०)	क्यों ? (किस कारण से)	१०
वो[3]	(सर्व०)	मैं, मुझे	१
वो[3] मन्	(सर्व०)	हम (लोग), हमें	१
शिङ्[2]	(वि०)	काफी है, ठीक हैं, पर्याप्त है	११
शिङ्[4]	(यो० क्रि०)	का (कुल) नाम	५
शिङ्[4]	(सं)	कुलनाम	५
शिन्[1]	(सं)	कुलनाव भारतीय पदवी 'सिह' के लिये प्रयुक्त	७
शिन्[4]	(सं)	पत्र, चिट्ठी	१४
शि[1] वाङ्[4]	(क्रि०)	आशा करना कि, की आशा, आशा, उम्मीद	१३
शि[3] ह्वान्[1]	(क्रि०)	पसंद करना या होना	३
शि[3] ह्वान्[1]	(क्रि०)	पसंद करना	८
श्या[4]	(क्रि०)	नीचे जाना या आना	१५
श्या[4] उ[3]	(क्रि० वि०)	दोपहर के बाद	१६
श्याङ्[3]	(क्रि०)	सोचना, बारे में सोचना, इच्छा करना	६
श्याङ्[3]	(स० क्रि०)	विचार करना, योजना बनाना, चाहना	६
श्याङ्[1]श्या	(सं)	देश (ग्रामीण क्षेत्र)	८
श्या[4] थौ	(सं)	नीचे	१०
श्याव्[3]	(वि०)	छोटा	४
श्याव्[4]	(क्रि०)	हंसना या मुस्कराना	२०
श्याव्[3]च्ये	(सं)	कुमारी, पुत्री या किसी की लड़की के लिए शिष्ट प्रयोग	५
श्याव[4] (ह्वा)	(क्रि०)	हंसना (किसी पर)	२०

श्याव्4 ह्वा	(सं०)	मज़ाक	२०
—श्ये1	(मा)	मात्रा, कुछ	६
श्ये3	(क्रि०)	लिखना	७
श्येन्1	(क्रि० वि०)	पहले	१४
श्येन्4चाय्4	(क्रि० वि०)	अभी, इसी वक्त	७
श्ये4श्ये	(क्रि०)	धन्यवाद देना या करना, धन्यवाद	३
श्येन्1षङ्	(सं)	महाशय, साहब, जी, अध्यापक, भद्रपुरुष, सज्जन, श्रीमानजी, पति के लिये शिष्ट प्रयोग	५
श्य़.वे2	(क्रि०)	पढ़ना, सीखना	८
श्य़.वे2श्याव्4	(सं०)	स्कूल	१०
श्य़.वे2षङ्	(सं)	विद्यार्थी सीखने वाला)	८
षङ्1छि4	(क्रि०)	नाराज़ होना	१८
षन्3	(सं)	भारतीय पदवी 'सेना के लिये प्रयुक्त	१५
षम्2मा	(सं)	क्या	५
षाङ्4	(क्रि०)	जाना (ऊपर को) चढ़ना, इत्यादि	१५
षाङ्4उ3	(क्रि० वि०)	दोपहर से पहले	१६
षाङ्4ख4	(क्रि० क०)	कक्षा में (पढ़ने) जाना	१५
षाङ्4च्ये1	(क्रि० क०)	बाजार जाना	१५
षाङ्4छ1	(क्रि० क०)	गाड़ी पर चढ़ना	१५
षाङ्4थौ	(सं)	ऊपर	१०
षाङ्4लौ2	(क्रि० क०)	मकान का ऊपरी खंड, (मंजिल) पर चढ़ना या जाना	१५
षाङ्4श्य़.वे2	(क्रि० क०)	स्कूल जाना, स्कूल में पढ़ना	१५
षाव्3	(वि०)	मात्रा में कम, कम	८
षाव्ळ2	(सं)	चम्मच	१४
षू1	(सं)	किताब, पुस्तक	२
षू1 फ़ाङ्2	(सं)	पढ़ने का (किताबें रखने का) कमरा	१७
षु1फ़ु	(वि०)	आराम से (रहना)	१८
षृ2	(ग० वा० अं)	दस	३
षृ4	(यो० क्रि०)	होना (है, हैं, हूँ)	५

षृ^{२} अळ^{४}	(ग० वा० अं)	बारह	३
षृ^{२}इ^{१}	(ग० वा० अं)	ग्यारह	३
षृ^{४} (छिङ्)	(सं)	काम	७
षृ^{२}हौ	(सं)	समय	१३
षै^{२}	(सं)	कौन	५
षौ^{३}	(सं)	हाथ	१७
ष्वै^{३}	(सं)	जल, पानी	९
ष्वै^{४}च्याव्^{४}	(क्रि० क०)	सोना	१९
ष्वो^{१}	(क्रि०)	कहना	४
ष्वो^{१} कु^{४}षृ	(क्रि० क०)	कहानी बतलाना कथा कहना	१२
सान्^{१}	(ग० वा० अं)	तीन	३
सुङ्^{४}	(क्रि०)	भेजना, छोड़ के आना, बिदाई देना, साथ जाना	१७
सुङ्^{४} (कै^{३})	(क्रि०)	भेंट देना (वस्तु)	१७
स्वै^{४}	(मा०)	वर्ष (आयु)	१८
स्वो^{३}इ^{३}	(क्रि० वि०)	इसलिए	११
स्च्^{४}	(ग० वा० अं)	चार	३
ह^{१}	(क्रि०)	पीना	९
ह्न्^{३}	(क्रि० वि०)	बहुत, अधिक, ज्यादा	१
हाय्^{२}	(क्रि० वि०)	भी, अब भी	१२
(श्याव्^{३}) हाय्^{२}.च्	(सं)	बच्चा	५
हाव्^{३}	(वि०)	अच्छा, ठीक (होना)	१
हाव्^{४}	(सं)	दिन (महीने का) नंबर (घर, कमरे आदि का)	१३
हाव्^{३}चि^{३}	(संख्या)	कई	१५
हाव्^{३}खान्^{४}	(वि०)	देखने में सुन्दर, खूबसूरत	२
हाव्^{३}थिङ्^{१}	(वि०)	सुनने में अच्छा,	९
हाव्^{३}पु^{४}हाव्		ठीक है या नहीं (ठीक है न ?)	६
हाव्^{३}ल	(क्रि०)	फिर से स्वस्थ हो जाना, तैयार रहना तैयार है (खाना आदि)	१८
हाव्^{३}श्ये^{१}	(संख्या)	कई, काफी	१५
है^{१}	(वि०)	काला होना, गहरा अन्धकार	१९
हौ^{४}थ्येन्^{१}	(गतिशील क्रि० वि० सं)	परसों (आने वाला)	२०

हौ^{4}थौ	(सं)	पीछे	१०
हौ^{4}लाय्	(क्रि० वि०)	बाद में, तत्पश्चात्	१५
ह्वा^{4}	(क्रि०)	चित्रकारी करना	६
ह्वा^{4}	(सं)	भाषण, बोले हर शब्द, भाषा, बोली	७
ह्वाय्^{4}	(वि०)	बुरा होना	१८
ह्वाय्^{4}ल	(क्रि०)	खराब हो जाना, ठीक से कार्य करने की दशा में न रहना	१८
ह्वाळ^{4}	(सं)	चित्र, तस्वीर	६
ह्वे^{4}	(सं)	सकना, जानना (कोई काम)	७
ह्वे^{2}	(मा०)	एक समय, घटना (बार)	१८
ह्वे^{2}	(क्र०)	लौटना	१५
ह्व^{2}क्वो^{2}	(क्रि० क०)	(अपने) देश वापस जान	१५
ह्वे^{2}च्या^{1}	(क्रि० क०)	घर लौटना	१५
ह्वे^{2}लाय्	(क्रि०)	लौटना, लौट आना	१२
ह्वो^{3}छ^{1}	(सं)	रेलगाड़ी	११
ह्वो^{3}छ^{1}चान्^{4}	(सं)	रेलवे स्टेशन	१३
—ळ	(सं० श०)	संज्ञाओं के लिये सूक्ष्म प्रत्यय	१७